Recd on 7.8.82

जागती जोत

[राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर री माहवार पत्रिका]

मा०
१०२

'नरोत्तमदास स्वामी विशेषांक'

बरस : १०   दिसम्बर ८१-जनवरी-फरवरी १९८२   अङ्क : १०, ११, १२

राजस्थानी भाषा अर साहित रै लेखकां सूं अरज है कै 'जागती जोत' में छापण खातर मौलिक स्तरीय अर स्थायी रचनावां संगम कार्यालय में भेजण री किरपा करावें जिकै सूं राजस्थानी भाषा अर साहित रो वास्तविक महत्व पाठक, विचारक अर दूजा स्वीकार सकै ।

सम्मत्यर्थ सादर

जागती जोत

[राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर री माहवार पत्रिका]

Recd on 7.8.82

□

बरस : १०
अङ्क १०, ११, १२
दिसम्बर ८१, जनवरी, फरवरी ८२

सम्पादक
चन्द्रदान चारण

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ० रामकृष्ण व्यास महेन्द्र

बरस रो मोल : १२ रिपिया
रियायती मोल : ८ रिपिया
इण अंक रो मोल : ३-७५
सामान्य अंक रो मोल : १-२५

प्रकाशक—राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर

विगत

इण अङ्क रा प्रूफ रीडर—भूरसिंह राठौड़

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी

जन्म	स्वर्गवास
२ जनवरी १९०५	१३ अगस्त १९८१

आधुनिक युग में जद बीकानेर सूं राजस्थानी रो नुंवो आन्दोलन सरू हुयो तो उण में महताऊ भूमिका निभाणियां तीन जणां में सूं एक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी हा। ठाकर रामसिंघ जी अर श्री सूर्यकरण जी पारीक रै साथै स्वामीजी राजस्थानी रा पुराणां रत्ना नै तो लोगां रै सामने ल्याया ही, उणा राजस्थानी लोक गीत, राजस्थानी लोक कथावां, राजस्थानी कहावतां, राजस्थानी मुहावरा अर राजस्थानी रै सब्दां नै भेळां करणै रो काम हाथ में लियो। इण सामग्री रा केई ग्रन्थ छप्या। वेळि क्रिसन रुकमणि री, ढोला मारु रा दूहा, राजस्थानी लोक गीत, राजस्थानी कहावतां, राजस्थानी व्याकरण, सगळां में स्वामीजी रो राजस्थानी प्रेम, राजस्थानी ज्ञान, साधना अर तपस्या दीखै। मायड़ भासा रै प्रति उणां रो सर्मपित जीवन अपणै आप में एक न्यारी मिसाल है।

स्वामीजी खुद तो जिन्दगी भर राजस्थानी रै वास्तै अनन्य भाव सूं लाग्या रैया साथै ही उणां री प्रेरणां सूं कई लोगां आप री मायड़ भासा रो महत्त्व जाण्यो अर राजस्थानी में लिखणो सरु करचो। श्री मुरलीधरजी व्यास तो सभा-सम्मेलनां में भी राजस्थानी में ही बोलण रो नेम लियो अर आजूं ताईं इण नै पाळै।

स्वामीजी अनेक संस्थावां सूं सम्बन्धित हा। कई संस्थावां री थरपणा उणां री प्रेरणा सूं ही होई। सादुळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर री थरपणा अर उण माध्यम सूं राजस्थानी रो प्रचार-प्रसार स्वामीजी री अक्षय कीर्ति रो स्मारक है।

स्वामीजी साचा गुरु हा। आपरै चेलां प्रति उणा रो भाव सदा स्नेहपूर्ण रैवतो। गुस्सो तो उणां नै आतो ही नीं। उणां रै लाम्बै जीवण में कदेई इसो मोको नीं आयो कै बै गुस्सै में आ'र आप री कलम सूं किणीं नै नुक्साण पुगायो। इस्या शान्त अर धीरज हाळा लोग आंगळयां पर गिणै इत्ता ही होवै।

स्वामीजी सदा गम्भीर रैवता। कालेज में, सभा-सम्मेलन में या कोई भी दूजी ठोड़ लोग उणां नै ठट्ठा कर हंसता कदेई नीं देख्या। घणी हंसी रो विषय या

बात आ ज्याती तो स्वामीजी रै होठां पर मामूली स्मिति (मुस्कान) आ ज्याती। स्वामीजी ओछै कद रा हा अर उणां रो शरीर भी दुबळो-पत्तळो हो पण उणां में फुरती गजब री ही। बै जद पैदल चालता तो कई तेज चालणियां नै लारै छोड़ देता।

स्वीमीजी री छत्र छाया में पढ़ण रो काम करण रो घणो मोको मिल्यो। ज्ञान अर सही सलाह देणै में उणां रो दरवाजो, सदा सब रै वास्तै खुल्यो रैवतो। 'जागती-जोत' रो ओ श्रद्धांजलि–अंक उणां री पावन–स्मृति नै समर्पित है। मैं तो श्री रवीन्द्र ठाकुर रै सबदा में आही'ज बात कैणो चावूं–

"जाहार अमर स्थान प्रेमेर आसने
क्षति तार क्षति नय मृत्युर शासने
देशेर माटिर थेके मिलो जारे हरि
देशेर हृदय तारि राखिया छे वरि"

(प्रेम रै आसण पर जकां रो अमर स्थान है, मौत रै राज में उणां नै खो देणो नीं है। देस की माटी जकां नै उठा लिया, देस रा काळजा उणां नै वरण कर आपरै भीतर राख लिया)

चन्द्रदान चारण
सभापति

△

श्रद्धांजलि

△ श्री कन्हैयालालजी सेठिया

मैं बांध्यो है
म्हारै शब्दां में
अणपार आभो
अणथाग समद
पण कोनी बंधै
म्हारै सूं
अेक मुट्ठी सरीर रो धणी
मैं अणदेख्यो करयो है
उगतै सूरज नैं
ढळतै चनरमा नैं
पण कोनी हुवै
निजर सूं अदीठ
अेक अलोप हुयोड़ै
दिवलै री
धोळी धप्प जोत;
दीखै है मनै
बीं रै च्यानणै में
मायड़ भाषा रो
मोटो राजमारग
चालै है

बीं रै उजास में
मजळ कानी–
आज कित्ता ही पग,
चढ़ाऊं हूं
बीं नरोत्तम नै
म्हारै हियै री
अछूती सरधा
मनड़ै रै भावां रा
अणमोल पुसब ।

सेठिया ट्रेडिंग कम्पनी
३ मैंगो लेन
कलकत्ता–१
२३६३२४

□

सबदां रा पारखी

(स्व० श्री नरोतमदासजी स्वामी नैं सरधांजली सारू)

△ शिवराज छंगाणी

आ सगळा जाणै हा
कै
थें करोड़ां कंठां री वाणी नैं
अमोलक अरथ दिरायो
भासा री भागीरथी रो
निरमळ जळ बैवायो
सबदां रा पारखी ।
थारी मायड़ भासा रो सरूप
अजै ताईं उजासै
धोरां री धरती मांय रम्योड़ा
लोक-गीतां री टेर
मिनखपणै री भावना सूं भरयोड़ी
चौबोली री बातयां
अर
सोवणी ख्यातां
थारी अजूणी कलम री कोरणी सूं
कोरीज्योड़ी लागै
थारो ग्यान रो अणथाग समंदर
हबोळा मारै

इयै नानकड़े कद माथै
अरथ रो आकास ऊभो हो
थारा आखर–आखर
सबद–कोस री सोभा सरावै
थारी लिख्योड़ी व्याकरण
मायड़ भासारो मान बधावै
थां 'नराणां नरोत्तमम्' वाळी
कैबत नै करनब सूं
सांप्रतेक कथवा दी
थारो जस इतियास रै
उजळा आखरां मांय मंडयोड़ो रै'सी
पीढयां सूं पोढयां ताईं
थारी भावनां री बेलड़ो पसरती रैसी
अर
फूलां सी सौरम बिखेरती रै'सी

नत्थूसर गेट, बीकानेर

☐

शोकोद्गार

मन नां मानै, व्यासजी

△ डा० मनोहर शर्मा

बींकानेर विकास, सगळै थोकां ऊजळो ।
स्वामीजी बिन वास, फीको लागै, व्यास जी ।।१।।

निरमळ-चित्त सुजान, सबद-रतन रो पारखी ।
वाणी रो वरदान, आज न दीसै, व्यासजी ।।२।।

खाट्यो सुजस अपार, विद्या-धन संचित करचो ।
बांट्या हाथ उदार, सत सौरम रस व्यास जी ।।३।।

राजस्थानी बाग, लाग्या अम्मर फळ जठै ।
हिरदै रै अनुराग, सदा रुखाळचो, व्यासजी ।।४।।

बात--ख्यात, गुण-गीत, दूहा दोपाया घणा ।
कुण जाणै रस-रीत, स्वामीजी बिन, व्यासजी ।।५।।

कोयल बिन बणराय, सरवर सूनो हंस बिन ।
सभा सुरंगी नांय, स्वामीजी बिन, व्यास जी ।।६।।

देस--धरम री वात, हित-चित री किण सूं करां ।
कुण पूछै कुसळात, स्वामीजी बिन, व्यासजी ।।७।।

जग में थिर नाँ कोय, आवै सो जावै अवस ।
होणी हो सो होय, मन नां मानै, व्यासजी ।।८।।

---

* श्रीमान् नरोत्तमदासजी स्वामी रै स्वर्गवास पर श्री मुरलीधरजी व्यास, बीकानेर रै समक्ष प्रकाशित शोकोद्गार ।—लेखक

कैलाश-निकुंज
रानी बजार, बीकानेर

दिवंगत प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामी : अेक परिचय

△ डा० सत्यनारायण स्वामी

"कीर्तिर्यस्य स जीवति ।"

हिंदी' अौर राजस्थानी भाषा रा प्रकांड विद्वान् अौर अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त, मूर्धन्य साहित्यकार श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रो जलम बीकानेर रै अेक विद्वान् रांकावत ब्राह्मण परिवार में वि. संवत् १९६१ री मिंगसर वदि १२ तदनुसार २ जनवरी सन् १९०५ रै दिन हुयो । उणां रै पिता श्री रो नांव श्री जयश्रीरामजी स्वामी तथा माता जी रो नांव मीरांदेवी हो । उणां रो गोत्र हो मृकंडु अर आस्पद हो मिश्र ।

स्वामीजी बालपणै सूं ही विलक्षण प्रतिभा रा धणी रैया हा । उणां रा पिताजी अेक नामी कथावाचक हा । इण कारण छोटी अवस्था में ही बै रामायण वगैरै धर्म-ग्रंथां रै संपर्क में आयग्या । रामचरितमानस उणां रो प्रिय ग्रंथ हो जिणरो उणां रै जीवण माथै गहरो असर पड़चो । छोटी ऊमर में ई उणां नै राजस्थानी भाषा रो व्याकरण लिखण री धुन सवार हुयगी ही । उणां री आ अभिलाषा आगै जाय'र उणां रै मन मुजब पूरी हुयगी—आ खुसी री बात है ।

उणां री प्रारंभिक शिक्षा बीकानेर में हुयी । सौभाग्य सूं उणां नै श्री राम-चंद्रजी सहल अौर श्री पूर्णानंदजी जिसा गुरु मिल्या । सन् १९२१ में उणां डूंगर कालेज सूं (जिकी उण वगत हाई स्कूल ई ही) इलाहाबाद विश्वविद्यालय री मैट्रिक परीक्षा पास करी । उण वगत डूंगर कालेज रा प्रधानाध्यापक श्री संपूर्णानंदजी हा जिका आगै चाल'र भारतविख्यात राष्ट्रीय नेता तथा उत्तर प्रदेश रा मुख्यमंत्री अौर राजस्थान रा राज्यपाल हुया ।

मैट्रिक पास करचां पछै स्वामीजी बीकानेर राज्य सूं छात्रवृत्ति ले'र काशी रै हिंदू विश्वविद्यालय में ऊंची पढाई करण नै गया । बठै सूं सन् १९२७ में उणां संस्कृत

में अेम. अे. री डिग्री पायी। विश्वविद्यालय और छात्रावास री साहित्यिक गतिविधियां में वै बराबर प्रमुख रूप सूं भाग लिया करता हा। वठै बै श्री आनंदशंकर बापूभाई ध्रुव, श्री बटुकनाथ शर्मा, श्री बलदेव उपाध्याय, बाबू श्यामसुंदरदास, पं. रामचंद्र शुक्ल, लाला भगवानदीन, पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल आदि संस्कृत और हिंदी रै धुरंधर विद्वानां रै संपर्क में आया। महामना पं. मदन-मोहन मालवीयजी री कृपा प्राप्त करण रो सौभाग्य भी उणां नै प्राप्त हुयो।

अेम. अे. पास कर्‌यां पछै स्वामी जी पाछा बीकानेर पधार्‌या। बीकानेर रा प्रधानमंत्री श्री मनूभाई मेहता उणां नै बीकानेर राज्य री विधान परिषद (Legislative Assembly) में ट्रांसलेटर (अनुवादक) रै पद माथै नियुक्त कर्‌या। इण पद माथै काम करता थकां वै प्राइवेट रूप सूं हिंदू विश्वविद्यालय सूं हिंदी री अेम. अे. री परीक्षा में बैठ्या और प्रथम श्रेणी सूं उत्तीर्ण हुया।

इण रै बाद उणां री नियुक्ति बीकानेर रै डूंगर कालेज में हिंदी-प्राध्यापक रै पद माथै हुयी जिकै पर आप सन् १९५५ तांई काम कर्‌यो। बीच में अेक बरस सारू वै पिलाणी रै बिड़ला कालेज में संस्कृत रा प्राध्यापाक रैया हा। सन् १९५५ में उणां री बदळी उदयपुर रै महाराणा भोपाळ कालेज में हुयगी जठै बै सन् १९६२ तांई वाइस प्रिंसिपल और हिंदी विभाग रा अध्यक्ष रैया। सन् १९६२ में बै सरकारी सेवा सूं रिटायर हुयग्या। उण रै पछै सन् १९६३ सूं १९६७ तांई बां वनस्थली विद्यापीठ रै ज्ञानविज्ञान महाविद्यालय में हिंदी रै अध्यक्ष पद नै सुशोभित कर्‌यो।

स्वामी जी अपणै कार्य-काळ में अेक अत्यंत सफळ अध्यापक रैया हा। उणां रै इण काम रै संबंध में बां रा घणी जगावां रा मोकळा विद्यार्थी आज ई गहरी श्रद्धा सूं उणां नै याद करै है।

आप रै इण गौरवमय कार्य-काळ में स्वामीजी नै मोकळो मान-सम्मान मिल्यो, जियां बीकानेर राजकीय सनद (१९२७), महाराजा गंगासिंह स्वर्णजयंती मैडल (१९३७), महाराजा शादूळसिंह मैडल (१९४४), हिंदी साहित्य सम्मेलन रो मानसिंह पुरस्कार (१९३६), अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, बंबई रो राजस्थानी पुरस्कार आदि-आदि। राजस्थान साहित्य अकादमी उणां नै आप रो मानद सदस्य बणायो अर सन् १९७२ में राजस्थान रा अनेक विद्वानां रै साथै उणां रो साहित्यिक सम्मान कर्‌यो। सन् १९७९ में उणां रो प्रथम भूतोड़िया पुरस्कार (दस हजार रुपियां रो) सूं सत्कार करीज्यो हो।

मातृभाषा राजस्थानी रै साथै-साथै स्वामीजी हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और गुजराती रा तो उच्च कोटि रा विद्वान हा ई, पाली, उर्दू बंगला, मराठी, रूसी, जर्मन और अंग्रेजी-भाषावां में भी उणां री आछी पैठ ही। व्याकरण और भाषा-विज्ञान तथा लोकसाहित्य उणां रा विशिष्ट विषय हा।

स्वामीजी रांकावत समाज नै उणरी कुप्रथावां और कुरीतियां नै मिटावण सारू अर उणमें शिक्षा रै प्रसार सारू जिकी अमूल्य सेवावां अर्पित करी उण सारू ओ समाज सदा-सदा उणां रो कृतज्ञ रैसी।

स्वामीजी अनेक साहित्यिक संस्थावां रा संस्थापक सदस्य, आजीवन सदस्य, साधारण सदस्य अेवं पदाधिकारी और अनेक विश्वविद्यालयां रा परीक्षक रैया हा; जियां---

(१) संस्थापक सदस्य---१. राजस्थानी ज्ञानपीठ, बीकानेर, २. सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर ३. भारतीय विद्यामंदिर, बीकानेर।

(२) स्थायी सदस्य--१. नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी २. भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पूना ३ *P. E. N.* (भारतीय पी. ई. अेन., बंबई) ४ नागरी भंडार, बीकानेर ५ गुण प्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर।

(३) सभापति--१ पीठाधिपति, राजस्थानी ज्ञानपीठ, बीकानेर २. अखिल भारतीय रांकावत ब्राह्मण सम्मेलन, जोधपुर (१९४०), ३ अखिल भारतीय रांकावत ब्राह्मण महासभा ४. कुलपति, भारतीय विद्यामंदिर बीकानेर ५. राजस्थानी विभाग, बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन प्रथम अधिवेशन सरदारशहर १९४० ६. राजस्थानी साहित्य सम्मेलन, जोधपुर अधिवेशन (१९७२ और १९७९) ७. राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर (१९७२-७३) ८. परीक्षा समिति, राजस्थान भाषा प्रचार सभा, जयपुर ९. गुणप्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर।

(४) साहित्य-मंत्री---१. राजस्थामी साहित्य पीठ, बीकानेर २. सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर ३. राजस्थानी साहित्य सभा बीकानेर।

(५) सदस्य--१. सीनेट, आगरा युनिवर्सिटी २. सीनेट, राजपूताना युनिवर्सिटी ३. आर्ट्स फेकल्टी, आगरा युनिवर्सिटी ४. आर्ट्स फैकल्टी, राजस्थान युनिवर्सिटी ५. हिंदी बोर्ड आफ स्टडीज, आगरा युनिवर्सिटी ६. हिंदी बोर्ड आफ स्टडीज, राजस्थान युनिवर्सिटी ७. राजस्थानी बोर्ड आफ स्टडीज, राजस्थान युनिवर्सिटी ८. हिंदी कमिटी, बोर्ड आफ अेज्यूकेशन, राजपूताना और मध्यभारत (अजमेर), ९. भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम इतिहास लेखन समिति, राजस्थान राज्य, जयपुर १०. राजस्थान राज्य आबू समिति, जयपुर ११. राजस्थान थ्रू दि अेजेज (युगयुगीन राजस्थान) इतिहास-लेखन परामर्श-मंडल, जयपुर १२. शिक्षा समिति, वनस्थली विद्यापीठ १३. शिक्षा-समिति, सादूळ ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय, बीकानेर १४. पुस्तक-निर्वाचन-समिति, पब्लिक लाइब्रेरी, बीकानेर १५. प्रबंध-समिति, गुणप्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर १६. सरस्वती सभा, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (१९७२-७५) १७. केंद्रीय साहित्य अकादमी, दिल्ली १८ ग्रंथ-चयन समिति, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

(६) परीक्षक १. आगरा विश्वविद्यालय (पी. अेच डी.) २. राजस्थान विश्वविद्यालय (पी. अेच. डी.) ३. जोधपुर विश्वविद्यालय (पी. अेच. डी.) ४. उदयपुर विश्वविद्यालय ५. लखनऊ विश्वविद्यालय ३. वाराणसी विश्वविद्यालय ७ पंजाब विश्वविद्यालय ८. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ९. बीकानेर साहित्य सम्मेलन, परीक्षा विभाग १०. राजस्थान बोर्ड ११. राजपूताना मध्यभारत बोर्ड ।

(७) निर्देशक— पी-एच. डी. कार्य ।

(८) निर्देशन में पी-अेच. डी. करणवाळा विद्वान सर्वश्री १. शिवस्वरूप शर्मा अचल, कोटा (१९५५) २. स्वर्णलता अग्रवाल, बीकानेर (१९५९) ३ कृष्णचंद्र श्रोत्रिय, उदयपुर (१९६३) ४. नरेन्द्र भानावत, जयपुर (१९६३) ५. मोहनलाल जिज्ञासु, जोधपुर (१९६३) ६. माधोदास व्यास, बीकानेर (१९६३) ७. आलमशाह खान, उदयपुर (१९६७) ८ प्रेमचंद विजयवर्गीय, वनस्थली विद्यापीठ (१९६८) ९. व्रजमोहन जावळिया, उदयपुर (१९६८) १०. लक्ष्मी शर्मा, वृंदावन (१९७०) ११. सत्यनारायण स्वामी, बीकानेर (१९७१) १२. रामकृष्ण व्यास, बीकानेर (१९७३) १३. मनमोहन स्वरूप माथुर, उदयपुर (१९७३) १४. उदयवीर शर्मा, बिसाऊ (१९७४)।

इण भांत रै अनूठै व्यक्तित्व रा धणी स्वामीजी आप रै कृतित्व में भी बेमिसाल हा । उणां रै भांत-भांतीला कार्य-कळापां में प्रमुखता मिली संपादन-कार्य नै । बै मोकळी ई शोध-संबंधी और साहित्यिक पत्रिकावां रा संपादक रैया जिणां में सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर री मुखपत्रिका 'राजस्थान भारती' और राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर री मुख पत्रिका 'जागती जोत' रा नांव विशेष रूप सूं उल्लेख करण जोगा है । इणां रै अलावा बै मरुभारती (पिलाणी), वरदा (बिसाऊ), शोध पत्रिका (उदयपुर), मरु श्री (चूरू), मरुवाणी (जयपुर), जन भारती (कलकत्ता), हंस (बनारस), वैचारिकी (बीकानेर), विश्वंभरा (बीकानेर), मज्झमिका (उदयपुर), परंपरा (जोधपुर), राजस्थानी गौरव ग्रंथमाळा (आगरा), जिसी भारत री अनेक उत्कृष्ट कोटि री पत्रिकावां और ग्रंथमाळां रै संपादन–मंडळां अथवा परामर्श-मंडळां रा सदस्य रैया हा ।

स्वामीजी संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी और हिंदी रा कई-अेक घणा ही महत्त्वपूर्ण ग्रंथां रो संपादन करचो जिकां में खास-खास नांव इण भांत है --

१. राजस्थान रा दूहा २. ढोला मारू रा दूहा (श्री रामसिंहजी और श्री सूर्यकरणजी पारीक रै साथ) ३. राजस्थान के लोकगीत (श्री रामसिंहजी और श्री सूर्यकरणजी पारीक रै साथ) ४. राजस्थान के ग्रामगीत ५. राजस्थानी कहावतां, भाग २ (श्री मुरलीधरजी व्यास रै साथ) ६. राजस्थानी लोकगीत बिहार (डा० लक्ष्मी कमल रै साथ) ७. कृष्ण रुक्मिणी री वेलि ८ वीर सतसई ९. राजिया रा दूहा १०.

मीरां मंदाकिनी ११. मीरां मुक्तावली १२. सूर सुषमा १३. देवकाव्य रत्नावली १४. हिंदी पदय पारिजात १५. मधु पर्क १६. मधु-संचय १७. संस्कृत पाठमाला १८. हिंदी साहित्य बिहार, भाग ३ १९. श्री अगरचंद नाहटा लेख-सूची २०. बीकानेर राज्य का संक्षिप्त इतिहास, २१. अपभ्रंश पाठमाला. २२. नेमिनाथ चउपई २३ भरहेसर बाहुबली घोर २४. राजस्थनी गद्य : विकास और प्रकाश (निर्देशित) आदि।

इणां रै अलावा स्वामीजी केई छात्रोपयोगी पाठ्यपुस्तकां भी लिखी।

स्वामीजी री प्रकाशित मौलिक कृतियां रा केई नांव इण भांत है—

१ रासो साहित्य और पृथ्वीराज रासो २. संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण (पुरस्कृत) ३. राजस्थानी साहित्य : अेक परिचय ४. अलंकार परिचय ५. अलंकार पारिजात।

और अै नांव है उणां री कई-अेक महत्त्वपूर्ण मौलिक और संपादित कृतियां रा, जिकी कै हालतांई अप्रकाशित ई पड़ी है—

१. राजस्थानी दूहा बिहार, ६ भाग २. राजस्थानी लोक गीत, १० भाग ३. पृथ्वीराज रासो (लघुतम रूपान्तर), ४. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, टीका सहित ५. अपभ्रंश बिहार ६. अपभ्रंश व्याकरण ७. वृहत् अलंकार रत्नाकर (विस्तृत व्याख्यात्मक अलंकार–ग्रंथ) ८. राजस्थानी वातां ९. संख्यात्मक पदार्थ कोश १०. रूसी भाषा का स्वयं शिक्षक ११. राजस्थानी चारणी गीत और १२. राजस्थानी अेकांकी (मौलिक अेकांकी नाटक)।

इण प्रकाशित और अप्रकाशित साहित्य रै अलावा स्वामीजी रै उण महत्त्वपूर्ण लेखां रो उल्लेख भी अठै उचित हुसी जिकै वगत-वगत माथै न्यारी-न्यारी पत्र-पत्रिकावां में छप्या। उण लेखां रो इण भांत सूं वर्गीकरण करचो जा सकै है—

१. अपभ्रंश और राजस्थानी भाषा अेवं साहित्य संबंधी
२. हिंदी भाषा और साहित्य संबंधी
३. इतिहास और जीवनी संबंधी
४. वैज्ञानिक निबंध (राजस्थानी भाषा में)

५. प्रकीर्णक—(१) साहित्य शास्त्रीय लेख (२) साहित्यिक और ललित निबंध (३) धार्मिक लेख (४) भाषण (५) संपादकीय (६) परिचयात्मक प्रस्तावनावां (७) स्फुट—अनेक कवितावां तथा अनुवादित लेख और कहाणियां।

स्वामीजी राजस्थानी साहित्य-संसार में अत्यंत सम्मानित श्री गुरुदेव रै रूप में स्मरण करीज्या है। उणां आप रो सरस्वतीकुमार उपनाम ई पूरी तरै सार्थक करचो है।

प्रत्यक्ष है, इण भांत री उत्कृष्ट कोटि रो काम करणो किणी साधारण कोटि रै व्यक्ति रै बस री बात नहीं है। श्री गुरुदेव में केई असाधारण गुण विद्यमान हा। अेक-लक्ष्यता उणां रो प्रमुख गुण हो। राजस्थानी भाषा और साहित्य री सेवा में जिकै प्राणपण सूं बै लाग्या रैया हा उण नै देखतां जे आपां उणां नै 'राजस्थानी रा दधीचि' कैवां तो कोई बडी बात कोनी। राजस्थानी रै पुनरुद्धार रै काम में आया संकटां नै जिकै साहस सूं बां झेल्या बो सरावण जोग तो है ई, राजस्थानी भाषा नै संवैधानिक मान्यता दिरावण नै और उणरी श्री वृद्धि करण सारू बो अनुकरणीय भी है।

स्वामीजी रै जीवन रो प्रमुख कार्य जे दो ही शब्दां में बतायो जावै तो बो है मातृ-भाषा राजस्थानी रै पुनरुद्धार रो कार्य और इणीज बात नै जे और सावळ अर खुलासै ढंग सूं कैवणी हुवै तो उणां री जीवन-पोथी रा मोकळा पाना उथळचां बिना पार नहीं पड़ै। इण कार्य नै प्रारंभ करण में श्री रामकर्णजी आसोपा और श्री शिवचंद्रजी भरतिया सरावणजोग प्रयास करचो अर इण नै आगै बधायो। इण परंपरा में आगै चाल'र स्वामीजी इण कार्य रा कर्णधार बण्या। छोटी ऊमर में राजस्थानी भाषा सूं जिको नेव उणाँ नै लाग्यो बो उणां रै जीवन री अंतिम घड़ी तांई बण्यो रैयो। काशी रै हिंदू विश्वविद्यालय में आपरै बीकानेरी साथियां जिकां में ठाकर रामसिंह जी और श्री सूर्यकरणजी पारीक प्रमुख हा, रै सागै सूं जद अेक हस्तलिखित पत्रिका रो संपादन सरू हुयो तो स्वामीजी उण रै राजस्थानी विभाग रो संपादन-कार्य संभाळचो। लोग उणां रै अद्‌भुत संपादन-कौशल सूं आश्चर्य चकित रैयग्या। स्वामीजी आप री अेक ई अडिग आस्था नै ले'र आगै वधता रैया।

बीकानेर में ट्रांसलेटर रै पद पर काम करता थका, अर उण रै बाद भी, बै रात-दिन राजस्थानी री सेवा—उण रा दूहां, लोकगीतां, मुहावरां, कहावतां और शब्दां रै संग्रह—संपादन रो काम, दड़ाछंट करता रैया। राजस्थानी भाषा रै अप्रकाशित साहित्य—हस्तलिखित कृतियां री खोज सारू अर उण रै संपादन—प्रकाशन रै प्रयास में उणां नै मोकळी ठौड़ां रा प्रवास अर जुदा-जुदा विद्वानां सूं पत्राचार करणो पड़चो। इण मामलै में बां आप रै स्वास्थ्य री भी कदेई परवाह को करी नी। घणी ई तकलीफां उठायी, पण 'मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्'—महान् पुरुषां दुख-सुख री कद परवाह करी है!

सन् १९३२ में स्वामीजी रै प्रयत्नां सूं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय रा केई छात्रां मिल'र बीकानेर में 'राजस्थानी साहित्य सभा' नांव सूं अेक संस्था कायम करी जिण रा सभापति ऋषिकल्प पं० विद्याधरजी शास्त्री हुया। 'सभा' अेक हस्तलिखित पत्रिका भी काढी ही।

राजस्थानी रै पुनरुद्धार सारू स्वामीजी जकी जोत जगायी उण रै प्रकाश सूं घणा ई साहित्यकार इण क्षेत्र में काम करण सारू आकर्षित हुया जिणां में श्री

मुरलीधरजी व्यास, श्री अगरचंदजी नाहटा, श्री श्रीलालजी जोशी और श्री नानूरामजी संस्कर्ता रा नांव खास तौर सूं लिया जा सकै है। पं० विद्याधरजी शास्त्री, श्री अगरचंदजी नाहटा, डा० दशरथ शर्मा, श्री नाथूरामजी खड़गावत अर श्री मुरलीधरजी व्यास आदि विद्वानां रै संयुक्त प्रयास सूं आगै चाल'र बीकानेर में 'सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट' नांव री अेक शोध संस्था री स्थापना हुयी जिणरा पैला सभापति ठा. रामसिंहजी, साहित्य मंत्री स्वयं स्वामी जी अरप्रधानमंत्री श्री नाथूरामजी खड़गावत हा। उण दिनां लाडनू रा पं. श्री अक्षयचंद्रजी शर्मा ई बीकानेर आयग्या हा अर अठै ई रैवण लागग्या हा। आगै चाल'र बै इण इंस्टीट्यूट रा प्रधानमंत्री बण्या और उणां रै कार्यकाळ में संस्था री गतिविधियां घणी जोरां पर रैयी।

बीकानेर शहर रा साहित्यकारां नै भेळा कर'र राजस्थानी रै क्षेत्र में उतारण सारू स्वामीजी अठै री दो-च्यार संस्थावां में राजस्थानी भाषा री गोष्ठियां सरू करवायी जिक्यां में बै खुद तो आपरी भांत-भांत री रचनावां लिख'र सुणावण वास्तै लावता ई, दूजा साहित्यकार भी बां सूं प्रेरणा ले'र उणां रो अनुसरण करता।

बीकानेर सूं बाहर रा भी अनेक विद्वानां स्वामीजी सूं प्रेरणा ली और सदा ई बांनै इण काम सारू गुरु रूप मान दियो। इसा विद्वानां में केई नांव इण भांत है-- डा. कन्हैयालाल सहल (पिलानी), डा० मनोहर शर्मा (बिसाऊ), श्री रावत सारस्वत (जयपुर), श्री सौभाग्यसिंह शेखावत (जोधपुर), डा० नागरमल सहल (जोधपुर), डा० राजकृष्ण दूगड़ (जोधपुर) आदि।

दिनांक १३-८-१९८१ ई० नै हुयै श्रद्धेय स्वामीजी रै आकस्मिक निधन सूं हिंदी और राजस्थानी री जिकी क्षति हुयी है उण री पूर्ति हुवणी तो कतई संभव कोनी। आज राजस्थानी साहित्य-जगत में उणां री कमी च्यारूं मेर महसूस करीजै है पण कराळ काळ रै आगै किण रो जोर चालै! ईश्वर उणां री महान आत्मा नै चिर शांति प्रदान करै अर उणां रै शोकविह्वल परिवार तथा आत्मीय लोगां अर शिष्य-समुदाय नै इण असह्य दुःख नै सहणै रो साहस देवै-इणीज कामना रै साथै हूं उण दिव्य विभूति नै म्हारै हृदय रा श्रद्धा-सुमन समर्पित करूं हूं।

जस्सूसर दरवाजै रै भीतर,
बीकानेर (राजस्थान)

अविस्मरणीय स्वामीजी

डॉ० नागरमल सहल

सन् १९३४ में मैं नवलगढ़ से मैट्रिक पास कर'र आगै पढ़बा तांई पिलाणी गयो। स्वामीजी का साथी स्व० सूर्यकरणजी पारीक इंटर् कॉलेज का वाइस-प्रिंसिपल हा। हिंदी का प्रोफेसर भी बै ही हा। सन् १९३५ में पारीकजी स्वामीजी नैं भी सरकारी नौकरी सैं छुट्टी ले र पिलाणी आबां तांई राजी करलियो। स्वामीजी को पिलाणी में मन रम्यो कोनी, सो बै बठे एक साल ही रह्या। बै म्हानैं बारवीं क्लास में हिंदी अर संस्कृत दोन्यूं विषय पढ़ाया करता। पारीकजी र स्वामीजी भायला हा पण पारीकजी हा फुरतीला. चुस्त, नाटक गाणां आदि में गैरी रुचि लेता। स्वामीजी हा संकोची। ज्यादातर एकला बैठ्या बैठ्या आपका लिखणा पढ़णा में लाग्या रहता। संकोची तो बै अत्ता हा के लघुशंका पर बैठ्या होता और कनैं से कोई निकळ ज्यातो तो बतीं देर बांकी शंका दब्योड़ी की दब्योड़ी र्है ज्याती। पारीकजी र स्वामीजी दोन्यूं मिल र मानो एक पूरा मिनख बण्या, क्यूंकि पारीकजी हा बहिर्मुखी (*extrovert*) अर स्वामीजी हा अंतर्मुखी (*introvert*)। बाहरी व्यवस्था, इंतजाम करणा में पारीकजी आगै; लिखाई-पढ़ाई में स्वामीजी आगै। हां, अंग्रेजी में लिखणो होतो तो बो काम पारीकजी ही कर्‌या करता। पारीकजी को लिख्योड़ो पछै भी स्वामीजी फुरसत सूं देख लेता अर क्यूं माणणा लायक सुझाव भी कदे कदे देता। यां दोन्यां नैं देख र बाबू श्यामसुंदरदासजी अर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सहज ही याद आ ज्यावै। बाबूजी जसा हा पारीकजी अर शुक्लजी जसा हा स्वामीजी। स्वामीजी का कपड़ा-लत्ता भोत सीधा-सादा हा। वां दिनां मैं बै साफो भी बांध्या करता। पिलाणी में मेरा बड़ा भाई फूलचंदजी भी सागै ही पढ्या करता। स्वामीजी आया ही आया हा जणा मैं भाई नैं कह्यो कि स्टाफरूम कै स्यामनै साफो बांध्या खड़्या है बै ही है स्वामीजी। या सुण र बांनै भोत अचंभो होयो। बै बोल्या, "नाम तो लंबो-चौड़ो-नरोत्तमदासजी स्वामी-पण काया घणी निमळी। यै तो प्रोफेसर सा न लाग कर अयां लागै जयां कोई चपरासी खड़्यो होय।" पारीकजी अर स्वामीजी का पढ़ाणा में भी भोत फरक हो। पारीकजी जोशखरोश कै सागै पढ़ाता पण छायावादी कवितावां को अर्थ टाळ ज्याता या कै र के आंको जको चाहे बो ही अरथ लगा सको हो। घरां ध्यान सें पढ़ र अरथ समझण री जयां बांनै फुरसत ही कोनी ही, पण

स्वामीजी "ग्रजातशत्रु" की सै कवितावां या गीतां को पूरो ग्ररथ समभाणा को ध्यान राखता । स्वामीजी सैं प्रेरणा पा र ही मेरो बिड़ला कालेज पत्रिका में "रहस्यवाद ग्रौर छायावाद" नांव को बड़ो लेख १६३६ में छप्यो हो । स्वामीजी पढ़ाता बड़ा शान्त भाव सैं । कई साथी तो सोचता कै ये के पढ़ा र न्ह्याल करैगा, पण मेरा जसा जका ध्यान सें सुणता बां नै स्वामीजी को पढ़ाबो भोत चोखो लागतो । हां, बां को पढ़ाणो ऊपर सें देखबां में जोरदार कोनी लागतो । स्वामीजी मनै भोत चावता । नंबर देणा में वै कदे ही कंजूसी कोनी करी; पीसा खरचणा में चाहे कती ही करी होसी । १०० में से मनै ६२-६४ नंबर बांका हाथां सूं बराबर मिल्या करता । एक बर मैं 'शूर्पणखा' नै गलती से 'शूर्पणखां' लिख दियो । स्वामीजो बी पर लिख दियो "*She was not a Pathan Sardar*" । मेरी ग्रौर कोई गलती तो कदे ग्राई कोनी, पण ग्रनार्य समभ र 'शूर्पणखां' लिख दियो । जद यो वेरो कोनी हो कि सूप (छाजला) जसा नूं हो य जिका का बा शूर्पणखा । ईसैं होयो ई- मैं बहुव्रीहि समास । स्वामीजी को लिखणो-पढ़णो बड़ो सलीके को ग्रर बारीकी को हो । किताब छपाता जद प्रूफ देखणां में भी ग्रतो जबरो ध्यान कि गलती एक नहीं र्‌है ज्याय । जकी भी चीज वै लिखता बो बस पूरो "सुन्दर लेख" हो तो । एक एक ग्रक्षर मानों मोती जड़ दिया होय । लैरला बरसां में जद हाथ कांपबा लागगा हा ग्रांकां में फरक ग्राणो ही हो । ग्रांकां में फरक देख र ही मैं समभगो हो कि स्वामीजी बीमार दीखै । स्वामीजी की जिद ही (प्रेस का सुमीता तांई) कि इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ-ग्रयां न लिखर ग्रि, ग्री, ग्रु, ग्रू, ग्रे, ग्रै लिखणो चाये । बै सदा ग्रयां ही लिख्या करता पण लोग ईं चाल पर चाल्या कोनी ।

सन् १६३५ में स्वामीजी से मेरो संपर्क बराबर वण्यो रह्यो । सन् १६५३ से १६६० तांई मैं उदयपुर में ग्रंग्रेजी विभाग को ग्रध्यक्ष हो । मोहनवल्लभ पंत बां दिनां में बठे हिंदी का प्रोफेसर हा । राजस्थान सरकार कोई कारण सूं पंतजी को तबादलो करणो चावै ही । एक तबादला को मतलब कोई दूसरा को भी कठे न कठे सों तबादलो । पंतजी को तबादलो होयो जणा स्वामीजी उदयपुर पधारया । स्वामीजी बीकानेर में मजा से हा, पण बां नै पंतजी कै कारण सूं हाळणो पड़यो । स्वामीजी कह्यो भी कि गलती एक की, पण दण्ड भुगतणो पड़ै दूजानै । उदयपुर में लोग बोल्या कि पंत गया ग्रर संत ग्राया । जयपुर छोड़'र मैं सन् १६६२ में जोधपुर ग्रायो जणां प्रोफेस ए. जी. स्टाक भी कह्यो के "*Wc haue best Sahal but got Nahal* ।" उदयपुर ग्राया हा ग्राया ही जद थौड़ा दिन स्वामीजी को मन उडयो-उडयो र्‌हैयो, पण मेरा जसा प्राध्यापकां कै होता सेतां उदयपुर को ग्रोपरोपण बां तांई जल्दी खतम होगयो । बठे ही हा डॉ. राजकृष्ण दुगड़ ग्रर डॉ. ब्रजमोहन जावलिया ईं कारण से भी बड़ा ग्रानन्द सूं स्वामीजी उदयपुर बिराज्या ।

राजस्थान विश्वविद्यालय की कला संकाय कौ मैं १०–१५ बरस तांई बराबर बाह्य सदस्य र्‌हैयो । जद स्वामीजी से बराबर मिलणो हो तो र्‌हैतो । कदे मैं बीकानेर

में कदे स्वामीजी जोधपुर में और कदे दोन्यूं ही। जयां राजस्थानी सम्मेलन तांई जैसलमेर में। बाकी चिट्ठी-पत्री तो चलती ही रहती।

जोधपुर विश्वविद्यालय में जद राजस्थानी विभाग खोलण को विचार होयो तो स्वामीजी, डॉ. दशरथ शर्मा डॉ. कन्हैयालाल सहल, श्री कोमल कोठारी आदि सदस्य हा। स्वामीजी, सहलजी आदि कै प्रयत्न सूं जोधपुर में ही बी. ए. तांई की राजस्थानी की पढ़ाई सैं से पैली शरू होई।

स्वामीजी बड़ो काम कर सक्या राजस्थानी अर हिंदी में आपरी लगन सूं आपका अध्यवसाय सूं। स्वामीजी जनम सूं बड़ा नहीं हा। बै बड़ा होया कर्मठता सूं। ई वास्तै बै दूसरां तांई बड़ा भारी प्रेरणास्रोत र्‌है्या। पढ़णा-लिखणा सिवाय स्वामीजी की और कोई रुचि नहीं कै बराबर ही। रायल्टी का स्वामीजी पीसा भोत कमाया पण आपकी भलमनसाहत कै कारण प्रकाशकां सैं ठग्या भी कम नहीं गया। स्वामीजी दुनियादारी में क्यूं कच्चा ही हा, पण टाबरां तांई न्यारा-न्यारा मकान जरूर बणवा दिया। लड़क्यां नै भी दायजा में मकान दिया। यै सब स्वामीजी की दूरदर्शिता ही समझो। स्वामीजी चाहे "अलंकार-परिचय" लिख्यो, चाहे पुराण ग्रन्थां री भूमिका लिखी, चाहे छन्दां की चरचा करी, बां की शैली भोत मंज्योड़ी अर साफ-सुथरी ही।

सेवा निवृत्ति होयां पछै स्वामीजी वनस्थली भी र्‌है्या। स्मामीजी जसा लेखक हा, बसा वक्ता नहीं हा, पण बै बोलवा जद खड़्या होता तो बांको असर ई वास्तै होतो के बां की बातां में कोई लफाड़ाबाजी या बणावटीपण नहीं हो। दिल को दरद ही बांका भाषण में उमड़्यो पड़तो। राजस्थानी की समृद्धि तांई संस्कृत, पाली, प्राकृत अपभ्रंश सैंको ज्ञान चाये, पण राजस्थानी का घणाकरा साहित्यकार आं सैं कतरावै-या बात स्वामीजी नै अखरती। 'जागती जोत' को सैंसी पैली संपादन कर बै राजस्थानी में एकरूपता ल्यावणा की पूरी कोशिश करी, पण जल्दी-जल्दी संपादक बदळणा की आपाधापी की नीति सूं-आज तांई भाषा की एकरूपता की समस्या पैली जयां ही गम्भीर वण्योड़ी सी है। आजीवन बांनै संपादक राखता तो राजस्थानी को एक तरह सूं संस्कार होतो अर डा० सत्यनारायण स्वामीजी जसा बां कनै काम करता करता ट्रेण्ड भी हो ज्याता। हिंदी नै खड़ी करी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी। राजस्थानी नै ऊभी करणै की सामर्थ्य स्वामीजी में द्विवेदी जसी तो नहीं ही, पण बसो सो ही काम वै राजस्थानी तांई कर सकै हा। स्वामीजी राजस्थानी को व्याकरण लिखी। बीं में स्व० आचार्य किशोरीदास बाजपेयी जसो अक्खड़ पण तो नहीं हो, पण बात को ठायौपण बराबर हो। 'जागती जोत' में राजस्थानी सम्बन्धी विधि-निषेध बांका छप्या। 'मरु-भारती' का जद बै सम्पादक बण्या तो ई शर्त पर कि मैं सह-संपादक बण'र बांको पूरो हाथ बटाऊं। ईं काम नै बै बीकानेर बैठ्या खूबी सै निभाया, पण

बांनै पिलाणी आबां तांई बीच बीच में बुलावा आबा लाग्या तो स्वामीजी ई काम नै छोड़ दियो। 'आप भला तो जग भला'–ईं सिद्धान्त नै वै मानता, पण जग भलो कठै? अन्त का दिनां में लोगां की बदनीयती सूं स्वामीजी कै जीवन में कड़वाहट भी आई। लाखां रुप्या स्वामीजी कमाया पण दे दिवार आखिर में कह्या करता कि मैं तो अब होगो फूलियो फकीर। ईं को कारण हो प्रकाशकां से जका लाखां रुप्या आणा बाकी हा, बै आज्याता तो स्वामीजी लखपति का लखपति र्‌हैता, पण प्रकाशक भी समझी कि स्वामीजी नै अब रुप्या क्यां तांई चायै। ज्यादा ही कहता तो कदे हजार दो हजार पकड़ा देता। स्वामीजी की अप्रकाशित रचनावां भी है। जद तांई पूरी तौर सैं वै सन्तुष्ट नहीं हो ज्याता, किताब छपाता नहीं। छोटी-मोटी पचासां किताबां बै लिखी पण ज्यादातर छात्रां तांई जी सैं ही रिप्या मिल सक्या, क्यूंकि ऊंचा स्तर की किताबां तो ज्यादातर पुस्तकालयों की शोभा बढ़ावण सारू ही होय है।

स्वामीजी दुबळा-पतळा तो हा ही, पण क्यूं न क्यूं अबखाई भी बांनै ख्यारती र्‌हैती। पछै भी काम चलतो ही र्‌हैतो। बेबस ही हो ज्याता जद बात दूसरी ही। एकबर अता बीमार होया कै उदयपुर सूं बीकानेर जातां नैं जोधपुर स्टेशन पर एक कुली बांनै गोदी में उठार दूसरी गाड़ी में बैठायो। पढ्यां-लिख्यां बिनां तो बांनै जक ही नहीं पड़ती।

स्वामीजी की स्मृति ताजा राखबा को उपाय है बांका अधूरा काम नै बी ही लगन सैं दिन दूणी रात चौगणी गति सैं आगै बढ़ाणो। लोग कता ही नाराज होता, कता ही सभावां में ऊलजलूल बोलता, स्वामीजी कदे उद्विग्न या क्रुद्ध नहीं होता दीख्या। भवभूति को—

सर्वथा व्यवहर्त्तव्यं कुतोह्यवचनीयता।

यथा स्त्रीणां तथा वाचाँ साधुत्वे दुर्जनो जनः।

यो श्लोक मानो स्वामीजी को पथ प्रदर्शन करतो र्‌हैयो। स्वामीजी का गुण-सन्निपात में छोटा-मोटा दोष ढक ज्याया करता, पण अब तो बै ब्रह्मलीन होग्या– ई वास्तै Nil Nisi Bonum अब तो गुरोरपि दोषा वाच्या' नहीं, अब तो जकां गुण बां मैं दीखै बांको ही बखाण कर बी मुजब चालणो। राजनीति को सूत्र है Dis trust every body till you find him trustworthy पण स्वामी जी को हो— Trust every body till you find him un trustworthy. 'दुनियां ठगणी मक्कर से, रोटी खाणी शक्कर से, पण ठगणां में जती भला आदम्यां नै पीड़ा होय बी सैं सौ गुणी खुशी शायद ठगाया ज्याणा में होय है, पण बेवकूफी कै कारण ठगाया जाणां में नहीं। स्वामीजी ठगाया भळमनसाहत सूं। बांरी आत्मा भगवान करै बराबर ऊंची चढ़ती जावै।

△

स्व० पं० श्री नरोत्तमदासजी स्वामी

सा० महो० नानूराम संस्कर्ता

बीकानेर क्षेत्र रै साहित्यकारां री बात सोचां तो पाछलां पगां जूना वखत में जा पूगां। लारलै समै में राजस्थानी साहित्य पीठ बीकानेर रै साथै बिताया दिनां में रम ज्यावां अर आज रै कुढ़ियै वरतारै में पागड़ी रा पेच सा उधड़ ज्यावै उवां रै साथै रा साहित्यिक-सुख-संस्मरण ! पण वखत बे पत्तौ, कद वग जावै; पैला कुण जाणै ! जुगांन-जुग आवै अर जावै। जळ रै तेज बाहळै ज्यूं वगै। इण में किता डूबै अर किता तिरै ? कुण गिण सकै ! पाणी रूप समै रो यो प्रवाह-बा'ण निरंतर चालै अर चालतो रैसी। आगै पाछै रो ठा ही नीं लागै। पण कदे-वदे इसा छंटवां पुखता पुरख ही या धरती माता उपजा देवै; जके जमानै रै तकड़ै बाढ़-बाहळै में हरगज डूबर नीं जावै; वखत रै उवै खपती खाळै नै आपरै अद चालतै वेग बाहळै में मोड़र मिला लेवै। अैड़ा महापुरुष माता रा सांचेला बरदानी, मरदानी रा जस उघाड़ै। उवां रो जमारो, जीवण-चेतणा सूं सराबोर हुवै। बै: अेकला आप ही ऊंचा नीं चढ़ै; लोगां रा हाथ खींचर साथै लियां चालै साधणा री पैड़ी चढ़णियां वेगी प्रेरणा री सायता-सांकळ वण ज्यावै अर डूगर रै चानणै दांई उवां नैं मिनख जमारै रै मारग रो बोध देवै—दरसै।

पं. श्री नरोतमदासजी स्वामी अेक अैड़ा ही मोटा उत्तम पुरुष हा; जिणां रै मांयलै हिड़दै में मोकळो अड़ूड़ो सावचेतो हो। ओज-उमाव अर मानवता रो विमद सीधापणो हो। जकां रै परम जोत व्यक्तिव री पळकती प्रेरणा·किरणा सूं शिक्षा, साहित्य रै लोगां री आतमा में चेतना रो वपराव घणो हुयो। उवां आपरै जीवण सूं ज्ञान-दान, साहित्य-प्रधान अर धर्म संस्कृति रो विस्तृत चड़ूड़ो उजास, सर्चलाइट वणर वखेरचो। उवां रो जीवण संतुलित हो; जकै वास्तै साथ्यां अर सिस्यां नैं बै गतिसील निरदेस देतां गया। आपरी काज परणाली रो मूळ गुण घणा लोगां में रसा-वसा गया।

बीकानेर नगर में ईस्वी सन् १९०५ रो आयो अर उवै नै स्वामी जी रै अवतरित होणै रो स्रेय-सौभाग्य मिल्यो। बीकानेर सैर रै एक स्थानीय संभ्रांत रांका-

वत परिवार में आपरो जलम हुयो । आपरो वचपण पिताजी रै उपदेसी भजनां में रसीज्यो । कयो जावै-"मोटां पुरुषां रो पैलड़ो जीवण, लोकी में उवां रा फूटरा-फबता सीखणै-पकाणै रा भला कारजां सूं आपरै भावी जीवण रो सैंचनण पळको दिखाळै ।" या कैवत स्वामी जी रै जीवण में सोळै आना सांच ऊतरी । विद्यार्थी जीवण में ही उवां रा करियोड़ा केई काम भासा अर साहित्य रै खेत में वडा सत, तत तथा महत सांकळ री कड़चां रूप सिद्ध हुया है । स्वाभावी तौर सूं ही आप सीधा-सादा, सौम्य, गुणी एवं ज्ञानवान बाळक बाजता । आपरा संस्कार डाढ़ा ऊंचा अर ऊजळा हुंता । वडोड़ा भाईजी री संस्कृत भणाई सूं प्रभावित होयर आप नौ वरसां री ओसथ्या में ही राजस्थानी रो व्याकरण लिखणै री बात मन में धारली । १२ वें वरस तांई भणाई, अनुशीलन अर चिन्तण रो जीवण वणा लियो । डटर पढ़णो अर सागीड़ो चेतै राखणो उवां रो सुभाव वणग्यो । यो ही कारण हो के बुद्धि वडी तेज होणै सूं आप बीकानेर डिवीजन में सैं सूं पैलड़ा अे म. अे. हा तथा ठाकुर रामसिंघजी अर श्री सूर्यकरणजी पारीक री कक्षा रा सांचा-सागड़दी वणग्या । आपरी लाखीणी बाळ प्रतिभा नै लख-दाद, के छः वरसां री ओसथ्या में दरबार हाई स्कूल सूं थोड़ी वाणिका भणर साल भर में तीन श्रेणियां (अ, ब, पैली) रो काम साथै कर निकळिया । दूसरी कक्षा डागा विद्यालय में जाय करी । श्री रामचन्दरजी सहल अर पूरणानंदजी जिसा डगमर गुरुवां रै हिड़दै में जागां वणा लीनी तथा सभा-सोसाइटी में जावणो सीख्यो । उवै समै आप कविता पाठ करणै में चोखा कुसळ हुंता । दस वरसां री ऊमर में लेख लिखणै-सुणाणै लाग्या अेवं घर में धरी पिताजी री रामायण नै बांचर उवै रो सार; कथा सरूप लिख लीनो । ई. सन् १६१६ री जुलाई में आप सातवीं कक्षा में भरती हुया अर अगलै साल आदर जोग आठवीं पास करी । सातवीं में रजत पदक अर आठवीं में आप सुवर्ण पदक पावणै रा इधकारी छात्र बणिया । सन् १६१८ में मांदगी रै कारण आप कॉलेज नीं जा सक्या । पण आगलै साल नवीं में भरती होयर रया । दसवीं श्रेणी में स्वामी जी बीकानेर रा सैंग विद्यारथ्यां सूं प्रथम आया अर महाराजा मेडल मिल्यो । समै रा कॉलेज हैडमास्टर श्री सम्पूर्णानन्दजी अर उवां रा सहायक श्री तारकनाथ मुकर्जी घणा राजी हुया । स्वामी जी ई. सन् १६१६ में ६ वीं कक्षा पास करी अर सन् १६२० में मैट्रिक पास करली; पण आगै पढ़ाई री श्रैणी अठै न होणै रै कारण उवां नै बीकानेर राज्य सूं वजीफो लेयर कासी हिन्दू विस्व-विद्यालय में जावणो पड़चो । श्री स्वामी जी ई. सन् १६२१ में पढणै वास्तै कासी रा वासी वण्या हा । आगै कुं० श्री रामसिंघजी व सूर्यकरणजी पारीक सूं भळे मितरचारो हुग्यो, जको पैलां सूं ही बोल-बतळावण, मिलण तथा आपसी जाण-पैचाण रो प्रेम चालतो । यो प्रेम गै'री भायप में मिल-भिळग्यो । तीनुवां री विचार त्रिवेणी तोय रूप साहित्य लैरां में बह चली । कासी में पुस्तकालय अर सभालय में पूगणै सूं आपरा अनूठा भाव खिल उठचा । श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैड़ा कवियां री कवितावां रा अनुवाद अर संस्कृत

साहित्य रा मोकळा ग्रंथ पढ़णै सूं स्वामी जी री बढ़ती-चढ़ती किसोर चेतणा जवान भाव सूं जाग उठी।

संस्कृत री रुचि–संपदा तो आपनै स्वयं रै घराणै सूं मिली। आपरा दोलड़ा जेठू वीर, संस्कृत साहित्य रा प्रकांड विद्वान अेवं कवि हुंता। पण राजस्थानी भासा अर साहित्य रै पासै आपरी सेवा-धख स्कूल भणाई रै समै सूं पनपी। आप बी० ए० करणै सूं पैलां ही राजस्थानी रै उद्धार कार्य रो पैलो हेलो बीकानेर में अगुवां वणर करचो। केइ अेक विद्वानां तथा उत्साही मित्रां में मातभासा राजस्थानी रो प्रेम जगायो। वि सं. १९८० में साथ्यां नै बुलायर "राजस्थानी साहित्य सभा बीकानेर" नांव री संस्था खोली अर उवै में आप राजस्थानी नांव री संस्था खोली अर उवै में आप राजस्थानी नांव री अेक हाथां लिखी पत्रिका निकाळणी चालू करी।

श्री स्वामी जी ई० सन् १९२३ में हिन्दू विस्व-विद्यालय री इण्टरमीजियट पास कर परार बी. ए. में आया अर विद्यालय री भांत-भंतीली प्रवृतियां में सजग मुखिया विद्यारथी वणता रया। छात्रावास-समिति, हिन्दी साहित्य–सभा, पार्लिमामेंट जिसी घणखरी संस्थावां में आप जिम्मेदार पदां माथै काम करचो। छात्रावास री पत्रिका अेवं हिन्दी साहित्य री पत्रिका; दोनुवां रो सम्पादन आपरै ही जिम्मै हुंतो। आगै जायर आपनै विद्यालय कानी सूं मैरिट स्कॉलरशिप (छात्रवृति) मिली।

विस्वविद्यालय में बाबू श्यामसुन्दरदास जी, पं. अयोध्यासिंहजी उपाध्याय, पं. रामचन्द्रजी शुक्ल, लाला भगवानदीन श्री बलदेव उपाध्याय जिसड़ा मोटा साहित्यकारां सूं तथा बठै रा वाइस चान्सलर श्री ध्रुवजी, डॉ० सम्पूर्णानंदजी जैड़ा–शास्त्रियां सूं स्वामीजी आपरो वासतो वणा लियो हो। मा'मनां पं. मदनमोहन मालवीय जी सूं तो आपरी बीकाण निवास स्थान रै कारण ही आछी आबरू जाणकारी वणगी। हमैं श्री स्वामी जी सोणां लेख अर गीत लिखणै लाग्या।जकां ही विद्वानां इयां री रचनावां नै देखी–जोखी; अचरज सेती लूंठो लखदाद दियो। श्री स्वामी जी कासी में रैंवता थका आपरै मित्रां रै सहयोग में रळचा अर "प्रेमाश्रम" नांव री ऊंचै दरजै री (बीकानेरी छात्र समाज सूं) एक; हाथ सूं लिख्योड़ी पत्रिका निकाळणी पळाई। इयै पत्रिका में लामा–चौड़ा पाना सौ सूं ऊपर हुंता; जका प्राय: श्री स्वामी जी रै कर–कमलां री लिखाई, सजाई अर व्याकरण री गहराई सूं सुरंजित बणाया जांवता। पत्रिका में हिन्दी, संस्कृत राजस्थानी अर अंग्रेजी रा न्यारा-न्यारा अलायदा विभाग रैंवता। विस्वविद्यालय रा विद्यारथी नहीं; राजस्थान रा अनेकूं विद्वानां री रचनावां हो इयै पत्रिका में आंवती अर लिखी जांवती। श्री ध्रुवजी (वाइस चान्सलर) इयै पत्रिका नै देखर डाड़ा राजी हुया करता हा। सइकड़ां स्याणां साहित्यकारां पत्रिका नै सराई अर तमाम विद्वानां में राजस्थानी रो सम्माण वध्यो।

'अभ्यासाद् धार्यते विद्या' रै अनुसार स्वामीजी रै सुभाव में अेकांत गंभीरता रो ग्यान व्याप्यो। श्री स्वामीजी ई. सन् १९२५ में बी. अे. अर सन् १९२७ में संस्कृत, (अंग्रेजी रै शौख समेत) अेम. अे. में पास हुया। उवै समै संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस, अंग्रेजी, हिन्दी अर गुजराती, राजस्थानी इत्याद मोकळी भासावां रो अध्ययन–मनन आप निजू करड़ाई-दिढ़ता सूं करता। बंगाली, मराठी तथा मामूली जर्मनी भासा री जाणकारी तांई आप जा जम्या। विद्या प्रेम री विसाळता में सादै जीवण मांझै आप रा ऊंचा विचार वध्या; पण ऊल फैल फैशन में आप कदी नीं फंस्या। अगस्त ई. सन् १९२७ में बीकानेर राज्य री लेजिस्लेटिव असेम्बली रै दफ्तर में आप अनुवादक रो काम झाल्यो अर तीखी सूझ बूझ तथा सैंठै स्रम रै ताण करचो जितै आछो पार घाल्यो। राज री नौकरी करतां थकां आप प्राइवेट तरीके सूं हिन्दी में अेम. अे री परीक्षा दी अर आखै विस्वविद्यालय में प्रथम आया। पण ई. सन् १९२९ में आपरा परम मित्र श्री सूर्यकरण जी पारीक हिन्दी रा प्रोफेसर बणर पिलाणी जा पौंच्या अर उवां री जगां डूंगर कॉलेज में हिन्दी प्रोफेसर आप हूग्या। क्रिसन–रुकमणी री वेलि रो सम्पादण श्री सूर्यकरणजी पारीक अर ठा० रामसिंघजी करचो। आप उवै ग्रंथ में डिंगल सब्दां रो लूंठो कोस लिख्यो। वेलि रो यो सांगो संस्करण संयुक्त प्रांत री हिन्दुस्तानी अेकेडमी छाप्यो अर उवै री देस–विदेस रै विद्वानां घणी वातां सरावणा-बडायां करी। डॉ० सर जार्ज ग्रियर्सन तो अठै तांई कै: दियो के आज री भारतीय भासावां में अैड़ो बढ़िया ग्रंथ सम्पादण विरळो ही लाधै। उवै रै पछै तो आपरा मित्रां साथै राजस्थानी ग्रंथां रा मोकळा सम्पादण छप्या अर वै सगळा; विद्वानां में घणा आदरीज्या। ई. सन् १९३५ में आप त्रिमूर्ति (तीनुवां) रै संपादण री मोटी अर महत् कृति "ढोला मारू रा दूहा" कासी नागरी प्रचारिणी सभा सूं छापीजी। इयै री छापां–अखबारां अर दूर-दूर रै विद्वानां काफी सरावणा करी। श्री घनश्यामदास बिड़ला, श्री पूर्णचन्द नाहर, महामहोपाध्याय डॉ० श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, मिश्र बन्धु, श्री मदनमोहनजी मालवीय, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री आसुतोष मुकर्जी, श्री सुनीतिकुमार चादुर्ज्या आद विद्वानां तो 'ढोला मारू रा दूहा' पोथी री डाढी चोखी साबासी–सम्मत्यां छापी।

श्री स्वामी जी ई. सन् १९३४ रै वरस बिड़ला कॉलेज पिलाणी में पारीक जी रै खनै सस्कृत रा प्रोफेसर हुंता। जद इयां "राजस्थान रा दूहा, भाग पहलड़ो" नांव सूं आपरो भावपूर्ण संपादण करचो, जकै प्रकासण नै हिन्दी साहित्य सम्मेलन; राजपूतानै रो सब सूं स्रष्ठ ग्रंथ समझ्यो अर आप नै मानसिंघ पुरस्कार प्रदान करतां थकां संमाणित करचा। स्वांमी पिलाणी सूं उवै ही वरस पाछा बीकानेर आ हूग्या; कांरण-श्री डूंगर कॉलेज डिग्री कॉलेज वण्यो, जकै में आपनै महाराजा श्री गंगासिंघजी हिन्दी प्रोफेसर रै पद माथै ओठा बुला लिया।

श्री स्वामीजी रै भेळै करियोड़ै लोक साहित्य सूं "राजस्थान के लोक गीत"

नांव सूं राजस्थान रिसर्च सोसाइटी कलकत्ता गीतां रा केई मनोहारी ग्रंथ छाप्या। इयां में मित्रां रै रूप में पं० श्री मुरलीधरजी व्यास रो ही पूरो जूंट जोग मिल्यो। जकै दिनां संवत् १९९२ (सन् १९३५) में राजस्थान रिसर्च सोसायटी री तरफ सूं "राजस्थान" नांव रो अेक तिमाही छापो ऊपन्यो। यो दो ही वरस चाल्यो। आप वडै उछाव सूं उवै रो सैंजोग करचो। उवै नै दुवारा कढ़ाणै खातर पारीकजी अर आप भळे सिर संभायो अर विद्वानां रो परामर्स मंडल वणायो। आगीवाळ मानीता ओझाजी, मुनि जिनविजय जी, दीवान बहादुर हरविलास जी सारड़ा, श्री रघुवीरसिंघ जी, रेऊजी, बाबू क्षितिज मोहन सेन वगैरः सज्जन वण्या। पण पैलो अंक छापियो जिण सूं पैल्यां ही मंडळ रा मेढ़ी श्री पारीकजी वैकुंठवासी वणर दगो दे चाल्या। पछै स्वामीजी ही; साहित्य अर पत्र री सारी जिम्मेवारी किरतब रै नातै मित्र रै अभाव जोग में माथै ओढ़र पार लंघाई! आप रै सुरगवासी साथी री तेवड़योड़ी पोछड़ मनसां नै पूरी करणै री दिढ़ बात मन में बैठाली अर श्री शंभूदयाल जी सक्सेना अेवं अगरचन्दजी नाहटा नै संपादक वणायर "राजस्थान" पत्र चालू राखणै रो सारो काम करचो।

श्री स्वामीजी री ज्यादा रचनावां ठा० रामसिंघजी, सूर्यकरणजी पारीक अर दूसरा सोख्यां री भायप में लिखियोड़ी है। पण आपरी अळग छपियोड़ी पोथ्यां री कमी नहीं है। आप खुद रा संपादण-लेखण हेठै मांडचा जा रया है १. राजस्थान रा दूहा, २ राजियै रा दूहा, ३ वीर रस रा दूहा, ४. नरसीजी रो माहेरो (रतनै खाती वाळो) ५. रुकमणी मंगळ (पदम भगतवाळो), ६. बांकीदास री ख्यात, ७. अचलदास खीची री वचनिका, ८. संक्षिप्त राजस्थान व्याकरण, ९. राजस्थानी भाषा और साहित्य, १०. सरल अलंकार भाग १-२; (११) मीरां मंदाकिनी (समीक्षात्मक), १२. तुलसी सुधा, १३. सूर सुधा (समीक्षात्मक), १४. हिन्दी गद्य का समीक्षात्मक इतिहास, १५ बीकानेर के वीर, १६. अलंकार परिचय, १७. हिन्दीपद्य पारिजात।

मित्रां रै मेळजोळ में करिया संपादण- १. पृथ्वीराज रासो, २. डिंगल गीतों का संपादण, ३. ढोला मारू रा दूहा, ४. राजस्थानी कहावतां, ५. पृथ्वीराज राठौड़ ग्रंथावली, ६. जटमल ग्रंथावली, ७ राव जैतसी रौ छंद ८. राजस्थान के ग्राम गीत; ९. राजस्थान के लोक गीत वगैरा! हिन्दीं साहित्य जगत री भ्रांत धारणा, जो गोरा-बादळ री कथा बाबत वरसां सूं चालती-आपरै सही निर्णय सूं जाबक कट-मिटी!

इणां रै सवाय अपरी सोध-बोध वपरावणी भोतसी पाठ्य सामग्री छपियोड़ी है; जिण में सूं केई-अेक पोथ्यां बी० अे, अेम. अे०, इण्टर, हाई स्कूल, हायर

सैकेण्डरी, प्रभाकर, भूषण इत्याद परीक्षावां में पढ़ाइजी है।[1] महाराजा श्री गंगासिंघजी रै सुवर्ण महोत्सव माथै आप "सुवर्ण महोत्सव पाठमाळा" नांव री भांत-भंतीली रीडरां लिखी; उवै सारी महकमा तालीम राज्य श्री बीकानेर री तरफ सूं तमाम प्राथमिक पाठशालावां में पढ़ाई जांवती। आप रा विद्वता पूर्ण निवंध नागरी प्रचारणी पत्रिका, हिन्दुस्तानी, सरस्वतो, वीणा, राजस्थानी, राजस्थान भारती, मरु भारती, वरदा, शोध पत्रिका, मरुवाणी अर देस-परदेस री सोध संबंधी अन्य पत्र-पत्रिकावां, में वडै चाव सूं छपिया है। आप सदा मोटा पत्र-पत्रिकावां रै परामर्स मंडळ में अर प्रान्त रा आंखां साहित्य सम्मेलनां रै सभापति पद माथै सादर आसीन करचा जांवता हा।

ई० सन् १९४८ में स्वामीजी भासा, साहित्य, इतिहास अर कळा-सोध संबंधी "राजस्थानी" नांव री पत्रिका निबंध-माळा रूप में मुख्य संपादक रै आसण (राजस्थानी साहित्य परिषद कलकता) सूं निकाळी। इयै रै मोटै चार भागां रो मोल खाली दस रुपिया राख्यो; पण पत्रिका री प्रवृतियां, उद्देश्य अर समै (सैंगवस्त रूप) आपरी पूरी खेचळ सूं बंच-रंजणा वणिया। इतिहास रा निबंध तो उवै में नूंवै समाज वास्तै विग्यान विदवां (अणभै उदगार (फबता-ओपता प्रकासीज्या अर इसा गंभीर के उलपलियां रै पल्लै: कीं नीं पड़ै।

श्री स्वामीजी भासा सास्तर रा मरमी-धरमी रूड़ा साहित्यकार हा। राजस्थानी भासा-साहित्य रै उद्धार वेगी आप, रीज-पचर पुराणै कमतर-खोरसै खरो साहित्य किराणो-केवटचो हो।

ई० सन् १९३७ में डूंगर कॉलेज रै पैलोड़ै बैच (समूह) में श्री रावत सारस्वत, भरत व्यास, कानदान बारठ, चन्द्रसिंघ बीका, मक्खणसिंघ, श्रीनिवास दिनोदिया जैनारायण पारीक जैड़ा अनेकूं भावी साहित्यकार-विद्यारथी बी० ए० पढ़र कॉलेज सूं कढ़चा। तद हिन्दी-संस्कृत रा प्रोफेसर हुंता थकां आपरै दीक्षान्त भासण में उवां सूं गुरु दिखणा मांगीजी। सरब सिस्यां रै स्वीकार करणै माथै आप उवां सारां नै मातभासा राजस्थानी रै विगसाव सारू हीड़ो सूंप्यो। आगै जायर उवै चेला राजस्थानी रा चोखा सपूत, साहित्यकार वण्या। इण तरां आप डूंगर कॉलेज एवं बिड़ला कॉलेज रै अलावा महाराणा भूपाल कॉलेज (उदयपुर) रा वाइस प्रिंसिपल तथा वनस्थली विद्यापीठ रा हिन्दी प्रोफेसर ही रयोड़ा हा। आप जठै ही गया-मात भोम अर अर मातभासा री सनातन परम्परावां, आस्थावां मान्यतावां अेबं समस्त

---

१. सरल अलंकार भाग १-प्रकाशक-इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग सन् १९३९ पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर री हिन्दी परीक्षावां में लेखकरी प्राइवेट परीक्षारथ्यां ने पढ़ायेड़ी है।

राजस्थानी संस्कारां री बत्ताई ही वरतांवता रया । आपरा भणायेड़ा विद्यारथ्यां रो परीक्षा फळ अेक-दो साल रै सवाय बरोबर सत-प्रतिसत रैंवतो हो ।

पन्दरै वरसां रै पछै स्वामीजी री 'राजस्थानी साहित्य सभा बीकानेर' रो नांवो 'राजस्थानी साहित्य पीठ बीकानेर' में बदळ दियो गयो । पण राजस्थानी भासा अर साहित्य रै विसै में इयै संस्था; शोध रा बङा ठोस काज कर्‌या । स्वामीजी सदीव इयै रा साहित्य मंत्री रया; पण दूजा मुख्य कार्यकर्ता ठा. श्री रामसिंघजी, पं श्री विद्याधर जी शास्त्री, श्री दशरथजी शर्मा, श्री अगरचंद नाहटा, पं. श्री मुरलीधरजी व्यास, श्री दीनानाथ खत्री, श्रीराम निवास हा ीत, श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी, श्री रावत सारस्वत, श्री नाथूराम खड़गावत, श्री पूर्णमल गोयनका, श्री द्वारकाप्रसाद पुरोहित इत्याद सज्जन वण्या ।

स्वामीजी री राजस्थानी साहित्य-सेवा री अकरी लगन अर भरी मैणत विस्व प्रसिद्ध है, जकी यूरोप रा तकड़ा विद्वानां तकात; जी सूं सराई है । ठा० श्री रामसिघ जी अेम० अे० राजस्थानी साहित्य सम्मेलन रै प्रथम अधिवेशन में सभापति पद सूं बोलतां थकां स्वामीजी री ऊंची भावना नै वडी विस्तृत फैल्योड़ी बताई । डॉ. श्री ओझा तो आपरी विद्वता-योग्यता सूं घणी जिरियां गळगळा-राजी हुया हा । स्वामी जी आपरी सभारी मारफत गीत, बात, कैवतां, आड्यां, दूहा इत्याद सैंस प्रवाण, लोक साहित्य संग्रै कर्‌यो । भासा-साहित्य री खोज सारू पुराणा ग्रंथ भेळा घणा करिया तथा संभाळ राख्या । तस्बीरां, मूरत्यां, सिक्का अर सिलालेखां रा जूना उत्कीर्ण आंक ही बांचणा-प्रगासणा पळाया । गावां री बोल्यां रा नमूना. जात्यां रा इतिहास अर राजस्थानी रै कोस-व्याकरण री सोचना ही स्वामीजी ऊंडी सूझ भावना सूं बखतसर उत्तड़ वणी । आज राजस्थानी साहित्य रै कामां में बीकानेर आखै प्रदेस रो मेढ़ी मानीजै; इयै रो स्रेय श्री स्वामीजी अर उवां री सभा नै ही है । संग्रै रो घणखरो साहित्य-धन; आप सार्दूल राजस्थानी इन्स्टीट्यूट तथा अन्य संस्थावां नै दियो है जकां सूं आपरो नांव अमर रैंसी ।

राजस्थानी साहित्य पीठ सूं श्री सूर्यकरणजी पारीक री स्मृति में ग्रंथमाला रो प्रकासण हुयो । उवै में स्वामीजी रै प्रयास सूं "राजस्थान के ग्राम गीत" नांव री पोथी छपी । -'सस्ती राजस्थानी ग्रंथमाळ" नवयुग ग्रंथ कुटीर रा भी आप प्रधान संपादक हुंता । स्वामीजी आपरै सुरगीय पिताजी री स्मृति में "श्री जय श्रीराम स्वामी राजस्थानी ग्रंथ माळा" री थरपना करी अर बीकानेर री सारी साहित्यिक संस्थावां में आप पूरो भाग लेंवता । यो कोड आपनै बालपणै सूं ही हो के आप बाळहितकारिणी सभा संगठण में सभापति वण्या । वि.सं. १९९५ में श्री गुणप्रकाशक सज्जनालय रा आप सभापति हा । जुबली नागरी भंडार, सार्दूल राजस्थानी इन्स्टीट्यूट बीकानेर आद संस्थावां रा आप स्थायी स्तम्भ मानीजता । बारैं री संस्थावां में राजपूताना बोर्ड री

हिन्दी बोर्ड ऑफ स्टडीज; आगरा यूनिवर्सिटी री फैकेल्टी ऑफ आर्ट्स, आगरा यूनिवर्सिटी सीनेट इत्याद रा आप सदस्य हुंता । पण राजस्थान रा विस्वविद्यालय ही श्री स्वामी जी नै सदस्य बणाणै में लारी नी रया । परीक्षक तो स्वामीजी इयां रै सवाय हिन्दू विस्वविद्यालय; हिन्दी साहित्य सम्मेलन अर राजपूताना शिक्षा बोर्ड रा ही रैंवता आया हा । आपरी राज अर समाज में पूरो सन्माण हुंतो । बीकानेर दरबार आपरै सुवर्ण महोत्सव माथै श्री स्वामीजी नै सनद अर मेडल प्रदान कर्या ।

श्री स्वामीजी स्नातकोत्तर छात्र-छात्रावां रा विस्वविद्यालीय स्वीकृत सोध प्रवंध बड़ै प्रेम सूं संशोधन कर्या करता अर घणा नै आपरी घणमोळी गाइडेन्स सूं स्वीकृति दिलवाणै में ही समर्थ हुंता । श्री ब्रजमोहन जावलिया, शिवस्वरूप शर्मा, सत्यनारयण स्वामी तथा नानूराम संस्कर्ता इत्याद अनेकूं मेधावी साधकां आपरी गाइडेन्स सूं डाक्टरेट अर साहित्य महोपाध्याय री उपाधियां धारण करी हैं । डॉ० शर्मा रो "राजस्थानी गद्य का विकास" अर श्री संस्कर्ता रो "राजस्थानी लोक साहित्य' दोनूं सोध प्रबंध ग्रंथ आपरै पाण ही साहित्य जोग प्रकासमान हैं । संस्कर्ता रै तो पैलड़ै प्रकरतीकाव्य 'कळायण' री प्रस्तावना ही आप लिखी । जकैं री सुरूआत री अै: ओळ्यां—"राजस्थानी के साहित्य मंदिर में कळायण के कवि का स्वागत करते हुअे मुझे अत्यन्त हर्ष होता है । राजस्थानी साहित्याकारों का यह नवोदित नक्षत्र अपनी मधुरिम अेवं उज्ज्वल आभा से काव्य प्रदेश को आलोकित करने में समर्थ होगा ।" बांचणै सूं उवां रै जबर जस जोवण रो ठा लागै ।

श्री स्वामीजी भासा-साहित्य रै साथै समाज अर केड़े-कड़ूंवै (परवार) रै कामां में ही पूरा लोकप्रिय अर जागरुक हा । अेकरसै आप अखिल भारतीय रांकावत ब्राह्मण महासभा रै प्रथम सम्मेलन रा सम्माननीय सभापति चुणीज्या । यो सम्मेलन आसोज सुदी ११ सं० १९९७, तारीख ११-१०-५० रो जोधपुर नगर में हुयो । आप बुलावै सूरत सुधियां सात बजे रेल सूं जोधपुर नगर में हुयो । आप बुलावै सूरत सुधियां सात बजे रेल सूं जोधपुर पौच्या । बठै स्टेशन पर वडो भारी स्वागत हुयो अर स्टेशन सूं सैर मैं जुलस निकाळचो गयो । जुलस रै सागै नौबत, स्टेट बैंड तलवार अर पट्टे-बाजी रा खेल होंवता चाल्या । स्वागत सभा रा सदस्दय, प्रतिनिधि अर अन्य मोटा नागरिक लोग ही घणै उमाव सूं जुलस री सोभा बढ़ा रिया हा । सभापतिजी फूलमाळा सूं लाद दिया गया तथा चंवर ढुळांवता स्वयं सेवक सभापति नरोत्तमदास जी री जय बोलता गगन गुंजावता रया । जुलस स्टेशन सूं जसवंत साराय, जालोरी गेट; पछैं खांडे फळसै सूं गांछा बाजार गयो । मारग में मोकळी जायीच बहिनां चांदी रै थाळां में पूजा री सामग्री भर'र स्वामीजी रो तिलक वगैरा सूं स्वागत कियो अर मोत्यां रा हार पैराचा । कपड़ै बाजार, सरदार मार्केट जिसा मुख्य स्थानां सूं कढ़तो जुलस साढ़ी ग्यारह बजे सम्मेलन रै सुहणै पंडाळ में पौंच्यो । आप डायस माथै स्थान ग्रहण कियो, जद श्रीमती कौशल्या देवीजी आपरी आरती उतारी ।

सिझ्या आपश्री रो छपियोड़ो भासण हुयो। ऊगतै रोज भोत सारी सफली भूत कारवायां लार तीजै रोज विछो: री वेळा आ धमकी।[1] अभिनंदन-पत्र भेंट करणै रै साथै मा'सभा रो कार्यालय आप श्रीमानां नै सूंपीजियो। । रंगमंचीय खमत-खामणां रै पछै ताळियां री गड़गड़ाट सूं नारायणी देवी रो त्यार कियोड़ो मा' सभा रो पट्ट-आप नै पेरायो। सभा में अणोड़ा नगर रा अन्य कवि-लेखकां सभापति जी रै बारै में आप रा वण्यां विचार बताया। जोधपुर रा प्रसिद्ध चारण विद्वान बारठ श्री बदरीदानजी कविया (संपादक 'चारण') ठिकाणै रायपुर (मारवाड़) वाळा सम्मेलन री सफळता सारू सभापतिजी रो उणी वखत वणायर दूहो सुणायो —

"साहित्य सेवी प्राक्रमी, रांकावत गुण रास।
हियो प्रफुल्लित हो गयो, देख नरोत्तम दास ॥[2]

इण सभा में अखिल भारतीय चारण महासभा रा प्रधान मन्त्री श्री सुभकरण जी कविया अेम. अे०, अेल-अेल० बी० हाजर रया। पछै वरसां लग 'रांकावत ब्राह्मण' नांव री पत्रिका आपरी सुम्मत सला: सूं विगसी रयी। उवै में सभापति श्री नरोत्तम-दासजी री पल्लां वाळी धोती, बन्द गळै रो कोट अर मोठड़ा साफै समेत सीबी (तसबीर) सजी लखीजै। आप पत्र री सायता सारू चन्दो-चिठ्ठो ही बरोबर दिया करता।

स्वामीजी मौलिक सूझ बूझ अर कोमल विचारां रा लूंठा धणी हा। उवां' आपरै अनुज श्री पुरुषोत्तमदासजी री भणाई वेगी (अेम० अेस० सी० रै बाद) अमेरिका भेजण तांई में रुचि राखी। स्वयं रा तेलड़ा कुंवार अर आतमजोत धीवां आप सारीखा बापसा-बाप सूं भलै भाग-भरयां हैं। शिस्य-समुदाय में आपरी भणाई री सैंइकड़ूं शिक्षा-जोत-प्रतिभा पळकै; पण निरदेसण-लेवणियां शिक्षितां री कमी नहीं है।

श्री स्वामीजी रै स्नेही सुभाव री सैंस घटनावां चेतै है; पण लेखक रै साख-साथै उवां री उदात्त वरत्यूं री एक बात हेठैं लिखाई जा रयी है।

आपणै अठै सन् १९४८ ईस्वी तांई रेडिया वाजा घणा नीं वापरचा। रजवाड़ां तथा ठाया-ठाया धनवानां ही धारचा। ठेसण अेक दिल्ली हो। स्वामीजी नै रेडियै ठेसण दिल्लीवाळां भगती-रस रै भजनां-गीतां री समीक्षा बोलण खातर तीन दिन रै वडै समै सेती तेड़चा। स्वामीजी इण लाइणां रै लेखक नै साहित्य-समीक्षा रै बीच-बीचाळै उदाहरण-ओठां रा दूहा-भजन अर गीत बोलावण-गावण नै रेडियै माथै साथै लेग्या। उवां रा छांटयोड़ा अर रिकॉर्डिंग हुयोड़ा भजनां-गीतां रा दरसणी-नमूना नीचै दिया जा रया है —

(अ) १. पैली केस खिंचाविया, पछै वधायो चीर।
    २ माखण खायो चोर कर, सो सब लाग्यो ठोड़।

1.- गोत। २. इसा दूहा भळे वणाइज्या मोकळा पण स्वामीजी नीं चाया।

३. मिनियां मंजारी, अगन प्रजाळी ऊवरचा ।

४. जद मैं थानै जाणिया, राम गरीब-नवाज ।

(ब) १. फळ कैसे तोड़्या राजा सिवजी री वाड़ी ?

२. बनवारी हो लाल ! कोन्या थारै सारै !

३. अेक कोथलड़ी द्रव देश्यो विनायक ! लाडला रै बाप नै !

४. गौर-गिणगौर माता खोल किंवाड़ी ।

५. राम सा ऊभी ओ, पीरांजी ऊभी ओ रूणीचै दरबार; अेक करूं ओ-- धणियां ! वीनती !

६. दरस बिन दूखण लागा नैण !

(स) १. सांवरा ! किसै दिसावर न्हाटो ?

२. अेजी म्हांरा नटवर नागरिया !

३. थोड़ा धीमा हांको, नंदकुमार !

४. धीमा नहीं हांकां, राधे रुकमण नार ।

स्वामीजी रै पूजनीय आखरां रो फखत अेक खत, उवां री उदात्त भावना वतावण जोग जोड़्यो है, आप बांचर उणां री लायकी चितारज्यो—

बीकानेर

२१/७०

प्रिय नानूरामजी

आपको अेक पत्र गत सप्ताह दिया था । सम्भवतः नहीं मिला । आप अेक बार यहां पुरन्त आ सकें तो उत्तम । मैं आपको दिल्ली रेडियो में साथ ले जाना चाहता हूं । दिल्ली को २७ को चलेंगे तथा ३१ को लौटेंगे । आप दो दिन पहले आ सकें तो उत्तम । शनिवार की संध्या को यहां आ जाइये ।

स्नेही

नरोत्तमदास स्वामी

पूजनीय गुरुवर श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ७६ वरसां री ओसथ्या लेकर ई० सन् १९८१ री १३ अगस्त नै साधारण अस्वस्थता सूं सुरगवास सिधार गियाजी; पण उणां री गुणां चांदणी-भावना, फळां लदी सी रूंख लुळताई; हिंवाळौ सो मिळण-हरख अर वाय लैरकां जिसा गतिवाण सब्द काज, आज हा भासा-साहित्य में सक्कर-घी रै मिलियोड़ै सुवाद मीठास ज्यूं लाधै-साधै ! म्हांरी ओळगी आंख्यां आचार्य पर-वर श्री स्वामीजी रै राजस्थानी-सूर दीदार नै हम्मैं कदे नी देख सकैली; पण उवां रै व्याकरण-खेत में विखरयोड़ी मिस्ठ-महक रा वेथाग आणंद तो म्हारा निंवता नाक ऊन्नै-बुन्नै तांक-झांक लेता ही रेसी । "विद्वांसो हि देवाः !" विद्वान लोग ही देवता हुवै ।

—लोक-साहित्य प्रतिष्ठान

पो० कालू (बीकानेर) राजस्थान

अथक सरजण साधना अर निरमळ मनस्विता रा धणी

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी

डॉ० नरेन्द्र भानावत

आधुनिक राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै इतिहास में श्री नरोत्तमदास स्वामी आपणी खासियत राखै। स्वामी जी पुराणा राजस्थानी साहित्य रा अनमोल ग्रन्थां रो समुद्धार कियो अर राजस्थानी नै ऊंची कक्षावां में पढ़ाण-लिखाण खातर पुख्ती जमी तय्यार कीवी। पाठचपुस्तकां बणाई अर हिन्दी रै पाठचक्रमां में राजस्थानी रो अंश जोड़ण रो ऐतिहासिक कार्य कियो। राजस्थानी साहित्य, भाषा अर संस्कृति रै समुद्धार, विकास अर पुनरुत्थान में स्वामीजी आपणो पूरो जीवन समर्पित कर दियो। १३ अगस्त १९८१ रै दिन स्वामीजी सुरगवासी हुया। वां रो पार्थिव शरीर अबै आपां सामे नीं है पण राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति रै प्रतिष्ठापण रो जो अभियान वां छेड़चो, वींरी धड़कण अर स्फुरणा आज भी प्राणवन्त है।

यूं स्वामीजी कर्म सूं अध्यापक हा पण जीवण सूं सन्त-साधक हा। जद मूं आठवीं कक्षा में पढतो हो तद स्वामीजी रै नाम सूं परिचय हुयो वांरी अलंकार री एक पोथी रै माध्यम सूं। वां दिनां हिन्दी री किताब में नरोत्तमदास रो 'सुदामा-चरित' पण मां पढ़ता हा। मूं दोनूं नरोत्तम दास नै एक समझतो रह्यो। इतिहास री आ भूल अर भ्रांति म्हारी बेगी सीक हटगी पण नरोत्तमदास स्वामी नै देखण अर वांसूं मिलण री आस बराबर मन में पलती री। जद डूंगर कॉलेज बीकानेर में मै थर्ड इअर में एडमीशन लियो तद म्हांरी आ आस पूरण हुई।

टाबर पणां में जद कोई जै साधु-महात्मा म्हांरे गांव में आवता, मां वांनै स्वामी जी कैवता। स्वामीजी सबद रो म्हारे हृदय-पटळ पर विरक्त साधु रो जो अरथ जम्योड़ो हो, वो स्वामी जी री वेशभूषा देखर एक बारगी उखड़ग्यो, क्यूं कै मैं स्वामी जी रै रूप में देख्यो एक दुबरो-पतरो सरीर, ज्यांरा पगां में पम्पशू, माथा पै हैट अर डील ढोल पेण्ट-कोट सूं सज्योड़ो। आंख्यां पर चसमो अर चहरै पर ज्ञान-गांभीर्य। आवाज में धीमोपन। नीं कांई चमत्कार अर न कांई रोब। पण स्वामीजी री आ झळक

कॉलेज में घणा दिनां तांई देखण नै नीं मिली । वां रो तबादळो महाराणा भूपाळ कॉलेज, उदयपुर में हुई ग्यो ।

छात्र-जीवन में मनै स्वामी जी सूं पढ़ण रो खास मौको नीं मिल्यो पण एम. ए. करणै बाद मनै वां रे निर्देशन में पी. एच. डी. उपाधि रै खातर रिसर्चकरण रो सुयोग मिल्यो । स्वामीजीजी री विद्वत्ता, अनवरत अध्ययन-शीलता अर पाण्डित्य सूं तो मूं वाकिब हो ही पण वां रै सान्निध्य में रेवण सूं वां रै व्यक्तित्व री कई विशेषतावां धीरे-धीरे परगट हुई ।

स्वामीजी जद कॉलेज में आवता तद पेण्ट-कोट अर हैट में आवता पण आ वांरी सांची वेशभूषा नीं ही । अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति रे तौर–तरीका सूं गठजोड़ रूप में इज स्वामीजी दिन में थोड़ी देर खातर आ ड्रेस ओढ़ता । यूं बांरी सहज, सरळ ड्रेस ही धोती-कुरतो । स्वामी जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई । वां नै आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अर डॉ. श्यामसुन्दर दास जेड़ा गुरु मिल्या । ऐ दोनों पण अंग्रेजी वेशभूषा में रैवता । हो सकै स्वामीजी पर अंग्रेजी वेशभूषा रो प्रभाव बनारस रै ई वातावरण सूं पड़चो पण मौलिक रूप में स्वामी जी भारतीय परम्परावां रा सन्त हा । सन्तां री सरलता, निस्पृहता अर निस्संगत स्वामीजी रै व्यक्तित्व में पूरी भरचोड़ी ही । ज्ञान वांरै खातर दुनियांदारी, चालाकी अर वक्रता रो नाम नी हो । ज्ञान ने वां प्रज्ञा में ढाल'र चरित्र रो अंग बणायो हो । अध्ययन नै वां स्वाध्याय रो रूप दियो हो । जद-जद मैं वांरै घरे गयो तद-तद मैं देख्यो कि वी नीं तो गप-शप लगाय रह्या है, नीं तथाकथित 'चमचा' सूं घिर्योड़ा है, नीं प्रमाद में सोयोड़ा है । वी सतत जागरूक रैवता । वांरै चारूंमेर ज्ञानसाधक किताबां पड़ी रैवतीं । किताबां ही वांरी अन्तरंग–मित्र ही । वी बोलता तो किताबां सूं, हंसता-मुळकता तो किताबां सूं रोवता-गावता तो किताबां सूं । वांनै सैर-सपाटा, पिकनिक, देसाटन रो शौक नीं हो । न किणी तरह रो व्यसन हो । व्यसन हो तो एक हीज-लिखण-पढ़ण रो ।

स्वामीजी री आ सरळता वांरै पूरे जीवण–व्यवहार में झळकती । राजकीय सेवासूं रिटायर हुवण रै पछै जद स्वामीजी वनस्थळी विद्यापीठ सें काम करण लागा तद विश्वविद्यालय री बैठकां में कई बार जयपुर आया । म्हांरै आग्रह सूं वे म्हांरै सागे ठहरता । बैठक में भाग लेण रे बाद या तो वी सीधा म्हारै घरै आ जावता या सीधा चौड़ा रास्ता में स्थित किताबां री दुकानां पर जावता । नूंई-नूंई किताबां देखण अर पढ़ण रो वांनै शौक हो । वी पुरातन भाषा अर साहित्य री किताबां हीज नीं पढ़ता-खरीदता, आधुनिक भाषा–साहित्य अर ज्ञान–विज्ञान री नूंवी नूंवी किताबां अर पत्र-पत्रिकावां पढ़ण में भी वीं इत्तोही रस लेना जित्तो पुरातन साहित्य री पढ़ण में । मैं देख्यो के वी मनोरमा, माया जैड़ी कहाण्यां री पत्रिकावां भी पढ़ता अर लोट–पोट, चंदामामा, बालभारती, पराग जैड़ी बाल-पत्रिकावां भी । धरम, अध्यातम रा ग्रंथ पण

वी मनोयोग सूं पढ़ता । किताबां नैं वी घणी सार-संभाळ सूं राखता । सगळा पै पुट्ठो चढ़ावता अर विषय-वार करीने सूं सजाय राखता । वानैं टेबल-कुर्सी पर बैठ'र पढण री आदत कम ही । ज्यादातर टेम वी खाट पर दो तकिया लगा'र आराम सूं बैठ'र या लेट'र पढ़ता ।

स्वामीजी री सरळता वांनैं निरमळ, निस्संग अर निस्पृही बणाई दियो । वांरो जीवन अर व्यवहार निरमळ हो । वी किणी मे उलझता नीं हा । नीं वांरी कोई पार्टीबन्दी ही । पद अर प्रभुता सूं वी दूर रैवता । कॉलेज में प्रिंसिपल बनण री बारी आई तो वां मना कर दियो । स्वामीजी एकांत ज्ञान-साधक हा । म्हांरै घरै वी कई बार ठहरचा पण कदेई वांरी मौजूदगी रो अहसास नीं हुयो । आपणी ओर सूं चला'र वी कोई बात नीं करता । नीं किणी चीज वास्तै कैवता । बड़ा-बूढ़ा अर टाबर-टींगर जद कदेई वांरै नेड़ा जावता तद भी वीं चला'र कांई नीं पूछता । आपो आप में वी मस्त रैवता । जद कोई वांरै कनै जा'र बात करतो तो वी चुपचाप सुण लेता, खास प्रतिक्रिया नीं करता । कोई बात कैवण री हुवती तो दो टूक सबदां में बोल देवता । वो मित-भाषी हा । बात मांय सूं बात निकाळण री वांरी आदत नीं ही । खावण रै टैम पर सीधो सादो खाणो खाय लैवता । वांरी कोई खास नाराजगी–पसंदगी नीं ही ।

स्वामी जी री सरळता अर निर्मळता वांरी लिखावट में खूब झळकती । वांरा आखर मोती जैड़ा चमकता । अंग्रेजी में आखर नै *Character* कैवै है । स्वामीजी रै आखर री सरळता अर निरमळता वांरै गुण, स्वभाव री परिणति ही अथवा वांरै स्वभाव अर गुण री सरळता-निरमळता आखर में प्रतिष्ठापित हुई, यो कैणो मुश्किल है ।

संक्षिप्तता स्वामीजी रै व्यक्तित्व अर कृतित्व री मूळ खासियत ही । जीवन में वांनैं हाय-हाय नीं ही । वी निस्संग–वृत्ति सूं रेवता । मितभाषी अर मितव्ययी तो वी हाहीज, लिखण-पढ़ण में भी वी सामासिक–संक्षिप्त हा । फिजूल विस्तार वांनै पसंद नीं हो । वांरी भाषा छोटा-छोटा वाक्यां सूं सोभती । कक्षा में जद वी पढावता तो कविता रै एक-एक सबद रो स्पष्ट अरथ करता । संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि पुरातन भासावां रा वी पण्डित हा । इं कारण वांसूं पुराणी कवितावां रा अरथ प्रामाणिक अर सही संदर्भां में होवता । बिगर तय्यारी वी कदेई क्लास में नीं जावता । जो किताब वी पढ़ावता, आपणै ढंग सूं वांरा पूरा अरथ अर नोट पैल्यां बणाय राखता । पढ़ावती बगत वांनै सामै राखता । 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' अर 'वीर सतसई' रा अरथ अर नोट्स बाद में जा'र पुस्तक रूप में छप्या । कबीर रीं साखियां अर 'ढोला मारू रा दूहा' रा अरथ अर नोट्स भी वी तय्यार कर राख्या हा । वांनै छपावण री योजना भी ही । पुरातन भासावां रै सागै-सागै वांनै आधुनिक भारतीय भासावां अर विदेशी भाषावां–जर्मन, फ्रैंच, रूसी रो भी ज्ञान हो । जद वी भाषा–

विज्ञान पढ़ावता तो केई भासावां रा एकै साथै उदाहरण देवता। व्याकरण, काव्य-शास्त्र, छन्द शास्त्र अर भाषा शास्त्र रा वी अप्रतिम विद्वान् हा। इण विषयां रै रूखेपन नै वी सरस बणाय नै राखता अर दुर्बोधता नै सुबोधता में परिणत कर देवता।

स्वामीजी री हिन्दी रै आदि काळ अर रासो सूं सम्बन्धित मान्यतावां रो घणो आदर हो। राजस्थानी साहित्य री कई छिप्योड़ी विशेषतावां अर विधावां नै वी आप रे शोध लेखां में प्रगट करी। जैन साहित्य अर साहित्यकारां सूं स्वामीजी घणा प्रभावित हा। वी बार-बार कैवता-भाषा अर साहित्य री लोक चेतना अर लोक संस्कृति री रखवाली जैन विद्वानां अर जैन भंडारां कीवी है। राजस्थानी साहित्य अर हिन्दी साहित्य रो प्रारंभिक अर मध्यकालीन इतिहास जैन साहित्य अर साहित्यकारां बिगर अधूरो अर अप्रामाणिक है। वी बार-बार मनै केवता अर लिखता कि मूं जैन साहित्य रो पूरो उपयोग कर राजस्थानी साहित्य रो प्रामाणिक बृहद इतिहास लिखूं। आप रै २२-२-८० रै पत्र में स्वामीजी मनै लिख्यो "मेरी यह भी एक बड़ी इच्छा है कि राजस्थानी साहित्य का एक अच्छा इतिहास अब तैयार हो ही जाना चाहिये अतः मैं आप से अभ्यर्थना करूंगा कि आप इसी को अपनी डी. लिट् का विषय बनावें।" स्वामीजी नै इं बात पै दुःख हो कि आज हिन्दी में रिसर्च रो स्तर घट रह्यो है। वीं में अनुसंधान रो तत्त्व कम हो'र आलोचना रो तत्त्व प्रधान बण गयो है। वां री मान्यता ही कै रिसर्च में नूंवा-नूवां तथ्यां रो उद्घाटन तथा अज्ञान साहित्य रो प्रकासण हुणो चाहिजे। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास लेखण रै सरूप पै आपरा विचार २२-२-८० रै पत्र में स्वामीजी यूं प्रगट कर्‌या-"इस काम को करने के लिए मुझे इस समय दो ही व्यक्ति उपयुक्त दिखाई पड़ते हैं-नाहटा जी और आप ···· ··इस विषय की नाहटा जी की जानकारी बहुत विशाल और गहन है। हमें उनकी इस जानकारी का अभी लाभ उठा लेना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि वह उनके साथ ही चली जाये। साहित्य का इतिहास दो प्रकार का होता है—परिचयात्मक और आलोचनात्मक। पहला दूसरे का आधार होता है, उसके बिना दूसरा नहीं लिखा जा सकता। आलोचनात्मक इतिहास लिखने वाला निकट भविष्य में तो क्या, दूर भविष्य में भी मिलना सम्भव नहीं होगा।"

कास, स्वामीजी रै इतिहास रै इंण दरद नै आपां महसूस कर सकां अर बढ़ सकां इण रे उपचार खातर।

स्वामीजी राजस्थानी भाषा नै संविधान री भाषा रै रूप में प्रतिष्ठित अर मान्य देखणी चावता हा। वांनै इं बात पर तो सन्तोष हो कै राजस्थानी, बोर्ड अर विश्वविद्यालयां रै पाठ्यक्रमां में आय री है पण वांरी मान्यता ही कै इंरो पंचायती स्तर पर राज काज में व्यवहार हुणो चाहिजै। वांनै इं बात री पीड़ा ही कै राजस्थान रा लोग दूजा प्रदेसां में जा'र वणज व्यापार तो खूब चमकायो है पण आप री मायड़

भाषा खातर ठोस काम नीं कर रह्या है। जो राजस्थान देस रै औद्योगिक-प्रतिष्ठानां पर वर्चस्व राखै वो मायड़ भाषा में एक दैनिक अखबार भी नीं चलाय सकै तो क्या कहीजै ? स्वामीजी की आ पीड़ा आज भी पीड़ा बणी थकी है।

स्वामीजी रो व्यक्तित्व जित्तो सरळ, शुद्ध अर निस्पृही हो उत्तो ही कर्मठ अर संवेदनशील भी। वी दिन-रात अध्ययन-अध्यापन अर अनुसंधान में हीज लाग्या रैवता। छात्रां नै स्कूल-कॉलेजां में आछी पाठ्य पुस्तकाँ पढण नै मिलै, इं भावसूं वां संस्कृत, हिन्दी अर राजस्थानी में घणखरी पाठ्य पुस्तकां तय्यार कीवी। राजस्थान, मध्यप्रदेश अर उत्तरप्रदेश में स्वामीजी री कई पाठ्य-पुस्तकां अबार भी चालै है। स्वामी जी री कर्मठता रो एक पक्ष वांरो पद यात्रा है। वांनै पैदल चालण में घणो आनन्द आवतो। जद वी बीकानेर में हा, पावर-हाऊस रे कनै स्थित आपरै घर सूं डूंगर कॉलेज तांई पैदल आवता। जद-जद वी जयपुर में आर म्हांरै घर तिळकनगर में ठहरता तो तिळकनगर सूं चौड़ा रास्ता तांई पैदल आवता-जावता। सरीर सूं दुबळा हुवता थकां भी वी मन सूं घणा सबळ हा। वांरी चाल में घणी तेजी हुवती, युवकोचित उमंग हुवती। जद कदेई वांरे सागे चालणो पड़तो तो दौड़'र साथ करणो पड़तो। स्वामीजी री कर्मठता आत्मानुशासन सूं मण्डित ही। वांनै बाहरी तड़क-भड़क पसंद नीं ही। बी आत्मा रै सौंदर्य पर मुग्ध हा। एकदा परभाते उठ'र वी 'सेव' करण लागा। मैं वांरै सामै दरपण ला'र राख्यो। स्वामीजी बोल्या-इं री कांई जरूरत ? मैं तो बिगर दरपण देख्यां ही शेव करूं हूं। म्हांरा हाथ सध्योड़ा है।

स्वामीजी सगळी परिस्थितियां में निर्द्वन्द्व ही रैवता। मौन-वृत्ति वांनै सुख-दु:ख में तटस्थ राखती। पर कदा-कदा वांरो संवेदनशील मन खुशी सूं नाच उठतो। डॉ० लक्ष्मीकमल नै स्वामीजी आप री लाडली बेटी ज्यूं दु:ख-दुविधा में थावस अर सहारो दियो। जद वी री पी. एच. डी. री मौखिक-परीक्षा ही अर वी नै डिग्री मिलगी तद स्वामीजी बीकानेर सूं आया। म्हारे घरां ठहर्‌या। आपणै सागै वी बीकानेर सूं भुजिया अर मिसरी लाया। खुशी रै उमावां में स्वामी जी घरां रै सब सदस्यां नै मिसरी बांटी। वीं दिन मैं देख्यो-स्वामीजी रो उछाह-उल्लास, वांरो आत्मीयता पूर्ण नेह-वर्सण अर ज्ञान-गांभीर्य सूं आवरित सुप्रसन्न वदन।

स्वामीजी नित-नियम अर कानून-कायदा सूं चालता हा। चिट्ठी रो पडूतर टेमसर देवता। घणकरी चिट्ठयों में दो टूक जवाब होवतो पण कदै-कदै लाम्बी चिट्ठयां पण लिखता। किणी समस्या पर आपणा विचार खुल'र देवता। परिवार रै सदस्यां रै बारे में कोई खास बात नीं पूछता, नीं लिखता। पण स्वामीजी री जो आखरी चिट्ठी मनै २५-७-८१ री वांरै सुरगवास होणै सूं १९ दिनां पैल्यां मिली, स्वामीजी मनै राजस्थान साहित्य अकादमी री संचालिका रो सदस्य हुवण खातर बधाई दीवी अर लिख्यो—"बच्चे अब तो बहुत बड़े हो गये हैं। आजकल क्या करते हैं ?" इंण पंक्ति सूं म्हां रै प्रति स्वामीजी री आत्मीयता रो विशेष स्नेह भाव प्रगट

हुयो अर मैं वांनै लिख्यो कै संजीव नसीराबाद में हिन्दी रो लेक्चरर हुईग्यो है अर राजीव करनाल में डेयरी सांइस कॉलेज में फाइनल ईअर में पढ़ै है। इंणीज चिट्ठी में स्वामीजी जयपुर में हुयोड़ी अतिवृष्टि सूं जान-माल रै नुकसाण पर हमदर्दी भी प्रकट कीवी। सांचेई स्वामीजी निर्झरयुक्त भूधर हा। वांरी निःसंगता अर निस्पृहता में सदाशयता अर आत्मीयता रम्योड़ी ही।

पैंदल चालण में स्वामीजी जित्ता चुस्त अर मुस्तैद हा, जात्रा करण में उत्ता ही शिथिल अर संकोची हा। जद भी वी बीकानेर सूं जयपुर आवता वांरै सागे कोई न कोई हूतो। लारलै बरस राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, बीकानेर री तरफ सूं जैसलमेर में राजस्थानी लेखकां रो बृहद् सम्मेलन आयोजित हुयो हो, वीं मैं स्वामीजी भेळा हुआ हा। ईं सम्मेलन में स्वामीजी रै सागे २–३ दिन रैवण रो मौको मिल्यो। इं रे बाद स्वामीजी रा दरसण नीं हुया। जैसलमेर में नूंवी पीढ़ी रा घणकरा राजस्थानी लेखक, कवि अर नाटककार आया हा। ऊंण मौके राजस्थानी पौथियां, पत्र-पत्रिकांवां अर चित्रकळा री आछी प्रदर्शनी लागी ही। स्वामीजी नूंवा लेखकां सूं मिल'र अर प्रदर्शनी देख'र घणा खुश हुया। वी म्हांरै सागे लोद्रवा भी चाल्या। जैन मन्दिर, जैसलमेर रो ग्रंथ-भण्डार अर किलो देख'र भी वी आनन्दित हुया। वां लेखकां नै आ बात जोर–देर कही के वांनै ललित साहित्य रै अलावा ज्ञान-विज्ञान री बातां राजस्थानी गद्य में प्रगट करणी चाहिजै। गद्य जित्तो तेजी सूं बदेला, राजस्थान भाषा समृद्ध अर प्रतिष्ठित होसी।

स्वामीजी घणकरी साहित्यिक संस्थावांसूं जुड़्योड़ा हा। बरसां तांई वी भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर रा कुलपति रह्या। सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट बीकानेर री थरपना में भी वांरों विशेष योगदान रह्यो। राजस्थान भारती, राजस्थानी, शोध–पत्रिका, वरदा, मरु–भारती, जागती–जोत आदि घणकरी पत्र-पत्रिकांवां रा सम्पादक अर सम्पादक मण्डल रा वी सदस्य रह्या। राजकीय सेवासूं रिटायर हुवण बाद वांरी इच्छा राजस्थानी ज्ञानपीठ नाम सूं एक संस्था बणावण री ही। राजस्थानी में एक माहावारी छापो निकालण री भी वां योजना बणाई ही। पण दूजा दूजा कामां में व्यस्त रेवण सूं ऐ दोन्यूं काम स्वामीजी पूरा नीं कर सक्या। वांरे प्रति सांची श्रद्धान्जलि आईज है कै आपां सब मिल–जुट'र राजस्थानी भाषा. साहित्य अर संस्कृति रै रक्षण अर संवर्द्धन री दिशा में ठोस काम करां, अठारी छिप्योड़ी प्रतिभावां नै उजागर करां, अर ज्ञान–भण्डारां में बन्द पड़्या ग्रन्थ-रत्नां नै प्रकाश में लावां।

श्री शिवचन्द भरतिया आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा भारतेन्दु हा। वां राजस्थानी नै जागरण रो नूंवो स्वर दियो, नूंवी विधावां दी। वारै बाद श्री सूर्यकरण पारीक, ठाकुर रामसिंह अर श्री नरोत्तमदास स्वामी री त्रिमूर्ति राजस्थानी साहित्य रै समुद्धार में निस्वार्थ भाव सूं प्रवृत्त हुई। स्वामीजी इंरी आखरी कड़ी हा। आंरै सागै राजस्थानी रो एक जुग ही खपग्यो। वांरी अथक सरजण साधना अर निरमळ मनस्विता नै कोटि-कोटि वन्दण अरचण।

—सी-२३५ ए तिलकनगर, जयपुर–३०२००४

नूंवा पाणिनी स्वामी नरोत्तमदासजी

मूलचन्द "प्राणेश,'

स्वामी जी श्री नरोत्तमदासजी नै उणांरै सर्जन नै देखतां नूंवा पाणिनी रै नांव सूं बतळाया जावै तो कोई अणओपती बात कोनी। स्वामीजी संपादन, समालोचन, अर भणावण-पढावण में जितरी रुचि लेवता, उण सूं बत्ती रुचि 'सबद-साधना' में लिया करता। म्हारो खुद रो व्हालो विषय पण 'सबद-संधान' रैयो है। विद्यार्थी-जीवण रै मौकै जद स्वामीजी सूं सैं पैलड़ी भेंट हुई तद पण म्हारो प्रश्न सबदां रै उच्चारण में पड़ियो फोर-बदळ हो, जिकैं रो समाधान उणां आपरी जाणकारी मुजब करियो। ता बाद म्हारै 'शोध प्रतिष्ठान' आवण रै बाद तो अठवाड़िया–गोठ में स्वामीजी री सत्संग रो लाभ मिळतो ही रैवतो। वै काया सूं जितरा दूबळा हा, ज्ञान में उतरा ही सजोरा। बोलता बिलकुल कम, पण जितरो बोलता, उतरो वेद वाक्यां सूं कम प्रामाणिक नहीं हुया करतो। उणां नै आपरी कमजोरी अथवा अणजाणकारी स्वीकारतां नै कदै ही सरम नहीं आई। डा० माताप्रसादजी रै "ढोलामारू रा दूहा" ऊपर 'सबद-चर्चा' संबंधी लेख रो जबाब तैयार करती वेळा म्हनै डर लाग्यो कै इतरी तीखी आलोचना सूं कठै ही स्वामीजी नाराज न हुय जावै। कारण कै उण लेख में जिकै सबदां ऊपर चर्चा हुई, उणां रो सही अरथाव स्वामीजी नै पण नहीं आयो अर डा० माताप्रसादजी तो राजस्थानी रै बारै में जाणता हीज कांई ? फकत 'पाइअसदमहण्णव' रै सहारै ध्वनिसाम्य' रै आधार ऊपर सबदां रो अरथ करता, जिको चावै प्रसंग सूं मेळ खावो अथवा नही वै तो फकत "तेली रे तेली थारै सिर पर घाणी" आळी दांई" तुक मिळै अथवा नहीं, भारां तो मरसी" कैवत नै खरी उतार देवता।

हूं लेख तैयार कर परोर सीधो स्वामीजी रै घरै गयो। उण लेखनै वै घणी ताळ तांई गैरी मींट सूं देखता रैया। म्हारो अंदाज बिलकुल भूठो साबत हुयो। स्वामीजी नाराज हुवणै री जाग्या प्रसन्न हुया अर म्हनै साबासी सी देवता बोल्या— म्हांरै जमानै में तो राजस्थानी रै साहित्य री बात सुणर लोग ठठ्ठा करता कै आ भी भळै कोई भाषा है ! अर आजरी थिति न्यारी है। आज तो इण भाषा नै संवैधानिक मान्यता दिरावण में लोग तावड़-तोड़ लाग्योड़ा है। म्हनै खुशी है कै आप जैहड़ा नवयुवक इण भाषा नै ऊंची उठावण में लाग्योड़ा हो।"

पण केई वार स्वामीजी आपरै निर्णय ऊपर इतरा करड़ा रैवता कै "भाग भलां ही ज्यावो, लुळनै रो नाम तकांत नहीं लेवता।' वीरसतसई में एक जाग्या "भड़ खाणी" सबद रो प्रयोग हुयो है। सगळै टीकाकारां इणरो अरथ "डाकण" अथवा "सुभटों का खाने वाली" कियो है। प्रसंग नै देखतां अर परिस्थितियां री ओळखाण करतां औ अरथ म्हारै हिड़दै में नहीं ढूक्यो। कारण कै "डाकण" नै आवतां देख-सुणर लोग डरै, पण प्रसंग में डरण री जाग्यां प्रोत्साहित हुवणै रो लेख है तद म्हैं अरथ प्रस्तावित करचो कै औ "भड़खाणी" सबद "सुभट-कथा" अरथ प्रकट करै है अर सुभट अथवा बीरचरित नै सुणर लोग प्रोत्साहित हुवै। साथै ही कवि री मातृभाषा में 'क' रो विपर्य 'ख' हुवै। पण सप्रमाण सिद्ध करणै रै उपरांत भी स्वामीजी इण अरथ नै अंगीकार नहीं करियो अर "डाकण" अरथ रो समर्थन करता रैया।

स्वामीजी फकत राजस्थानी भाषा रा जाणकार ही नहीं हुता, इणरै परबारू-संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश इत्यादि पुराणी भाषावां अर गुजराती, मराठी, पंजाबी, अंग्रेजी फ्रेंच इत्यादि प्रादेशिक भाषावां रा पण जाणकार हा फकत एक ही भाषा नै जाणणियो विद्वान इण भाषा री खामियां तथा विशेषतावां नैं नहीं समझ सकै अर "राजस्थानी भाषा रै सांगोपांग अध्ययन सारू-संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ठ इत्यादि प्राचीन तथा पंजाबी, गुजराती, मराठी, बंग्ला इत्यादि प्रादेशिक भाषावां रो जाणनो बहुत जरूरी है। 'रणमल्ल छंद' में "पुण मेच्छ न आपूं चास किमइ" अर्द्धाली में 'चास' सबद रो प्रयोग हुयो है। "चास वास देखो" मुहावरो भी बोल चाल में आवै। पण इणरो सही अरथाव मिळै बंगाली-भाषा रै सबद "चासा" में। 'चासा' मनै 'किसाण' तद 'चासा' अरथ हुयो 'भूमि' जिकी ऊपर करसण हुवै। इण हीं तरै अनेक ऐहड़ा सबद-प्रयोग राजस्थानी में देखण में आवै, जिकां रो सही अरथाव प्राचीन अर प्रादेशिक भासावां रै जाण्यां बिना नहीं मिळ सकै।

स्वामीजी आपरै स्वाध्याय रै बळ ऊपर अनेक पुराणी अर नवी भाषावां रो ज्ञान करियो अर उण ज्ञान रै परताप राजस्थानी भाषा नै सजाई-संवारी। 'राजस्थानी व्याकरण' स्वामीजी री एक ऐहड़ी कृति है, जिकै रै आधार ऊपर जुग जुगां तांई राजस्थानी साहित्य रो संवर्द्धन अर सही मूल्यांकन हुवतो रैसी।

राजस्थानी भाषा रै विद्वानां स्वामीजी सूं पैला आपरी व्याकरणां प्रकाशित करी। आपरी जाग्यां उणांरो भी महत्त्व है, पण जिका दीठ स्वामीजी री व्याकरण में मिळै, वा बीजी व्याकरणां में नहीं। इण रो सीधो सो कारण स्वामीजी रो अनेक भाषावां रो जाणणो है। उणां विशेष कर गुजराती व्याकरण नै आपरी व्याकरण रो आधार बणायो दीखै है। गुजराती अर राजस्थानी भाषावां सत्रहवीं शताब्दी तांई एक हीज ही ता बाद आपू आपरी प्रादेशिक विशेषतावां नै लेयर जुदी हुई। पण व्याकरण लिखणै में जिकी-जिकी समस्यावां गुजराती व्याकरणकारां रै सामी आवै

ठीक वै री वै राजस्थानी व्याकरणकारां रै सामी आवै। स्वामीजी राजस्थानी-व्याकरण लिखती वेळा आपसूं पैलड़ै व्याकरणकारां रै ज्ञान सूं लाभ तो उठायो पण आपरै विवेकनै नहीं छोड्यो। गुजराती भाषा री सगळी समस्यावां रो "जोड़णी कोश" समाधान कर दियो। प्राचीन लेखकां (प्रतिलिपिकारां) री आपरी एक स्वकल्पित लिपि परंपरा ही। चावै लिखावट उच्चारण सूं मेळ खावै अथवा नहीं इण बात री परवाह कियां बिनां व तो लिखता रैया। उणांरी मोटा मोटी परंपरा—ह्रस्व तथा दीर्घ 'इकार' नै 'दीर्घ इकार', ह्रस्व तथा दीर्घ 'उकार' रो 'ह्रस्व उकार' अनुस्वार तथा अनुनासिक रै खातर एक ही तरै री बिंदी (मींडी) से प्रयोग, द्वित्ववर्ण सारू पूर्ववर्ण ऊपर बिंदु रो प्रयोग, 'ल' अथवा 'ळ' एक ही तरै सूं लिखणो तथा 'ड' तथा ड़' में भेद नहीं करणो इत्यादि रैई है। इण परंपरा रै कारण सबद रूपां में अनेक तरै रा घपला पड़ग्या। अरथ री जाग्या अनर्थ री सृष्टि हुई; पण गुजराती रै विद्वानां 'जोड़णी कोश' री जोडणी (वर्त्तनी) नै स्वीकारती वेळा आंख्यां मींचर अंधारो कर लियो अर आपरै विद्वानपणै री मोहर उण कोश ऊपर लगाय दी। तद सूं लगायर आजोआज तांई गुजराती लेखक उण ही कोश नै आधार बणायर लिखै। पण राजस्थानी विद्वानां गुजरात आळी जोड़णी नै अंगीकार नहीं करी। इणरो एक कुफायदो तो औ हुयो कै जितरा लेखक उतरी ही जोड़नी। आजरी लिखी राजस्थानी नै देख'र साफ-साफ कैयो जा सकै है कै-लेखक अमुक जाग्या रो रैवासी दीखै है, जदकै पुराणी राजस्थानी लेखकां आपरी जोड़णी में भेद नहीं राख्यो। कोटा-बूंदी सूं जैसल-मेर अर बीकानेर सू बाहड़मेर तांई रै लांबै-चवड़ै क्षेत्र में रैवणियां हजारूं लेखकां री लिखावट में रती भर रो पण फरक नहीं।

"आपू आपरी डफली अर आपू आपरी राग" नै देखर स्वामीजी घणा दुखी रैया करता। जयपुर में इण मनमानी जोड़णी री जाग्या एक सरबमान्य जोड़णी री थरपणा करीजी। स्वामीजी उण में आगै हा। मरुवाणी (मासिकी), राजस्थान भारती (त्रैमासिकी) तथा स्वतन्त्र रूप सूं पंपलेट छपाय अर स्वीकृत जोडणी रो प्रचार करीज्यां। घणां लेखकां उण नै आदरी पण, फेर भी उणरो जितरो प्रचार हुवणो जोईजै, उतरो नहीं हुयो। औ हीज कारण है कै आजरा राजस्थानी लेखक सही जाणकारी नहीं हुवणै सूं आपू आपरी बोली नै ही सरव-सम्मत मानर लिखै।

स्वामीजी आपरी व्याकरण में राजस्थानी रै सांमी आवण आळी प्रत्येक समस्या रो समाधान खोजणै रो भरसक प्रयत्न करियो है। 'ल' अर 'ळ', 'ड' अर 'ड', 'व' अर 'व़', 'द' अर 'द़' इत्यादि ध्वनियां रो सही उच्चारण अर लेखन कियां हुवै, इणरा नियम उपनियम बणाया। जे अणजाण लेखक भी इणां नियमां रै आधार ऊपर लिखणो चावै तो भली भांत सूं लिख सकै है। इतरो ही नहीं स्वामी जी आपरी

इण व्याकरण री पोथी टाळ र वीजा भी अनेक भाषा वैज्ञानिक, संशोधनात्मक व्याकरण अर कोश सम्बन्धी लेख लिख्या है, जिकै साहित्य री एक अणमोल निधि है। आपरै नांवरै प्रचार सूं अळगा रैयर सरस्वती रै भंडार नै भरपूर करण सारू रात-दिन एक कर दिया तथा शरीर रै स्वास्थ्य री परवाह कियां बिनां अनेकांनेक पोथ्यां साहित्यकार जगत रै सामी राखी, जिणां नै देख-देख र अचूंभो हुयां बिनां नहीं रैवै। सबदां रा ऐहड़ा पारखी कै जद-कद भी कोई नूंवो प्रयोग मींट चढ्यो तो बिना देरी कियां उण री तह तांई जाय पूग्या। उणां री भांषा तथा व्याकरण सम्बन्धी विवेचनां नै वाच-पढ़र तथा देख-सुणर आ वात कैयी जा सकै है कै—वै आज रै जमानै रा पाणिनी हा। राजस्थानी व्याकरण सम्बन्धी उणां रो औ काम जितै तांई चांद-सूरज रैसी अखी रैसी।

मु० पो० झझू, जि० बीकानेर (राज०)

△

राजस्थानी भाषा शास्त्री

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी

मोहनलाल पुरोहित

स्वामी जी महाराज रा दर्शन पैला-पैल मनै जैसलमेर में सन् १९४६ में हुया। वां दिनां में आप श्री अगरचंदजी नाहटा सागै शोधकरण सारू पधारचा हा अर जैन-धर्म-शाला में आप ठैरचा हा। मैं वां दिनां में एक प्राइवेट-स्कूल चलावतो हो। म्हारी स्कूल जोशीजी पाड़ै में ही अर जैन धर्मशाला रै आवण-जावण रै मार्ग में पड़ती ही। गर्मी री मौसम, टाबरिया स्कूल रै ओटै (चोकी) माथै बैठा पढ़ रैया हा। अचानक म्हारी नजर एक छोरै खानी गई। देखूं, तो एक महानुभाव बींसूं धीरै-धीरै मधुरी भाषा में बातां कर रैयो है, कईं-पूछ-ताछ कर रैयो है। म्हारो कौतुक जाग्यो अर मैं भी बीं टाबरीयै खनै जाय पूगो।

मैं देख्यो--मोटै-मोटै कांचां रो चशमों लगायां भगुवै रंग रो-फैंटो माथै ऊपर, बंद गळै रो सफेद कोट, छिटकवीं धोती, पगां में काळा बिना कशां रा बूंट, कद ठिगणो, लिलाट चौड़ो, पण अनुभव अर ज्ञान री रेखावां अर सळां भरियोड़ी, एक चमत्कारपूर्ण मूर्ति टाबरां नै आपरी मुळकाण अर ज्ञान सूं तृप्त कर रैयी है।

वां सूं बीस पचीस गजां रै आंतरै एक सैंठो डील डौळ रो बीकानेरी पागड़ी बांधै, लंबै कद रो एक महानुभाव भी ऊभो हो। किणी तरै मैं साहस करचो, अर पूछण री धृष्टता कीवी ! आपका परिचय ?' पड़ूत्तर में एक छोटो-सीक वाक्य सुणननै मिल्यो, मुझे नरोत्तम स्वामी कहते हैं अर आप हैं श्री अगरचंदजी नाहटा-शोध विद्वान। हम यहां शोधकार्य करने आए हैं और साथ ही-जैन ग्रंथागार देखने भी। ओ सुणतैई मैं चौकी सूं कूदर नीचै आयो अर आप नै नमस्कार करचा। नांव तो आपरो घणोई सुण्यो हो। पण दर्शणां रो ओ सौभाग्य आज ही मिल्यो है। म्हारै जोग कोई सेवा-चाकरी ? उत्तर में सुण्यो 'आपको धन्यवाद।' अर फेर बै आपरै गेलै चाल पड़चा।

भाग-संयोग री बात मैं सन् १९४७ में बीकानेर आयग्यो। अर अठै मनै २५ ३० बरसां तांई आपरै सम्पर्क में रैवण रो घणो सौभाग्य रैयो।

बियां तो हर महापुरुष, साहित्यकार, कलाकार, राजनेता, आदि रै जीवन रो उत्थान आपां बींरै बाळपणै सूं देखता-सुणता आवां हां। श्री स्वामीजी महाराज भी

आपरै टाबर पणैं में घणा विलक्षण, प्रखर बुद्धि आळा अर प्रतिभाशाली विद्यार्थी समझीजता जाणीजता हा। पण बांरी प्रतिभा री छाप जन साधारण माथै बीं टैम पड़ी, बांरो 'कैरियर' बीं टैम एक उच्च शिखर माथै पूगो, जद बै मनूभाई महता (सर मनू भाई महता बीं टैम बीकानेर स्टेट में दीवान हा) जिसे प्रकाण्ड विद्वान रै अधीन राज री विधान परिषद् में एक अनुवादक रै रूप में कार्य करता हा। एक सफल अनुवादक रै रूप मे काम करता थकां आप प्राइवेट रूप सूं काशी विश्वविद्यालय सूं हिंदी' में एम. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कीवी।

महाराजा गंगासिहजी आपरै जमानै रा एक ओपता-दीपता, कुशल राज-नीतिज्ञ राजा हा। बांनै आछै भूंडै मिनखां री घणी परख ही। आपरी योग्यता अर प्रतिभा रा राजाजी भी कायल हा। बां आपनै डूंगर कॉलेज में हिन्दी रै प्राध्यापक पद माथै प्रतिष्ठित करया। जे भूलां नईं, तो आ घटना सन् १९५५ री हुवणी चावै। ता पछै आप पिलाणी, उदयपुर आदि केई महाविद्यालयां री शोभा बढावता थकां सन् १९-६२ में सरकारी-सेवाआं सूं निवृत हुयग्या।

साहित्यकार कलाकार आदि में जन्म जात प्रतिभा रा अंकुर रैवै। स्वतंत्र-चिंतन, स्वतंत्र विचार धारा, मौलिकता आदि इण भांत रा विळक्षण गुण बीं में विद्य-मान रैवैहा। बीं में एक तरै री '*Urge*', बलवती भावना री टीस परिलक्षित हुवै—बो आपरी दिशा रो नुंवो ज्ञान राखै, अर इण नुवें ज्ञान री खोज अर अनुसंधान में बो दिन-रात लाग्यो रैवै। बींरो हर बळ पड़तो प्रयास रैवै बो आपरी नुंवीं विचार-धारा सूं, नुवें चिंतन सूं लोगां नै भान करावै। जणै बींरै जीवन रा तौर-तरीका भी न्यारा अर घणा अजूबा रैवै। बो आपरै आदर्श नै आपरै 'नोम' नै युग-विशेष तांई प्रस्तुती-करण करणो चावै। स्वामीजी महाराजा भी इण रा अपवाद कोनी हा। आपरै अटल विचारां अर उच्च-आदर्श रा बै एक ही महामानव हा।

स्वामीजी महाराज संस्कृत अर हिन्दी रा तो विद्वान हा हीज। पाली, उर्दु, बंगला, मराठी, रूसी, जर्मनी, अर अंग्रेजी आदि अनेक भाषावां में आपरी आछी गति ही, घणा-घणा निपुण हा।

व्याकरण, भाषा-विज्ञान अर लोक-साहित्य आपरा रुचिकर प्रिय विषय हा।

किणी भी बोली नै भाषागत मान्यता मिलै, बा बोली विशेष भाषा रै पद माथै आसीन हुवै, जणै बीं रै खातर व्याकरण, इतिहास अर शब्द कोश री नितांत चायना रैवै। राजस्थानी—भाषा नै साहित्यिक भाषा रो जामो पैरावण में बींनै भाषा रै गौरव माथै प्रतिष्ठित करावण में स्वामी महाराज रो सबळो योगदान रैयो। राज-स्थानी-भाषा री व्याकरण (पुरस्कृत) इण बात री साख भरै।

स्वामीजी एक सफळ संपादक हा। बां आपरै जीवन-काळ में करीब ५०/६० पोथ्यां रो संपादन कर्यां हुवैला। राष्ट्र-भाषा, हिन्दी री आप घणी लगन सूं सेवा

कीवी। अर इण तरै 'राजस्थानी-भाषा' आपरी मातृ भाषा री सेवा तो आपरी घणी सरावण जोग रैवी। 'ढोला मारू रा दूहा', 'राजस्थानी कहावतां-भाग २', 'राजस्थान के लोक-गीत', 'क्रिसन-रुक्मणी री वेलि', 'राजस्थान रा दूहा', 'राजस्थानी-गद्य-विकास और प्रकाश आदि ग्रंथ घणा लोक प्रिय अर चर्चित रैया है।

स्वामीजी कई संस्थावां रा संस्थापक सदस्य हा। आ बांरी दैन है कै आपां आज राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, (बीकानेर), भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान (बीकानेर) आदि ऊंचे दर्जे री साहित्यिक संस्थावां देखां हां। स्वामीजी कुलपति रै रूप में भी पूज्या जांवता हा।

स्वामीजी रै सागै इण ओळ्यां रै लेखक रो पिछले २५/३० वरसां तांई सम्पर्क रैयो। श्री अभय जैन ग्रंथालय में हर रविवार नै म्हे लोग साहित्यिक गोष्ठी रो आयोजन राखता हा म्हैं म्हारै जीवन में देख्यो कै स्वामीजी जिसो ठीक टैम ऊपर आवण आळो— व्यक्ति बांरै टाळ काई कोनी हो।

स्वामीजी बौत ही थोड़ा बोल्या करता हा। बिना जरूरत वै कदेई कोनी बोल्या करता। जीवन में हास्य-परिहास री जरूरत रै वै; इणनै कोनी नकारियौ जा सकै। पण गांभीर स्वयं एक जीवन है। स्वामीजी महाराज सदा-सर्वदा गंभीर-रैवता हा। गांभीर री स्वामीजी एक तरै सूं प्रतिभा इज हा।

स्वामीजी बौत ही कम हंस्या करता। एक दिन एक मीटिंग मैं आप थोड़ा सीक हंस्या, जणै बांरै एक शिष्य उठ र कैयो—म्हा तो गुरूजी नै आज ही हंसता देख्या है।

स्वामीजी रा आखर इसा हा कै जांणै मोती देखलो। कांई पिछांण कर सकै कोई कै ए छापैरा आखर है कै हाथ सूं लिखियोड़ा स्वामीजी री लिखावट मोत्यां सरीखी ही।

स्वामीजी सादगी रा अवतार हा। कॉलेज-जीवन में अर सरकारी नौकरी में भळेई बां सूट-कोट अर टोप राखलियो हुवै। इयां वै बंद गळै रो कोट, छिटक वी-धोती अर माथै उघाड़ा रैवता हा। स्वामीजी आडंबर अर कृतिम जीवन सूं घणा अळगा हा।

स्वामी राजस्थानी भाषा रा अनन्य प्रेमी अर उपासक हा। श्री मुरलीधर जी व्यास (८४-८५ वरसां रै अड़ै गड़ै) भी स्वामीजी नै आपरा 'राजस्थानी रा गुरु' मानर चालता हा। स्वामी जी रै चेलां शिष्यां री एक लांबी परम्परा रैवी। बै शिक्षा रै क्षेत्र में गुरु देवा ज्यूं पूजीजता हा। आज भी आपरा हजारां शिष्य आपने अश्रुपूर्ण नेत्रां सूं याद करी।

किणी भी साहित्यकार, कळाकार रै ऊंचे दर्जे री ओळखांण बीं री कळा कृतियां अर सर्जन सूं रैवै। बींरै बापरो कांई नाम हो, बो कठै जलमो आदि-आदि ए

सगळी बातां तो गौण रैवै । फिर भी टूकै में ओ लिख देवां कै स्वामी रो जन्म सं. १९६१ में बीकानेर में हुयो । आप रांकावत ब्राह्मण परिवार नै अळंकरित करचो अर आपरै पूज्य पिता श्री जयरामजी स्वामी अर माताजी पूज्या मीरां देवी जी हा, तो भी कांई आंट जिसी बात नहीं हुवणी चावै । घणै दुख री बात आप १३. ८. १९८१ नै श्री जी शरण हुयग्या ।

स्वामीजी एक सफळ अध्यापक हा तो सागै ही एक ऊंचे दर्जे रा शोध शास्त्री भी हा । केई संस्थावां रा आप कुलपति हा । केई संस्थावां सूं आप सम्मानित-पुरस्कृत हा । आप केई विश्वविद्याळयां रा परीक्षक हा, तो पी. एच. डी. कार्य रा निर्देशक भी हा ।

राजस्थानी--भाषा रा हिमायती, सबळ-समर्थक, बींरै खातर झूंझ-मरणिया अर आपरो सगळो जीवन होम करणिया नै जठै तांई राजस्थान अर राजस्थान रो एक भी निवासी–रैवै; बानै कतई भूल-बिसर नईं सकै ।

आपरी दिवंगत पुनीत आत्मा नै सत् सत् प्रणाम ।

C/o भठड़ों का चौक,
बीकानेर (राजस्थान)

△

हौं नर उत्तम हौं नहीं, हौं नर उत्तम दास

डॉ० महेन्द्र भानावत

राजस्थानी भाषा रे तीन रतनां में स्वामीजी आखरी रतन हा जणांरो १३ अगस्त ८१ नैं आपणी जलमभोम बीकानेर में सुरगवास वेइग्यो। ई तीन रतन राजस्थानी सारू तीन एच (H) रे नावऊं बड़ो मान लीधो। सूर्यकरणजी पारीक इण रा 'हेड' हा तो ठाकुर रामसिंह जी 'हार्ट' अर स्वामीजी 'हेंड' हा। तीनई तीन गेला रा राच हा। सूर्यकरणजी घणी कम उमर लीधी पण मायड़ भाषा खातर जो काम वणां कीधो इण कारण वांनैं राजस्थानी 'भारतेंदु' अर स्वामी नैं 'महावीरप्रसाद द्विवेदी' रे नांव री ओळखांण दी जा सकै।

सन् ६० में म्हैं एम. ए. करण खातर उदयपुर रे एम. बी. कालेज मांय राजनीति विग्यान रो फारम भरचो पण नोटिस बोर्ड माथै म्हारो नांव हिन्दी मांय देखनैं म्हनै बड़ो अचरज हुयो। पछै प्रो० प्रकाश आतुर म्हनै कियो के या करामात स्वामीजी री है। वणां कयो के म्हारो हिन्दी मांय एम. ए. करणो ठीक रेसी। उण टैम स्वामी जी हिन्दी विभाग रा अध्यक्ष अर कालेज रा उप प्रिंसिपल हा। अठांतांई स्वामीजी सूं म्हारो कदीई मिलणो न्हीं हुयो पण म्हैं स्वामीजी री किरपा मानी अर भणबो चालू कीधो।

उण दिनां म्हूं भारतीय लोककला मंडल में हो। म्हें स्वामीजी सूं मिलण री योजना बणाई। इण बीच म्हैं या बात सुणी के स्वामीजी सुभावऊं तो बड़ा संत है पण रूखा है अर हां इं में ई सगळी बातां चलावे इण वास्ते म्हूं आपरे साथै राजस्थान स्वर लहरी नांव सूं राजस्थानी लोकगीतां री पांडुलिपि अर लोकनाट्य री रिपोर्ट लै'र वांरै घरे पोंचग्यो। स्वामीजी गुणमुणाय रया हा। म्हारो सगळो काम देख'र बोल्या—'घणो आछो काम कर रिया हो, करता जावो। रिपोर्ट देख'र तो बे राजी हुया अर कह्यो के एम. ए. कर्यां पाछै योईज विषय लै'र पी. एच. डी. कर लैया।

एम. ए. कर्यां पाछै स्वामीजी सिनोप्सिस बणा र सब्मीट करवाई पण आठ म्हीनां केड़े वा जद रिजेक्ट होय म्हनैं मिली तो स्वामीजी बोल्या—इन्नै थोड़ी घणी फेर बदळ कर पाछी सब्मीट कर्‌द्यो तो म्हूं बोल्यो–इण रीत सूं तो म्हूं आपरे कोड़े पी. एच. डी. स्यातई करपाऊंलो। स्वामीजी कोई शबद न्हीं बोल्या।

यांई दिनां हिन्दुस्तान दैनिक अखबार मांय 'व्यक्ति साहित्य और समस्याएं' नामऊं एक हफ्ताऊ थंब में स्वामीजी पर लिखण खातर एक फोटू खींचण्यां नैं ले'र पोंच्यो। स्वामीजी आपरो फोटू खेंचायो अर बीजी कोई जाणकारी तो दीवी न्हीं पर या लैण लिखा'र—'हौं, नर उत्तम हौं नहीं, हौं नर उत्तम दास' बोल्या के इन्नै अवस दीजो।

रांकावत ब्राह्मण परवार में मां मीरादेवी अर पिता जयरामजी रा धारमिक संसकार स्वामीजी नै ओप्या। भणाई में सदाई पैलो लम्बर आवता। गुजराती, मराठी, बंगला, रूसी, जर्मनी, अपभ्रंश, प्राकृत जेड़ी केई भाषावां रा पंडत स्वामीजी सुभावऊं बड़ा सीधा, वैव्हारऊं विनैवांन, वांणीऊं वीतरागी, हीयाऊं होजा, माथाऊं मथाल्या अर जीवणऊं गरजी-गुरजी हा।

पण राजस्थानी रो यो भगत दिखणमें पूरो अंगरेज लगतो। पेंट, बंद गळै रो कोट, माथै टोप। दुबला इत्ता के डेढ़ पसली लागता। रोबीलो सुभाव न्हीं वेवाऊं स्वामीजी कदेई प्रिंसिपल नहीं बण्या। वांरो लेखण घणो पूठरो हो। एक-एक आखर मोती ज्यूं मुळकतो।

स्वामीजी कंजूसी में घणा करड़ा हा। आपणी एम. ए. री भणाई में म्हैं देख्यो स्वामीजी कबीर बिहारी रा दो-दो ओरां रा दोवा डेड़ डेड़ ओरां में समभाय नैं छुट्टी करता। घंटो लागतांई आखी क्लास हाजर रेवती पण घंटो खतम वेतां-वेतां सगळी कुरस्यां खाली लागती। म्हारा जिस्या दो चार छोरां नैं तो सरमा सरमी में बैठणोई पड़तो। भणवा में स्वामीजी कोताई करता पण लम्बर देवा में तो घणा हांतरा हा। साठऊं देणो सरू करता नैं ठेठ सो'रे लगै-तगै पोंचाय देता। सुणी आ बात भी के एकदांण स्वामीजी आपणां शिष्य नैं सो मेऊं दो कम सो लंबर टिकाय दिया जणै पूछताछ व्ही। तीन बरस तांई स्वामीजी पेपर न्हीं छांट सक्या पण अणी भोळै बामण एक लंबर कम न्हीं कीधो अर पछै तो वांनैं डागडरी री उपाधि तक दिलायदी। म्हेरबांन तो अतरा व्या के आपणां शिष्यां रे नांवऊं पोथ्यां लिखर वांनै मदद करी।

डूंगर कालेज बीकानेर में भण्या ओंकार श्री कयो के बे लोग धन भाग है जे स्वामीजी नैं हंसता देख्या। वियांरे हंसबा माथै तो केई भाई लोगां बोल्यां लगाय दीनी पण कांई मजाल जो लाख उपाव कर्यां पछै भी स्वामीजी नें हंसाय दे अर अस्या मौका भी देखण में आया के बिला बजै स्वामीजी खिलखिलाय रिया है। ठाकुर रामसिंहजी अर स्वामीजी में कोई आंतरो हो के स्वामीजीऊं मिल लोगां री खुली गांठ बंध जावती वठै रामसिंहजी रे सागै बंधी गांठ आपो आप खुल जावती।

स्वामीजी री साहित धारा तीन रूपां में चाली। एक तो मोलिक साहित री, दूजी ग्रंथ सम्पादण री अर तीजी अनुवाद, आलोचना अर लेख लिखण री। हिन्दी साहित रे इतिहास में आदिकाल अर प्राचीन गद्य कालऊं जुड़ी वांरी मानतावां जवरी

ओलखाण दे । पिरथीराज रासो, ढोलामारू रा दूहा, कुंडलिया छंद, हिन्दी अर फ्रेंच जेड़ा लेख केई भ्रांतियां ने पाछै कीधी । स्वामीजी री लिखी, संपादण की पोथियां रो नामो सो सूं ऊपर है । ढोलामारू रा दूहा, राजस्थान रा दूहा, राजस्थान रा लोकगीत, राजिया रा दूहा, कबीरदास, तुलसीदास, सूर संग्रह, ग्राम्यगीत जेड़ी पोथ्यां घणी सरावीगी । स्वामीजी रा केई मानीता शिष्य राजस्थानी भाषा अर साहित री सेवा कर रिया है । खुमाणरासो, वेलि साहित, चारणी काव्य, विषयां माथै यांरी नजरचां में पी. एच. डी. री उपाधि लीधी । दो बरस पेली कलकत्ता रे श्रीमती सुशीलादेवी भूतोड़िया ट्रस्ट सूं चालित विवेक संस्थान दस हजार रिपिया रो पुरस्कार देय स्वामीजी रो मान वधायो ।

स्वामीजी आछा कवि हा । राजस्थानी अर हिन्दी में वां केई कवितावां लिखी अर सरू सरू में केई छपी । वांरो बीकानेर रो देशगीत तो जगां जगां स्कूलां रा कार्यक्रमां में गायो जावतो । बीकाणे म्हारो जद-जद जावणो वियो म्हूं स्वामीजीऊं मिलतो रियो । स्वामीजी आपणी खटिया माथै लिखता-भणताई मिल्या । सूर्यकरणजी तो केबू करता के स्वामीजी स्याही घणी खरच करे अर स्वामीजी जवाब देवता-पीऊं थोड़ेई, लिखूं ई तो हूं । हिन्दी रो आसरो ले'र वी राजस्थानी ने फैलावण री घणी कोसिस कीधी । एड़ा नर रतन उत्तम नर 'नरोत्तम' ने म्हारो घणे घणे मांन माथो नमण ।

△

राजस्थानी रा अप्रतिम सपूत--म्हांरा अग्रज

पुरुषोत्तमदास स्वामी

रांकावत समाज रा सदस्य भारत रे हरेक प्रांत में इक्का दुक्का रूप में पाया जावे है पण राजस्थान में अर खास कर बीकानेर व जोधपुर में ऐ बहुलता सूं मिलै है। बीकानेर में तो एक मोहलो ही रंकणपुरी रे नांव सूं विख्यात है। रांकावत शब्द रे बारे में विद्वान लोगां री एक राय को नी। कई लोगां री मान्यता है के असली शब्द रांकावत नहीं हूर 'राकापति' है। इयां लोगां में अग्रणी मेड़ता रा अमरदासजी हा। घणकरा लोग शुद्ध शब्द 'रांकावत' ही माने है और इये मान्यता रा अनुयायी है के रांकावत लोगां रो उद्गम महाराष्ट्र प्रांत रे पंढरपुर नांव रो स्थान है। इये समाज रा आदि पुरुष रंकण ऋषि मानीजै है। ऐ रांका रे नांव सूं भी प्रख्यात है। इयां री धर्म पत्नी रो नांव बंकणा हो। रंकण मुनि अग्नि रा अवतार हा। रांका बांका दंपति रे कोई संतान हुई इये बात रो कठेई उल्लेख को नी मिले और आ शंका सहज ही उठ खड़ी हुवै के फेर रांकावत लोग इया महापुरुष री संतान कियां हो सके है। ईं बाबत कीं विचार कर लेणो समुचित हुसी।

अग्नि पुराण में इये वात रो उल्लेख मिलै है के प्रजापति दक्ष घणी सारी किन्यावां पैदा करी। इयां मांय सूं दस धर्मराज नै, तेरह कश्यप नै, सताईस चंद्रमा नै, च्यार अरिष्टनेमि नै, दो बहुपुत्र नै अर दो अंगिरा नै दी। अंगिरा रै स्मृति रे गर्भ सूं घणासारा लड़का और च्यार लड़क्यां हुई। इयां च्यार किन्यावां में एक रो नांव राका हो। शायद राका रो ब्यांव चंद्रमा रे साथै हुयो हुसी। इये कारण चंद्रमा ने राकापति भी कैवे है। पण राका रे कोई संतान हुई या नहीं इये रो उल्लेख अग्नि पुराण में को मिलै नीं। इये वासतै राकापति ने रांकावत री जाग्या ठीक मानणें में हिचक हुवै है।

आ बात ठीक है के रंकण मुनि रे बांका सूं कोई संतान को हुई नीं पण शिष्य या चेला बणावण री परंपरा घणी पुराणी रई है। रांकाजी रे शिष्यां री परंपरा में आगै चाल र शायद किणी शिष्य गृहस्थी जीवन नै अपणायो हुसी। खुद रंकण मुनि गृहस्थी हो हा, और इयां रांकावत जात री शुरू आत हुई हुसी। रांकावत शब्द रो अर्थ रांका रा पुत्र हुवै है। शिष्य या चेलो पुत्र जियां ही मानीजै है।

पंढर पुर सूं कई सौ वरस पेली रांकावत लोग महराष्ट्र सूं राजस्थान री तरफ चाल र आया और फेर अठेई बसग्या। इयां मांय सूं एक परवार जको पहली

बीकानेर सूं सूडसर खनै दुळचासर गांव में बसग्यो हो, उठ'र पाछो बीकानेर आय र रैवरण लागग्यो। इये परवार रा मुखिया श्री अरणंदराम जी हा जका वियै बगत विद्वानां में अग्रणी हा। वियां री आजीविका खेती सूं चालती ही। अरणंद रामजी री पतनी रो नांव चुन्नी हो। बियां रे पांच बेटा और एक बेटी ही। बेटां रो नांव जयश्रीराम, चतुर्भुज दास, मोवन दास, मघाराम अपर नांव मधुसूदन दास व मुकनदास अर बेटी रो नांव धनी हो। इयां में जय श्रीरामजी चतुर्भुजदासजी व मोयनदासजी बड़ा धार्मिक व विद्वान् पुरुष हा। चतुर्भुजदासजी नागौर में नृसिंहजी रे मिंदर रा महंत हा। वियां राजस्थानी में रुक्मरणी मंगल जियां शिव पार्वती रे व्यांव री कथा पर 'भवानी मंगळ' री रचना करी। श्रो ग्रंथ छप'र प्रकाशित भी हुयो परण अबै अप्राप्य सोई है।

अरणंदरामजी रै बड़े लड़के जयश्रीरामजी रो व्यांव वाधणू री श्रीमती मीरां देवी सूं हुयो। आप बड़ा धार्मिक प्रवृति रा विद्वान् हा और बीकानेर में एक मिंदर रा पुजारी व नामी कथावाचक हा। आपरै च्यार लड़का व दो लड़क्यां हुई। इये परवार में विक्रमी संवत् १९६१ रै पो मास रै कृष्णपक्ष री बारस सोमवार नै राजस्थानी साहित्य रा उद्धारक व अनूठा विद्वान् नरोत्तमदासजी जलम लियो। आप आपरै पिता जयश्रीरामजी री तीसरी संतान हा। आपरा अग्रज स्वामी लक्ष्मण शास्त्री व माधवदासजी हा। आपरी दो अनुजा व एक अनुज है। इयां पंक्त्यां रे लेखक नै आपरो अनुज हूवण रो श्रेय प्राप्त है। आपरां दोनूं बड़ा भाई नागौर में महंत हा। वियां रां गुरु आपनै समय रा प्रख्यात विद्वान् प्रज्ञाचक्षु मधुसूदनदासजी अपर नांव मोतीरामजी हा। जद ऐ दोनूं भाई छोटा ही हा जयश्रीरामजी रा मामा महंत श्री चेतनदासजी जका संस्कृत रा प्रकाण्ड पिंडत हा आपरणै शिष्य मोतीरामजी रा चेला बरणावरण खातर नागौर लेग्या। स्वामी लक्ष्मरण शास्त्री संस्कृत साहित्य, व्याकररण व ज्योतिष् रा धुरंधर विद्वान् हा। वियां नागौर में बखतसागर तळाब खनै एक संस्कृत पाठशाला चला राखी ही जके रो नांव अनाथोपकारक प्रधान संस्कृत विद्यालय हो। आप कई किताबां लिखी श्रीर कई छप'र प्रकाशित भी हुई। इयां मैं लघुस्तवराज व श्री विष्णु चरितामृतम् उल्लेख कररण जोग है। माधवदासजी बडा लोकप्रिय नामी कथावाचक हुया और वे एक तरह रा आशु कवि हा। वियां राजस्थानी में रामकीर्त्ति सागर नांव सूं एक विशाल ग्रंथ री रचना करी। माधवदासजी रो देहांत ७७ वर्ष री ऊमर में नागौर में सन् १९६७ में हुयो। सब सूं बड़ा स्वामी लक्ष्मण शास्त्री भी लंबी ऊमर पाई। आप ८४ वर्ष री आयु में बीकानेर में सन् १९७१ रे नवम्बर महीने मैं देवलोक प्रस्थान करचो। श्री जयश्रीराम जी रो देहांत ७७ वर्ष री अवस्था मैं बीकानेर में जनवरी १९४३ ई. में हुयो। म्हारी मां रो देहावसान भी ७७ वरस री ऊमर में सितंबर १९५० में हुयो।

भाई नरोत्तमदासजी आपरे बाल्य काल रे मांय एक अत्यंत मेधावी छात्र हा। वियां री प्रारंभिक शिक्षा बीकानेर रे दरबार हाई स्कूल जके रो नांव बाद में डूंगर कालेज राखीज्यो, व बी. के. विद्यालय में जके ने डागा विद्यालय रे नांव सूं भी लोग जाणता

हा, हुई । अठे सूं आठवीं श्रेणी पासकर आप फेरूं डूंगर कालेज में नवीं श्रेणी में भरती हुया । सन् १९२१ में इलाहाबाद युनिवर्सिटी री मैट्रिक परीक्षा पास की। बीकानेर सूं शामिल हुया छात्रां में प्रथम आवरण पर आपनै महाराजा सूं तकमो (सोने रो) मिल्यो । बाद मे आप हिंदू विश्वविद्यालय काशी में प्रविष्ट हुया और बठे सूं आप सन् १९२७ में संस्कृत मांय एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करी । इये विश्वविद्यालय सूं ही सन् १९२९ में एम. ए. हिंदी) परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करी और विश्वविद्यालय भर में आप प्रथम स्थान प्राप्त कर्यो ।

नरोत्तमदासजी बीकानेर स्टेट सर्विस में सन् १९२८ में शामल हुया और १९६० में राजस्थान सेवा सूं अवकाश ग्रहण कर्यो । आपरी पुर्नानियुक्ति १९६० में महाराणा कालेज उदयपुर रै वाइस प्रिंसिपल रे पद पर हुई और वीं पद पर आप सन् १९६२ तांई रयां । बाद में वनस्थली विद्यापीठ में हिंदी विभाग रा अध्यक्ष बण्या । बठै आप १९६५ तांई काम कर्यो । अवकाश ग्रहण कर्यां पछै भी आप निरंतर साहित्य सेवा में लीन रया और मां भारती री दोनूं बेट्यां हिंदी और राजस्थानी रै साहित्य माळां रे मांय आपरी तरफ सूं नाना भांत रा पुष्प पिरोवतां रया । ओ काम आपरे जीवण रा अखरी दिनां ताई चालतो रयो । आपरी अनूठी साहित्य सेवा रे खातर आपने हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सूं आपरी लिख्योड़ी पोथी राजस्थान रा दूहा पर मानसिंह पुरस्कार मिल्यो व सन् १९७९ में लाडणूं में भूतोड़िया पुरस्कार सूं आप सम्मानित कर्या गया ।

भाई नरोत्तमदास जी संस्कृत, हिंदी व राजस्थानी रा तो अद्वितीय विद्वान् हा-ही, मानवी गुणां रो भी बियां में अद्भुत संयोग हो । बियां आपरे जीवण काळ में घणाकरा गरीब विद्यार्थी लोगां री सहायता करी जकां रो कठेई लेखो जोखो को'नी क्यों कि वे आ सहायता कीर्त्ति अर्जण करण वास्तै नहीं प्रत्युत योग्य व्यक्ति री आवश्यकता पूरी करण सारू करता हा ।

आर्थिक दृष्टि सूं आप कोई घणा संपन्न व्यक्ति कोनी हा, अतः जो संपत्ति वां अर्जित करी वा इसा कामां में लागगी । मनै बियां एक वार कयो भी हो के म्हें लाखूं कमाया पर हूं रयो कंगाळ रो कंगाळ । दूजां ने सहायता करण री प्रवृत्ति आपमैं इती तीव्र ही के आपनै आपरे ऊपर जरूरत सारू खरच करण में भी दिक्कत आंवती। आप लिखण पढ़ण में इता लीन रैवतां के शरीर रे भरण पोषण री जरूरतां पर ध्यान देवण नै आपने बगत मिलतो ही कोनी । शायद इये रो ई ओ परिणाम हो के बियां रो शरीर असमय में ही और आगे साथ देवण सूं इनकार कर दियो ।

आपरो देहावसान सन् १९८१ री १३ अगस्त गुरुवार, संवत् १९३८ री सावण सुदी १३ ने आपरै निवास स्थान शांति आश्रम, बीकानेर में सिंझ्या रा पूणी चार बजी हुयो । आपरै परवार में तीन बेटा व तीन ही बेटयां है । संयोग वश आपरो निधन भी

७७ वर्ष री ऊमर में हुयो। सितत्तरवों बरस इण भांत म्हांरे वंश में एक घातक बरस सिद्ध हुयो है।

हूं भाई नरोत्तमदासजी रे, छोटो भाई हूवण रे कारण अगाध स्नेह रो निरंतर पात्र रयो हूं। बियां मनै एक तरह सूं ठोक पीटर बैद्यराज री भांत जबर्दस्ती लेखकां री श्रेणी मे ला बिठायो है। म्हारे सूं जकी साहित्य सेवा बण पड़ी है बा बियां रे आग्रह व अनुरोध रै कारण ही संभव हू सकी है।

बियां रे देवलोक जावण सूं [illegible] तो अपार हानि हुई है और वा कदेई पूरी हूजासी इये री मनै कोई संभावना लागै [illegible]हीं। मनै बियां सूं सदा ही स्नेह और प्रोत्साहन मिलतो रयो। बियां मनै कदेई दुलख्यो नहीं। भायां भायां मैं संपति या और कोई बात लेयर अकसर खटपट हु जाया करै है पण मनै कोई अवसर इसो याद नहीं पड़ै जद म्हारी नरोत्तमदासजी सूं किणी बात पर खटपट हुई हुवै।

वै म्हारै जीवण में इसा व्यक्ति हा जकां पर आ बात लागू हुवैः—

आज्ञा गुरुणांह्यविचारणीया :—गुरुजनौं का कथन आदेश हुया करै है, बिये पर कीं भांत रो विचार करणे री जरूरत कोनी।

अंग्रेजी में एक कैवत है:—*Time is a great healer* समय एक बड़ो भारी घाव भरण वाळो है। व्यक्ति रै जीवण काळ में घटचोड़ी बडी सूं बडी सांघातिक चोट समय बीततां आछी हुज्याया करै है। भाई नरोत्तमदासजी रै स्वर्ग प्रयाण ने आज छः महीना हुवण वाळा है पर आज भी म्हांरे दिमाग सूं बिये १३ अगस्त '९८१ री सिंज्यां री घटी घटना म्हारे स्मृति पथ में बिती री बिती ताजी है। बिये में रंच मात्र भी फरक पड़चो है नहीं। मनै आज भी बो दृश्य साफ निजर आवै है जद भाई जी अंतिम सांस लेर्‌या था और जद बियां ने पलंग सूं नीचे उतारण री तैयारी करीजती ही।

भाई रो बिछोह एक बड़ी दुखद घटना है। भाई नै भुजारी संज्ञा दी जावै है। म्हारी तो भुजा ही कट गई है और हूं एक विकलांग व्यक्ति जियां बणग्यो हूं। तुलसीदासजी रामचरित मानस में भगवान् राम रै मूंढै सूं ठीक ही कहलायो है:—

"सुत वित नारी भवन परिवारा,
हो हिं जाय जग बारहिबारा।
अस विचार जिय जागहु ताता,
मिलहि न जगत सहोदर भ्राता ।।

साचे ही इये में कोई दो राय कोयनी के मा जायो भाई मर्‌यां पछै फेर कां मिलै नी।

△

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी

श्री रामनिवास शर्मा

राजस्थानी री दीखती जोतां रो जणा ही नाम लेवां तो तीन महा पुरुषां रा नाम आंख्यां रै सामै नाचबा लाग जावै श्री ठाकुर रामसिंहजी, श्री सूर्यकरणजी पारीक अर श्री नरोत्तमदासजी स्वामी। श्री सूर्यकरणजी पारीक तो सगळा सूं पै'ली ही आगलै घरां पधारग्या हा पछै ठाकुर रामसिंहजी भी चालता रैया। सगळा सूं पछै श्री स्वामी जी भी आपरो सगळो काम सळटायनै दिव्य जोत मांय जाय मिलग्या। संगम री स्थापना हूवणै पछै श्री ठा० रामसिंहजी सूं २ ३ दफे मिलणू हुयो। बा मांय राज घराणै रो रूतबो अर रजपूत रो नेह। बा दिनां मांय वे आप बीमार चालै हा ई कारण तन अर मन दोन्या माथै बीमारी रो असर हो। श्री सूर्यकरणजी पारीक जुवानी माय चालता रैया। ई सदमै नै श्री ठाकुर साहब सहन कोनी कर सक्या हा। ठाकुर शरीर सूं जीवता हा पण मन सूं श्री पारीक रै सागै ही मरग्या हा। श्री नरोत्तमदासजी स्वामी दोन्या रो गुरु-भार आयो दुबळै पतळै डील माथै लियां अत्ता वरस निभावता रैया। छैकड़ आपभी बी भार सूं टूटग्या। श्री नरोत्तमदासजी स्वामी सूं म्हारी जाण-पीण घणी पुराणी है पण आं लारला दिनां मांय तो म्हारो आपरै बोळोही आवणू-जावणू रैवतो। म्हारी ईसी धारणा है के साहित्य सम्बन्धी म्हारै सूं जकी वातां हुई वे आपरी आखिरी बात ही समझू कारण म्हारै पछै आपरी अस्पताल मांय तबियत अचानक ही खराब रवण रै कारण आप अस्पताळ मांय जायनै भर्ती हुयग्या हा। आपरै सरीर रो अन्त भी अस्पताल मांय हूयग्यो।

आप सूं कई दिना ताईं जकी बातां हुई वारो सार नीचे मुजब है :—

बारी वातां मांय शिक्षा विभाग सूं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड सूं व लेखकां सूं शिकायत रैवती। आपरी सिकायत एक आत्मीयता री सिकायत ही। दरद एक सजगता तो कर्मण्यता रो हो। शिक्षा विभाग सूं आ सिकायत ही कै राजस्थानी भासा री पढ़ाई पै'ली सूं जीका के आगै सूं कर दी। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड भी इस्यो गेलो है कै प्रान्तीय भासा पैली सूं पढाणी चाहिजे जकी ने ८ वीं १० वीं सूं सरू करी। जठै ताईं भासा रो आधार ही नी वणसी भीत कठै सूं खड़ी हूसी। भासारो आधार वणसी जणा

आगै री पढाई चालसी । माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने राजस्थानी भासा रै जाणकार लोगां ने पढाई खातर राखणा चाहिजै जकै सूं भासारो आधार सही वणायो जाय सकै । जका लोग भासा री आतमा भूं परिचित नी है वे भासा री पढाई नी कराय सकै ।

राजस्थानी भासा संगम, बीकानेर री बात चाली जणा वे आप दो तीन सम्पादकां सूं घणा नाराज दीख्या । आपरी आ धारणा रही कै सम्पादक लोग जिण भासा मांय ही लेखकां री रचनावां आवै बानै वियां छाप देवै पुनर्लेखन अर संसोधन रो काम कोनी करै । वे आपरै कर्त्तव्य सूं च्युत हुवै, भासा रो पूरो ज्ञान नीं हूवणै रै कारण वे एक रूपता री बात ही नी समझ सकै । सम्पादक भासा री एक रूपता रो ध्यान राखै तो पत्रिका सोष्ठव रूप मांय निकळ सकै अर भासा री एक रूपता रो जको अहम सवाल है वो पूरो हूय जावै । पण वै आपरी जिम्मेदारी सूं अर मेहनत सूं बचणू चावै । बारी ईं लापरवाही सूं भासा रो घणू ही अहित हुवै है ।

आज काळ आ आप कांई लिख रैया हो ओ परसन आयो जणा बोल्या के लिख र कई पोथ्या राख छोडी है पण छापण आळो कोनी । प्रकासक तो सगळी रायल्टी लूटणी चावै ।

सौ पचास रुपया मांय पोथी खरीदणी चावै । राजस्थानी रा पाठक नी हूवणै कारण छप्यौड़ी पोथ्यां बीके कोनी । पाठक नी हुवणै सूं लेखक अर प्रकासक दोन्यू ही भूखां मरै । इण कारण ही राजस्थानी भासा रा सही रूप मांय विकास कोनी हुय सकै ।

नुंवा लेखकां री बात चाली जणा आपरै मुन्डै माथै चमक आयगी । आप बतायो कै राजस्थानी रा नुंवा लेखक भासा मांय नुंवा नुंवा प्रयोग बडा ही फूटरा अर चोखा करै । वारी भासा रो सोष्ठव नूतन सैलीरो हुवै पण वाक्य रै आखर मांय प्रान्तीय बोली रा सब्द खटकवा लाग ज्यावै । आ घणी खुसी री बात है कै आपरो पेट काटनै पोथ्या छपावै । वे पोथ्यां बीकै कोनी दीमका रो पेट भरै तो भी ओर पोथ्या लिखै अर छपावै । आ बात सगळा रे गौरव री है ।

राजस्थानी री पोथ्यां री बिक्री री बात चाली जणा आप बतायो कै जठै पोथ्यां खरीदण आळा है बठै बेचण आळा कोनी । राजस्थान रै बारै राजस्थानी पोथ्यां मिलै कोनी । कलकत्ता बम्बई मांय कोई राजस्थानी री पोथ्यां बेचण आळो हुवै तो पोथ्यां खूब बिकै अर राजस्थानी रा प्रकासक अर लेखक आपरो पेट भरबा लाग जावै । ई सूं राजस्थानी भासा रो विकास बणू हुवै । लेखक प्रकासक खोजे पाठक पोथी बेचण-आळा खोजै अर प्रकासक पाठका सूं डरनै भागै ।

भासा री एक रूपतारी बात आई जणा श्री नरोत्तमदासजी स्वामी सलाह दी क राजस्थानी भासा साहित्य सगम रो ओ पे'लो काम है कै आपरै अठै सू जत्ती ही साल

सुवाई पोथ्यां छपै बा सगळी पोथ्या री भासा एक सी कूर वानै छापावै । थोड़ो खरचो वेसी पड़सी पण ईं खरचै रो उपयोग सातरो हुसी । जागती-जोत मांय सगळी रचनावां सम्पादक भासा री एक रूपता ने ध्यान मांय राख नै पाछी लिखनै छपण सारू देवै । ईं जतन सूं काम करणै सूं भासा री एक रूपता री समस्या आपो आप ही सुळझ जावैली । ओ काम घणी लगन अर मेहनत रो है पण सगम ओ भार उठाय नै ई भारी समस्या नैं सुलझाय सकै ।

'माणक' री वात चाली जणा खुसी हुया । राजस्थानी री अत्ती सुन्दर छपाई री पत्रिका री घणी प्रसंसा करी, पण भासा री बात माथै दूजा विचार राख्या । वे चावैं हा ई बारे माय सम्पादक अर प्रकासक नै बोळी बाता लिखूं । वे लिख पाया है क कोनी, ई री मने जाणकारी कोनी है ।

आप सूं म्हारो मिलण एक विसेस बात रै कारण चालतो हो पण बा दिना ओ पतो कोनी हो के आप अत्ता वेगा ही इह-लीलानै समाप्त कर देवोला । दुबळो-डीळ बुढापै री बीमारी अर जीवण पर्यन्त अथक श्रम आपनै अत्तो थकाय दीयो हो कै आप डील चिर विश्राम करण नैं चाल पड़ियो । मातर भासा रैं विकास मांय आपरै जीवण नैं होमण आळा महा पुरुस ने म्हारो सतसत निमस्कार ।

△

कुण करसी ओ काम ?

बी० एल० माली 'अशांत'

कदे ही कोई मौत सरीर मांय सब्द रै सांचै अरथ रै साथै बड'र कठै ही दरद खड़चो कर देवै । मैं डा० नरोत्तम स्वामी री मौत नै अैड़ी ही मानूं ।

स्वामीजी सूं म्हारो व्यक्तिगत कोई बिसेस जुड़ाव हुवै, या मैं वांरै कनै बैठ र सागै काम करणियां होवूं, या वै म्हारा नजदीकी रिस्तेदार हुवै, या मैं वांरो चेलो होवूं, अैड़ी कोई भी बात कोनी पण फेर भी मैं स्वामीजी रै सुरगवास सूं गैरो दुखी हूं ।

मैं क्यूं दुखी हूं, आ बात नीजू भी कोनी, नीं ही इणरो कोई नीजू कारण ही है, म्हारो दुख राजस्थानी भासा रै दुख रै साथै जुड़चोड़ो है । अबै आप सोचोला कै राजस्थानी नै क्यां रो दुख है ।स्वामीजी राजस्थानी रा वरद पुत्र हा आ बात राजस्थानी रै दरद री नीं है, राजस्थानी भासा रै दरद री बात बीजी है ।

स्वामीजी 'भाषा विज्ञान' रा सिरै नांव अध्येता हा, राजस्थानी रा वै पाणिनी भी कैया जावै पण ओ अध्ययन अर ग्यान संपूर्ण रूप सूं राजस्थानी नै नीं मिल्यो । वै पाणिनी आळो काम राजस्थानी भासा सारू कोनी कर र गया, ओ ही राजस्थानी री आंतड़ियां रो दरद है अर म्हारै भी इणी दरद री कठै ही टीस है ।

स्वामीजी राजस्थानी व्याकरण रै काम नै आछ अर सांचै सरूप में करणै में सक्षम हा, पण उमर रो उत्तराद वांनै सरीर सूं लाचार बणा दियो अर वै इण काम नै करचा बिना ही चिर निद्रा में सोयग्या । राजस्थानी सारू स्वामीजी री मौत काची मोत ही कैयी जासी ।

स्वामीजी रै गयां पछै आ बात आज साव लखावै कै राजस्थानी व्याकरण रो काम अब भोत लंबो पड़ग्यो । अब तो दूर-दराज तांई स्वामीजी जैड़ो विद्वान राजस्थानी में को दीखैनी ।

राजस्थानी व्याकरण सारू अेकर मैं डा० उदयवीर शर्मा रै साथै मिलबा गयो जद बात चलाई पण स्वामीजी आपरी मजबूरी बताई कै अब म्हारो सरीर काम रो कोनी रैयो, जे कोई कनै बैठ र काम करै तो मैं 'गाईड' करतो रैवूं तो ओ काम

जरूर पेस पड़ सकै । बियां म्हारी भी आ इच्छा है कै ओ काम कियां ही पेस पड़ जावै··
वा व्याकरण तो भोत संक्षिप्त है···म्हारा भोत सा काम अधूरा पड़्या है·····'···कोई कनै
बैठ र काम करै तो जरूर पूरा हुय जावै···· ··नहीं अै इयां ही पड़्या रैसी····

व्याकरण सारू मैं स्वामी नै कनै बैठ र काम करण सारू किणी नै त्यार करण
री बात चलाई तो स्वामीजी कैयो—इण काम सारू वो प्राकृत संस्कृत पाली, अपभ्रंश
हिन्दी अंग्रेजी गुजराती उर्दू आद भासा रो आछो जाणीकार हुवणो चाहीजै ।···

इण बखत म्हारी आंख्यां में राजस्थानी भासा री सांगोपांग व्याकरण
री छिब आई पण आ व्याकरण आंख्यां सामीं नीं आय सकी । मैं अैड़ो
आदमी स्वामीजी नै नीं लाय देय सक्यो । आप ही बतावो, मैं कठेऊं लायर
देव तो अैड़ो विद्वान ? स्वामीजी रै साथै ही राजस्थानी व्याकरण री बात भी
अेकर तो चाली भी, जे वांरी आतमा ही किणी मांय आ ज्यावै तो बात बीजी
है । टटंपूजिया कामां री सरावणा नीं हुवै। स्वामीजी नै म्हारी श्रद्धांजलि
ओळमै सूं भरचोड़ी है । हीवड़ै सूं ठाडां ओळमो उठै जिको डाटचो नीं डटै । मैं सोचूं
ओ काम कुण करसी···कद होसी ।··

फागड़दा लोग मरयां पछै आदमी नै आपरै चारणी सब्दां सूं देवता थरपणै
सारू री हींज कोसीस करै, बींरै आदमी नै स्यात् दुखी करै, आतमा रै स्यात् ठेस पहुंचावै
अैड़ा काम नीं हुवणा चाहीजै । म्हारै सूं स्वामीजी री महाआतमा रो अपमाण नीं
हुय सकै । मैं तो इण पुण्यात्मा नै आ अरज करूं कै है राजस्थानी री महान् हस्ती, अब
तूं किणी मांय ही परगट हुय अर इण काम नै संपूरण कराय ताकि राजस्थानी रो
दरद दब सकै ।

हे पाणिनी आतमा ! थारी व्याकरण नै राजस्थानी उडीकती ही रैयगी···थूं
राजस्थानी में पाणिनी बणर आयो अर व्याकरण रच र कोनी गयो हे महापुरूष !
म्हारी श्रद्धांजलि में तो ओ ओळमो ही समरपित है थानै श्रद्धा भाव सूं ।·····

संपादक झुणझुणियो
पुरानी गिनानी
बीकानेर (राज०)

△

मैं स्वामीजी नै हंसता मुळकता भी देख्या

वैद्य ठाकुर प्रसाद शर्मा

बैंकुण्ठवासी स्वामी नरोत्तमदासी रे बारे में आ बात जाणी-मानी है के वे हंसता मुळकता कदेकदेई हा । पण इये रो ओ मतलब नहीं है के बांरो जीवन रूखो, अर व्यवहार कठोर हो । जिके आदमी सूं भी बांरो बरताव-व्यवहार होयो बिये में मेळ मिलाप री भावना री कमी को ही नी ।

स्वामीजी रा दरसण पेली बार म्हने विक्रम संवत् १९९४-९५ में होया हा । नाटो कद, दुबळी देह, कोट-पैण्ट अर सिर पर टोप । स्वामीजी डूंगर महाविद्यालय (अबार फोर्ट हाई स्कूल, बीकानेर) से धुर दरवाजे सुं निसर बारे पधारे हा और जियां जियां आगे बधता जांवता हा, बांरी शिष्य मण्डली आदर सूं बारो सम्मान करती जांवती ही । स्वामी जी रे वास्ते छात्रों री ई भावना सूं म्हारे ऊपर भी श्रद्धा रा भाव जाग्या ।

हूं देश रा जाणा-पिछाण्या राजनीति क्षेत्र रा विद्वान् वक्ता भिवानी रा पण्डित नेकीरामजी शर्मा रे सागे डूंगर महाविद्यालय गयो हो । शर्मा जी सूं म्हारी अपणे भिवानी संस्कृत विद्यालय रे विद्यार्थी जीवन सूं ही आछी-भली जांण-पिछाण ही । शर्मा जी पं० विद्याधर जी शास्त्री सूं मिलण खातर बीकानेर आया हा और जिके बगत ही बांरे सागे जांवतां थकां स्वामी जी रा दरसण होया हा ।

इये बाद लाडनूं सूं आदरणीय भाई अक्षयचन्द्र जी शर्मा बीकानेर पधारया, जद पेली बार स्वामीजी रे घरां जावणें रो और बांसू बातां करणें रो काम पड़्यो पण हंसणें मुळकणें वाळो बगत आयो श्री कनक मधुकरजी रे सागे स्वामीजी सूं मिलती बेळा । कनकजी राजपूताने रा मानीजता पत्रकार और साहित्यिक क्षेत्र रा होणें रे कारण म्हने सागे लेयर श्री स्वामीजी, ठाकुर रामसिंहजी अर श्री शंभूदयालजी सक्सेना सूं मिलण खातर चाल्या तो सी० आई० डी० रा दो जवान म्हारे लारे हूय लिया । बिये बगत खादी रा कपड़ा अर गांधी टोपी पेर र बीकानेर में आवणुं चोखो-भलो तूफान खड़्यो कर देवंतो हो । इयां तो भाई अक्षयचन्द्र जी रो पहरान भी कनकजी जिस्यो ही हो पण अक्षयचन्द्र जी ठहरया म्हारे कने ही हा इये वास्ते सी० आई० डी० वाला पूछ ताछ कर र नचीता हा बांनै भरोसो हूय गयो के अे आपरे निजू काम सूं आयोड़ा है ।

कनकजी अर स्वामीजी, राजस्थानी भाषा-विज्ञान अर व्याकरण, राजस्थानी लोक गीतां ऊपर बात चीत कर रिया हा जके बगत झरोखां मांय सूं सी० आई० डी० वालां ने झांका घालतां ने देखर स्वामीजी कयो के आप लोगां रे सागे और कुण है तो म्हैं कयो के म्हांरा दो 'बोडी गार्ड' है अर आ सुणर स्वामी जी मुळक्या-मुसकराया।

× × ×

सन् १९४२ ई० में बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन रो चौथो अधिवेशन सुजानगढ़ में सेठ रामगोपालजी मोहता रे सभापतित्व में हूयो हो। राजस्थान रा संस्कृत भाषा अर संगीत रा विद्वान् पं० केशरी प्रसादजी शास्त्री इये सम्मेलन में हाळण सूं ना करदी आ केंवता थकां के म्हने रोजीने थे संगीत सम्मेलन रो 'डूम' अर्थात् सभापति बणाय देवो। मैं को हालूंनी। ना करे पाछे शास्त्रीजी ने मनावणूं हंसी खेल को होनी। पं० विद्याधरजी शास्त्री म्हने बुलायर केशरी प्रसादजी ने सम्मेलन वासते त्यार करण रो आदेश दियो। कारण, बराबर वालां रे वास्ते तो ओ काम मुश्कल हो और हूं ठहर्‌यो केशरीप्रसादजी री टहल-चाकरी करण हाळो शिष्य श्रेणी में। तो म्हारे आ केंवता साथ के सुजानगढ़ म्हारो निवास स्थान है—शास्त्रीजी झट त्यार हूयग्या।

रेलगाड़ी रे एक ही डब्बे में सगळा महारथी भेळा वैठ्या हा जद पं० विद्याधर जी शास्त्री अपणें विनोदी सभाव पर उतर आया और केशरीप्रसाद जी सूं मोटे मोटे साहित्यकारां री भूलां-गलत्यां बखाण करावतां थकां आपरी खुद री भूलां सुण रिया हा और खूब हंस रिया हा। इये बीच ही पं० विद्याधरजी कयो के शास्त्रीजी स्वामी नरोत्तम दासजी रे बारे में भी कीं सुणावो तो शास्त्रीजी जबाब दियो के नरोत्तमदासजी अठे मोजूद होवे तो कय सकूं हूं पूठ पाछे को केवूंनी (शास्त्री केशरीप्रसाद जी प्रज्ञाचक्षु हा) जद स्वामीजी बोल्या के शास्त्रीजी हूं अठे मौजूद हूं। अब तो शास्त्रीजी स्वामीजी री राजस्थानी लिखावट अर बांरे गीता रे शहरी पण ने लेर विनोद पर उतर आया। सारा लोग-बाग हंसण ने लाग गया। स्वामीजी खुद भी पं० विद्याधरजी जिसे अट्टहास में न सही पर खासा मुळकता हंसता रया। रतनगढ़ स्टेशन तांई ओ सिलसिलो चालू रैयो।

× × ×

लारले दिनां जद स्वामीजी रो स्वास्थ्य घणूं कमजोर हूयग्यो तो चिकित्सक के रूप में बांरी सेवा करण रो मौको भी म्हने मिल्यो और इये रे उपहार स्वरूप वे 'राजस्थानी लोक गीत बिहार' री अपणी संकलित प्रति पर आपरा हस्ताक्षर कर भेजी, जकी बारे प्रेम और सनेह री अन्तिम प्रसादी हुयगी।

△

म्हारा प्रेरणा स्रोत पं० नरोत्तमदासजी स्वामी

लिखारा–श्री अगरचन्द नाहटा
अनुवाद करणिया–डा० भगवान किराडू 'नवीन'

सुरगीय श्री नरोत्तमदास जी स्वामी सूं पैलड़ो मिलण कद हुयो आ तो अबै ठीक सूं याद कोनी पण जद सूं मनैं साहित खोज री रुचि हुई तो स्वामी जी रो नांव इत्तो प्रसिद्ध हो क कोई बात पूछणी होती तो बांरै खनै पूग जातो अर बै बड़ी तत्परता सूं उण रो समाधान करता अर मदद देता। सुरू सूं ई बै बोलता कम ई हा ईं खातर उत्तर बौत संखेप में होतो। उपयोगी पोथ्यां बै सामै राख देता, जिण सूं विसेस जाण-कारी हो जाती। आपरी ओर ऊं बै बौ'त ई कम बात कें'ता अर बणै वार तो चुप ई रे जाता। ऐड़ा कम बोलणिया मिनख म्हैं कठेई दूजा नीं देख्या है।

स्वामीजी म्हारै प्रेरणा रा आधार रैया है। सज्जनालय रै ऊपर साप्ताहिक गोष्ठयां होती, उणमें ओ नियम बणालियो हो के कोई खाली हाथ नीं आवे। छोटी-मोटी गद्य या पद्यात्मक रचणा, कईं न कईं लिख'र जरूर लावै। म्हारो विषय घणखरो जैन साहित संबंधी नुई खोज सूं रैतो। स्वामीजी हमेसा प्रोत्साहित करता रैता अर नुई जाणकारी अर सुझाव भी देता। म्हारे बौ'त सै लेखां नै स्वामी जी मेन'त कर'र नुंवो रूप देता। इत्ती मेहनत दूजा खातर कुण करै?

म्हारो राजस्थानी भासा मांय लिखणो तो बांरी प्रेरणा सूं ई हुयो अर समै-समै माथे लिखणों भी जारी रेयो। ई विसय में म्हारै भतीजे भंवरलाल घणी प्रेरणा ली अर राजस्थानी भासा री काण्या, संसमरण आद घणाई लिख्या जिका, 'बानगी' नाम सूं राजस्थानी साहित्य अकादमी सूं प्रकासित हुया है।

स्वामी जी प्रकृति सूं बो'त सरल अर सज्जन हा निस्छल भाव ऊं सदा सबनैं सहयोग देता रैया। गीता रे आदर्श रे अनुसार अनासक्ति अर फल री इंच्छया नी करणी बांरे जीवण रो आदर्स रैयो। आपसूं होणें आळे काम री खातर कीनैई ना नीं करता। इस्सा परोपकारी व्यक्ति आज रे सुवारथ प्रधान जगत् में बिरला ई मिळै है। कैंणो नीं हुवे के बानैं काम रो मोह हो, नामरो कतेई नीं हो।

स्वामी जी नैं धुन चढ़ती जणें खूब काम करता पण मूड नीं होणें पर कुछ भी लिखणों बांरे वास्तै संभव नीं हो। मनैं कें'ता के थांमे आ बिसिस्टता है कि मूड रो कोई

सवाल नीं, जद भी जो लिखणो चावो–लिख देवो हो । म्हारे लेखां री सूची रो संपादन बां घणी मे'नत कर'र बींनैं 'राजस्थान भारती' में बो'त पेली छपवायो हो अर बीरे बाद ई बै बड़ी सूची प्रकासित करवाणें खातर प्रेरणा देता रेया पण बा पूरी संपादित नी हो सकी ।

स्वामी जी रा केई काम बरसा ऊं चालू है, फेर ई बे पूरा नीं हो पाया है । ईं वास्तै आपां सब रो कर्तव्य है के बांरे अधूरा कामां नैं पूरा कर'र प्रकास में लावां । बां मांय सूं केई ग्रन्थ तो बो'त ई महत्व रा है जयां हिन्दी रो 'वृहद् व्याकरण' । कई बरसां तांई बै ईं काम में लाग्या रेया पण जद तक बांनैं पूरो संतोष नीं होतो प्रकासित करणैं री उतावळी करणों बांनैं नीं सुहातो हो । म्हें कई बार केयो के थां इत्तो परिश्रम करचो वीनैं जलदी प्रकासित करवादो । ओ एक बो'त महत्व रो उपयोगी काम है, ईसूं अेक अखरणें वाळी कमी री पूरती होसी । पण दुःख है कै बो बांरी मौजूदगी में प्रकासित नीं हो सक्यो । बियां बां जो कुछ लिख्यो बो छप्यो है अर बो ई बांरे नाम नैं अखी राखण में काफी है ।

स्वतंत्र लेखन री तुलना में वे पुराणी रचनावां रे सम्पादन में घणी रुचि राखता । बांरा संपादित राजस्थानी दूहा, ढोला मारू रा दूहा, क्रिसन रुक्मिणी री वेलि' राजिया रा सोरठा, राजस्थानी लोकगीत आद बो'त उपयोगी ग्रन्थ है । राजस्थानी भाषा रो व्याकरण बां छोटे रूप में, पण बो'त आछो लिख्यो जिको पुरस्कृत भी हुयो । राजस्थानी सब्द कोश वास्ता भी बां हजारां शब्दां रो संकलन कियो । पृथ्वीराज रासो रे लघु संस्करण रे संपादन में बो'त मे'नत की । पाठ्य क्रम री पुस्तकां त्यार करणीं बांरे बाए हाथ रो खेल हो । बांरे श्रम रो प्रकासकां घणो लाभ उठायो पण बां आपरे सहज सुभाववश कोई शिकायत नीं की ।

बियां तो कॉलेज आद में बां सेकड़ां विद्यार्थ्यां नैं भणाया अर घणांई शोधार्थियां नैं शोध करती बखत मोकळो सहयोग दीनो ।

स्वामीजी कई संस्थावां अर ग्रन्थ माळावां समै-समै पर चालू की पण बांनैं स्थाइत्व नी प्राप्त हो सक्यो । जुरूरत है बांरी यादगार में कोई इसी संस्था री थापना की जावे, जिकी बांरी आकांक्षावां अर अधूरे कामां नैं सम्पूरण कर सकै । बांरा सपूत अर शिष्य लोग जल्दी आगे आवै । बीकानेर मांय बां जिस्सा महान् विद्वान और बणें अर बांरी याद हमेस बणी रैवै ईं खातर मिलजुल'र प्रयत्न करणों जरूरी है । बांरा अप्रकासित अर अधूरा ग्रंथां नैं तो कठै सूं ई हुवो, कियांई हुवो प्रकासित करवाई देणां चइजै । आ ई कामना करता हुयां आदरणीय स्वामीजी नै आपणी श्रद्धांजलि समर्पित करूं हूं ।

अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग,
नेहरू शारदा पीठ कॉलेज,
बीकानेर

राजस्थानी रा पंकज बन्धु-स्वामीजी

डा० मदन केवलिया

गुरुदेव पं. नरोत्तमदास स्वामी फरींद प्रतिभा रा धणी हा। पीरी अर आखरी टेम तक बे पौरसी ई रैया। उण सरीखा परमहंस, नोखी पोत रा सिरताज अने पटंतर विस्यां रा जाणकार आजकल को दीसे नी। बै इसा फूलद हा, जिणरे हेठां बैठ'र सगळा जणां छांव रा आणंद लेंवता।

गुरुदेव सूं म्हारो परिचय सन् १९५३ में हुयो। डूंगर कॉलेज में तृतीय वर्ष में अलंकार अने रस सिद्धांत पढ़ावण सारू आप पधारता। इती सरलता अने उतमाई सूं ईं नीरस विस्य नै पढावता कै सगळा विद्यार्थी मंत्रमुग्ध हुय जांवता। धीमे सुरां मांय सूं संगीत निकळतो और म्हे लोग बराबर नोट करता जांवता। उणरी पोथी 'अलंकार पारिजात' आज भी विद्यार्थियां सारू विश्वकोस है। दो साल हूं उणां सूं अलंकार रस पढ'र एम. ए. हिन्दी मांय स्वामीजी सूं 'आधुनिक काव्य', खासकर 'कामायनी' पढी। बै टेम 'कामायनी' माथे टीकावां कमती ही, पण स्वामीजी सूं पढण रै बाद टीकावां री जरूरत कोनी पड़ी। स्वामीजी खुद शब्दकोस अने विस्वकोस हा। सन् १९५५ में स्वामीजी री बदली महाराणा भोपाल कालेज, उदयपुर हुवी, जठै बै १९६२ तक रैया। बदली री खबर सुण'र स्वामीजी घणा परेसान हुया। म्हे सगळा विद्यार्थी उणांरै घरे पूग्या तो गुरुजी चुपचाप बैठा हा। घणी ताळ री खामोशी रे बाद स्वामीजी बोल्या—"सरकार तो पंतजी (पं. मोहनवल्लभपंत) नै सजा देवणो चावंती ही ईं वास्ते उणांनै उदयपुर सूं अठै भेज्या है, पण सजा तो म्हानै मिली है......खैर, जावणो पड़सी।"

टेसण माथे म्हे एम. ए. रा विद्यार्थी पूगग्या हा। फर्स्टक्लास रै डिब्बे आगै खड़्या स्वामीजी फूलां सूं लदयोड़ा हा, पण उणरो चित सांत नी हो। जळमभौम नै छोडण रो गाघ उणरे चैरे माथे साफ दीस रैयो हो। टेसण री कळळ हूंकळ सूं परे, नाखप बातां सूं दूर स्वीमीजी आलोच मांय डूब्योड़ा हा। उण जळवट सा ऊंडा मिनख ने देख'र म्हे सगळा जणां गम रे जळवट मांय झकोला खा रैया हा। स्वामीजी म्हां सगळा विद्यार्थियां नै इतरो ई कैयो–'थे लोग खूब मेहनत करिया। डूंगर कॉलेज री कीरती बढावणी है।' स्वामीजी रो म्हारे सूं घणो स्नेव हो। इयां बै म्हारे अगरजां (स्व० पुरुषोत्तम केवले अर श्री गणेश केवलिया) रा भी यशस्वी गुरुदेव रैया हा, ईं

खातर म्हारे माथे भी उण री खास किरपा ही । एम. ए. रै टेम अर बाद में पी. एच. डी. री टेम उण सूं म्हनै घणी मदत मिली । एम. ए. रे बाद स्वामी जी म्हनै हेक परमाण पतर भी दियो । बो आज तांई म्हारे कने ठावको राख्यो है ।

हेक दफा हूं उणरै घरै रिसर्च करतां थकां पूग्यो । स्वामीजी ने आ जाण घणो दु:ख हुयो कै एम. ए. करण नै बाद भी हूं ठीक-ठाक नौकरी नीं पकड़ सक्यो हूं । वै कैयो–'हिंदी री दुरदसा धणी है, थे अंगरेजी मांय एम. ए. करता तो इत्ता फोड़ा कोनी पड़ता' मैं बोल्यो –'हिंदी रै परति म्हने घणो अनुराग है, पण नौकरी तो अनुराग सूं कोनी मिळ सकै···'स्वामीजी रो चैरो बतांवतो हो कै बै शिष्य री परेसाणी सूं भी परेसाण है ।

स्वामीजी सांचा मानव हा । वे किसी लाग-लपेट अर उठा-पटक मांय विस्वास नीं राखता हा । डूंगर कॉलेज, भूपाल कॉलेज (उदयपुर अर ज्ञान-विज्ञान कॉलेज, (बनस्थली) रे हिंदी विभाग री बै सोभा हा । आज तो सगळी जागा आपाधापी अर पैसा बटोरण री चहाव ई मिनखां मांय दीसे, पण स्वामीजी निस्वारथ भाव सूं, पूरे खेप अर करमणा सूं काम करता हा । राजस्थानी रे वास्ते अपेल बिस्राम भी नीं करता । राजस्थानी नै आज रे माहौल तांई पूंचावण में स्वामीजी रो घणो हाथ है । उण जिसो खेपियो आज दीसे कोनी ।

जद भी हूं, उण सूं मिलतो, वै राजस्थानी में लिखण अर बोलण सारूं म्हने उतसाहित करता । उण री अरूठ प्रेरणा सूं ई हूं राजस्थानी में लिखण री सोचण लाग्यो । आज टूटी–फूटी राजस्थानी लिखण लागग्यो हूं, ईं बात रो स्रेय आदर जोग स्वामीजी नै ई जावै ।

स्वामीजी राजस्थानी रा पंकज बंधु हा । उण री द्दस्टि रो परिवेस्टन घणो ऊंडो हो । आज घणा बंधु राजस्थानी रे समरथन में पंख उलखणा ई दीस रैया है; पण स्वामीजी ईं बाबत घणो काम कर्‌यो है, जणां ईज आज राजस्थानी इतरी समरिद्ध दीसे, अर तीनूं विस्वविद्यालयां मांय राजस्थानी रो विभाग खुलग्यो है । विरोधियां री अरराट, स्वामीजी सरीखे मिनखां री सिंह गर्जना सूं दबगी है ।

राजस्थानी पांणै स्वामीजी घणा क्यावर कर्‌या है । उण रै ई निरदेसण मांय राजस्थानी साहित री अनमोल निधियां सामै आयी हैं । 'राजस्थान रा दूहा', 'ढोला मारू रा दूहा,' राजस्थान रे लोकगीत. ग्रामगीत, कहावतां बीजी पोथियां मांय स्वामीजी रो अकूत सहयोग रैयो है । उण री कितीइक पाण्डुलिपियां अजै प्रकासण री बाट जोवे है, इण मांय पृथ्वीराज रासो (लघुतम रूपांतर), संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो (टीका समेत), राजस्थानी बातां आदिक घणां ग्रंथ है । बै एक कानी राजस्थानी रे जूनै साहित

रा उद्धारक हा, तो दूजी ओर राजस्थानी री नवीं विधावां रे सरजण सारू प्रयत्नशील हा। उण लिख्यो–"पण किणी समाज नै जागतो अर सक्रिय राखण सारू खाली जूनै साहित्य री गौरव गरिमा सूं ही पार कोनी पड़ै, समाज री शिरावां में ताजो खून वैवतो रैवे, इण खातर चाहीजै ताजो अर समयानुकूळ साहित्य।"(सम्पादकीय, 'जागतीं जोत', जनवरी १९७३, अंक १) ईं अंक मांय 'सोराब और रुस्तम' (एकांकी) लिख'र 'खुद' स्वामीजी ई विधा में योगदान कर्यो।

विज्ञापन सूं थेट स्वामीजी रो जीवण अणांक मिनख रो हो। बै अकस अनै जिनगी री तगड़ सूं परे हा। राजस्थानी री किसमत फौरी ही, जु स्वामीजी जिसा जळ-बळ लिखारा ईं बखत सुरग सिधार गया।

पार्वती सदन, कोट गेट
बीकानेर–३३४००१ (राज०)

□

श्रद्धा–सुमन

डा० उदयवीर शर्मा

समझदारी आणै रै साथै मन्नै भारत विख्यात विद्वान, मायड़ भासा अर साहित्य रा उद्धारक, सज्जनता री मूरत, महामना श्री नरोत्तमदास जी स्वामी रै नाम री जाणकारी हुई । विद्यार्थी जीवण में पढ़ता थकां राजस्थानी रा गौरव डा० मनोहरजी शर्मा सूं 'सुदामा-चरित' पाठ पढ़ण रै पछै मैं प्रस्न करचो कै ये नरोत्तमदास जी कुणसा ? पूजनीय गुरुदेव रो उत्तर हो, "राजस्थानी अर हिन्दी साहित्य रा जाण्या-मान्या प्रकांड विद्वान, लूंठा साहित्कार, विलक्षण प्रतिभा रा धणी श्री नरोत्तमदासजी बीकानेर रा रैवणिया हैं अर इण पाठ रा लिखारा नरोत्तमदासजी दूजा है ।" उण दिन सूं ही पू० श्री स्वामीजी रै नाम अर कामां री मन भांवती जाणकारी काना में, मन में, अर विचारां में घूमै लागी, घर कर लियो । धीरै-धीरै ग्यान बढोतरी रै साथै राजस्थानी, हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, गुजराती भासावां रै गहरै-गंभीर विद्वान श्री स्वामीजी री रचनावां सूं जाणकारी होवण लागी अर मेरो साहित्यिक मानस बां रै नेड़ै पूंचतो रह्यो ।

राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ री थरपणा अर 'वरदा' पत्रिका रै प्रकांसण रै साथै श्री स्वामीजी रो नाम मेरै घणो नेड़ै आंवतो रह्यो । बां रा ग्यान भरचा अर प्रेरणा देवणिया पत्र समिति में आवता रैता । मेरो लगाव बढतो गयो । समिति रा संस्थापक अध्यक्ष पू० स्व० पं० श्रीलालजी मिश्र अर जीवण, शिक्षा अर साहित्य में मेरा मार्गदरसक गुरुदेव पू० डा० मनोहरजी शर्मा आदि सूं साहित्यिक चर्चावां में बेरो पड़तो रह्यो कै श्री नरोत्तमदासजी और भासावां रै साथै पाली, उर्दू, बंगला, मराठी, रूसी, जर्मन, अंग्रेंजी आदि भासावां में भी एक गतिसील लुंठा विद्वान हैं । व्याकरण, भासा विग्यान अर लोक साहित्य आपरा मन भावता विषय है जिण में आपरी गति बेजोड़ है । उणां री चर्चावां सूं या बात भी मेरै मन में बीं समै बैठी कै श्री स्वामी जी आपरै पथ रा एक निष्ठ पथिक है, रचनावां में अणथक रमणियां है, कृतित्व में अद्वितीय है । इसड़ै सुरसत-सपूत रा दरसण तो बेगा करणा, घणा लाभकारी रैसी पण भोग जोग सूं ई महामानवां रा दरसण हुया करै है ।

सन् १९६८ में मेरा साहित्यिक उत्प्रेरक गुरुदेव डा० मनोहरजी शर्मा रो आदेस हुयो कै पी.एच डी. तांई थारो नांम राजस्थानी री बढ़ोतरी तांणी प्राण पण सूं

रत रैवणिया विद्वान श्री नरोत्तमदासजी स्वामी नै लिखवा दियो है । उणा री स्वीकृति मिलगी है, विषय रो चुनाव भी कर लियो गयो है पण स्वामीजी सूं आप मिलो । मिल्या फेर ही सारी बातां तैय हुसी । यो कागद आचार्य प्रवर सूं मिलणै तांई "आदेश पत्र" ही नई हो, मेरै साहित्यिक जीवण तांई एक "पुष्टि-पत्र" भी हो । बीं समै रै मेरै आत्मिक आंणद रो बखाण करणो दोरो है बा एक अनुभूति री स्थिति ही । दोहरै आंणद री अनुभूति हुई-एक–मानस में स्थापित साहित्य देवता री मूरत सूरत रा दरसण करणै रो सौभाग्य मिलणो अर दूजी-पी.एच.डी. तांणी विषय रो निर्धारण अर गाइड री स्वीकृति । विभाग रो यो आदेश हो कै पी.एच.डी. तांणी विभागीय स्वीकृति सारू पैली विषय रो निर्धारण, उण री रूप रेखा अर गाइड री लिखित स्वीकृति होवणी जरूरी है । इण सब र पछै विभाग आपरी स्वीकृति देवै । ई कारण गाइड री स्वीकृति घणो वजन राखै । गाइड रै रूप में श्री स्वामी जी री स्वीकृति मिलणै री सूचना सूं घणी खुशी होई ।

थोड़ा दिन पछै पू० भाई श्री मोहनलालजी पुरोहित (बीकानेर) रै साथै मैं पी.एच.डी. बाबत पू० श्री स्वामीजी सूं मिलणै उवां रै आवास पर गयो । श्री पुरोहित जी रो गैलड़ै पांच-दस वरसां सूं मेरै सूं आत्मीय भाव हो, उणारी घणो महर ही मेरै ऊपर । आज भी बै मन्नै आपरो छोटो भाई मानै । पू० श्री स्वामी जी रै आवास कानी बोलता-बतलाता जारया हा । मारग में श्री पुरोहितजी मन्नै कैवण लाग्या, "जिका सैं थे मिलण जार्‌या हो बै एक लूंठा साहित्य तपसी हैं, प्रतिभा रा धणी हैं, मित भासी है, एक निष्ठ भाव सूं जीवण रो लक्ष्य बणा र काम करणिया अर करावणिया है, अनासक्त भाव सूं रैवणिया है, छोटै नै, बराबरिये नै, बड़ै नै कोई कष्ट देवणै रो भाव कदैई को राख्यो नीं, घणा संकोची है । आप देखोगा, स्वीमीजी री लिखावट इतणी फूटरी है, मोती सा जड़ र लिखै जाणै कलम सूं मांडचा होवै, थोड़ो लिखै, गंभीरताऊं लिखै । विराम चिह्ना, शिरो रेखा, कारक प्रयोग अनुस्वार आदि सैं रो ध्यान राख र मांडै, चलत री लिखावट कदैई कोनी मांडै । स्वामीजी संस्कृत अर हिन्दी में प्रथम श्रेणी सूं एम. ए. है । आं री निष्ठा, लगन, विद्वत्ता, श्रम साधना, गजब री है । रात-दिन लिखणै-पढणै में लाग्या रैवै । आप जाणस्यो, स्वामीजी एक तपोनिष्ठ प्राध्यापक रै रूप में मानीजता शैक्षणिक सदाचार रा प्रसारक रह्‌या है । साहित्य, संस्कृति, कला रा सजग साधक, चिन्तक, मनीषी अर समर्पित साहित्यकार है ।"

बातां चालती रई, मैं भी पूछतो, सुणतो रहयो । श्री पुरोहित जी बतायो "स्वामीजी बीकानेर री लूंठी साहित्यिक संस्थावांरा संस्थापक सदस्य है । सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट अर "विद्या मन्दिर" आं री प्रेंरणा सूं ही थरपीजी अर पणपी । आप बीस-तीस संस्थावां रा स्थायी सदस्य, सभापति, साहित्य मंत्री, होगा । कई युनिवर्सिटियां री परीक्षावां रा परीक्षक है, पी.एच.डी. रा पुराणा निर्देशक है । लक्ष्मीकमल इवी आ कन्नै पी.एच.डी. कर री है । घणी सारी पुस्तकां, पाठ्य पुस्तकां,

पत्रां रा कुशल, खरा, सरनाम सम्पादक है । आप श्रम सूं थकणिया कोनी, थकाणिया है । आप घणाखरी नामी सोध पत्रिकावां रै परामर्श मण्डल रा सदस्य भी है ।"

स्वामीजी रो मकान-शान्ति आश्रम-नेड़ै आयो जणा श्री पुरोहित जी एक बात धीरां सी और कई-इसी बात पू० डा० मनोहर जी शर्मा भी मन्नै रवाना होती बखत कई ही--"थे कम बोलियो, स्वामीजी कम बोलै, घणी बातां कोनी करै । घणा बोल्यां, कांई बेरो, बानै झाळ आज्या, बुरो मानज्या, मैं सगली बातां थारै तांई करल्यूंगा । थानै पूछै जणा थे बोलियो ।" या सीख मैं कामैंजै में धरली अर 'आश्रम' में प्रवेश कर्‌यो तो ठिगणा कद रा, चस्मो धार्‌यां, तैमल बांध्यां, कांधां पर चादर, गेर्‌यां, पगां में चम्पल, एक सादो सो कमीज, पैरयां रंग भेद सूं जूझता केस, चोड़ो ललाट, आकर-सक मुख मण्डल, साहित्य तप सूं तपोड़्यो तन निखरयोड़ो मन अर ग्यान-धन रा धणी एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व रा धारक आपरै 'लान' में घूम रया हा । सुबै रो सात-आठ रो बखत हो, सितम्बर रो महीनो, सुहावणो दिन हो । श्री पुरोहित जी इसारै में बतायो कै ये श्री स्वामीजी हैं । मैं सावचेत हो र आगै बढयो तो नेड़ै पूंचता ई "साहित्य सागर" रै चरणां में मेरो मस्तक अपणै आप झुकगो, वै उठायो जणा ई उठ पायो । भाव विभोर हो र 'साहित्य-स्वरूप' रा जी भर र दरसण करया, जीवण में इसै आणंद रो यो पैलो अनुभव हो ।

बातां-चीतां चालू होई । श्री पुरोहित जी सारी बातां बताई । मेरी बारी आई पी-एच-डी. तांणी, सोध-विषय री चर्चा होई । रूप रेखा मैं बणा र लेगो हो जिकी दिखाई । बै ले र रखली । वै बोल्या "राजस्थानी और हिन्दी साहित्य को शेखा-वाटी क्षेत्र का योग दान "विषय आपतांई ठीक है, अंचल तांई उपयोगी है अर राजस्थानी साहित्य रै इतिहास री पूर्णता तांई भी मैताऊ है । ई में घणी जाणकारी तो पं० श्री लालजी मिश्र अर डा० मनोहरजी ही राखै । थे बांसूं समै समै पर राय लेवता रहयो मै भी जाणू जिसो निर्देसण करतो रैसूं ।" मैं हां भरी अर विभाग री स्वीकृति लेवण तांई नियम री जानकारी श्री स्वामीजी रै सामी निवेदन करी । वै सुण ली, बोल्या कोनी । बात पूरी होई । म्है चाल पड़्या । कोई आध घन्टा, बेसी सूं बेसी, म्है बठै रहया । दरवाजै रै बारै दूर तक स्वामीजी म्हानै पूंचाण आया, म्है नटता रैह्या, पण मान्या कोनी । लूंठी विभूतियां रो मन दूध जिसो 'धवळ' होवै । मैं स्वामीजी रै टाबरां रै दांई रो हो पण इसो सम्मान पार धन्य होगो । आत्म विभोर होगो । म्हारलै मन रै 'टेप रिकार्डर' में प्रथम दरसण में ही वांरी बातां, प्रभाव पूर्ण प्रेम भरी ध्वनि 'टेप' होगी अर बांरी छवि मेरै मन री रील पर अंकित हगी । वा आज तक सांचलै भाव सूं प्रभावित कर री है ।

आती बार मारग में 'सुदामा-चरित' रै कवि नरोत्तमदास री पंक्ति "आती बेर गुबाल जी कुछ नै दीन्यो हाथ" बार-बार आवती रैई । स्वामी जी लिखित में स्वीकृति भर रूप रेखा" क्यूं भी कोनी दीनी । मेरै मन में 'कृष्ण-सुदामा' रो भाव

जाग्यायो । दो चार दिन मैं बीकानेर में ठैरगो । नियुक्ति स्थान पर पूंच्यो तो 'सो क्यूं" एक बैरंग लिफाफै में त्यार मिल्यो । दो रुपियां री टिकट लाग्योड़ो लिफाफो पांच पीसा तांई दस पीसा रो बैरंग होगो । बात समझ में कोनी आई । दूजै दिन पोस्ट कार्ड मिल्यो, लिख्यो हो "दस पीसा री बैरंग डाक भेजी है, जरूर सूं मिलणै तांई । रूप रेखा संवार र ठीक कर दी है । थे थारो काम इब चालू कर द्यो । " हेत भरयो पत्र पार घणो धन्य होयो ।

पी. एच. डी. री मौखिक परीक्षा सारू जयपुर जावण तांणी बीकानेर हो र जांणै रो आदेश स्वामीजी दियो तो घणा विनम्र शब्दां में, आपती भासा में अर हेताळू भाव सूं । बां दिनां स्वामीजी एकला रेल यात्रा कोनी कर्‌या करता । पण मारग में एक भी काम तांई मन्नै कोनी कह्‌यो । बल्कि मेरी तकलीफ रो ध्यान घणो राख्यो । आती बार रात री रेल यात्रा ही । स्वामीजी ऊपरलै 'बर्थ' पर आपरो बिस्तर आप लगायो मैं कैवतोई रह्‌यो पण सुणी ई कोनी, मान्याई कोनी । आराम करता बखत बांरै पगा री आंगळियां में बांयटा आवै लागा । घणी पीड़ा होई पण कह्‌यो कोनी । मैं बानै पूछ बैठ्यो, 'क्यूं कोई तकलीफ है कांई ?" 'ना' कह र टाल दी । पण घणो जोर दे र पूछणै पर सारी पीड़ा रो बरणन कर्‌यो । मैं पग दाबणै तांई घणो निवेदन कर्‌यो पण हां भरी ही कोनी । कोइ सेवा रो मौको दियो ही कोनी । दिनगै बीकानेर पूंचगा । आती टेम बै मन्नै बीकानेर सूं जयपुर जाणै आणै रो रेल भाड़ो–दोनुवां रो, आपरो अर मेरो-दबाव रै साथै पाछो कर दियो । मैं 'गाइडां' रै बारै में घणी बातां सुण राखी ही । पण मैं तो सौ पचास रुपया कमा र पी. एच. डी. करी । इसा निरलेप निर्देसक, मूक साधक, समुद्धारक, अध्ययन योगी, आत्मीय भाव री मूरत, हम दर्द, साहित्य कारां रा सेवक, मिलणा मुसकिल है । 'गुरु-भक्त' पुरसांरी बात तो घणी सुणी अर बारा दरसण भी कर्‌या पण "शिष्य भक्त" रै रूप में पू० स्वामीजी नै ही देख्या । आपरै शिष्यां तांई आप 'मर्‌या जिया ।" बानै सदा चढता-बढता देखणो चावता ।

'डाक्टरेट' री उपाधि मिल्यां पछै भी इब तक जद कद भी मैं बीकानेर जातो तो 'गुरुदेव' रा दरसण जरूर कर र आवतो । बीकानेर मेरै तांई तीरथ होगो । कोलायत मैं कदेई कोनी गयो पण स्वामीजी रै कन्नै जरूर गयो । जद भी मैं बांसूं मिलतो, बै सदाई 'करणै रो' आदेस' देवतां । राजस्थानी तांई क्यूं नै क्यूं करणै री बात कैवतां । मौलिक लेखन री बान कैवतां । 'साहित्यिक मण्डल' स्थापित करणै री कैवता । एक जागरती ल्यावण रो जोस जगावता । राजस्थानी गद्य री एक रूपता तांई बां में एक लगन हीं, एक दरद हो, एक अन्तर पीड़ ही, एक मानस हो । बै सदाई राजस्थानी गद्य री एक रूपता रै सब सूं घणै नेड़ै साहित्यकारां में डा० मनोहर जी शर्मा रो नाम गिणावतां । बातां तो घणी है, कुण कुण सी नै मांडी जावै । बांरो हेत मेरै पर सदा बढतोई गयो । बै सदा प्रेरणा देवता रह्या ।

स्वामीजी रै गुणां रो कठै तांई बखाण कर्‌यो जावै । वांरी कार्य क्षमता, कर्त्तव्य निष्ठा, समय री पाबन्दी, सरलता, विद्वता, विनम्रता, सत्यनिष्ठा, साहित्य साधना ग्रहण करणै जोग है । बै तो कर्मयोगी अर साहित्य रा दिग्गज हा ।

गैलड़ै बरसां में स्वामीजी रै मन में सदा या पीड़ रैवती कै कोई चोखो सो परिश्रमी विद्वान, जिको सगळी भासावां रो जाणकार भी होवै अर बताए मुजब काम करतो रैवै मिलज्या तो त्यार करया पड़्या अणछप्यां ग्रंथां नै सावळ लिख र प्रकास में ल्यावण री चेस्टा करी जावै पण बारी या साध अधूरी रैगी । बांरा अणछप्यां ग्रंथ बांरै सामी अणछप्या ही रैगा । बै आपरी "अपभ्रंश पाठ माला" पोथी-री प्रेस कापी करण नै मन्नै देई जिकी सूं बानै सन्तोष होयो अर बा पोथी छपगी ।

दुबली देह हाळा स्व० स्वामीजी आपरी ग्रंथ रतनां सूं भरी लाइब्रेरी में सदा साहित्य साधना में एक तपधारी री भांत लीन रैह्या । वीतराग योगी री भांत दुनिया दारी सूं अळगा रैवतां निरलेप भाय सूं साहित्य साधकां नै आपरी तपस्या रो फल बांटता स्व० श्री स्वामीजी आपरो "साहित्य--सौरभ" नै सदा सदा रै वास्तै 'पूनपाणी' में मिला र दिव्य लोक में रमण नै चल्या गया । इसड़ा 'उत्तम नर' 'दास' सूं साहित्य सेवा करता करता आपरै ग्यान रा 'स्वामी' बण्या अर जीवण नै सार्थक बणावता ओरां रो मारग प्रशस्त करचो । इसां रो जीवण धन्य है, कर्म धन्य है अर धर्म धन्य है जिका ओरा तांई प्रकाश स्तम्भ बणै । इसा नर पुंगव, साहित्य सिरोमणी, दिव्य आत्मा स्व० श्री नरोत्तमदासजी स्वामी नै मैं अन्तर मन सूं श्रद्धा सुमन समर्पित करूं ।

□

साहित्यिक धूणै रा ग्रेक ग्रलमस्त जोगी स्वामीजी

ललित आजाद

"कमरे रै मांयने तो कोनी" म्हे कैयो ।

"कांग्री को ? बे तो कमरे मायने ही है ।"

घर वाळा बोल्या ।

म्हे फेरूं सावचेती री नजर ग्रमरे माथै नांखी पण म्हने तो कमरे मांय किणी माणसिये री गन्ध नीं ग्राई ।

छेकड़ ग्रांगणे में ग्राय'र म्हे ग्रोजूं जोर सूं बोल्यो नीं सा कमरे मांयनै तो कोग्री भी कोनी ।

ग्रबकाळ कोग्री थोड़ो चिड़'र बोल्यो– ग्राप सावळ देखोसा । बैं तो दिन ऊगे सूं ही कमरे मांये बैठा कीं लिख रया है ।

म्हे भी ग्रुफत'र फेरू ग्रुणी कमरे खानी पग बढाया ग्र'र ग्राख्यां फाड़'र सावळ कमरे मांय नजर फेंकी । म्हे देख्यो कै कमरे मांय लोहे री दो ग्रालमार्‌यां रै खनै पोथ्यां रा तीन चार बड़ा बड़ा ढिगा लाग्योड़ा है ग्र'र उणी मांय सूं ग्रेक ढिगे रै ऊपरली पोथी नै उठावण सांरू ग्रेक हाथ थोड़ो हिलतो स्यो ऊंचो उठ्‌यो है ।

खाथा खाथा पग उठातो म्हे हरख'र उण पोथ्यां रै ढिगे कनै जा पूग्यो । पोथ्यां रै ढिगे रै पिछाड़ी म्हे देख्यो कै ग्रेक माणस बैठ्यो हो ग्रलमस्त जोगी रै तरै धूणो धुखायोड़ो सामने फैलायेड़ा कागदां माथे ग्रनरवत ग्रापरी कलम चलाय रैयो हो ।

म्हे खंखारो कियो जदां उणां ग्रापरी चलती कलम नै रोक'र नजर ऊपर उठाग्री ग्र'र म्हारे सामो जोयो ।

ग्रे माणस ग्रौर किणी नीं, स्वामीजी हा । सुप्रसिद्ध, इतिहासवेत्ता, शोध शास्त्री ग्र'र व्याकरणाचार्य प्रोफेसर श्री नरोत्तमदासजी स्वामी विद्या महोदधि । दुबळी पतळी काया हवा रै लैरके सूं हिलतो डुलतो शरीर सैकड़ों ग्रन्थों रा लाखोंप न्ना पढण सूं ग्र'र लाखों ही पन्ना लिखण सूं कर'र कमजोर हुयोड़ी निजर रै कारण ग्रांख्यां माथे

मोटे-मोटे लम्बरी काचां रो चश्मो, माथे पर छोटा छोटा केस धोती नै लूंगी ज्यो वान्दचां गिन्जी पैरियोड़ा म्हारे सामै वैठा हा स्वामीजी ।

जदां स्वामीजी म्हारे कानी सवाल भरियोड़ी निजर नाखी, म्है पांव धोक अरज कर'र कैयो "काका आपने अे तीन कापियां भिजवाई है ।"

काका म्हे म्हारे पिताजी नै कैया करूं । म्हारा पिताजो श्री मुरलीधरजी व्यास अिण घटना सूं आठ वरस पैला स्वामाजी रै सागै राजस्थानी कहावतां रा दो विशाल संग्रह छप्पा चुका हा । हणै स्वामीजी लोक गीतों रै संग्रह में लाग्योड़ा हा अ'र पिताजी म्हारे सागे जकी तीन कापियां भिजवाई ही उण में गळी गुवाड़ री लुगायां कनै वैठ'र लोक गीत संग्रह कियोड़ा हा ।

स्वामीजी म्हारे कनै सूं तीनूं कापियां लै र देखी तो उणा रै गम्भीरता सूं दव्योड़ै चैरै माथै मुस्कान री एक लकीर छायगी ।

स्वामीजी म्हने आपरी तरफ सूं साठ–सितर रै नैड़ा फुल स्केप साईज रा पन्ना दिया जका एक लाल टैंक में पिरोई ज्योड़ा हा अ'र कैयो–' व्यासजी नै म्हारी पांव धोक कहीजे अ'र अै कागद दे दीजे । इण में राजस्थानी मुहावरा है ।

आ स्वामीजी सूं म्हारी पैली भेंट ही अर पैली भेंट में ही स्वामीजी म्हने घणो प्रभावित कियो । चारू मेर पोथ्यां रा ढिग्या लाग्योड़ा अ'र इण रै बीच वारली दुनियां सूं अणजाण आपरी हिज दुनियां में मस्त, आपरी साधना में डूब्योड़ा, राजस्थानी भारती री सेवा रो धूणो धूख्यायोड़ा स्वामीजी आज भी उणी रूप में म्हारी आख्यां रै सामने घूम रया है । आ वात पैंतीस वर्ष पैला री है ।

म्हारा काका (पिताजी) अ'र स्वामीजी रै वीच स्नेह री नदी बेया करती । अेक दूसरे सूं घणो हेत'र अदव आदर सूं बोल बतलावण किया करता हा ।

स्वामीजी म्हारे घरां घणी वार पधारयोड़ा है । वे जदां आता तो घंटोन काका रै सागे बात्यां किया करता । म्हने सावळ याद है कै कई बार स्वामीजी म्हारे घरां आयर म्हारी गळी गुवाड़ री लुगायां खनै ब्याह रा गीत, कदैई हरजस तो कदैई टाबरां रा गीत सुण्या अ'र कापी में मान्डचा करता ।

अेक वार री वात है कै म्हारी गळी री अेक दानी'र बूढ़ी माजी खनै वैठ'र स्वामीजी व्रत-त्योहारां पर कैयी जावण वाळी काण्यां लिखी ही । उण काम नै पूरो करण तांई स्वामीजी पूरै सात दिनां म्हारे घरां आवतां रैया ।

म्हने याद है कै स्वामीजी अ'र म्हारा काका दोनूं जणा उण दिनां आपरी जेब में अेक छोटी नोटबुक राख्या करता हा । किणी सूं भी बात चीत करती वेळां जद उणा रै काना मांय कोई मुहावरो या कहावत पड़ती तो भट दैण सी नोट बुक काढ'र लिख लिया करता ।

म्हारे चौक में ग्रेक दुकान ही गुणजी री । गुणजी भुजिया (सेव) बढिया बणीया करता हा । स्वामीजी नै गुणजी रा भुजिया ग्राछा लागता । जदा भी स्वामीजी म्हारे घरां ग्राता म्हने गुणजी रीं दुकान सूं भुजिया लाणा पड़ता । गुणजी देशनोक रा चारण हा पण बालपणे सूं ही म्हारे चौक में बसग्या हा । गुणजी नै ग्रनेक वीर रस रा दूहा चारणी गीत ग्र'र कह मुकरण्या कठंस्थ ही । भुजिया तोलावंती वेळा जदां हूं गुणजी नै कैतो कै स्वामीजी ग्रायोड़ा है तो केई बार गुणजी ग्रापरी दुकान छोरां नै भोळाय'र म्हारे सागे टुर जावतां । बळै क्या हो गुणजी ग्रेक पर ग्रेक दोहा, चारणी गीत, कह मुकरण्यां सुणावता रैवता ग्र'र स्वामीजी उण नै लिखता रैवता । लिखण में स्वामीजी रै ग्रालस नीं देख्यो । खीचिया, भुजिया, पापड़ ग्र'र सलेवड़ो सामै पड़ियो रै तो पण स्वामीजी पैलां लिखणो पूरो क'र र ही उण खानी हाथ बढावतां ।

म्हे परणीजियों जदां स्वामीजी म्हारे हाथ धान सूं लगाय र फेरां तांई हाजिर रैया । लुगायां जद भी कोई गीत टेरती, स्वामीजी झट ग्रापरी कापी काढ'र देखता कै ग्रो गीत लिखियोडो है, या नीं । नूंग्रो गीत हुक्तो तो झट लिखणों सरूं कर दैवतां । म्हने याद है कै जद म्हारे सासरे री लुगायां दाळ लै'र ग्राई ग्रर दाळ रा गीत गावण लागी तो स्वामीजी रै वास्ता ग्रो गीत नूंवो हो । उणां झट ही मांडणो सरू कर दियो । म्हारे सासरै री लुगायां जद ग्रा देखी कै वै जका गीत गांवे उणां नै ग्रो खनै बैठ्यो ग्रेक मिनख लिख रयो है तो उणा नै ग्रचूंभो हुयो । म्हारे साळे री बवू तो टच्चर कर ही ली स्वामीजी नै पूछ बैठी कै "थे मिनख होय'र लुगायां रा गीत क्यूं मान्डो ? स्वामीजी रै उतर देवण सूं पैला खन्ने बैठी लुगाई जकी घणी बोलारी ही कैयो "ग्रै मिनख थोडे ही है, ग्रै तो बाई घट्टा है–नीं जद मिनखां नै लुगायां रै गीत सूं कांई मुतबळ ।"

म्हने याद है कै स्वामीजी उण मसखरी पर मुळक'र रै ग्या पण झेंप्या कोनी । लुगायां जद फेरूं नूंग्रो गीत टेरियो तो स्वामीजी फेरूं मान्डणो सरू कर दियो ।

म्हारे सासरे री लुगायां तो गई ग्रापरै घरां पण स्वामीजी रै सागे कियोड़ी मसखरी रो मजो घणा ई दिनां तांणी म्हारा काका ग्रर नाहटाजी (ग्रगरचन्दजी) लियो ।

स्वामीजी जद म्हारे काका नै कैता क्यूं ब्यासजी कई गीत भेळा करिया क्या तो काका मुळक'र कैता "थे तो बाईघट्टा हो ही जका लुकायों रा गीत मान्डो लारे म्हने ही बाइ घट्टो बणायर छोड़ सो ग्रेड़ी लागे है ।

ग्र'र फेरूं इणी बात पर दोनों जणां कई देर तक मुळकता रैवता ।

म्हारे सासरे री वे ग्रणपढ़ लुगायां, मड़-कोटड़ी गांव री लुगायां बापड़ी कांई जाणै कै स्वामीजी जैड़ा तपस्वी कांई कर रैया हा ।

स्वामीजी ताने बाजी ग्र'र मसखरी री परवाह कियां बिना विद्या महोदधि हुवता थकां भी ग्रणपढ़ मिनखां ग्र'र लुगाया खनै बैठ'र उण दिनां राजस्थानी लोक

गीतों रो संग्रह करण में लाग्योड़ा हा। लोक गीतां रो विशाल संग्रह दो भागां मैं छपियो भी है अगर उण संग्रह मांय म्हारे काका रा संग्रह कियोडा मोकळा गीत भी है।

स्वामीजी लोक गीतां, कहावतां मुहावरां अ र व्रत त्योहार री कथावां रो संग्रह क'र राजस्थानी साहित्य रो अेक वोत वडो काम करग्या। राजस्थान री लोक संस्कृति री धरोहर नै सम्भाळ'र राखग्या, पोथ्यां मांय मान्डग्या।

स्वामीजी अ'र म्हारे काका रै बीच घणा वर्षां तांई ओ अळसेट बण्यो रैयो कै दोनां मांय गुरु कुण है और कुण चेलो है? काका कैवता-स्वामीजी म्हारा गुरू है अ'र स्वामीजी कैवतां व्यासजी म्हारा गुरू है उण अळसेट रो खुलासो ६ नवम्बर १६८० नै हुयो जद कै काका रो अभिनन्दन भारतीय विद्या मन्दिर वाळां करियो। स्वामीजी आपरै भाषण में कयो व्यासजी राजस्थानी रा भीष्म पितामह है। व्यासजी म्हारा गुरू है।

काका आपरे भाषण मांय बरसां रै अळसेंट नै सुळजावतां थकां "बोल्या साची बात तो आ है कै स्वामीजी म्हारा गुरू है बीकानेर रियासत रै महकमा खास में म्हे अ'र स्वामीजी दोनूं नौकरी करता हां जद स्वामीजी री प्रेरणा सूं ही म्हे लिखणों सरू कियो सन् १६३० तांई म्हे हिन्दी में लिखियो फेरूं स्वामीजी री प्रेरणा सूं ही राजस्थानी भाषा री सेवा रो व्रत लियो। स्वामीजी ज्ञान रां भण्डार है, विद्या रां सागर है म्है उणां रै मुकाबले कीं'नीं हूं। म्हे हृदय सूं कैवू अ'र म्हारो रूं रूं साक्षी है, कै म्हारा गुरूं स्वामीजी ही है। म्है उमर में स्वामीजी सूं जरूर बडो हूं अ'र इसी कारण स्वामीजी म्हारो सम्मान सदा करिचो। म्हने गुरू बतावणों स्वामीजी रो बड्डपण है पण साची बात आ है कै स्वामीजी ही म्हारा गुरू हैं।

किकाणी व्यासों का चौक
बीकानेर

□

अब खाली वात्यां रै'गी

श्री सनतकुमार स्वामी

ब्यावज पत्र घणां ने ही लिख्या-माईतां री छतरछायां रैवै, जितै आदमी नचीतो रैवे, अ'र कुटंब री कड़यां जुड़्योड़ी रैवै । पण इण बात रो साचो अनुभव अबैई हुयो है, पांच पांच मईना वीतण नै आया पण बांणों अभाव दिन दूणों अ'र रात चौगणों मन में खटकतो रैवै ।

कांई सामीजी गांधीवादी हा ?

बीकानेर रा गांधीवादी कार्यकर्त्ता श्री लक्ष्मीदासजी पेन्टर अथक एक दिन राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में स्वतन्त्रता सेनान्यां री आप वीती सुण रैया हा । सन् १९३०-३५ रै दिनां नै याद करता बोल्या म्हैं अजमेर सूं समाज सुधार रो गांधीजी रो सनेसो ले'र निकळ्यो । बीकानेर में इण बाबत सामीजी सूं संपर्क हुयो । बिण रो रुख काफी उत्साहवर्धक रैयो । समाज री अेक सभा वणांई गई । जिण रो सभापतित्त्व करण नै सामीजी ही आगै आया । अ'र इण तरै आ समाज सुधार री घंटी म्हें बियां रै गळै में बांध दी । जितै तक हूं समझूं रांकावत ब्राह्मण महासभा रै प्रथम सम्मेलन नै जिकां जिकां देख्यो बियां रै काळजै में बो बियां री बियां मंड्योड़ो है ।

खादीधारी सामीजी

उदयपुर रै भूपाल कालेज रै वाइस प्रिंसिपल रै पद सूं रिटायर होणै रै बाद, श्री शंकर सहाय जी सकसेना रै कैवण सूं बै हिन्दी विभाग नै संभाळण नै बनस्थली विद्यापीठ चला गया । सकसेना जी राजस्थान रै प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग रै निदेशक पद सूं रिटायर हू'र बनस्थली में प्रिंसीपल हुयोड़ा हा । लोगां सायद सामीजी ने खादी रै कपड़ा में बठैई देख्या । पण बांरो खादी रो प्रेम बहुत पुराणों हो । म्हारो टाबर-पणों सगळो खादी पहरतां ही बीत्यो । चौथे दशक री खादी रा बै फूटरा-फूटरा रंग अर कड़्यां आज भी म्हारी आख्यां आडा चितराम खैंच देवै । म्हारै खादी रै पहराव रो अब शेष दसवी कक्षा रै विदाई रै समय फोटू में खिचायोड़ै खादी रै टोपी रै रूप में है । सामीजी खादी रा प्रचारक भलयां ही कोनी हा पण व्यवहार अर घर में खादी वी वपराई ।

समाज सुधारक सामीजी

अेक जमानों हो जद ओसर अ'र भेख धड़ाधड़ हुया करता । फुरवां भोजन अ'र खीचड़ा मरोड़ै रै लारै करणां पड़ता । बिणी दिना महाराज श्री गंगासिंहजी रै

गुजरणै सूं पेली म्हारा दादाजी श्री जसरामजी गूजर्‌यां, जिणरै लारै बां ओसर अर खीचड़ो बिलकुल उडा दियो। खाली बेन-बेट्‌यां ने ही जिमाई। आज आ रीत धीरे धीरे सगळै समाज में हुती जा रही है। ओढावणी अ'र पाखां रै पख में भी बै कोनी हा। मायरे मोसाळै रा भी बै हामी नहीं हा, बां बाई-जवाई नै सदा ओढ़णो पेचो कर्‌यो, अ'र मायरे में वनड़े या वनड़ी रा कपड़ा लत्ता दिया। म्हारो ब्यांव मिगसर सुद ५ संवत् २००६ वि० ने हुयो हो। जिणरी कूंकूंपत्री में बां छपवाया कै १- नूतै री रीत वंद करदी है इण वास्तै नूतै री रकम भेजण रो कष्ट नहीं करसां २ जान मे सरकारी आज्ञा मुजब मात्र २५ आदमी जासी, ३-प्रीति भोज रो निमंत्रण बाद में पूगसी, ४- वरी-रै जलूस-में पधारण वास्तै विशेष रूप सूं प्रार्थना है। हूं बिण दिनां नवीं कक्षा में पढ़तो, भायला चिगाया करता —जांन में चालणो कोनी, जीमण रो नेतो बाद में पूगसी, पण पगतोड़ावण नै वरी में जरूर आवज्यो। वारै थारो ब्यांव। म्हारे ब्यांव सूं ९ महिनां पेली वडोड़ी बेन शारदा रो व्यांव फरवरी ४६ ई० में हुयो। जांन बारै नोहर सूं आई। जिण नै बां जरूर जिमाई। पण पछै सन ५३ में बां छोटो बेना रतनकंवर अ'र गौरी रो ब्यांव कर्‌यो जद अेकै शहर सूं आई जांन ने भोजन बिलकुल नहीं करायो। ऊनाळो हो साव शरबत री मनवार ही'ज ही। दायजो भी नहीं दिया। बांरै सरगवास सूं महिने भर पेली' ई ज म्है म्हारीं छोटोड़ी बेटी मंजू रो ब्यांव कर्‌यो। बिण मोकै पर अस्वस्थ हुवण सूं बै खुद तो नहीं पधार्‌या पण भाई साथै सनैसो भेज्यो कै–थूं चावै तो सीरख पथरणा अ'र ढोलियो अे छोटी मोटी चीज्यां भले ही दे दीजै। बांरो ओ च्यार लेण रो कागद ही रूंगटा खड़ा कर देवण आळो हो। हूं देखूं हूं के आज कई कई जांना आळै समाज में अेक रात रै व्यांव री रीत तो शुरू होगी है अ'र लोग इतरै तक सोचण लागग्या है कै सामीजी जांन उठावण री जिकी रीत घाली, टैम देखतां सगळा नै अेक दिन इण रास्तै पर आवणो पड़सी।

विद्‌या प्रेमी सामीजी

बै खुद तो पढ़चा लिख्या हाई'ज पण बांरी ईं छचा रैवती कै समाज रा दूसरा लोग भी पढ़ै लिखै-श्री सूर्यकरण जी पारीक रै साथै पढ़ावण नै बै भी बिड़ला कालेज पिलाणी में गया। बठै बांरै संपर्क में अलवर निवासी अेक विद्‌यार्थी श्री मूलचन्द्र आया। विद्‌यार्थी में पढ़ण री रुचि देख'र अगले साल जद बै डूंगर कालेज बीकानेर में पूठा आया तो साथै ले'यर आया। अठै बांनै पढ़ाया लिखाया और नौकरी भी लगाया अ'र आपरै खनै राख्या भी। श्री मूलचन्द सदा सामीजी रो मान राखता रैया। आज ना तो मूलचंदजी रैया, अ'र ना सामीजी ही। पण गुरु-शिष्य रा बै मधुर सबंध आपरी महक छोड़ग्या। आजादी सूं पेली री बात्यां हैं, डूंगरगढ़ सूं जाति-बालक श्री सुन्दर-दास और बाद में श्री रतनाराम ने आगे पढावण नै अै घर पर लाया। बरसां तांई बे पढ्‌या और दसवीं करी। डूंगर कालेज रा पुस्तकालयाध्यक्ष श्री अजायबचंदजी कई बार विद्‌यार्थियों ने पुस्तकां देणाने आनाकानी करता अ'र नहीं लौटावण री शिकायत करता-

तो सामीजी केया करता म्हारे विद्यार्थियां ने म्हारे नांव सूं मांगे जिकी किताबां दे दिया करो। जिकी किताबां नहीं लौटे बांरा पीस्या म्हारे रिटारमेन्ट रे समय कटवा लीजो। सामीजी रिटायर हुया पण पीस्या काटण री नौबत नहीं ग्राई।

जाति बंधु श्री वनरामजी री यादगार में राणीसर हड़मानजी री साळ में बां वनराम बाल वाचनालय खोल्यो। मनै याद है हूं बां दिनां में छठी सातवीं में पढ्या करतो। पढ़ण रो इसो कोड लाग्यो कै शरदचन्द्र, प्रेमचन्द हंस चांद ग्रर सरस्वती रा मिल्या जिका सगळा ग्रंक पढ नाख्या। शरद रो 'पथ रो दावेदार' जी में जमग्यो जिकांई मनै ग्राखर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में लेयग्यो।

उदारमना सामीजी

बी. ग्र में पढ़ावती वगत प्रोफेसर श्री चन्द्रदेवजी शर्मा ग्रापरा संस्मरण बतावतां केयो-बा छमाई इमत्यांन री वात ही प्रश्न शायद छायावाद माथै हो। जिण रो उत्तर चन्द्रदेवजी ग्रापरी साम्यवादी शैली में लिख्यो। जिको सामीजी ने बिलकुल नहीं जच्यो, ग्र'र बां उत्तर ने काट'र शून्य ग्रंक दिया। पण ग्रंत में कांई जची कै शून्य नै काट चोखा नंबर देदिया। विचार धारा न्यारी हो सकै। ग्रापरी बात ग्रापरै ढंग सूं केवण रो हक सगळा नै होणो चहिजे। खास बात ग्रा नहीं है कै परीक्षक रै मन चायो उत्तर ग्रावे। खास बात है कै विद्यार्थी रे उत्तर में बीरी प्रतिभा प्रगट हुवै कै नहीं। ग्रा पारख पारखी ही कर सकै। इये पारख पणे ही चन्द्रदेवजी ने शून्य सूं चोखे नम्बरां पहुंचा दियो। इसे काम खातर काळजौ मोटो चहिजै।

संतोषी-जीव

मुनि जिनविजय जी रै प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर सूं जावण रै बाद निदेशक रो पद खाली ही पड़्यो हो। इण पद पर सामीजी री नियुक्ति री चर्चा बड़े जोर शोर सूं चाल रही ही। सरगवासी श्री नाथूरामजी खड़गावत भी काफी दौड़ भाग रचा हा। काम लगभग नाकै पहुचग्यो हो।। खड़गावतजी कैयो कै ग्रेक बार ग्राप जयपुर मिनस्टरां सूं थोड़ा सा'क मिलणनै पधारो बाकी काम म्हें खेंच लेसां। पण बां कैयो—थांणै जिसा म्हारा मोटा शिष्य बैठचा है, मनै कांई फिकर है। म्हे ग्राज तक तो कैरेई द्वारै गयो कोनी ग्र'र ग्रबै जाइजै भी कोनी। भगवान री दया सूं म्हारो गुजर इण मैं ही ग्राछी तरहां सूं चालै। सरकार चावै जैनै राखै। बो पद ग्राज भी खाली ही पड़चो है। बीच बीच में थोड़ी थोड़ी टेम खातर डा० फतहसिंह जी, डा० दशरथ शर्मा ग्र'र डा० ब्रह्मानंद जी जरूर शोभा बढ़ाई। ग्रबार श्री जितेन्द्र कुमार जैन इण पद रो ग्रतिरिक्त खेंचरचा है।

बागवानी रा सोखीन

म्हेतो टाबर हा बिण दिनां में, जद बांरो ग्रो शौक चढाव पर हो ग्र'र शरीर काम करतो। घर में एक वाड़ो हो ग्रौर हो ग्रेक हौद, जिको ग्राज तांई भी टूटी फूटी

हालत में पड़्यो है, बांरी मेहनत रे परताप म्हां देखी ४-४ फुटी घीया, मोटा मोटा कोळा, गोभी रा बडा बडा फूल, पालखो, चंदळियो, टमाटर, वैंगण, अनार, मूळा, चुकन्दर बाटो, कैरीया, सांगरयां नै खोखा । आज बिण जाग्या में कींकर लाग'र अळसीवाड़ो फैला रया है ।

आसरां रो ख्याल

वात्यां रो कोई निवेड़ो नहीं । गोभी रे पत्ता दाईं उतरता ही जावो । सो छेकड़ली वात केऊं । घर वणावती वगत बै कैया करता दिखणाद खुलो राखणो चहिजै अ'र दिखणाद मुखो विरण्डो भी राखणो चहिजै । इणसुं घर में सीयाळै रो तावड़ो नै ऊनाळै री छींयां मिल सकै । ईं बात रो असर म्हारे माथै भी पड़्यो । मनै घरां रा नकशा वणावण रो थोड़ो घणो कोड है । म्हारी कोशिश आई रैवे के जितै तक हो सकै दिखणाद खुलो ही राखूं । लारै जांवता म्हे इतोई कै सकूं:—

प्रतक सीखरा सांसा पड़्ग्या
लारै वात्यां ही रहगी

□

राजस्थानी रा अमर पुजारी स्वामीजी

मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी'

स्वामीजी रै बारै में कांई लिखूं ?

साची बात आ है के जदां लिखण ने बैठ्यो हूं कलम हाथ माय उठाई है हाथ धूजण लाग रिया है, माथे में घणां बरसां री घणी यादचां घणघणायर बटीड़ा सी मारै है, आख्यां सूं आंसूड़ा झरै है। स्वामीजी सदा मुजब अबकै आपरे वचन रा पक्का नीं रिया अ'र म्हने जाबक अेकलो छोड'र वचन तोड'र म्हारे सूं पैला ही चाल बईर हुया।

कांई लिखू ? कांई छोड़ू ??

मायड़ भाषा रूपी खेत जिण में मोकळा बरसां सूं खेती नीं हुई, कलम रूपी हळ नीं चाल्या जमीन अण उपजाऊ अ'र उपेखित हुयी पडी ही। स्वामीजी अुण जमीन नै सावळ खोद'र त्यार कीनी, उण माय खाद दीनी अ'र फेरूं मायड़ भाषा नै ऊंचो लावण रो बीज आपरे हाथां बोयो। स्वामीजी री आगीवाणी मांय म्हे सगळा लोग बारी बारी सरधा सारू पाणी सींचता रया।

छेकड़ आखे सईके री मैनत रंग लाई। स्वामीजी जेड़े चतुर किसान रै निदेशन रै कारण बीज फूटीयो, वेल ऊगी अ'र पौधे, पेड़ रो रूप लियो। पेड जदां छाया देवण लागो तो दूजां री दिरस्टी भी पड़ी अ'र घणखरा मायड भाषा प्रेमी अिण पेड़ री छाया तळे आ बैठ्या। उडीक ही रोप्योड़े बीज रै पैड़ सूं उग्योड़े फळ री। काचा फळ तो पेड़ मांथे ऊग भी गिया, निजर आवण लाग्या, पाकण माय घणी अबेर

कोनी ही पण............

पण............

स्वामीजी आपरै बोयोड़े बीज रै पेड़ सूं उग्योड़े फळ रो सुवाद चाख्यां बिना ही चाल बयीर हुया म्हारे बूढले कान्धा माथे पग देय'र। आधुनिक राजस्थानी साहित्य रै पेड़ ने धून्धूणी देय'र।

बात १९३० सन् रीं है।

म्हे सन् ३० माय बी० के० विद्यालय री मास्टरी नै छोड'र रियासती सासन रै महकमा खास माय नौकर हुयो। स्वामीजी भी बठे नौकर हा। स्वामीजी अनुवादक हा अ'र म्हे गृह विभाग माय कोन्फीडेन्सल क्लर्क हो। स्वामीजी सूं जाण पिछाण तो (सन् १९२२) विद्याधरजी शास्त्री री अध्यक्षता में बणी राजस्थानी साहित्य सभा रै हस्तलिखित पत्र माय म्हा दोनां री रचनावां हुवणे रै कारण हुय चुकी ही पण घणो हेत महकमा माय आया पूठे ही हुयो। स्वामीजी अ'र म्हे दोनूं जणा पाणी पीवण अ'र पिसाब करण खातर सागे सागे ही आया जाया करता। लिखणो तो म्हे सन् १९१५ सूं ही सरू कर दियो हो। गल्प भारती वगैरह पत्रिकाओं माय म्हारी हिन्दी काण्यां छप्या करती।

अिणी दिनां एक पत्रिका माय लेख छप्यो कै हिन्दो ही राजस्थान री भाषा है, राजस्थान हिन्दी क्षेत्र है। सुतन्तर भाषा कोनी, बोली है। अिण लेख नै जदां बाग माय बैठ'र म्हे स्वामीजी नै बाच'र सुणायो तो म्हने आज भी सावळ याद है कै लेख ने सुण'र स्वामीजी री आख्यां माय सू आंसू टपकण लागग्या।

स्वामीजी घणा गळ गळा हुय'र म्हारो हाथ पकड़ लीनो अ'र भरीज्योड़ी बोली माय म्हनं केयो "व्यासजी, आपां री मायड़ भांषा है पण आज जदा घर मांय उण रो सनमान कोनी जणा ही तो वाहर वाळा दुत्कारे, अपमान अ'र अवहेलना करे।

आपरे खुन्जे मोय सूं एक पोथी निकाळ'र स्वामीजी म्हने दिखाली अर कैयो "आ गुजराती री काण्यां री छप्योड़ी पोथी है। गुजराती जकी सोलवीं सताब्दी तांई राजस्थानी भाषा री अेक बोली ही आज बा सुतन्तर भाषा है। गुजरात रै रैवण वालां आपरी मायड़ भाषा नै माथै चाढ़ी, लिखारां लिखियो अर मेघाणी जैड़ा साहित्यकारां गुजरात रै लोक साहित्य रो मोटो संगरह कीनो। पण व्यासजी म्हने दुख है तो इण बात रो कै आपांरा राजस्थानी भाई तो मायड़ भाषा मैं बोलता'र लिखता ही सरमावे।

स्वामीजी बोल्या जे करास अपां दस-बीस जणां ही ओ बीड़ो उठालां तो आपणी मायड़ भाषा राजस्थानी भी उणी सिंघासण माथे बैठ सकै है जिण पर आज बंगाली अ'र गुजराती है।

म्हारे काळजे माय स्वामीजी री बात तीर सी लागी अ'र मायड़ भाषा रै इण अपमान नै देख'र म्हे छटपटायग्यो। स्वामीजी रो हत्थ पकड़र मैं उणै रै सामणै ई आ सौगन खाग्री कै आज सूं हूं राजस्थानी भाषा माय ही लिखूलां।

म्हारी अिण सौगन नै सुण'र स्वामीजो म्हने आपरी छाती सूं लगाय लीनो। स्वामीजी कैयो–व्यासजी उमर माय आप म्हारे सूं बड़ा हो। इण वास्ता आप म्हारा गुरु अ'र माईत हो। आज सूं म्हे आपनै जितो वणैला पूरी मदद करूंला।

स्वामीजी री बात मान'र उणां री प्रेरणा सूं जदां राजस्थानी में लिखणो सरू करियो तो लोगां हंसी उड़ाई, कैयो राजस्थानी रा छापा कठै, पाठक कठै ??

हाफै ही लिखो ग्र'र हाफे ही भणों। पण म्हारे सामने इण ख्याल सूं भी घणी मोटी समस्या ग्राई राजस्थानी भाषा रै टंकसांली स्वरूप री, एक रूपता री। स्वामीजी रै ग्रागे जदां म्हे बात नै राखी तौ वै हताश नीं हुया मुळक'र बोलिया सै सावळ हुय जासी। पछे स्वामीजी राजस्थानी री व्याकरण बणाई सब्दां री जोड़नी त्यार की म्हने कैयो कै व्यासजी थे थांरी काण्यां माय ग्र'ड़ी भाषा रो उपयोग करो कै जकी ग्रागे जाय'र टंकसाली रूप ले ले।

स्वामीजी रै केणे मुजब म्हे पूरे प्रदेश री बोल्यां नै ध्यान मांय राख'र घूंकावतों गयो। ग्र'र म्हने खुशी है कै ग्राज स्वरूप री समस्या हाफे हो हल हुयगी।

मायड़ भाषा रै वास्ता की भी काम करण माय स्वामीजी नै सरम संको नी ह्वो। म्हने सन् १९४५ रो वात याद ग्रावे। सन् ३० सूं सन् ४५ रै पन्द्रा वरसां माय म्हां लोगां घणों मसालो भेळो कर लीनो इब समस्या उण ग्रन्थां नै छपावण री ही। ठा० रामसिंहजी, स्वामीजी ग्र'र म्हे दिणाजपुर रै मारवाडो सम्मेलन मांय गया। वठै प्रवासी भायां नै म्हां लोगां बतायो कै थांरो मायड़ भाषा री ग्रा दुर्दशा है। म्हाने प्रवासी लोगां सूं मोकळी मदद मिली।

स्वामीजी रै बारे मांय म्हने याद है कै कलकता रै पांच मंजीले मकानां रा तल्ला चढती वेळा स्वामीजी उमर मांय छोटा हुवणै रै कारण पोथ्यों रै बस्तै नै ग्रापरे कान्धै पर उठाय लेता। दुबळो पतळो शरीर हुवतां थकां भी मायड़ भाषा नै ऊंची लावण रै जोश मांय स्वामीजी पोथ्यां रै मोकळै भार नै भी कीं नी समझता।

राजस्थानी भाषा नै पाछी खड़ी कर'र उण नै भाषा रूप मांय मानिता दिरावण तांग्री स्वामीजी ग्रापरो पूरो जोवण लगाय दीयो। स्वामीजी धुन रा धणी हा। विद्या महोदधि री कोरी डिग्री ही विणां खना कोनी ही वे सांचे विद्या रा महोदधि हा।

राजस्थान री लोक संस्कृति नै जीवित राखण तांग्री स्वामीजी घणी मेनत कीनी। लोकगीत कहावतां, मुहावरां, कहमुकरणी, दोहा, सोरठा ग्र'र भजनां रो बां संग्रह ग्र'र संपादन कीनो। राजस्थानी कहावतां उण री प्रेरणा सूं ही म्हे भेळी करणी चालू की ग्र'र दो मोटा मोटा ग्रन्थ त्यार हुयग्गा। म्हे ग्र'र स्वामीजी उण नै संपादित कर'र छपाग्री।

याद ग्रावे बे दिन जद लोग म्हां लोगां ने मूरख कैवतां ग्र'र कैवतां कै ग्रै मरियोड़ी भाषा माय लिखे कुण पढैला ? स्वामीजी उणी दिनां ग्रा जाण'र कै रचनावां छपवावण री समस्या है, सुझाव दियो कै गोष्ठियां करो। उण दिनां साप्ताहिक गोष्ठी करता। फेर जद स्वामीजी डूंगर कॉलेज रा प्रोफेसर हुया तो कॉलेज री पत्रिका मांय ग्राधुनिक राजस्थानी वास्तै कई पाना राखियाँ ग्र'र म्हा लोगां री रचनावां छापी।

कांग्री लिखूं कांग्री छोड़ूं ?

म्है म्रितो ही कैणो चावूं हूं कै राजस्थानी भाषा रा सूर्यंकरण पारीक सूरज हा अ'र स्वामीजी चांद हा । अे दोनूं सूरज चन्द्रमा रै पाण ही आज आधुनिक राजस्थानी रो ओ सरूप बण सकियो है । म्हारी म्रिण वात रो म्रितिहास साक्षी है ।

स्वामीजी रै वारे माय जितो लिखियो जावे थोड़ो है । म्रिती वात्या है, जिती घटनावां है कै सै आज माथे आगे घूमे है ।

स्वामीजी सांचे ही नरां मांय उतम हा अ'र आपरै नरोत्तम नाम नै मिनख पणै रो दास बण'र सारथक कीनो है ।

कांग्री लिखू । म्हनै लागे है कै गोळ कांच रो चश्मो लगायां, ज्ञान सूं गम्भीर हुयोड़ी मिच मिच्योड़ी आंख्या वाळा दुबळी पतळी काया रा धणी स्वामीजी जाणे म्हारे सामे ही ऊभा है ।

स्वामीजी कदै नी मर सकै । वां जिका काम किया है उण सूं वै हमेशा हमेशा रै तांग्री अमर है, अमर रैवैला ।

[]

दाता तो दाता ई हा

डा० लक्ष्मीकमल

अेक विद्यार्थी रै जीवण में सगळां सूं बेसी मुसकल री, संकोच री अर असमर्थता री जे कोई बात हुवै है तो बा हुवै आप रै गुरु रै संबंध में आप रा ई विचार प्रगट करणा। जियां पारब्रह्म परमेश्वर रै बारै में बहोत–कुछ कैय'र ई कीं कोनी कैयो जा सकै उणी तरै आचार्यप्रवर, मां सरस्वती रा लाडला सपूत, राजस्थानी साहित्य रा सूरज, बेजोड़ प्रतिभा रा धणी परम तपस्वी, उत्तम नरां रा आदर्श, स्वनामधन्य स्वर्गीय गुरुदेव नरोत्तमदासजी स्वामी रै बिसै में कीं कैबणो म्हारै सारू घणो ओखो काम है। उणां रै नांव आगै 'स्वर्गीय' शब्द जोड़तां घणोई काळजो कटीजै पण विधि रै विधान आगै किणरो जोर! स्वामीजी नै मैं इत्तै करीब सूं देख्या है, उणां रो इत्तो गहरो स्नेह पायो है नै उणां री इत्ती उदारता देखी है कै अबै समझ में ई नइं आवै है कै उण असीम सागर नै म्हारी शब्दां री सीमित गागर में किण तरै समेटूं। रह-रह'र उणा रै साथै बितायो सगळो अतीत आज ई हो ज्यूं-रो-ज्यूं आंख्यां आगै उतरण लाग रियो है।

बीकानेर रै अंचळ में ध्यान में लीन जोगी री तरै डगडगात करतो तेज लियां, मोकळा दरखतां सूं भरै-पूरै अहातै में अेक सुदीर्घ भवन 'शांति आश्रम' है जिको स्वामीजी रो निवास स्थान हो। उणरी देहरी सदाई शोधार्थियां, जिज्ञासुवां अर साहित्य प्रेमियां रै माथै रै चंदण सूं सुवासित रैयी है। इण तरै रो ओ तीर्थ पुस्तकां री दीवारां माथै टिक्योड़ो है। इण आश्रम रा अधिष्ठाता स्वामीजी री छबि में अेक दिव्य आकर्षण हुया करतो, उणां रै ऋषितुल्य व्यक्तित्व में अेक अनूठै आदर्श री झलक दीख्या करती ही। प्रेरणा रा तो वै पुंजीभूत स्वरूप ई हा।

म्हारी दृष्टि सतरह-अठारह बरसां रै अतीत नै लांघ'र पूगै है स्मृति रै उण पटळ माथै जद मैं पहली बिरियां स्वामीजी रा पावन दरसण करचा हा। मैं अेम. अे पास कर'र पी. अेच. डी. रै शोधकार्य सारू ईनै-बीनै खासी-सारी तड़फा-तोड़ी करचां पछै वनस्थली विद्यापीठ पूगी ही। प्रो० स्वामीजी उण बगत बठै हिंदी रा विभागाध्यक्ष हा। उणां शोधकार्य सारू इंटरव्यू में म्हारो ई चयन कर्यो। शोध-विषय चुणण सारू राजस्थानी विषयां री अेक लांबी-चौड़ी सूची बणा'र बां मनै उण मांय सूं कोई

अेक विषय चुणण नैं सूंपी । म्हारा पिताजी वृंदावन-निवासी श्री चिरंजीलालजी शर्मा उण वगत म्हारै सागै ई हा जिकै खुद व्रज साहित्य रा मर्मज्ञ और प्रेमी हा । उणां री राय सूं मैं 'व्रज और राजस्थानी व्रतकथाअें' विषय चुण्यो । पिताजी बड़ी धार्मिक वृत्ति रा हा, इण कारण ओ विषय उणां नैं घणो दाय आयो हो । हाल तांई विषय री पूरी रूप रेखा ई को बणी ही नी कै अचाणचक म्हारा पिताजी देवलोक हुयग्या । टाबर-पणै में ओ आघात हूं सह कोनी पायी और मैं स्वामीजी आगै शोधकाम नैं पूरो करण री म्हारी विवशता बतायी । जद मैं उणां री पुस्तकां पाछी करण नैं गयी तो बां मनै घणी ई समझावण दी । कैयो-आ तो थारै पिताजी री इच्छा ही बेटा, इण नैं तो पूरी करचां सरसी । निराश हुयां कियां पार पड़ैला ? हूं थारै पिताजी री तरह ई तो हूं ।' मैं उणां कानी डबडबायी आंख्यां सूं देखती ई रैयगी । उणां सगळी पुस्तकां पाछी म्हारै छात्रावास पुगवा दी और मनै उणां री छत्रछाया में शोधकार्य करण रा, इण भांत, अेक तरै सूं अणचींत्यो अवसर मिल्यो ।

सन् १९६७ में स्वामीजी वनस्थली विद्यापीठ रै हिंदी विभाग रै अध्यक्ष-पद नै संस्था रै कुछेक स्वार्थी तत्त्वां सूं तंग आ'र खुद ई छोड दियो और जद सूं वै बीकानेर में आपरै शांति-आश्रम में ई साधन-रत रैया ।

स्वामीजी री कृपा सूं शोध-सामग्री रै सग्रह-कार्य रै सिलसिलै में मनै राजस्थान रा प्रायः सगळा छोटा-मोटा अंचळां में जावण रो, बठै रै महिला-समाज सूं संपर्क करण रो मौको मिल्यो । मैं राजस्थानी नारियां री संस्कृति-प्रियता, धार्मिक-निष्ठा, विधि-विधान-संपन्नता अर तपोमय जीवण (जिण में व्रतां रो घणो जोर हुवै है) नै घणै करीब सूं देख्यो है । म्हारो काम हो उणां सूं व्रतां री कथावां सुणणी अर सागै-सागै बां नै कागद माथै मांडणी ई । बां महिलावां मनै बडै उदार मन सूं, बडै मनोयोग सूं आप रो कथा कोश मनै लिपिबद्ध करायो । व्रतां सूं संबंधित विशेष विधानां रा परिचय अर विवरण वै म्हारै सामनै विस्तार सूं राखती अर कोई खास बात कठैई छूट नइं जावै इण रो पूरो ध्यान राखती ।

बीकानेर में इण तरै रो संग्रह-काम करतां अेकर मैं अेक दिन में अठारह व्रत कथावां लिख नाखी । सोच्यो आज घरै जायां गुरुदेव घणाई खुस हुसी क्यूं कै आज रो काम रिकार्ड-तोड़ है । पण घरै जाय'र जद मैं काम दिखायो तो स्वामीजी बहोत नाराज हुया । बोल्या --इत्तो-सारो काम अेकै सागै करण री कांई जरूरत ही ? इण तरै काम करचां स्वास्थ्य बिगड़ण रो डर रैवै । काम में अधिकता री जग्यां निरतरता हुयां ई बो सही ढंग सूं अर वगतसर पूरो हुवै । स्वामीजी री इण सीख री आज रा उत्साही अर कर्मठ साहित्यकार-बंधु जरूर कीमत आंकसी ।

घणी विरियां काम री दुरूहता रै कारण जद-कदेई हूं उत्साह-भंग हुय जावती जद स्वामीजी मनै धीरज बंधावता अर उत्साह सूं काम करण री प्रेरणा देंवता । इण

तरै उणां रै अमित स्नेह रै तळै म्हारी शोधयात्रा चालू रैयी। लगभग दो बरसां री लगातार मेहनत सूं मैं हजार-अेक व्रत-कथावां भेळी कर ली। उण रै पछै गुरुजी रै पांडित्यपूर्ण निर्देशन सूं शोध प्रबंध री अनेक उळझनां सुळझी अर सन् १९७० में मैं डाक्टर बणगी। म्हारै जिसा मोकळा विद्यार्थी स्वामीजी कनै आया हुसी पण उणां जिसै गुरू सूं जिको पितृवत स्नेह अर जिकी अणमोल प्रेरणा मनै मिली है विसी सायद ई किणी नै मिली हुसी।

स्वामीजी वनस्थली विद्यापीठ छोड'र जद बीकानेर गया परा तो शोधकार्य पूरो हुवण में मनै फेर डवको लाग्यो। पण स्वामीजी बठै सूं प्रेरणां-भरचा पत्र मनै बराबर लिखता रैया। उणां रो विपुल पत्र-साहित्य म्हारै कनै सांभ'र राख्योड़ो है जिण नै मौको लाग्यां छपावण री सोचूं हूं। उणां रा पत्र सूक्तियां सूं भरचोड़ा अर उणां रै आलीशान व्यक्तित्व रा परिचायक है-अेक-अेक पत्र अेक-अेक महत् ग्रंथ रो सार! सन् १९६८ में बनस्थली विद्यापीठ में मनै हिंदी विभाग में प्रवक्ता पद री नौकरी मिलगी। अेक शिक्षक रा कांई कर्त्तव्य हुवै-स्वामीजी, जद, आ बात मनै आपरै अेक विस्तृत पत्र सूं समझायी ही। अर उणां री कृपा अर आशीर्वाद सूं अध्यापन कार्य में मनै आज तांई कदैई कोई अड़चन कोनी आयी।

सन् १९७९ में जद हूं सीकर रै गर्ल्स कालेज में प्रिंसिपल रै पद माथै नियुक्त हुयी तो स्वामीजी दो महीनां तांई म्हारै कनै रैया हा। रात-दिन, चौईसूं घंटा लिखणो अर पढणो-बस, अेक ई काम रैंवतो बां रो अठै। म्हारी इण नियुक्ति सूं उणां नै घणी ई खुसी हुयी। अेकर तो कैयो भी-मैं अबै थारै कानी सूं निश्चित हुयग्यो। पण हूं आज सोचूं हूं कै बै साचाणीज निश्चिन्त हुयग्या हा कांई, जिको बै आपां नै छोड'र सदा सारू चल्या गया? नहीं आ कोनी हुय सकै। आज ई बै राजस्थानी भाषा री समृद्धि सारू चिंता करता हुसी, आज ई बै इण प्रदेश री सांस्कृतिक धरोहर री रक्षा सारू चिंतित हुवैला जिकी उणां रै संकलित साहित्य में दबटचोड़ी पड़ी है; अ ज ई इण क्षेत्र री रूढ अर निर्मूळ परंपरावां रै पोषण सूं उणां रै मन में पीड हुवती हुसी जिक्यां नै आपरै जीवण में बै निरर्थक समझता हा अर जिक्यां नै जड़ा-मूळ सूं नाश करण में बां पहल करी ही। बै अनुभव घणी हा। रूढ अर सड़ी-गळी मान्यतावां-परंपरावां उणां नै जावक ई पसंद को ही नी।

स्वामीजी रै साहित्यिक जीवण रो लक्ष्य खास तौर सूं राजस्थानी भाषा अर साहित्य री समृद्धि अर व्यापकता कानी रैयो। उणां मोकळा ई ग्रंथां रो सम्पादन-कार्य करचो जिको कै पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति सूं हुयो है। उणां री शैली संक्षिप्त, सारगर्भित अर कसीज्योड़ी हुवण सूं उणांरी रचनावां में नां तो व्यर्थ रा शब्द देखण नै मिलै अर नां अनपेक्षित विस्तार ई। सूत्रशैली में सारपूर्ण बात कैवणी उणां रो दुर्लभ गुण हो। छोटा छोटा वाक्य अर उणां रै अर्थ री सहजगम्यतां-विद्यार्थियां सारू तो वरदान ई सिद्ध हुयी है।

अद्वितीय विद्वत्ता अर अनुपम साहित्य साधना रै अलावा स्वामीजी में इसा मोकळा मानवीय उदात्त गुण हा जिणां री थोड़ीक झलक अठै दिखावणी चावूं हूं।

महामानव ईश्वर सूं बहोत-कुछ प्राप्त करै है और बै इण प्राप्ति मांय सूं ई कण-कण कर'र परमार्थ सारू खर्च करचा करै है, ओ खर्च चावै ज्ञान रो हुवो चावै अर्थ रो। स्वामीजी आप री सगळी उपलब्धियां रो जी-खोल'र दान करचो। उणां रो ओ दान, यद्यपि, हुवतो तो गुप्त रूप सूं ई, पण हिना आप रो रंग लायां बिना कद रैवै! स्वामीजी प्रकट रूप सूं 'दाता' नांव सूं ई जाणीजण लागग्या। घर-परिवार रा लोग तो उणां नै 'दाता' कैंवता ई, दूजा लोग ई उणां रै निकट में आयां पछै इणी रूप में बां री अर्चना करता। उणां रै इण रूप रै उदाहरणां री कोई कमी कोनी। वनस्थली सूं बीकानेर लौटती वेळां आप रो सगळो समान (जिको एक सद्गृहस्थ सारू जरूरी हुया करै है) बै वनस्थळी में ई बांट आया। पुरा विदेह-राज हा बै।

ईश्वर-आराधना रो उणां रो ढंग निराळो हो। परम्परागत पूजन-पद्धति में बै रत्ती भर ई विश्वास को राखता नीं। कैया करता—जे आप अेक ई प्राणी रै दुःख नै यथाशक्ति कम कर दियो तो वा ही साची ईश अर्चना हुयगी। इणी तरै धर्म रै बारै में उणां री राय ही—मनुष्य सूं प्रेम रै अलावा धर्म कोई दूजी चीज कोनी। उणां रो मन इण तरै सदा ई ईश्वर, प्रेम, जीवन और आनन्द सूं लबालब भरयो रैवतो।

आपरै शिष्यां री सार-सम्भाळ तो स्वामीजी लेंवता ई हा पण उणां रै परिवार अर मेळ-मुलाकात रै लोगां तक री ई बै पूरी सुध राखता। म्हारी माताजी श्रीमती कमलादेवी री राखी पून्यूं माथै जे वखतसर राखी नइं पूगती तो उणां नै मोकळी चिन्ता हुय जाती अर तुरन्त पत्र लिख भेजता। इणी तरै म्हारी भाणजी उषा नै तो बां आपरै टाबरां साथै रा'खर साल भर तांई पढ़ाई-लिखायी अर उण नै अथाग स्नेह दियो।

स्वामीजी री दिनचर्या बड़ी व्यवस्थित और नियमित ही। आळस और निराशा री उण में कोई गुंजाइज को ही नी। झांझरकै वेगा थका उठ'र नित्य-क्रियावां करता जिण में दाढी वणावणी, आपरै कमरै री सफाई करणी, पाणी भर'र राखणो, कपड़ा धोवणा सामल है। न्हावा-धोवी करचां पछै दिन भर लिखण-पढ़ण में ई जुट्या रैवता, भोजन अर आराम री टैम टाळ'र। गांधीजी री तरै उपवास और विश्राम नै बै सबसूं श्रेष्ठ चिकित्सक मान्या करता। स्वच्छता अर पवित्रता उणां नै बहोत पसन्द ही। भाई सत्यनारायणजी बता रैया हा कै आप री इहलीला सम्पूर्ण हुवण सूं दो दिन पैलां अर्ध-चेतनावस्था में दाता उणां नै पूछयो कै म्हारे कमरै री सफाई हुयगी? उणां कनै आंसुवां रै अलावा कांई उत्तर हो! कैवण रो मतलब ओ

कै वै आप रै हरेक काम रो पूरो ध्यान राखता अर कोई काम सारू किणी रै आश्रित कोनी रैवता ।

पचास हजार रै नैड़ी पुस्तकां री निजी लाइब्रेरी री देखभाळ करण में स्वामीजी नै घणो रस आवतो । किणी ई पुस्तक री जरूरत पड़चां स्वामीजी तुरन्त उण री सागी ठौड़ पूग'र निकाळ लावता । उणां री अद्भुत स्मरण शक्ति, सुव्यवस्थाशीलता अर निरंतर उदचमपरायणता नै देख'र कोई अचंभो करचां बिना को रैवतो नी । अठै जे स्वामीजी रै हस्तलेख री बात छूटगी तो उणां रै जीवण री अेक बहोत बड़ी बात छूट जासी । लिखावट नै सुंदरना, सुस्पष्टता अौर सहजता जे कठै ई मिली तो बा स्वामीजी रै कर-कमलां सूं ई । शब्दां रा मोती स्याहा में डूब'र लेखणी रै माध्यम सूं उणां रै हाथां कागद माथै इयां जड़ीज जावता जाणै कोई मीनाकार नगीना जड़चा हुवै । सौभाग्य री वात है कै स्वामीजी री आ कळा मोकळा अंशा में आज ई भाई सत्यनारायण स्वामी रै हाथां में दाता री निसाणी रै रूप में मौजूद है । बरसां रै पत्राचार रै बावजूद खत नै देख'र मजमून भांप लेवणो म्हारै सारू अोखो काम हो—पत्र बांच्या बिना, खाली लिफाफै रो ठिकाणो देख'र अो पतो लगावणो मुस्कल हुवतो कै अो पत्र प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामी लिख्यो है का डा० सत्यनारायण स्वामी ।

स्वामीजी री घणकरी साहित्य साधना एकान्त में ई हुयी ही । दीखण में अेकान्तप्रिय दिखतां थकां ई वै घर रै हरेक आदमी री सगळी गतिविधियां रो पूरो ध्यान राखता । कुण आदमी जीम्यो है, कुण भूखो है; कुण-सै टाबर नै किताब्यां, काप्यां दिरावणी है, कुण-सै ने साइकल, घर में कुण स्वस्थ है अर कुण अस्वस्थ—सगळी वातां उणां री निजरां रै सामनै रेवती । अौर जद कदेई कोई अमंगळ बात हुवती तो जित्तै उण रो निराकरण नहीं हुवतो उणां नै चैन कोनी पड़तो । उणां रा मंझोला दामाद मोतीलालजी रै भरी जवानी में हुयै देहावसान सूं तो उणां रो सत्त ई टूटग्यो हो अर जा पछै उणां रो स्वास्थ्य कदेई ठीक कोनी हुयो ।

इण भांत रै विराट व्यक्तित्व रै धणी स्वामीजी रै रचित साहित्य रो जठै तांई सवाल है उण री गहराई, शुचिता, प्रामाणिकता अौर प्रासंगिकता नै आज राजस्थानी रा सुधी विद्वान् अर मर्मज्ञ लोग आछी तरै समझै है । राजस्थानी रो जिको स्वरूप आज है उण रै मूळ में स्वामीजी री कोसीसां खास रूप सूं मानी जासी । उणां जिकी मसाल उठायी उण री जागती जोत रै उजास में राजस्थानी घणो लांबो गाळो पार कर लियो है फेर भी उण महापुरुष रै प्रति आपां री साची श्रद्धांजळि तो आ ही हुसी कै आपां राजस्थानी नै उण रो बो वर्चस्व दिरा सकां जिण री कामना उणां रै मन में ही ।

प्राचार्य गर्ल्स कालेज,
सीकर (राजस्थान)

श्रद्धेय पं० नरोत्तमदासजी स्वामी

डा० राजकृष्ण दूगड़

अगस्त १९८१ में म्हारा पूजनीय गुरुदेव पं० अयोध्यानाथ जी शर्मा रे अभिनन्दन समारोह में भाग लेवण सारूं मैं कानपुर गियोड़ो हो। १४ अगस्त ने सिंझ्या रा म्हारो बडो बाबू कानपुर पूगो ने वोहीज आकाशवाणी जयपुर सूं प्रसारित पूजनीय पं० स्वामीजी रे सुरगवास रो हृदय द्रावक समीचार म्हारा गुरुजी रे सांमे ही मने सुणायो। मारो हियो तो इण समाचार ने सुणता ही शोक सागर में डूब गियो। पूजनीय पं० अयोध्यानाथजी रा मुंडा सूं भी सहज रूप सूं अे सबद निसरिया, "स्वामीजी रा निधन सूं हिन्दी नै राजस्थानी साहित्य रो एक महारथी उठ गियो। उणरी क्षति पूर्ति होवणी मुसकिल है। एड़ा तपस्वी, सीधा सादा, साहित्य सेवी बरसां में जलम लेवे है। वांरे निधन सूं मने घणो धक्को लागियो है।" अे मार्मिक सबद सरगवासी स्वामीजी रे प्रति हिन्दी साहित्य रा द्रोणाचार्य पूजनीय पं० अयोध्यानाथजी शर्मा री सांची श्रद्धांजलि है। स्वामीजी रा निधन सूं राजस्थानी साहित्य तो सांच मांच आपरा सांचा सेवक ने खोयने कंगाल हो गियो है।

स्वामीजी रे शिष्यत्व रो सौभाग्य तो मने कदेइ नी मिलियो पिण वांरी गुरु री भांत सहज किरपा रो परसाद मने म्हारी एम. ए. री कक्षावां में पूजनीय पंडित अयोध्यानाथजी री मारफत मिल गियो। एम. ए. पूर्वार्द्ध ने उत्तरार्द्ध दोयां में म्हारा परीक्षक रे रूप में आपरी सहज उदारता री बरखा वै अनायास ही म्हारा जेड़ा अपरिचित मांथे बरसाई उणरी याद मैं आजलग करतो रेऊंला। आपरा शिष्य जिण रे आगरा विश्वविद्यालय में पेलो आवण री पूरी उम्मीद ही उण सूं भी म्हारा जेड़ा एकदम अपरिचित ने ज्यादा नम्बर देवण में जो निष्पक्षता स्वामीजी सरल भाव सूं दिखाई, वैडी आज रा आपाधापी नै "भक्ति संप्रदाय" रा इण युग में बिरली हीज मिलै है। जो वे थोड़ी भी उदारता में कमी करनै आपरा शिष्य ने पेलो स्थान दिरावण सारूं म्हने ८८ री ठोड़ां ७५ अंक भी दे देता तो विश्वविद्यालय में पेलो आवण रो म्हारो सपनो धर्यो रेजातो। पिण स्वामीजी आज रा गुरुवां री भांत "येन केन प्रकारेण" आपरा शिष्यां ने मेरिट में लावण में विश्वास कोनी राखता हा। जीवन पर्यन्त सीधी सांची बात केवणो नै सीधो सादो जीवन बितावणो स्वामीजी रे व्यक्तित्व री आ अनूठी विशेषता ही।

सन् १९५७ में जद अलवर सूं तबादला होयने मै उदयपुर महाराणा भूपाल कॉलेज में पूगो तो एम. ए. में म्हारा उद्धारक स्वामीजी रा दरसण री उडीक मारा मन में घणी ही। मैं मन में सोचतो हो के कोई लांबो चोड़ो रौब दाब वाळो व्यक्ति स्वामीजी रे रूप में मारो अध्यक्ष होवेळा जिण सूं बात करणे में भी मने संकोच नै झिझक होवेला। पिण जद विनम्र पिण गुरु गंभीर, सहज पिण श्रमनिष्ठ, आकार सूं दूबळा पतळा नै नाटा पिण ज्ञान री दृष्टि सूं उदात्त व्यक्तित्व वाळा स्वामीजी ने मैं देखिया तो प्राचीन भारतीय संस्कृति रा ऋषिकल्प व्यक्तित्व रो सांचो रूप म्हांरी निजरां रे सामे सागे सागै आय गियो। उण दिन सूं वांरे सरगवास ताईं जिण वत्सल भाव सूं टाबर री दाईं वांरो स्नेह मने मिलियो है उणरो बखाण करणो कलम सूं तो संभव है हीज कोनी।

आकार सूं दूबळा पातळा ने नाटा होवण रे सांतर भी स्वामीजी मीलां तक आराम सूं पैदल चाल जाता। घूमण रो वांने घणो चाव हो। महाविद्यालय रा आपरा बंगला सूं एक मील री दूरी मांथे अशोक नगर रा मारा घर पाळा पधारने अनेकूं बार वै मने लेयने दूरी दूरी ठोड़ां पाळा पाळा ही गिया। पैदल चालण में वै कदेई आळकस कोनी कीदो। वांने लेयने मैं एक दांण उदयपुर सूं १०-१२ मील दूर मगरां रे बीच रमणीक थळ उभेश्वर महादेव गियो हो जिणरी याद आज भी मारा हिया में तरोताजा है। ५,६ मील पैदल चाल'ने पछे एक ऊंचा मगरा री चढाई स्वामीजी बगैर किणी बिसराम रे पूरी करली। ऊपर मन्दिर रे बाजू एक बारा-मासी सुन्दर झरनों बेवतो हो। थोड़ी दूर जायने वो झरनो दो पहाड़ियां रे बीच घाटी में चट्टानां रे नीचे बेवतो बरोबर खतरनाक ढंग सूं उतर रियो हो। नीचे जावण रो मारग घणो अबखो नै खतरनाक हो पिण स्वामीजी जिण चतराई ने सावधानी सूं इण सांकड़ा ऊंचा नीचा चट्टानां रा मारग सूं उतर गिया उणने देखनै वांरा आत्म विश्वास ने दृढता री झलक सबां ने मिलगी। चट्टानां सूं चिपकता चतराई सूं पगां ने रोपता वे उण ठोड़ा पूग गिया जठे बाटकां री दांई निरमल ने स्वच्छ जल सूं भरियोड़ो कुंड हो। झरना रो पाणी बरोबर उणमे आवतो जावतो हो। स्वामीजी इण द्रश्य सूं इतरा प्रभावित हुआ के ईंरो वरणन वे घणा दिनां ताई चाव सूं करता रिया। प्रकृति री मनोरम छटा सूं अनुराग होवण रे कारण ही उदयपुर में वे रम गया। पाळा चालण रे अलावा वे मारा साथे साइकल माथे भी घणी ठोड़ां गिया। वांरा जेड़ा हल्का फुलका ने साइकिल मांथे बिठावण में मने कदेई महसूस ही नी होवतो के कोई लारे बैठो भी है। एक बार उदय समुद्र री चादर चालण रो नयनाभिराम द्रश्य देखण सारू कितरा ही प्राध्यापक साइकिल मांथे जावण रो प्रोग्राम बणायो। स्वामीजी बड़ा संकोच सूं साथे चालण री आपरी इच्छा मने बताई। मैं बड़ी खुसी सूं वांने साइकिल मांथे बिठाय'ने रवाना हुओ। स्वामीजी ने दूजां री कठणाई रो बड़ो ध्यान रेवतो। इणहीज कारण देबारी क'ने चढ़ाई में साइ-

किल धीरे होवतां ही वै चुपचाप उतर गिया। मने तो पतो हीज नी पड़ियों के वे कद उतर गिया। जद दूजा भाई लोगां मारो ध्यान दिवायो तो मैं पाछो जायने वाने साइकिल माथे बैठण री खूब विनती कीधी पिण वे चढ़ाई चढाई तो पाळा हीज चालिया। उदय समुद्र तक ग्रातां जातां वे बरोबर चढाई मांथे कदेही नी बेठिया। ग्राज उण बातां री याद ग्रातां ही हिया में हूक उठे कै ऐड़ा विद्वान पिण विनम्र, वत्सल पिण गम्भीर व्यक्ति रे साथ रो सौभाग्य ग्रब मने कदे मिल सके है ?

सन् १९६२ में मैं जोधपुर विश्वविद्यालय बणता ही ग्रठे ग्राय गियो नै स्वामीजी सेवा निवृत होयने बनस्थली विद्यापीठ पधार गिया। सन् १९६७ तक वे वठे हिन्दी विभाग रा ग्रध्यक्ष रिया। इण बीच वांसू मिलण रो ग्रवसर तो कदे कदे हीज ग्रायो पिण वांरी मोती सिरखी लिखावट में लिखियोड़ा पत्र मने बराबर मिलता रह्या। म्हारा हेतालू डॉ. नागरमलजी सहल ने म्हारा प्रिय शिष्य डॉ. ब्रजमोहनजी जावलिया री मारफत वांरो ग्रासीरवाद मने बराबर मिलतो रियो। बनस्थली सूं ग्रवकाश लेयने वे बीकानेर पधार गिया। जोधपुर रा साहित्य प्रेमियां रो वराबर ग्राग्रह रेवतो के स्वामीजी किणी न किणी मिस जोधपुर पधारता रेवे पिण स्वामीजी विवशतावश हीज यात्रा करता। बिनां काम नै बिना साथ कठेई जावणो वांने रुचतो ही नी हो। जोधपुर विश्वविद्यालय में एम. ए. राजस्थानी रो पाठ्य क्रम बणावण सारू वांने ग्रठे पधारण री ग्ररदास कीधी तो राजस्थानी भाषा ने साहित्य रे हेत रे कारण हीज वे तबियत बरोबर नी होतां सांतर भी ग्रठे पधारिया। जोधपुर में वे चार पांच बार पधारिया। एक बार ८, १० दिन तांई मारे घरे रेवण री वे किरपा कीधी। इतरो शान्त ने सादो वांरो व्यक्तित्व हो कै ग्रो पतो हीज नी पड़तो कै वै बिराज रिया है। सीधो सात्विक भोजन नै गुरुकुल चाय रे सिवाय ग्रौर कई वांरे नी चावतो। कोई भी वांरे खातर तकलीफ नी पावे इण रो वांने घणो खयाल रेवतो हो। वे काम सूं निपट नै जद पधारता उण टेम गरम भोजन बणावण देवण सारू मांरी विनती रो रोज ही विरोध करता पिण म्हारा पर वारां ग्रटूट स्नेह री खातर बड़ी झिझक सूं वै म्हारी प्रार्थना बड़ी मुसकल सूं स्वीकार करता।

जोधपुर में वांरे निवाण रा कितरा ही प्रसंग ग्राज याद ग्रावे हैं पिण ग्रब सिवाय वांने याद करने रे हाथे ही कईं है ? वो महामानव तो ग्रापरा निश्छल हिरदा रा स्नेह री बरखा करनैं सुरग सिधार गियो। राजस्थानी भाषा रा ऐड़ा सांचा हेताळू ने ग्रनवरत साधक रो साथ ग्रबे मिलण रो सौभाग्य कदे मिल सके है ?

स्वामीजी यात्रा करण सूं तो बोत ही घबराता हा। मीलां तांईं पैदल चालण वाळा स्वामीजी रो दूबलो पातळो शरीर सफर रा झटका सूं किण भांत झकझोर जावतो इणरो द्रश्य मैं जोधपुर टेसण मांथे देखियो। वे सत्यनारायणजी ने जावलिया रे साथे उदयपुर सूं बीकानेर पधार रिया हा। जोधपुर दो चार दिना तांईं ठैरण रो

वांरो विचार हो । वांरे साथे छाया री भांत रेवण वाळा सत्यनारायणजी जद गाड़ी सूं उतरतां ही स्वामीजी री तबियत बरोबर नी होवण रा समीचार दिया तो टेसण मांथे आयोड़ा सगळा जणा चिन्तातुर हो गिया । स्वामीजी रो रोजीना शान्त रेवण वाळो चेहरो थकान नै बुखार सूं मुरझायोड़ो हो । मैं, डा० सहल आद सगळा वांने घणी प्रार्थना करी के आप दो चार दिन अठेई बिराजो । तबियत ठीक होतां ही आपने बीकानेर पूगा देवांला पिण वे आत्म विश्वास सूं केवण लाग्या "म्हारी तबियत तो बीकानेर पूगतां ही ठीक हो जासी । अबार तो मैं सत्यनारायणजी रे साथे ही बीकानेर जाऊंला ।' विवशता सूं मैं सब मन मारने रे गिया । किणी तरह सूं वांने हाथां में उठायने बीकानेर रा डिब्बा में सुवाण दिया । सगळा ने घणी चिन्ता ही कै कठेई मारग में और ज्यादा तबियत खराब नी हो जावे । पिण बीकानेर री जमीं सूं वांरो इतरो लगाव हो के बठे पूगतां ही वांरी तबियत पूरी तरह सूं ठीक हो जाती । वै तो बीकानेर सूं कठेई जावणो ही नी चावता हा । दो बार म्हारा शोध छात्रां री मौखिक परीक्षा सारूं वांने जोधपुर बुलाणो चायो पिण वे राजी नी हुवा ने आखर विवश होयनै मैं खुद म्हारा शोध छात्रां रे साथे बीकानेर जायने वांरी मौखिक परीक्षा लिवाई ।

राजस्थानी भाषा ने साहित्य रे वास्ते आपरा स्वास्थ्य री उपेक्षा करनै भी वे मृत्यु पर्यन्त तपस्वी री भांत साधन में लागिया रिया । इण हीज भावना सूं प्रेरित होयने स्वास्थ्य बरोबर नी रेता सांतर भी वे जैसलमेर सम्मेलन में पूगिया । वांरे साथे रेवण रो वो हीज मारो आखरी मोको हो । वठै भी वे राजस्थानी री सेवा रे कारण ही बरोबर सारी कार्यवाही में भाग लियो ।

व्याकरण, भाषा विज्ञान, पाठ संपादन, पाठालोचन जेड़ा दुरूह विषयां में गहरी पैठ होवण रे साथे ही साहित्य पठन-पाठन, अध्ययन-अध्यापन में वांरी पूरी दिलचस्पी ने पूरो अधिकार हो । एम. ए. कक्षावां रो कोई भी ऐड़ो विषय नीं हो जिणने स्वामीजी नी पढायो होवे । जूना साहित्य रा तो वे अधिकारी विद्वान हा हीज पिण नुंवा साहित्य ने दक्षता सूं पढावण में भी वांने महारत हासिल ही । प्रसादजी री कामायनी री वे एड़ी सरळ ने सटीक व्याख्या करता कै छात्रां रा हिया में वांरो साक्षात बिंब उतर जावतो । मैं खुद कितरी ही बार वांरी कक्षावां में बैठ ने साहित्य रस रो पान कियो है ।

आज सगळी घटनावां एक एक करनै म्हारा हिया में स्वामीजी री यादां जगायने टीस सूं हियो भर देवे है । तिल तिल जलाने उजालो करण वाला दिया री भांत स्वामीजी राजस्थानी नै हिन्दी साहित्य री सेबा कीधी । वांरी अथक मेनत रो लाभ

प्रकाशक ज्यादा उठायो अ'र वांरा सीधा सादा सुभाव रो अणूतो फायदो उठा'र एक प्रकाशक तो वांरा लाखां रिपिया डकार गियो ।

स्वामीजी सांचा तपस्वी नैं साहित्य साधक हा । राजस्थानी भाषा नैं साहित्य री सेवा में वैं जो बेजोड़ काम करियो है उणने स्थायी बणावण सारू राजस्थानी साहित्य संगम सिंधी जैन ग्रंथमाला री भांत स्वामी स्मृति ग्रंथमाला रो आयोजन करने विद्वता पूर्ण ग्रंथा रो प्रकासण करे तो वाई वांरे प्रति सांची श्रद्धांजलि होवेला । राजस्थानी ने हिन्दी रा मूक साधक अर तपस्वी ने म्हारी हार्दिक अ'र विनम्र श्रद्धांजलि ।

सह आचार्य हिन्दी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय

△

राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै अनुसंधान'र आलोचना में नरोत्तमदास स्वामी रो योगदान

डॉ० रामकृष्ण व्यास 'महेन्द्र'

राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै पुराणां काव्यां'र काव्यां रो लेखो-जोखो देखां तो राजस्थान रै इतिहास अर संस्कृति ज्यूं राजस्थान रो साहित्य भी गरब-जोग है। इण साहित्य रो गरब राजस्थान्यां अर भारतवास्यां नै ई नी है संसार रा मान्योड़ा साहित्यकार भी जद इणनै परख री कसौटी माथै चढायो है तो दांतां तळै आंगळी दबाई है। पण जे आज रै राजस्थानी भाषा'र साहित्य रै अनुसंधान'र आलोचना करणिया साहित्यकारां री गणना करां तो नरोत्तमदास जी स्वामी रो नांव चिटूड़ी ऊपर आ'र रुक जावै। आज री दौड़-धूप में राजस्थानी भाषा अर साहित्य रो पिछड़न रो मूल कारण राजस्थानी भाषा अर साहित्य रो उचित अनुसंधान अर आलोचना रो अभाव है। नरोत्तमदास जी स्वामी इण अभाव नै पूरो करण में सरावण-जोग काम करचो है।

अनुसंधान री द्रस्टी सूं स्वामीजी रो लिख्योड़ो प्रबंध 'रासो साहित्य अर पृथ्वीराज रासो' हालतांई रासो साहित्य पर लिख्योड़ा ग्रन्थां में सबसूं ज्यादा प्रामाणिक है। इण प्रबंध में स्वामीजी आपरी सच्ची अनुसंधान प्रवृत्ति रो पूरो परिचय दियो है। रासो साहित्य अर पृथ्वीराजरासो रो शायद ई कोई इसो बिन्दु हुवै जिकैनै स्वामीजी छोड़ दियो हुवै। इण प्रबंध में कुल बारै अध्याय है जिणमें ग्यारवों अध्याय अक्षय चंद्र जी रो लिख्योड़ो है बाकी रा सगळै अध्याय स्वामीजी रा लिख्योड़ा है। रासो साहित्य सूं संबंधित जित्ता विवाद हा, उण सबनै स्वामीजी इण प्रबंध में सुलझाणै रो पूरो प्रयास करचो है ज्यां रासो सब्द री व्युत्पत्ति, अर्थ, भाषा, छंद ऐतिहासिकता, प्रामाणिकता, आदि। 'रासो' शब्द री उत्पत्ति स्वामीजी 'रासक' शब्द सूं मानी जिकी भाषा शास्त्र री विकास यात्रा माथै भी खरी उतरै ज्यां सं. रासक म. भा. आ. भा. रासअ, रासउ आ. भा. आ. भा रासो, रासा। स्वामीजी 'रासो' शब्द रो अरथ 'नृत्य'

मान्यो है। जे संस्कृत, पालि, प्राकृत रा सबद कोशां नैं देखां तो 'रास' सबद रो अरथ 'नृत्य' ईज मिळै। स्वामी जी खाली इण सबद रो मूळ अरथ बता'र ई संतोष नी करचो। इण सबद अर्थ अर अरथ री पूरी यात्रा बता'र लिख्यो " रासो-साहित्य रो विकास रास-साहित्य सूं हुयो। रासो मूल रूप सूं कथात्मक या चरितात्मक काव्य हा। भाटां अर चारणां रै संपर्क सू उणमें वीररसात्मक अर युद्धात्मक तत्व प्रधान होग्या' स्वामीजी 'रासो' साहित्य रो पैलो लेखक भाट कवि नै मान्यो है पण आ बात प्रमाण सूं सिद्ध कोनी। स्वामीजी भी इण रै आगै 'संभवत, सबद लगायो है। स्वामीजी रासो-काव्यां रै लिखणै री परम्परा सोळवीं सदी रै अन्तिम चरण सूं लगा'र उन्नीसवीं सदी तांई मानी है पण रासो काव्यां रैं लिखणै री परंपरा बारवीं सदी तांई सुरू होगी ही आ बात अपभ्रंश साहित्य रै अनुसंधान सूं सिद्ध हो जावै।

ईयां ई स्वामीजी रासो काव्यां री भाषा, छंद, विशेषतावां अर इतिहास तत्व, रासो-काव्यां री प्रमुख रचनावां ज्यां—पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, बिजैपाल रासो, कयाम रासो, रतन रासो, राणा रासो, सुजाणसिंह रासो, करहिया को रासो, लावा रासो, राउ जैत सी रो रासो, राम रासो, सत्रसाल रासो, सगतसिंघ रासो, खुम्माण रासो आद, चंद कवि अर चंद री रचनावां, चंद रा वंशज, पृथ्वीराज रासो रा रूपान्तर, बृहद् रूपान्तर, मध्यम रूपान्तर, लघु रूपान्तर, लघुतम रूपान्तर, चारों रूपान्तरां रै फरक री सूची, चारों रूपात्तरां रै मिलनै री ठौड़, पृथ्वीराज रासो री प्रमाणिकता, पृथ्वीराज रासो री भाषा पृथ्बीरांज रासो रा छंद, पृथ्वीराज रासो री कथा आद विसचां रो प्रमाणिक, सारपूर्ण, अर वैज्ञानिक दीठ सूं कर्‌यो है। इण प्रबंध में स्वांमी जी आपरी नीचै लिख्योड़यी मान्यतावां थरपी है—

१. पृथ्वीराज रासो पृथ्वीराज री राज सभा रै कवि 'चन्द' री रचना कोनी। अकबर रै काल सूं पैला इण रचना नै कठैई चन्द री रचना कोनी बताई।

२. रासो रा च्यार रूपान्तर मिळै।

३. पृथ्वीराज रासो रै उद्धार अर संग्रह रो काम अकबर रै काल में शुरु हुयो अर अठारवीं सदी रै अन्त तक चालतो रैयो।

४. रासो रै उद्धार अर संग्रह में बीकानेर, जयपुर अर उदैपुर रो पूरो हाथ रैयो।

५. पृथ्वीराज रोसो ना इतिहास है ना इतिहास काव्य। इणरो ऐतिहासिक मोल की कोनी।

६. ऐतिहासिक मोल नी होतां थकां भी इण रो साहित्यक अर सांस्कृतिक घणो मोल है।

जे सार रूप में स्वामीजी री अनुसंधान कळा रो बखाण करां तो कै सकां के अनुसंधान करणियै में जिकी प्रतिभा, जिके गुण, जिकी दीठ होणी चाईजै स्वामीजी में ही।

आलोचना अर संपादन री द्रष्टी सूं स्वामीजी री दो पोथ्यां सामै आवै–

१. वेलि क्रिसन रुक्मणी री २. ढोला मारू रा दूहा।

'वेलि क्रिसन रुक्मणी' रै सम्पादन अर इण रचना रै साहित्यिक मोल रो स्वामीजी सांगो पांग वर्णन कर्‌यो है। 'वेलि क्रिसन रुक्मणी' रै मूल अर बाद में जोड्‌योड़ा छंदा रो स्वामीजी पैली बार संकेत कर्‌यो। 'ढ़ोला मारू रा दूहा' रै काव्य रूप अर साहित्यिक सौन्दर्य रो वर्णन स्वामीजी पैली बार कर्‌यो। स्वामीजी सूं पैला इण घणमोल ग्रन्थां रो सही अंकन नी हुयो हो। जे आ कैवां कै इण ग्रथां री सही परख स्वामीजी करी तो अत्युक्ति कोनी।

राजस्थानी भाषा री द्रष्टि सूं स्वामी जी री लिख्योड़ी 'राजस्थानी व्याकरण' उल्लेखनीय है। जे इण पोथी नै पाणिनि री अष्टाध्यायी, मोग्गलान अर जगदीश कश्यप री पालि महाव्याकरण, वररुचि री प्राकृत प्रकाश अर हेमचन्द री अपभ्रंश व्याकरण री कोटि में राखणी चावां तो आ व्याकरण री पोथी इण श्रेणी में भी आवै। आ राजस्थानी व्याकरण री साधारण पोथी है। राजस्थानी व्याकरण रो ना तो पूरो ज्ञान इण पोथी सू मिळै अर ना ई श्रेष्ठ व्याकरण री पोथ्यां में इण पोथी नै गिणी जा सकै। पण इण रो मतलब ओ नी है कै राजस्थानी व्याकरण री आ पोथी व्याकरण री द्रिष्टी सूं दोष पूर्ण है या स्वामीजी रो व्याकरण रो ज्ञान सामान्य हो। जिण बखत आ पोथी लिखीजी अर छपी उण टैम रो ध्यान राखणो पड़सी। उण टैम स्वामीजी राजस्थानी व्याकरण री आ पोथी लिख'र एक वोत बड़े अभाव री पूरती करी। व्याकरण लिखणियां नै एक नूवी दिसा दी।

अनुसंधान. आलोचना, सम्पादन, व्याकरण रै अलावा स्वामीजी रै निर्देशन में जिके शोध प्रबंध लिखीज्या उणां राजस्थानी गद्य साहित्य का विकास, बेलि साहित्य, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य को शेखावाटी जिले का योगदान, हिन्दी साहित्य को बीकानेर जिले का योगदान आदि उण में भी स्वामीजी रो कुशल निर्देशन झलकै। इण बखत एक संस्मरण मनै याद आवै जद म्है स्वामीजी रै निर्देशन में शोध प्रबंध लिख्यो। जद म्है पैली बार स्वामीजी रै अठै बांरै निर्देशन री स्वीकृति लेण खातर गयो अर घर में जावतां ई बांरी धरम पत्नीजी नै पूछ्यो—

"स्वामीजी है?"

बांरी धरम पत्नी जी 'हां' कै'र कमरै खानी इसारो कर्‌यो। म्हैं मांय जाय'र च्यारूं खांनी नजर दौड़ाई पोथ्यां रो ढ़िग, पिलंग, कागजां रा पुलंदा तो मनै च्यारूं खानी दीख्या पण स्वामीजी रा दरसण नी हुया। थोड़ी ताल रुक'र म्है पाछो बार

आयो अर कैयो "स्वामीजी तो मांय कोनी"। बांरी धरम पत्नीजी कैयो "पिलंग माथै सूत्या है" म्है फेर मांय गयो। पिलंग मांथे तो खाली रजाई दीखती ही। म्है कुर्सी माथै बैठग्यो। पांच सात मिनटां बाद रजाई हिली। म्हारै अचंभै रो ठिकानो कोनी रैयो। म्है खंखारो करचो। स्वामीजी रजाई सूं उठिया। म्हारै सामै मुठ्ठी भर हाडां में ज्ञान, सरस्वती अर शान्ति रो एकळ रूप हो। हूं अवाक् रैग्यो। म्है नमस्कार कर्‌यो। परिचय दियो। म्हारी लिख्योड़ी पोथ्यां बीकानेरी बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन। आद रो हवालो दियो, मामाजी डॉ. ब्रजनारायण जी रो सबंध बतायो। सब बातां सुण'र स्वामीजी मनै आपरी स्वीकृति दे दी अर सागै ई रूप रेखा' भी दी अर कैयो "म्हारै खनै मैनत करणी पड़सी, काम करणो पड़सी"। म्है नस हिला दी। 'रूप रेखा' ले'र म्हैं घरे आयो। मारग में सोचतो रैयो "गजब हो जांवती जे हूं म्हारी अलगरजी में रजाई जाण'र पिलंग माथै बैठ जातो। भगवान सद्‌बुद्धि दी कै म्है कुरसी ऊपर बैठ्‌यो। पण काया दुरबल होतां थकां भी ज्ञान भंडार हा स्वामीजी। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी, अंग्रेजी भासा अर साहित्य रा इत्ता जाणकार हा कै सबदां सूं बखाण नी कर्‌यो जा सकै। पूरै तीन साल तांई बां म्हारै प्रबंध री एक एक पंक्ति पढ़ी। ओजस्वी निर्देशन दियौ। जद् आगरा विश्व विद्यालय सूं डॉ. भगवति स्वरूपजी मौखिक परीक्षा लेण नै आया तो बां इत्तोई कैयो "म्है तो स्वामी जी रा दरसण करण नै आयो हूं।"

श्रद्धेय गुरुवर रूप में अर राजस्थानी अर हिन्दी रा महान साहित्यकार रै रूप में म्हैं म्हारी श्रद्धाञ्जली स्वामीजी नै अरपूं—

आ कुण कै वै स्वामीजी कोनी ?
पंच भूतरी भसमी तो
इण भूतां में ई जा रळसी
पण ज्ञान जोत री अमर शिखा
सदा सदा जळती रैसी
इण अमर जोतरी ज्योति में
स्वामीजी जगमगै सदा
इण मरु भोम रै कण कण में
स्वामीजी है सदा सदा

☐

व्यास-भवन
नत्थूसर गेट के अन्दर
बीकानेर (राज०)

शोध-निर्देशन रा आदर्श : प्रो० नरोत्तम-दासजी स्वामी

श्रीमती उर्मिला शर्मा

आदरणीय नरोत्तमदासजी स्वामी सूं म्हारो पैली बार मिलणो जद हुयो जद मैं डूंगर कालेज री भारती परिषद री उपाध्यक्षा री हैसियत सूं अेक सभा में उणां नै मुख्य अतिथि रै रूप में नूंतण नै उणां रै निवास-स्थान गयी ही। बिना कोई खास परिचय रै उणां मनै टको-सो जबाव दियो–'मैं हिन्दी रै जलसां में भाग कोनी लेवूं। हां, जे राजस्थानी भाषा री कोई बात हुवै तो उण सारू फेर भी सोच्यो जा सकै है।' मनै उणां रो ओ उथळो अटपटो तो लाग्यो कै राष्ट्र भाषा हिंदी सूं जाबक ई लगाव नइं हुय'र राजस्थानी रो इत्तो गीरबो अर चाव-उछाव। फेर बात समझ में आयी कै स्वामीजी तो आंप रा स्वास्थ्य डांवांडोळ रैवण लाग्यां पछै सभा-सोसयटचां अर मीटिंगां वगैरै सूं लारला दिनां किनारो-सो ई कर लियो। पण राजस्थानी रै प्रति उणां रो जिको अंतस प्रेम हो बो अेकै सागै ई पैली भेंट में म्हारी आंख्यां आगै आयग्यो हो। उण रै पछै जद मैं म्हारै अेम. ए. रै लघु शोध प्रबंध रै सिलसिलै में उणां सूं मिली तो वां मनै उण सारू मोकळा ई राजस्थानी भाषा अर साहित्य सूं संबंधित विषयां री बणी-बणायी रूप-रेखावां बतायी अर साथै-साथै बतायी वां विषयां री उपयोगिता अर विशेषतावां।

स्वामीजी चूंकि मोकळी भाषावां रा जाणकार हा इण कारण उणां री निजी लाइब्रेरी में घणी भाषावां में जुदा-जुदा विषयां री हजारूं पुस्तकां संदर्भ सारू उणां रै सामनै ई मौजूद रैवती। लोक-साहित्य अर भाषा विज्ञान उणां रा प्रिय विषय हा।

स्वामीजी कोई भी काम री त्रुटिहीन परिपूर्णता में विश्वास राखता। जराक-ई खामी उणां रै वस पड़तां उणां री निजरां नै धोखो को दे सकै ही नी। ओ ई कारण है कै वै आप री प्रत्येक रचना नै कम-सूं-कम तीन-च्यार बार लिखता अर तीन-च्यार तरै सूं लिखता। आप रै शिष्यां अर सहयोगियां सूं भी वै आ ही अपेक्षा राखता कै छपण सूं पैलां हरेक रचना सांगोपांग अर कसौटी माथै पूरी तरै असल उतारणी चाहीजै।

आप रै शिष्यां रै प्रति स्वामीजी अगाध स्नेह और उत्कट आत्मीयता राखता। लारलै साल जद मैं पी. अेच. डी. करण सारू म्हारी रिसर्च री इच्छा बांरै आगै राखी तो बै बडा खुस हुया अर कैयो कै ओ रिसर्च रो काम जे राजस्थानी विषय ले'र करचो जावै तो घणो आछो रैवै। मैं उणां नै जद राजस्थानी व्याकरण माथै काम करण री म्हारी मनसा बतायी तो बांरै हरख रो कैवणो ई कांई ! व्याकरण तो बां री अत्यंत प्रिय अर मास्टरी रो विषय हो। तुरंत विषय निश्चित हुग्यो—राजस्थानी अर गुजराती व्याकरणां रा तुलनात्मक अध्ययन। विषय री सम्यक् अर सर्वांगीण जाणकारी देतां थकां बां मनै गुजराती सीखण सारू गुजराती रै छोटा-छोटा लेखां, कहाणियां अर चुटकलां री कई पुस्तकां आप रै कनै सूं दी। थोड़ा दिनां पछै तो बां विषय री रूप रेखा ई बणा'र मनै काम करण सारू सूंप दी अर आप रै निर्देशन में काम करण सारू मनै अनुमति ई दे दी। काम सरू हुयग्यो। जद कदे ई मैं कीं लिख लिखा'र उणां नै दिखाती तो बै आप रा सब काम किनारै राख'र म्हारा पाना सबसूं पैली देखता अर आवश्यक संशोधन कर'र काम नै आगै बधावण सारू प्रेरणा देवता।

स्वामी री अनेक विशेषतावां में अेक आ ही कै बै कोई भी रचना में जरूरी संशोधन तो केई बार कर सकता पण डिक्टेशन देवणो बांनै जावक ई तावै को खावतो नी। पण इण मामलै में हूं म्हारो सौभाग्य मानूं हूं कै म्हारै व्याकरण रै काम में उणां मनै आवश्यक डिक्टेशन ई दी। काम में खासी प्रगति हुयी, उणां री मदत रंग लावण लागगी ही। पण आं ई दिनां स्वामीजी कीं विशेष ई बीमार रैवण लागग्या। बां रो जीवन-दीप मंगळ हुवतां-हुवतां आप रो चरम प्रकाश बांटण में लाग रैयो हो। शरीर साथ देवणो बंद कर दियो। रैकां माथै सूं किताबां उतारण में ई वां री देह कांपण लागगी ही। पण बां री मुसकराट में कोई फरक को आयो हो नी। लारला दिनां आप कमजोर हालत सूं कायल हुय'र अेक दिन बोल्या—"काम तो घणा ई करणा हा पण अबै काया काम को करैनी। अब मैं थांरै काम नै पूरी तरै तो को करवा सकूं नी, हां, थोड़ो-बहोत सायरो जरूर दे सकूं हूं। पण म्हारी राय है कै अबै इण विषय नै बदळ'र दूजै विषय माथै काम करणो ई ज्यादा ठीक रैसी।" लागै है, जाणै उणां आपरै काळ नै नजीक आवतो भांप लियो हो। आ बात कैवतां उणां रै काळजै में उठती रीस नै सांपरतेक देखी जा सकै ही, पण विधना आगै किण रो जोर चालै !

देवतुल्य स्वामी म्हारी असहाय स्थिति नै भांपग्या हा। घोर बैमारी री हालत में ई बां मन दो-तीन दूजा विषय पी. एच. डी. सारू बताया अर डा० नरेंद्र भानावत नै इण काम नै करावण री भोळावण सूंप दी। कित्ती आत्मीयता अर विश्वास रै सागै वां म्हारो मानस-परिवर्तन कर'र अेक विषय सूं दूजै विषय कानी मनै प्रवृत्त करी, इण नै तो शब्दां में बांधणो ओखो काम है। इण भांत रा शिष्य-परायण अर आत्मीयता रा आगार गुरु अर निर्देशक मिलण आज रै जुग बहोत मुसकल है।

स्वामीजी मानवीय गुणां रा भंडार हा। मितभाषी अर मिताहारी तो वै हा ई। कोई काम नै कैवण री बनिस्पत कर'र दिखावण में वै ज्यादा विस्वास राखता। जीवण छेकड़ली सासां तांई वै पोथ्यां-पत्र पत्रिकावां रै बिचाळै सरस्वती-री सेवा करता ई रैया। राजस्थानी रै उणां रै हेत री तो आप आ चरम सीमा ई समझो कै अर्ध चेतनावस्था में, जद वै छेकड़ला सांस ले रैया हा, डा० सत्यनारायण स्वामी बता रैया हा के बां राजस्थानी रा नामी कवि श्री भीम पांडिया रै मूंढै उणां रै कर्‌योड़ै गीता रै च्यार अध्यायां रो राजस्थानी अनुवाद ध्यान दे'र सुण्यो। गीता रै इण निराळै कर्मयोगी अर राजस्थानी रै लाडलै सपूत नै उणारी पावन स्मृति में श्रद्धांजलि-सुमन समर्पित करतां थकां ओ ही कैयो जा सकै है कै स्वर्गीय स्वामीजी सिरखी विभूतियां युगां में ई इणी-गिणी अवतार लिया करै है। उणां रै बतायै मारग चाल'र ई राजस्थानी आपरो अभिप्रेत हासल कर सकैला।

उपध्यान चंद्र कोचर का मकान
गंगाशहर रोड़, बीकानेर

△

पण्डित नरोत्तमदासजी स्वामी अ'र ओळूं री ओळ्यां

डॉ० जगमोहनसिंह परिहार

माळा रै बिखरचौड़ा मोत्यां री भांत, जिनगाणी रै हाथां सू भी घणाकरा अनमोल नै कीमती मोती, एक-एक करनै बिखर जावै अर आ मिनख री बेबसी अर लाचारी इ व्है कै लाख हाथ–पग पटकतां पांण भी वो वांनै बटोर नीं पावै। सिरफ यादां रा काचा धागा, नै ओळूं री धूंधळी वातां ही पूंजी रै रूप में रह जावै। समै परिवरतनसील वीया करै, आ एक सांची वात है। अर आ भी हकीकत है कै वगत रै बदळाव रै बायरै मांय सगळा नै वैवणो पड़ै। मिनख संसार में जलम लेवै अर आप-आप री जीवण–अभिनै करतां तकां दुनियां सूं बिदा व्है जावै। पण कीं लोगां रै चरितर मांय आम लोगां रै जीवण सूं हटं'र खास खूबियां वीया करै। यां गुणां रै कारण ऐहड़ा लोग, मरियां पाछै भी यादां रै चौंसरे रा पुसप बण नै, लोक जीवण नै महकावता रैहवै। वांरै सागै बीत्यौड़ा पल–छिण, मानव–जीवण री अमोल धरोवर बण जाया करै। राजस्थानी भासा अर साहित नै नूंवीं दिसा-दीठ देवण वाळा साहित-कांरा में पण्डित नरोत्तमदासजी स्वामी री घणी महताऊ ठौड़ रइ है। इं प्रान्त रै बिखरयौड़ै साहित अर इतिहास नै स्वामीजी आपरी लेखणी सूं उजागर करण री खास भूमिका निभाइ। स्वामीजी रै हिरदै मांय म्हारी खातिर घणौ नेह हो। सब सूं पैली मैं १९७३ में म्हारै पी–एच. डी. शोध रै सिलसिले में वां सूं मिल्यौ। आपरा अमोल सुझाव देता तकां वे 'राजस्थानी सहित रै इतिहास' रै शोध काम री रूपरेखा पर बिस्तार सूं चरचा करी। मार्च १९७४ में मनै स्वामीजी रै दरसण रौ भळै मौकौ मिल्यौ। इं बगत नरोत्तमदासजी स्वामी, नै डॉ० राजकृष्ण दूगड़ म्हारा परीक्षक हा अर मैं परीक्षार्थी रै रूप में बैठौ हो। अचरज इं बात री है कै इतरां उम्दा विद्वान साहितकार होतां तकां भी वांरै चेहरै पर किणी तरा रौ घमण्ड निजर नीं आयौ। आज रै इं बदलतै जुग मांय आम आदमी भी बेमतलब भाषण नीं करै पण स्वामीजी तो तपस्वी साहित–सेवी हा। वांरौ सगलोइ जीवण वीं दिवळै री भांत हो जिको मौन भाव सूं ब'ळर, लोगां रै अंधार पथ में चानणौं फैलावै। शोध-परबन्ध रै बाबत सवाल-जवाब रै सागै वे उणनै छपवावण रौ भी सुझाव दियौ। शोध-परबन्ध रौ पैलौ

भाग 'मध्यकालीन चारण काव्य' रै नांव सूं पोथी रूप में छपवा'र जद स्वामीजी नै निजर करयौ, तौ वे वींनै देख'र गद् गद् व्हेग्या ।

स्वामीजी रै मन में आज रै साहितकारां रै प्रति थोड़ौ दुःख हो । वां रौ विचार हो कै आज रा साहितकार मतलब अर नांव रा भूखा है । वां रै मन में साहित अर समाज सेवा री भावना रत्ती भर निजर नीं आवै । स्वामीजी री दीठ में साहित तौ साधना वीया करै । ऐह विचार वे १९८० मांय परकट किया । वीं बगत वां रौ स्वास्थ्य आछौ नीं हौ । कमजोरी नै थकावट रै बावजूद स्वामीजी साहित-सेवा सूं जुड़ियौड़ा रया । म्हे 'राजस्थान मांय विविध सगुण-निरगुण भकती सम्प्रदाय अर वांरै साहित रै ऐतिहासिक, साहित्यिक अर दार्शनिक निरूपण' विसै पर स्वामीजी सूं सलाह-मशविरा करणनै गयौ हौ । वीं बगत साहितकारां री आपाधापी कांनी ईसारौ करता स्वामीजी आपरै गौरव गमेज वाळा मूल्यां सूं अळगी वेवती साहितिक परवरतियां रौ हवालौ दियौ । वांरी द्रिस्टी मांय सांचौ साहितकार वोइ है जिकौ बिना स्वारथ रै, समाज अर देस री परगती रौ साहित लिखै । मिनख जद हिम्मत अर लगन सूं साहित सिरजैला तौ वीं मांय आछैपण, नै बदळाव री ताकत जरूर व्हैला । इं तरा रौ साहित ही, समाज में पनप रइ खराबियां नै मेटण रै महताऊ काम में, कामयाबी हांसिल कर सकैला । स्वामीजी रा ऐह उद्‌गार देखावै अर भरम री ऊहा पोह में भटकण वाळा साहितकारां रै वास्तै परकास साबित व्हैला ।

आपणै बीच आज स्वामीजी नीं है । बगत रै क्रूर-कठोर हाथां सूं पुराणी पीढ़ी रा ससक्त आलोचक अर जगचावी ख्याती रा सिरमौर नरोत्तमदास जी स्वामी आपां सूं कोसी जग्या है पण सरीर रै मिटण सूं आछा कामां रौ खातमौ नीं वीया करै । महान् बिभूतियां री भांत वांरा महताऊ काम भी राजस्थानी लोक जीवण रै वास्तै अमोल खजानै री भांत है । मनै पूरौ विस्वास है कै राजस्थान री एक या दो पीढ़ी ही नीं, आवण वाळी सगळी पीढ़ीयां स्वामीजी रै लोक हेतालु व्यक्तित्व अर कृतित्व सूं नूंवी दिसादीठ पावेला ।

आकाशवाणी
जोधपुर (राजस्थान)

अंधारै परदै पार सूं....

नरेन्द्रकुमार शर्मा

श्रद्धेय स्वामी जी रै देहावसान री खबर। मौत रो अंधकार एक'र फेरूं सरस्ती रै एक सपूत री जिंदगी नै लील लियो। म्हारी नौजवान उम्र में इसै कई मौकावां आ'आर म्हनै समझा दियो क आखी दुनिया इयां ही चालती रैयी है, चालती रै'सी। ईयां ही जिंदगी रौ उजास मौत रै अंधकार में बदलतो रै'सी अर फेरूं जिन-गाणी रो उजास आपरी किरत्यां पसारतो रै'सी। मौत रै काळै परदै पार सूं भी वो उजास रास्तो दिखातौ रै'सी।

स्वामीजी रै शरीर पूरो होणा री खबर रै अंधारै रै पार सूं झांकते उजास मैं म्हनै धुंधलो सो कीं लखावै, याद आवै। धुंधली सी वा स्मृति एक घटना बण'र साफ हुवण लागै। आखी घटना है एक विचार गोस्ठी री। घणखरा लोग हा बीं मै, घणी बड़ी वांरी हिस्सेदारी। स्वामी जी बठै बैठ्या ही हा, एक गरिमा रै सागै मौन अर गम्भीर।

बात मुआफिजखानै री हैं, जठै हूं नौकरी करतो हो। बिहार रै एक विद्वान रै सम्मान मैं राखी गयी ही बा गोस्ठी। बात नौजवान पीढ़ी री सामाजिक भूमिका माथै हूती ही। स्थानीय कॉलेज री प्रिंसिपल आपणी बात नै इयां बढ़ा री ही जाणो सगळा दोस नौजवानां रो ही है। अर दोस ही किसो–अनास्था, अनीश्वरवाद अर भौतिकवाद सूं लगाव। एक प्रोफैसर साब ही बैठ्या हा। बां म्हारी ओर इसारो कियो अर बोल्या, "नौजवानां री ओर सूं थे ही कीं बोलो।"

हूं अबार ताईं जब्त कर्योड़ो हो, खड़ो होयो अर कैयो, "म्हारी पीढ़ी आप री समझ मुजब रास्तो बण रैयी है, सफाई देवण री हूं कोई दरकार को समझूं नीं।" तमतमातो चैरो लियां बैठग्यो।

प्रिंसिपल साहिबा फेरूं कुचकेरणी करी, "बस ओ आक्रोश है आ लोगां मैं, जिण रो कोई उपयोग को'नी"

हूं बड़ी मुस्कल सूं अपणै आप नै संयत कियो अर कैवण लाग्यो क जद माइ-केल फैराडे रॉयल साइन्टिफिक सोसाइटी रै सामै बिजळी रै अन्वेषण रो आप रो

प्रयोग कर दिखायो; बठै बैठी एक माणीजती महिला बोल्यी क ईरो उपयोग कांइ है ? जणै माइकेल फैराडे जवाब मैं एक सवाल कियो क अबार जाम्योड़ै टाबर रो कांई उपयोग ? ईंयां ही आप लोग नौजवानां रै आक्रोस खातर समझ सको हो ।"

प्रिंसिपल साइबा क्यांनै मान जावै, सीधो सवाल बगायो, "थे लोग ईश्वर मैं आस्था क्यूं को राखो नीं ?

हूं कीं बोलतो बींसूं पैलां धीमी पण मजबूत आवाज मैं स्वामीजी बोल पड़्या, वा जरूरी को'नी, ईंरै बगैर ई काम चाल सकै है"

बीं रै बाद कोई को बोल्यो नीं अर बा बात बठै ही खतम हुगी। म्हारै अचरज अर खुसी रो कोई ठिकाणो को होनी । बाद मैं स्वामीजी रै शिष्य श्री सत्यनारायण सूं जद जिक्र चलायो तो बां पुस्टि करी कै गुरुजी नै कदेइ पूजा-पाठ करतां को देख्यो नीं । भौत दिनां बाद स्वामीजी रै जमांई बजरंग जी भी ईं बात री पुस्टि करी ।

आज जणै मौत रै अंधारै परदै पार सूं उजास री आ झलक म्हानै म्हारो मारग दिखावै जणै सोचूं क हरेक बुजुर्ग रै बांरै परम्परागत रूझान रो सोच बणा लैणो कतरो गळत हुवै । बीं बखत अर उम्र में स्वामीजी री आ मजबूती ई पढ़ण लिखण री लगन रै मूल में लखावै । हूं सोचूं क भगवान' जिसी कल्पनांवां कमजोर अर सामान्य आदमी री हिम्मत बढ़ा सकै, दिलासा दे सकै अर इयां बांनै एक आधार दे सकै पण मजबूत अर सुळझ्योडां खातर आ बात लागू को हुवै नीं । बीं अंधारै पार सूं नौजवनां रै लियै आ एक ज्योति पुंज है, जो स्वामीजी री याद रै गैसा घणो प्रकासमान हुवै, पुस्ट हुवै................।

४७, महलखास किला
भरतपुर (राज०)

△

राजस्थानी भासा रा सूरज : स्वर्गीय नरोत्तमदास जी स्वामी

डॉ. लक्ष्मीकान्त शर्मा

सिरी नरोत्तमदास जी स्वामी रै सुरग सिधारने सूं राजस्थानी साहित्य रो सूरज अस्त हुग्यो। उण रो सम्बन्ध विद्वानां री वै परम्परा सूं रह्यो है, जकां रे वास्ते साहित्य रो निर्माण अर शिक्षण (पढ़ावणों) जीवण रो पर्याय रह्यो है। वै जिनगी भर साहित्य री साधना में लाग्योड़ा रह्या अर बांरी प्रतिभा रा पुसप प्राचीन काल रै साहित्य रो सम्पादन, टीका-लेखन अर शिक्षा-जगत रे वास्ते मानक पुस्तकां तैयार करण रे रूप में खिल्या है। स्व. सिरी सूरजकरणजी पारीक, ठाकर रामसिंहजी अर सिरी नरोत्तमदासजी स्वामी तीनों ई सदा ई वास्ते याद रहसी कै बां न केवल राजस्थानी रै महत्त्व ने बढ़ायौ, बल्कि असां ग्रन्थां री रचना भी करी, जिकां रे कारण मां भारती रो मुख उज्ज्वल हु सकै। ढोला मारू रा दूहा, बेलि क्रिसन रुक्मणी री, राठौर प्रिथीराज री कही, राजिया रा दूहा आदि ऐड़ी क्रितियां हैं, जिकां सू लोगां रो ध्यान राजस्थानी साहित्य री तरफ गयो। ऐ क्रितियां आ तीनूं री देन है। पारीक जी रे मरणे सूं अर ठाकर रामसिंह जी रै साहित्य सूं किनारो करण सूं एकला स्वामी जी ही ऐ महान कार्य ने आपरे कांधा माथे संभाले रह्या।

काशी में शिक्षा:-

आ संजोग री बात है कि ई त्रयी ने शिक्षा अर साहित्य रा संस्कार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय सूं प्रापत हुया। ऐ ही वे सज्जन हा, जिका सबसूं पैली बीकानेर राज्य सूं ऊंची शिक्षा प्रापत करण रे वास्ते बनारस गिया। पारीक जी रै माइने रामचन्द्र शुक्ल जैड़ी मेधा अर साहित्य री सूझ-बूझ ही। ठाकर रामसिंह जी अंग्रेजी साहित्य रा मर्मज्ञ पंडित हा। स्वामीजी इतिहासकार, भाष्यकार, वैयाकरण, संस्कृत भाषा रा विद्वान अर कोशकार हा। भाषा विज्ञान अर नक्षत्र-विज्ञान रै ऊपर बांरौ असाधारण अधिकार हो। बांरौ खुद रौ ग्रन्थ-संग्रह ऐड़ो है, कै वै में अनेक विधावां अर विज्ञानां रा ग्रन्थ सुलभ है। बां बहुत-सी पुराणी साहित्यिक पत्रिकावां री फाइलां संभाल राखी ही।

अध्यापनः–

स्वामी जी सब सूं पैली बिड़ला कॉलेज, पिलानी बाद में डूंगर कॉलेज, बीकानेर अर अवकाश प्रापत करणै सूं पैली महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर में हिन्दी विभाग रै अध्यक्ष पद रे ऊपर सोभित रह्या। अवकाश-ग्रहण करणै रै बद वै बनस्थली विद्यापीठ ने आपरै ज्ञान रौ लाभ देउंता रहया। ई भांति राजस्थान री कई पीढ़ियों नै शिक्षा-दान करण रौ सुयस बांणै मिल्यो। आज बांरा घणाई शिष्य भिन्न-भिन्न महाविद्यालयों माइने हिन्दी–शिक्षण रौ कार्य पूरौ करै है। बां घणाई विद्यार्थियां नै शोध-कार्य में लगायौ। बांरी शिष्य-परम्परा माइने घणा इसा विद्वान होया है, जिका राजस्थानी साहित्य रै विभिन्न पक्षां ऊपर महत्त्वपूर्ण शोध-कार्य पूरौ करचो है।

मन री साधः–

स्वामीजी रौ सपनो हो, कै वै राजस्थानी साहित्य रै वास्ते वौ कार्य करें, जिको हिन्दी रै वास्ते श्याम सुन्दर दास अर रामचन्द्र शुक्ल करचो है। ई बात रौ ध्यान राखतां, बां राजस्थानी भाषा रौ व्याकरण लिख्यौ, घणाई महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रन्थां रौ संपादन करचौ अर राजस्थानी भाषा रै कोश बणावण में लाग्योड़ा रहया। इयै सपने रो परिपाक उणरी राजस्थानी गौरव-ग्रन्थ माला रे माइने हुयो है, जिकै रा पांच खण्ड: (१) क्रिशन रुक्मणी री बेलि (२)-(३) राजस्थानी गद्यः विकास और परकाश (दो भाग), (४) मीरां मुक्तावली तथा (५) राजस्थानी लोकगीत-विहार प्रकाशित हो चुक्या है।

सम्पादन कलाः–

स्वामी जी संपादण-कला माइने निष्णात हा। पाठालोचन री दृष्टि सूं भी वां महत्त्वपूर्ण कार्य करचो हो। ढोला मारू रा दूहा, बेलि क्रिसन-रुक्मणी अर मीरां रे पदां रा घणा ही रूप प्रचलित हा। इण सगळां री जांच करतां-करतां, जिको रूप बां निर्धारित करचो बो अन्तिम रूप न भी हुवै, पण महत्त्वपूर्ण विचारणै जोग अवश्य है। बांनै वैज्ञानिक दृष्टि रौ वरदान प्राप्त हो, जिकै रा दरसन बांरे हर ग्रन्थ माइने मिलै है। शबद रो सही अर प्रामाणिक अरथ करणों बांरो सुभाव हो। टीका रौ भाष्य प्रस्तुत करणौ उण रौ व्यसन अर सबसूं वड़ौ गुण बांरी वैज्ञानिक परियोजना है। बां घणा छात्र-छत्रावां नै इयै कार्य में लगायौ अर वां सूं श्यामसुन्दरदास री तरह ही कार्य लियौ, बां डॉ. शिवस्वरूप शर्मा 'अचल', डॉ नरेन्द्र भानावत, डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. लक्ष्मीकमल, डॉ स्वर्णलता अग्रवाल, डॉ. ब्रजनारायण पुरोहित आदि घणाई विद्वानां ने अनुसंधान रे पथ पर आगे बढ़ायौ। बै इसा विद्वानां रा प्रेरणा स्रोत हा।

राजस्थानी रा सूत्रधारः—

बांरो सपनो हौ, कै राजस्थानी भाषा नै राज्य भाषा रै पद पर सुशोभित कियो जावै। राजस्थानी भाषा अर साहित्य नै समृद्ध बणावण रै वास्ते बां राजस्थानी

पीठ री थापणा करी । जद माध्यमिक शिक्षा-बोर्ड राजस्थान नैं आपरै पाठ्यक्रम रै माइने राजस्थानी ने स्थान दियौ, तो स्वामीजी रे मूल्यवाण सुझावां रौ लाभ उठायौ गयौ । इण ही प्रकार सूं जोधपुर विश्वविद्यालय रै माइनें अलग सूं राजस्थानी विभाग री स्थापणा करणौ वास्ते बां री प्रेरणा सक्रिय रही ही । अबै ई बात री खुशी है कै राजस्थान विश्वविद्यालय नै भी राजस्थानी विभाग रै अस्तित्व नैं सिद्धान्ततः मान लियो है । राजस्थानी आन्दोलन रै सूत्रधारां मा बांरो नाम हमेसा गौरव सूं लियौ जासी ।

सुभाव और पिरकृति:–

स्वामी जी कम बोलण वाला अर मूक साधक हा । वांने आपणै कार्य रै माइने लगातार लाग्यो रवणो ही चोखो लागतौ । बै कई योजनावां मा एक साथै कार्य करण रा आदि हा । वां री लगण अर अध्यवसाय स्पृहणीय है । वै खुद रै माइने एक संस्था हा । बै बीकानेर रै गुण प्रकाशक सज्जनालय अर भारतीय विद्यामन्दिर जैड़ी संस्थावां रा प्राण हा । अनेकूं पदां पर रैवते हुयै वां कैई महत्त्वपूर्ण कार्य करचा । प्रशासन रे कार्य माइने वांरी रुचि ही कोणी । जद कदी ऐड़ो प्रस्ताव राखीज्यौ, बां ठुकरा दियौ । महाराणा भूपाल कॉलेज रा बै वाइस प्रिंसिपल हा, पर जद प्राचार्य बनवां रो अवसर आयो, बां ठुकरा दियौ । आ बात बै जाणता हा, के प्रशासन रै झमैले माइने पड़ने सूं पढणो-लिखणों दूभर हो जासी ।

सूरज अस्त हुइग्यौ:—

जिनगी रै आखीर तक वै विद्या-व्यसन माइने लाग्योड़ा रहचा । वृन्दावन में रैवतां बां घणी पुस्तकां री रचना करी । ऐ पुस्तकां राजस्थानी गौरव ग्रन्थ माला री अन्तर्गत श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा सूं प्रकाशित हुई है । पाठ्य-पुस्तकां रै लिखण में वांरी घणी रुचि ही । स्वर्ण महोत्सव माला सूं लैर मीरां मुक्तावली तक आ धारा बांरै जीवण माइने लगातार बहती रही । ई दृष्टि सूं वां घणो धण कमायौ, पण बौ भी विद्या-व्यसन रै महायज्ञ मांय हविष्य बण्यौ । गत दिणां कलकत्ते री एक संस्था सूं बां री साहित्यिक सेवायां रै सम्मान में बांने १०,००० रुपिया री थैली भेंट हुई, जद बै फेर समाचारां रै घेरे मांय आया । पण कुण जाणै हो कि ए अस्तंगत राजस्थानी सूरज री आखरी किरणां ही । बां रै शिष्यां प्रशंसकां अर मित्रां रो बां नै शत-शत परणाम् ।

हिन्दी विभागाध्यक्षः दयानन्द महाविद्यालय,
अजमेर

नरोत्तम-पच्चीसी

श्री गणपति स्वामी

१ मरु-भाषा रा दिन मुड़्या, विधना आई भाय।
अजब विभूती ऊतरी, बोकाणै मैं आय।।

२ सुरत संभाळता हो लख्यो, मा-गिर निबळो हाल।
सहसर मणी विकास री, तोख गळै ली घाल।।

३ हीणापण मा-गिर तणों, लखि भाषावां मांय।
छिण-छिण में झूजत रह्यो, सबळापण रै तांय।।

४ ठोक'र छाती कस कमर, प्रण रोप्यो संगीन।
करवा नै मायड़-गिरा, ऊंचे पद आसीन।।

५ लोक-साहित्य समाज रो, निरमळ काच सरूप।
संकलित कर चाढ़ो निजर, विधा अनूप-अनूप।।

६ मा भाषा-सेवा धरम, और धरम सब गौण।
मा भाषा-सेवा करम, और करम सब गौण।।

७ तारतम्य टूट्यो नहीं, डिगा सक्यो ना प्रेय।
तारतम्य टूट्यो नहीं, लुभा सक्यो ना श्रेय।।

८ मा गिर-दिवल पूरियो, अपणे तन रो तेल।
चित-चकमक सूं चासदी, मन री बाती मेल।।

९ मा सुरसत देवी वसी, मन-मंदर में एक।
सांस-सांस पूजा करी, ई में मीन-न-मेख।।

१० पूजा री अन्तरध्वणी, घट-कांनां गूंजाय।
पुरख मनोमय नींद में, सूत्या दिया जगाय।।

११ अब पग-पग पूजक भया, थारी लखना पाय।
मा-सुरसत इतिहास रा, खुल्यो नुवों अध्याय।।

१२ थे जो भोग चढ़ाइया, एक-एक सूं बाद।
वै नित-नित वंटता रहैं, सुरसत रा परसाद।।

१३ घट-ढेरां में चोबिया, थे मा-भाषा-बीज।
बै उगिया; फूलैं-फळैं, रुत बसन्त प्रगटीज।।

१४ मा-भाषा-भुइं, स्वामि-तरु, राखी ऊपर छांय।
जब लग बो हरियो रह्यो, गिर्‌यो सूक कर नांय।।

१५ यो स्वामी-निरवाण नहिं, भाव-दीप निरवाण।
या उग ओजूं छिप गयो, भाव-जगत रो भाण।।

१६ काया मांटी रो डगळ, अर डगळै री छांय।
स्वामी बाजी मारग्यो, ईं डगळै नै पाय।।

१७ मा भाषा-पायक मंडळ, स्वामी तारो एक।
झिलमिल झिलमिल झिलमिलै खिवती खींवण देख।।

१८ सूरज तो दिन में दिपै, दिपै चन्दरमा रात।
दास नरोत्तम कीरती, अखंड दिपै दिन-रात।।

१९ थे उळज्योड़ो सूत यो, जीवण रो ब्योहार।
ध्यावस सूं सुळजाइयो, कठै न टूट्यो तार।।

२० तन मरुधर-मा गोद में, मन मा-सुरसत ध्यान।
छेलां छेला निमन कर, स्वामी तज्या पिरान।।

२१ मन-ग्यानेन्द्री संग ले, हो उदान असवार।
सूछम लोक पधारिया, थूळ लोक रै पार।।

२२ अणिमा लघिमा आठ सिद, पढ़ी पोथियां मांय।
महिमा देखी लोटती, प्रतछ स्वामि रै पांय।।

२३ ये कोनी कोइ टोबड़ा, देखो चनेक सूल।
सपूत बेटै पर गई, मरुधर-छाती फूल।।

२४ म्हे मरुधुर रा मानवी, थे मरुधर रा देव !
न्यारी मांटी रा घड़चा, थां ने अलख अभेव ।।

२५ उत्तम मध्यम अधम नर, भरिया राण खमाण ।
नांव सारथक थे करचो, मा-गिर-सेवा पाण ।।

२६ मुड़ आवैं रुत मास दिन, मुड़-मुड़ बार-त्यूंहार ।
स्वामी मुड़ आवै नहीं, बीतो कलप हजार ।।

२७ एक वाक्य में है भरचो, जीबण-सार तमाम ।
रोता आया जगत में, हंसतां करचो पयान ।।

२८ नीचा झुक कर बीनती, सुणज्यो दीनदयाल ।
दास नरोत्तम-सा जणैं, घर-घर मायड़ लाल ।।

△

बीकानेर रा महान सपूत अर साहित्य-सेवी कुछ संस्मरण

डा० माधोदास व्यास

आज तो बीकानेर में पढाई-लिखाई रो बोत प्रचार है। कई स्कूल अर कॉलेज है। इण में इती भीड़ भाड़ है कि छोरां ने भरती करावण सारु घणी माथा पच्ची करनी पड़े, कई पापड़ वेलना पड़े, अठीने उठीने सूं बोत सिफारिश करवाणी पड़े। पर साठसित्तर बरस पहलां हालत ठीक ईं सूं उलटी ही। माता-पिता टाबरां ने स्कूलों में पढ़ावण ने भेजता कोनी। हर कलास में पांच सात लड़का हुवता। पाठशालाओं में लड़कों री संख्या बढावण वास्ता वजीफे अर मुफत री पोथ्यां देवण रो लोभ देता। उण वखत रा लोग कहता, 'अण भणिया घोड़े चढ़े भणिया मांगे भीख'। जिका लोग थोड़ी बोत हिन्दी या उर्दू अथवा कामदारी जाणता बांने नौकरी मिल जावती। सरकारी अ'र गैर सरकारी नौकरी खातर अंगरेजी भासा जाणनो जरूरी हो कोयनी।

अंगरेजी शिक्षा देणे बास्ता राजरी तरफ सूं एक हाई स्कूल तथा तीन चार प्राथमिक शालावां ही। हाईस्कूल सूं आगे पढ़ण रो कोई बंदोबस्त नहीं हो। जिका लड़का आगे भणनो चावता बांने बीकानेर सूं बार बनारस जावणो पड़तो। उणों ने राज री तरफ सूं वजीफो मिलतो। जिके भणगुण ने पाछा आवता उणों री तो बात ही क्या पूछणी। वांरो बोत माण हुवतो। वे बोत गुणवन्ता तथा मोटा समझदार गणीजता। बों री पढ़ाई री जागा जागा चरचा होती।

सगळा सूं पहला जिके सखस बनारस सूं एम ए. पास करने आया, वोरो नाम आचार्य सूर्यकरणजी हो। उणों रो नाम ही 'एम. ए. साहब' पड़ग्यो। मोकळा लोग वाने एम. ए साहब सूं बतळावता, असली नाम तो बोत कम लोगों ने मालम हो।

उण समय सरकारी नौकरी री कमी कोनी ही, कमी ही नौकरी करण वाळां री। जिका लोग बाहर सूं ऊंचो पढाई कर आवता वां ने सरकार जल्दी ऊंची नौकरी दे देवती।

सन् १९२६ में एम. ए. साहब' रे बाद ऊंची पढ़ाई कर बनारस सूं आवण वालों में श्री नरोत्तमदासजी स्वामी, श्री सूर्यकरणजी पारीक तथा ठाकुर रामसिंहजी हा। स्वामीजी संस्कृत में एम. ए. हा अ'र पारीक तथा ठाकुर साहब अंगरेजी में।

स्वामीजी उण वखत री विधान सभा में ट्रांसलेटर बणग्या तथा पारीकजी महाराजा गंगासिंहजी रे प्राइवेट सेक्रेटरी रे दफ्तर में सुपरिन्टेन्डेन्ट रे पद पर नियुक्त हुया। दोनूं जणा शिक्षा अर साहित्य रा प्रेमी हा। उण बखत शिक्षा विभाग में उणों रे लायक नौकरी री कमी ही। घर री कमजोर माली हालत होणे कारण दफ्तर री नौकरी तो करनी पड़ी पर दफ्तर रे काम, में मन कोनी लागतो। उठे वांरो दम सो घुटतो। वे जल्दी सूं उण काम सूं पिण्ड छुड़वणो चावता।

उणी बरस मोहता मूलचन्द विद्यालय हाई स्कूल रे रूप में क्रमोन्नत हुयो। पारीकजी सरकारी नौकरी सूं इस्तीफो देय ने मोहतां रे मदरसै में हैडमास्टर रो पद संभालियो। स्वामीजी ने मन पसंद नौकरी खातर एक दो बरस इंतजार करनो पड़ियो। सन् १९२८ में डूंगर कॉलेज री विधिवत् थापना हुई। इंटरक्लास खुली। पारीकजी कॉलेज में प्राध्यापक बणिया। पारीकजी हा तो एम. ए. अंगरेजी में, पण वाने हिन्दी पढ़ावण रो काम दियो गयो। पारीकजी ने आ बात बोत अखरी। उणों रे थके अंगरेजी पढ़ावण वास्ता बार सूं दूसरो आदमी बुलायो गयो। अब पारीकजी वास्ता हिन्दी में एम. ए. करनो जरूरी हुय गयो। स्वामीजी वां रे साथे हुयग्या। दोनूं जणा परीक्षा री त्यारी में जोर शोर सूं जुटग्या। सन् १९२९ में दोनूं जणा बड़ी योग्यता रे साथ एम. ए. रो इम्तहान पास करियो। स्वामीजी ने पैली श्रेणी मिली अर पारीकजी ने दूजी।

वीं साल पिलाणी में बिडला कॉजेज खुलियो। पारीकजी डूंगर कॉलेज री नौकरी सूं त्याग पत्र देयने पिलाणी में अंग्रेजी अर हिन्दी दोनूं रा प्रोफेसर बणिया। डूंगर कॉलेज में पारीकजी री जो जागा खाली हुई उठे स्वामीजी पोचग्या। पारीकजी री योग्यता सूं खुस होयने बिडला कॉलेज रे मालिकां वांने उणी बरस वाइस प्रिंसिपल बणा दिया। सन् १९३४ में पारीकजी आपरे आन्तरिक दोस्त अर साथी स्वामीजी ने आप रे खने संस्कृत रे प्रोफेसर पद पर बुला लिया। सन् १९३५ में जद डूंगर कॉलेज में स्नातक कक्षावां खुलीं तो स्वामीजी पाछा बीकानेर आय गया।

पारीकजी तथा स्वामीजी दोनूं ही म्हारा गुरु हा। सन् १९२६ में मोहता विद्यालय में नवीं कक्षा में पारीक जी रे चरणों में बैठ ने अंगरेजी अर फेरुं सन् १९२८ में डूगर कॉलेज में हिन्दी सीखणै रो मौको मिलियो। सन् १९२९ में स्वामीजी म्हारा हिन्दी रा प्राध्यापक हा। सन् १९४८ में चूरू रे लोहिया कॉलेज, सूं म्हारो तबादलो बीकानेर वां रे सहयोगी रे रूप में हुयो।

स्वामीजी एक आदर्श गुरु अर सहयोगी हा। वे बोत भलेरा, बोत ही योग्य तथा ऊंचे दरजे रा अध्यापक हा। हिन्दी रे प्राचीन काव्य, छंद, अलंकार, व्याकरण

तथा भाषा-विज्ञान रा वे अधिकारी विद्वान् हा। आपरे छात्रा सूं बहुत प्रेम करता। छात्र वां रे प्रति बड़ी श्रद्धा भावना राखता। भलेरा अर पढ़ण में हुशियार लड़का माथे वांरी विशेष मेहरवानी रहवती। वां ने वे कदे भूलता कोनी। मौको पड़ने पर वां री उन्नति में हर तरह रो सहयोग देवता। मदद करने में कोई तरह रो एहसान कोनी जतावता। इण प्रसंग में म्हांरी खुद री एक घटना रो उल्लेखन बेभा कोनी हुसी।

इंटर पास करने म्हैं वाटर नोबल्स स्कूल में मास्टरी री नौकरी करली। बीए तथा एम ए री पढ़ाई स्वयं पाठी विद्यार्थी रे रूप में कीनी। सन् १९३७ में डूंगर कॉलेज रे हिन्दी विभाग में ट्यूटर पद बणावण वास्ता स्वामीजी एक प्रस्ताव तत्कालीन प्रिंसिपल महोदय री मारफत ऊपर भिजवायो। बीं जागा पर म्हारे नाम री सिफारिश भी भेजी। उण बखत मैं हिन्दी में एम. ए. प्रीवियस पास हो। सिफारिश करने सूं पैलां ना तो स्वामीजी मनै बुलायने राय मांगी, न मने संदेश भेजियो। बाद में भी ई विषय में मने कोई संकेत भी कोनी दीनो। उण टैम डूंगर कॉलेज रा प्रिंसिपल एम. एल. तुलानी हा। सादूल स्कूल रा संस्कृत रा अध्यापक पं. पद्मानन्द शास्त्री तुलानी साहब रे टाबरां रा ट्यूशन करता हा। वह पंजाब विश्वविद्यालय री हिन्दी रा 'प्रभाकर' परीक्षा पास हा। उणों ने हिन्दी पढ़ावण रो कोई अनुभव नहीं हो। जद ऊपर सूं ट्यूटर रे पद री मंजूरी आई तो तुलानी साहब उण बखत रै डाइरेक्टर ऑफ एज्यूकेशन रे सहयोग सूं उण पद पर शास्त्री जी री नियुक्ति चुपचाप करवाली। बीं समै बी. ए. इंगलिश साहब महाराज कुमार करणीसिंह जी रा ट्यूटर हा तथा साथ में डाइरेक्टर रो काम भी करता हा।

स्वामीजी री सिफारिश बिलकुल निष्पक्ष, न्याय संगत अर उपयुक्त ही। पण बड़ा अधिकारी आपरे तुच्छ स्वारथ रे सामने न्याय-अन्याय देखे कोनी। ए. बी. इंगलिश साहब नै बाद में सारी बात मालम हुई। एक दिन वे अचानक स्कूल में आया। उक्त घटना पर खेद प्रकट करतां म्हारे सामने बी. टी. री ट्रैनिंग में भेजणै रो प्रस्ताव राखियो। मैं इनकार कियो। कारण जितो वजीफो मिलतो वे सूं वत्ती म्हारी तनखा ही। दुवारा आया और वजीफे रे साथ आधो वेतन दिलाणे रो वादो कियो। मैं बनारस चलो गयो।

स्वामीजी आपरे साथियां रै साथै सहानुभूति, प्रेम अर बराबरी रो बरताव करता। उणां रै साथै सलाह-मशवरो करनै रै बखत तथा पढ़ावणरे काम रो बंटवारो करता नुवैं साथियां री कठनाइयां तथा समस्या नै हल करने में पूरी सहायता देवता। रिसर्च रे काम नै वै बोत महत्व देवता। आपरे सहयोगियों ने रिसर्च कार्य करने वास्ता उत्साहित अर प्रेरित करता। वे बोत विद्वान् तथा रिसर्च गाइड हा। संस्कृत, हिन्दी तथा राजस्थानी-तीनूं भाषाओं रे रिसर्च कार्य रा वे कुशल निर्देशक हा। वां रै निर्देशन में काव्य दोष, बीसल देव रासो, राजस्थानी गद्य का विकास, राजस्थानी लोक गीत आदि कई विषयों पर महत्त्वपूर्ण शोध कार्य हुयो।

स्वामीजी सम्पादन कला रा विशेषज्ञ हा । उणां ग्रापरै कई साथियां ने इण कळा में दीक्षित कर उणां री ग्रार्थिक दशा सुधारने में भी योग दियो ।

जद मैं डूंगर कॉलेज में उणां रो सहयोगी हो तो एक दिन वांरे घर सूं बुलावो ग्रायो । मैं वांरी हाजरी में खड़ो हुयो । ग्रादेस हुयो कि पनरे दिन रे भीतर हाई स्कूल रै छात्रां वास्ता ऐच्छिक हिन्दी में पद्य रो एक संकलन तैयार करनो है । बिलकुल नुवों काम हो । पैलां रो कोई ग्रनुभव हो कोयनी । इण खातर कुछ देर सोचतो रहयो । म्हांरे मन री बात ताड़ने हिम्मत दिलाते हुए काम सुरु करने रो कहयो । ग्रापरे सहयोग ग्रर सहायेता रो ग्राश्वासन दियो । उणां रे मारग दरसन में समै रै भीतर पुस्तक त्यार हुयगी । पुस्तक री भूमिका, कवियां री जीवनी तथा उणां रै काव्य तथा भाषा री विशेषतावां री विवेचना म्हारे खने सूं लिखवाई । कविता वां रै संग्रह में ही, उणां पूरो सहयोग दियो । छपाई ग्रर प्रकासन रो काम भी वांरी मारफत हुयो । 'काव्य प्रभा' नाम रो ग्रो संकलन राजस्थान विश्वविद्यालय री मंजूर करने वाली कमेटी रे सामने टैम पर पोच गयो । दूसरी ग्राई हुई पुस्तकां रै मुकाबले में ग्रच्छी होणे रे कारण मंजूर हुयी । इणी माफक उणों रे मारग दरशन में श्री ग्रक्षय चन्दजी शर्मा रे साथे इंटर कक्षावां री ऐच्छिक हिन्दी खातर 'हिन्दी निबंध विहार' नामक गद्य संकलन त्यार हुयने मंजूर हुयो ।

इण दोनां रो ग्रधिकार शुल्क (*Royalty*) महांने दिरायो, खुद एक पाई भी नहीं छुई । म्हांरे बार बार किये गये ग्रनुरोध-ग्राग्रह ने स्वीकार नहीं कियो । ग्रा उदारता ग्रर इसो निरलोभ धन्य है ।

स्वामीजी महत्त्वाकांक्षी को नी हा । वे प्रोफेसरी रे पद सूं संतुष्ट हा । रिटायर हुया जद वे उदयपुर महाराणा भूपाल कॉलेज में वाइस प्रिंसिपल हा । सीनियर होणे रे कारण सरकार वांने प्रिंसिपल रो पद देणो चावती ही पण स्वामीजी इनकार कर दियो । इये रो ग्रो कारण कोनी हो कि वे ऊंचे पद री जिम्मेबारी लेणे सूं घबरावता हा ग्रथवा वां मैं प्रशासनिक खमता रो ग्रभाव हो । वाइस प्रिंसिपल री हैसियत सूं उणां कई प्रशासनिक जिम्मेवारियां सफलता रै साथ निभाई ।

स्वामी शांति-प्रेमी हा ग्रर ग्रनवरत रूप सूं साहित्य साधना वांरे जीवन रो लक्ष्य हो । ग्रगर प्रिंसिपल बणजावता तो वांरी शांति ग्रर साधना में खलल पड़ती । ग्रंग्रेजी रे महान् कवि ग्रर नाटककार शेक्सपियर री *'uneasy lies the head that we ars the crown'* उक्ति में स्वामीजी री ग्राही ग्राशंका प्रतिध्वनित है ।

राजस्थानी भासा री सेवा में तो वांरो सारो जीवन ग्रर्पित हो वह राजस्थानी भासा रे ग्रान्दोलन रा एक प्रवर्त्तक हा । राजस्थानी भाषा रे ग्रांदोलन रा दूसरा सूत्रधार हा श्री सूर्य करणजी पारीक तथा ठाकुर रामसिंह जी । राजस्थानी भाषा ग्रर साहित्य रे विकास वास्ता इण तीनू साथियां जो काम कियो वांरी प्रसंसा देश रे चोटी रे

विद्वानों की है। पारीक जी मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा रा धनी हा तो स्वामी जी संपादन कला रा।

स्वामीजी ने सूर्यकरणजी पारीक तथा ठाकुर रामसिंह जी रे साथ मिलकर 'कृष्ण रुकमणी री बेलि' ढोला मारू रा दोहा' जिसा डिंगल भाषा रे वोत प्रसिद्ध काव्यां रा विसद प्रस्तावना, अन्वय सहित हिन्दी टीका, पाठान्तर आदि रे साथ सम्पादन कियो। काव्य गत विशेषतावां रै विवेचन में पारीक जी रो तथा डिंगल शब्द कोश, शब्दों री भाषा वैज्ञानिक विवेचना, तथा दूसरी बातां रै सम्पादन में स्वामी जी रो महत्त्वपूर्ण योगदान है 'वेलि' रो प्रकाशन तो उत्तर प्रदेश री हिन्दुस्तानी अकेडेमी द्वारा हुयो तथा 'ढोला मारू रा दोहां' रो प्रकाशन 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' कियो। 'राजस्थान के लोग गीत' के दोनों भागां रो विद्वत्तापूर्ण संपादन तीनों साथियों रे सम्मिलित प्रयास रो प्रति फल है। 'राजस्थान रा दूहा, भाग पहलडो" रो सम्पादन स्वामीजी अकेलां कियो। 'राजस्थानी भाषा' रो संक्षिप्त इतिहास तथा 'राजस्थानी भाषा का व्याकरण' आदि और भी आपरी महत्त्वपूर्ण रचनावां हैं। आप राजस्थानी भाषा पर कई खोज पूर्ण निबंध साहित्यिक पत्र-पत्रिकावां में छपवाया।

राजस्थान रिसर्च इंस्टीट्यूट अर भारतीय विद्या मन्दिर जिसी साहित्य शोध संस्थावां रै संस्थापकां में आप एक हा।

स्वामीजी विद्या व्यसनी हा। जदकदी बां रै घर जावता वे पोथ्यां रै ढेर बीच मेज पर कुछ न कुछ लिखता पढ़ता मिलता। वां रो निज रो पुस्तकालय बोत विशाल है जिकै में पुराणै अर नये साहित्य पर सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

बोत बार वे कालेज सूं सीधा नवयुग ग्रन्थ कुटीर पोचता अर उठै नई आई हुई पुस्तकां रो अवलोकन-अध्ययन करता एवं खरीद फरोख्त करता।

वां रो पुस्तक प्रेम वांनै अगरचन्दजी नाहटा रै पुस्तकालय खींच ले जावतो। बठै बै हस्तलिखित ग्रन्थां, कई साहित्यिक किताबां तथा नई तरह री शोध पत्र-पत्रिकावां रै अध्ययन में संलग्न रहता।

श्री अगरचन्दजी नाहटा, श्री शम्भुदयालजी सक्सेना, तथा श्री मुरलीधरजी व्यास वांरा जिगरी तथा साहित्यिक दोस्त हा। वां रै साथ शोध तथा राजस्थानी रै उन्नयन रै बारै में विचारां रो लेणदेण हुवतो तथा योजनावां बणती। एक साहित्यिक गोस्ठी भी बणी ही जिकै में नुवां-पुराणा लेखक आपरी नई रचनावां सुणावता। इयै गोष्ठी सूं कई नया लेखक त्यार हुया।

स्वामीजी शरीर रा दुबळा-पतळा हा। वां री कृश काया में काम करण री गजब रो खमता ही। रात दिन लिखता-पढ़ता रहता, पर थकावट रो कोई चिन्ह नहीं। निरन्तर पढ़णै लिखणै रो काम करणै सूं वां रै शरीर अर मन ने स्फूर्ति तथा पोषण मिलतो सरलता तथा सादगी री वे मूरति हा। वे आत्म-प्रशंसा, आत्म-दर्शन तथा

आत्म-विज्ञान सूं दूर रहता। वांरी सीधीसादी वेसभूसा तथा दुबळै पतळै शरीर नै देखनै कोई अजनवी ओ विस्वास को कर सकतो नीं कि वे राजस्थानी अर हिन्दी रा महारथी है।

आप राजस्थानी रा अनन्य उपासक हा। वां रो घणखरो समय इण री सेवा में ही बीतियो। गुजराती, मराठी, तमिल आदि क्षेत्रीय भाषाओं रो आपरै प्रांत में जो स्थान अर ओहदा है बिसा ही स्थान अर ओहदा वे राजस्थान में राजस्थानी रा चावता। वांरी घणी इच्छा ही कै राजस्थान रै तीनूं विश्वविद्यालयां में राजस्थानी रो न्यारो विभाग खुलै अर देस रै संविधान री आठवीं सूची में राजस्थानी भाषा शामिल की जावै।

जोधपुर में तो उणां रै जीवन काल में राजस्थानी रो अलग विभाग खुल गयो हो। जयपुर तथा उदयपुर में जल्दी खुलणै री सम्भावना है। संविधान री आठवीं सूची में राजस्थानी रै शामिल करावण रो प्रयास जोर-शोर सूं चाल रह्यो है।

वां री समस्त अप्रकाशित रचनावां नै प्रकाशित करावण रो प्रयास करणो, राजस्थानी रै उन्नयन कामनै आगै बढ़ावणो तथा उणां रै आदर्श रै अनुसार जीवण में आचरण करणो बीकानेर रै इण महासपूत अर विद्वान साहित्य सेवी रै प्रति साची श्रद्धांजळि होसी।

△

आचार्य श्री स्वामी नरोत्तमदासजी रा केई संस्मरण

डॉ० रघुवीरसिंह, डी. लिट्

ईसा री वर्तमान बीसवीं शताब्दी रै चौथै दशक में जिकां तीन मूर्धन्य विद्वानां राजस्थानी साहित्य रो सांगोपांग अध्ययन ई नइं करयो पण जिकै राजस्थानी भाषा रा यबळ समर्थक ई हा अर जिकां प्राचीन राजस्थानी साहित्य रै संकळन, सम्पादन अर प्रकासण सारू ई घणी जबरी कोसीस करी ही, बै हा ठाकुर रामसिंहजी तंवर (जन्म सं० १९५६ वि०), पं० सूर्यकरणजी पारीक (जन्म सं० १९६० वि) अर आचार्य स्वामी नरोत्तमदासजी (जन्म सं० १९६१ वि०) । बै राजस्थानी साहित्य रै इतिहास में सदा रै सारू अमर हुग्या है । इण त्रिभूति री छेकड़ली विभूति आचार्य स्वामी नरोत्तमदासजी रो ही सुरगवास हुग्यो हैं, अर उण रै सागै ई राजस्थानी रो पुनरुत्थान काळ ई पूरो हुग्यो ।

ओ अेक कठोर सत्य है के सरूपोत में छोटी कक्षावां में जिकी हिंदी री पोथ्यां पढ़ी ही उण रै पछै मैं कदेई हिन्दी साहित्य अर भाषा री विधिवत कोई पढ़ाई को करी नी । हाई स्कूल री परीक्षा में संस्कृत अर साइंस वैकल्पिक विषय हा । इण कारण आगै ई हिंदी रै अध्ययन रो कोई मौको को मिल्यो नी । पण बचपन सूं ई हिंदी पत्र-पत्रिकावां वांचतो रैयो । जिण सूं हिंदी में लिखण री प्रेरणा मिळी । बां सरू रा सालां में जरूर राजस्थानी (डिंगळ) रा केई पद कंठै कर लिया हा पण राजस्थानी री पढ़ाई सारू जद मौको मिल्यो नी, अर जद राजस्थानी री पढाई रो कोई खास कारण ई कोनी हो । पण पत्र-पत्रिकावां सू रजस्थानी साहित्य अर उण सूं संबंधित गतिविधियां री जाणकारी जरूर मिलती रैयी । पण अै सगळी बातां चौथै दशक रै आधींटै तांई री ई है ।

डूंगर कालेज, बीकानेर रा हिंदी रा प्रोफेसर स्वामी नरोत्तमदासजी सूं म्हारो पैलो संपर्क १७ मई १९३३ ई, रै दिन लिख्योड़ै उणां रै पत्र सूं ई हुयो जद मैं उणां री विद्वता अर अध्ययन शीलता सूं अण सैंधो ई हो । बीसवीं सदी रै तीजै दशक रै छेकड़ला बरसां में म्हारी गिणती हिंदी रा लेखकां में हुवण लागगी ही । इलाहाबाद सूं प्रकाशित हुवण आळै हिंदी रै नामी मासिक पत्र 'चांद' रो फांसी-अंक'

अक्टूबर १९२८ ई० में प्रकाशित हुवतां ई जबत हुयग्यो। उण अंक में प्रकाशित 'फ्रांस की राज्य क्रांति के कुछ रक्त रंजित पृष्ठ' शीर्षक म्हारो लेख ई जद जबत हुयग्यो अर इण कारण हूं जद अेकाअेक चरचा रो विषय बणग्यो। उण पछै अप्रेल १९३० ई० री 'सरस्वती' में जद म्हारो नामी लेख 'ताज' छप्यो तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नै बो बहोत आछो लाग्यो अर उणां उण लेख नै काशी नागरी प्रचारिणी सभा सूं प्रकाशित हिन्दी निबंध माळा रै दूजै भाग रै १९३२ ई० रै संस्करण में सामल कर लियो। बो प्रकाशन उणीज बरस सूं आगरा विश्वविद्यालय में बी० ए० में हिंदी रै पाठ्यक्रम में लगा दियो गयो। इण तरै जद डूंगर कालेज बीकानेर में हिन्दी रा प्रोफेसर आचार्य स्वामी नरोत्तमदासजी उण नै बांच्यो अर आप रै ऊपर बताये पत्र में लिख्यो कै 'मैं हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिये हिंदी-गद्य का एक संकलन तैयार कर रहा हूं। उसमें आपका 'ताज' नामक निबंध, जो काशी की नागरी प्रचारिणी-सभा द्वारा प्रकाशित हिंदी निबंध माला भाग २ में छपा है, कुछ संक्षेप के साथ रखना चाहता हूं।' हिंदी रा मूर्धन्य समालोचक सूं मानीज्योड़ी म्हारी उण बाल्ही कृति नै उण प्रस्तावित काट-छांट कर' र छापण री बात मनै दाय को आयी नी। उण बगत अेक दूजै लेखक री कैयी बात नै कै 'इस काट छांट में कहीं रंग पर ही नश्तर न मार दें, मैं म्हारै पत्र में दुसरावतां आचार्य स्वामीजी नै म्हारी भावना लिख नाखी। साफ है, म्हारै सिरखै नूंवै लिखार रो बां नै इण तरै टोकणो आचार्य नै अनुचित अर खारो लाग्यो अर उणां आप रै ता० १०-६-१९३३ रै पत्रोत्तर में लिख्यो—'ताज' नामक निबंध के संबंध में आपने जो आपत्तियां प्रकट की है उनको मैं समझता हूं। अतः अधिक आग्रह नहीं करना चाहता। आपका अन्य कोई निबंध भी मैं नहीं लूंगा। ....साहित्य-संसार में नीम हकीम ही हूं। साहित्य की डाक्टरी का अनुभव भी मुझे नहीं है।''

इण तरै पैलै संपर्क में ई मैं उणा नै थोड़ा रीसाणा कर दिया हा। वगत बीत्यां जद स्वामीजी रै पांडित्यपूर्ण मोकळै अध्ययन री जाणकारी मिली जद खाली हिंदी रो लेखक हुवण रै बूतै ई मैं उणां साथै जिकी अभद्रता बरती उण सारू मनै घणो पछतावो हुयो अर लाज ई आयी। पण पछै उण जूनी बात नै लेय'र उण सारू कथाणो करण में कोई सार को रैयोनी।

इयां तो हूं सन् १९३१ सूं ई बीकानेर जद-कदेई जावण लागग्यो हो पण आचार्य स्वामी नरोत्तमदासजी सूं म्हारो पैलो साक्षात्कार अप्रेल १९३५ ई० में इंदौर में हुयो जठै महात्मा गांधी रै सभापतित्व में हिंदी साहित्य सम्मेलन रो आयोजन हुयो हो। अधिवेशन सरू हुवण सूं थोड़ा दिनां पैलां ई हूं इंदौर पूगग्यो हो। पं० सूर्यकरणजी पारीक अर आचार्य नरोत्तमदासजी स्वामी जद इंदौर आया हा। म्हारै इंदौर में हुवण री बात सुण'र बै दोनूं अेक दिन दिनूगै इग्यारै बजी-सैंक म्हारै सूं मिलण नै तुकोगंज में म्हारै निवास सीतामऊ-हाउस आया अर बड़ा सहज हुय'र दोनूं जणां

म्हारै सागै क्षेत्रीय भाषा रै रूप में राजस्थानी नै पनपावण सारू नूवै राजस्थानी साहित्य रै लिखणै री घणी ज़रूरत दरसावतां बडै उत्साह अर प्रेरक शब्दां रै सागै म्हारै सूं घणै विस्तार में बातां करी। जठै राजस्थानी रै मध्यकालीन साहित्य रै उद्धार, सम्पादन अर प्रकाशन री अत्यन्त आवश्यकता सूं हूं पूरी तरै सैमत हो बठै ई क्षेत्रीय भाषा रै रूप में राजस्थानी भाषा नै नूंवै सिरै सूं, जद, पनपावण री बात म्हारै गळै को उतरी नी। पण इण मतभेद रै बावजूद बै दोनूं जणा इंदौर अधिवेशन रै दिनां म्हारै सूं कदैई-कदैई मिल बोकरचा। राजस्थानी साहित्य रै सारू उणां री अटूट साधना अर उत्साह नै लगन सूं हूं घणो प्रभावित हुयो। पं० सूर्यकरणजी पारीक अर आचार्य नरोत्तमदासजी स्वामी री बा लगन अर प्रेरणापूर्ण आस्था उणां री मृत्यु ताई ही ज्यूं री ज्यूं रैयी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्दौर अधिवेशन रै पछै हूं बराबर कामां में इत्तो उळझ्यो रैयो कै राजस्थानी भाषा रा बां उत्साही प्रेरक साधकां सूं पाछो सम्पर्क साधण री बात ई मन में को आयी नीं। तीजै दशक रै पूरो हुतां-हुतां दूजै विश्वजुद्ध रो श्रीगणेश हुयग्यो हो। जिण रै कारण सितम्बर १६४१ में एक एमरजेंसी कमीशड सैन्य अधिकारी रै रूप में हूं ई भारतीय सेना में नौकर हुयग्यो। बठीनै, इणी बिचाळै २ फरवरी १६४३ नै बीकानेर रा महाराजा गगासिहजी देवलोक हुयग्या। अर उण पछै दिसम्बर १६७२ तांई म्हारो बीकानेर जावणो को हु सक्यो नी।

सन् १७०१ ई० में सीतामऊ राज्य री स्थापना करण सूं पैलां उण रा संस्थापक राजा केशवदास अर उण रा सगळा पूर्वजां रो क्रमबद्ध इतिहास लिखण रो मैं सन् १६३८ में इगादो करचो। उण बगत मैं इण सिलसिलै में घणी जरूरी आधार-सामग्री री देखभाळ अर आधार ग्रन्थां नै भेळा करण री चेष्टा करण लाग्यो। इण सारूं मैं बीकानेर राज्य रा पछला प्रधानमन्त्री महाराज मान्धातासिंहजी रै सौजन्य सूं कवि कुम्भकरण सांदू री लिखी 'रतन रासो' री अेक प्रति हासल करी। उण रीज दूजी प्रति थोड़ै बगत पछै जोधपुर रा पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ री मदद सूं मिळी। पण दूजै विश्वजुद्ध रै सरू हु जावण रै कारण उण पछै इण काम में कोई प्रगति को हु सकी नी। सन् १६४५ ई० रै सरू रा महीना में सेना री सेवा सूं रिटायर हुय'र जद हूं पाछो सीतामऊ आयो तो पैली पोळायोड़ै उणीज काम नै पाछो सरू करचो। इण सारू मैं 'रतन रासो' रो अध्ययन सरू करचो। उण बगत तांई हूं इण भात रा डिंगळ ग्रन्थां री भाषा सूं अणजाण ई हो अर मनै केई स्थळां रै मूळ पाठ रो सही अर्थ करण में खासी मुसकलां आयी। इसा सन्दिग्ध स्थळां रा सही पाठ जाणण सारू मैं स्वामीजी नै ई दो-एक बार कष्ट दियो हो अर उणाँ रै सुझावां सूं मनै घणी मदद मिली। जद ई मैं सोच्यो कै कुम्भकरण सांदू रै 'रतन रासो' रो सुन्दर सम्पादित संस्करण निकळणो चाहीजै। म्हारा पूज्य पिताजी सीतामऊ नरेश स्वर्गीय महाराजा सर-

रामसिंहजी म्हारी इण बात रो पूरो समर्थन करतां थकां मनै इण काम में कोसीस करण रो आदेश दियो।

अठीनै नवम्बर १९४५ ई० में बीकानेर में 'सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट' री स्थापना करीजी अर उण रा संस्थापक सदस्यां में म्हारो नांव ई जोड़ीज्यो। इण सूं मैं ओ सोच्यो कै 'रतन रासो' काव्य रै सम्पादन सारू सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट री मदद लेयीजै तो ठीक रैवै। मै खुद उत्सुक हो कै ओ काम आचार्य नरोत्तमदासजी ई करै। पण उण बगत स्वामीजी दूजा कामां में इत्ता व्यस्त हुयोड़ा हा कै इण काम नै हाथ में लेवणो सम्भव कोनी हो। इण कारण आपरै ६ नवम्बर १९४७ रै पत्र में इंस्टीट्यूट रा प्रधान मन्त्री श्री जसवन्तसिंहजी लिख्यो कै ओ काम आचार्य स्वामी नरोत्तमदासजी रा ई एक सुयोग्य शिष्य पं० काशीरामजी शर्मा सूं करायो जासी। इण कारण उण रै पछै इण रै सम्बन्ध में स्वामीजी सूं फेरूं पत्र व्यवहार करण री कोई जरूरत कोनी पड़ी।

पं० काशीरामजी शर्मा नै 'रतन रासो' रै सम्पादन रो काम सूंप दियो गयो अर उण पछै फेर तीन दशक सूं बेसी बगत तांइ स्वामीजी सूं सीधो सम्पर्क साधणै रो कोई मोको को आयो नी। सातवैं दशक रै सरू रै बरसां में जद उदयपुर रा शोध छात्र आलमशाह खान म्हारै सूं सम्पर्क बणायो जिकै कै कविवर सूर्यमल मिश्रण रै नामी महाकाव्य 'वंश भास्कर' माथै आपरो शोध ग्रन्थ 'वंश भास्कर : अेक अध्ययन' लिखण री योजना बणा रैया हा। वंश भास्कर में आयोड़ै इतिहास री प्रामाणिकता रै सिलसिलै में जाणकारी लेवण सारू श्री खान म्हारै कनै कदेई-कदेई आंवता रैवता हा जद उणां सूं आचार्य स्वामीजी री विद्वता अर गम्भीर अध्ययन री जाणकारी मिल बो करती ही क्यूंकै ओ शोध कार्य आं आचार्य श्री रै ई निर्देशन में हुय रैयो हो।

केई बरसां पछै उण ग्रंथ रै परीक्षण रै बाद उण रै सिलसिलै में मौखिक परीक्षा हुयी। उण साक्षात्कार रै बगत उण शोध ग्रंथ रा परीक्षक विश्व भारती विश्वविद्यालय में हिंदी रा प्रोफेसर डा० रामसिंहजी तोमर री भेंट शोध निर्देशक आचार्य स्वामीजी सूं हुयी। जद डा० तोमर सहज भाव सूं स्वीकार करचो कै इण साक्षात्कार रै बहानै सूं उणां री स्वामीजी रै प्रत्यक्ष दरसण री घणी जूनी इच्छा पूरी हुयी है। आचार्य नरोत्तमदासजी स्वामी रा दरसणां सूं अर भेंट हुय जावण सूं डा० रामसिंहजी तोमर अपणै आप नै कृतकृत्य मान्यो।

उदयपुर रै महाराणा भूपाळ कालेज में हिंदी रै प्रोफेसर पद सूं आचार्य स्वामीजी आप री लांबी नौकरी सूं रिटायर हुयर पाछा बीकानेर आया। ३२ बरसां रै इण लांबै गाळै रै पछै जद सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर रै विसेस आग्रह सूं २३ दिसम्बर १९७२ ई. नै पृथ्वीराज आसन' सूं पैलो भाषण

'राजस्थान क्षेत्र में राजनैतिक अर शासकीय एकता का प्रारंभ विकास और निष्पत्ति' विषय माथै देवण नै जद हूं बीकानेर पूग्यो उण बगत स्वामीजी इंस्टीट्यूट सूं जुदा हुयोड़ा हा अर शायद वै जद बीकानेर में ई कोनी हा। इण बगत ई स्वामीजी सूं बठै मिलणो को हु सक्यो नी, जिण रो मनै पछतावो रैयो।

उण रै पछै जनवरी १९८० ई० में हिंदी विश्वभारती, अनुसंधान परिषद, बीकानेर सूं आयोजित स्वर्गीय डा० दशरथ शर्मा स्मृति व्याख्यान माळा में पैली भाषण 'राजस्थान के इतिहासकार और उनका कृतित्व' देवण सारू वसंतपंचमी रै दिन हूं बीकानेर पूग्यो। दो दिनां रै उण आयोजन री अध्यक्षता आचार्य स्वामी नरोत्तम-दासजी करी। उण बगत जीवन में दूजी बार उणां सूं मिलणो हुयो। पण उण बगत स्वामीजी खाली अस्वस्थ ई नईं, वहोत दूबला दीखै हा। ओ ई कारण हो कै उण बगत दो दिनां रै सहवास रै बावजूद उणां सूं कोई विचार विमर्श करणो ना तो उचित हो अर ना ताबै ई खावण आळो हो।

इण तरै स्वामी नरोत्तमदासजी रै निधन रै सागै ई गहन, विस्तृत अध्ययन करणियां, परिश्रमशील प्राध्यापकां अर शोध निर्देशकां री पुराणी पीढ़ी रो छेड़ो आयग्यो। पुराणै राजस्थानी साहित्य रै पुनरुद्धार संग्रह, संरक्षण, अध्ययन, सम्पादन अर प्रकासण री लांबी मजबूत परम्परा नै स्थापित करणवाळा राजस्थानी रा अनन्य तपस्वी साधक, अर क्षेत्रीय भाषा रै रूप में पुनर्जाग्रत राजस्थानी रा सपना देखणिया आचार्य स्वामी नरोत्तमदासजी री स्मृति नै म्हारा शतशः प्रणाम !

रघुवीर सिंह,
सीतामऊ (मालवा)

△

श्री नरोत्तमदास स्वामी

श्री शंकर सहाय सक्सेना

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी नै हिंदी अर राजस्थानी भाषावां रै उद्‌भट अर समर्पित विद्वान रै रूप में, महाराणा भूपाल कालेज, उदयपुर रो प्रिंसिपल हुय'र राजस्थान में आवण सूं पैलां जद हूं बरेली कालेज में अध्यापक हो, जद सूं नांव सूं जाणै हो। हिंदी रो प्रेमी अर प्रचारक हुवण रै कारण मैं हिंदी री पत्र-पत्रिकावां और हिंदी रा उच्च कोटि रा विद्वानां अर लेखकां री रचनावां सूं परिचित हो। श्री नरोत्तमदास स्वामी रा शोधपूर्ण लेखां नै मैं नागरी प्रचारिणी पत्रिका अर दूजी पत्रिकावां में पढ्या हा। स्वामीजी रो नांव हिंदी-जगत में उण बगत ई चर्चित अर प्रसिद्ध हो।

जद मैं महाराणा भूपाल कालेज रै प्रिंसिपल-पद माथै नियुक्त हुय'र उदयपुर आयो तो सब सूं पैलां राजस्थान विश्वविद्यालय री कला संकाय (आर्ट्स फैकल्टी) री मीटिंग में उणां री पैली झलक दीखी। मैं देख्यो—अेक दूबळो-पतळो आदमी, जिण री आंख्यां अर चेहरै सूं विचारशीलता अर सरळता टपकै ही, म्हारै सामनै ऊभो है। मैं आ कल्पना ई को करी ही नी कै श्री नरोत्तमदास स्वामी इत्ता सीधा निरभिमानी और आडंबर रहित हुसी। उणां रै प्रेम पूर्ण व्यवहार नै मनै बहोत प्रभावित करयो। उणां नै देख'र, उणां सूं बात कर'र अर उणां रै संपर्क में आय'र कोई सहज में ई ओ अंदाज को लगा सकै हो नी कै बै अेक महान साहित्यकार, शोधकर्ता अर लेखक है। उणां रो बाहरी व्यवहार इत्तो सरळ अर आडंबर रहित हो कै जिण सूं ई बै बात करता बो उणां सूं प्रभावित हुयां बिना को रैवतो नी। अस्तु, उणां सूं विश्वविद्यालय में पैली मिरियां मिल्यां पछै हूं उणां रो प्रशंसक बणग्यो।

पैली बार मिल्या जद राजस्थानी अर हिंदी भाषा रै संबंध में लांबी चर्चा चाली। उण रै पछै जद कदेई विश्वविद्यालय री मीटिंगां हुती अर जद कदेई बीकानेर जावण रो मौको मिलतो तो बगत निकाळ'र हूं स्वामीजी सूं जरूर मिलतो। ज्यूं-ज्यूं उणां रै नजदीक हुवतो गयो हूं उणां रै पांडित्य सूं ई नई उणांरै अंतर री सरळता; निरभिमानता अर मधुरता सूं घणो ई प्रभावित हुयो।

राजस्थान में न्यारा-न्यारा कालेजां में हिंदी रा विभागाध्यक्ष पी. अेच. डी. उपाधि सारू आपरै शोध छात्रां नै शोध करावता। घणकरा निर्देशक तो आपरै शोध-छात्रां नै खाली इत्तो ई निर्देश देंवता के उणां नै आप रै शोध प्रबंध सारू कुणसी-कुणसी

किताब्यां पढणी चाहीजै पण स्वामीजी आपरै विद्यार्थी रै शोध-विषय रो खुद अध्ययन करता, उण माथै मौलिक दृष्टि सूं विचार करता अर पछै अध्येता नै गहरी अर नवीनतम जाणकारी देता। वै खुद शोध-छात्र करतो उण सूं बेसी उण विषय रो अध्ययन करता। स्वामीजी रो लक्ष्य आपरै शोध-विद्यार्थी नै मात्र डिग्री दिरावणो ई नइं हो, बांनै उण विद्यार्थी सूं गंभीर अर ठोस साहित्य रै निर्माण री आस राखता। ओ ई कारण है कै उणां रा शोध छात्र बेसी मैनत करता अर आप रै विषय में हिंदी में कीमती अर ऊंचै दरजै रा ग्रंथ निर्माण करण में सफळ हुवता।

आज कालै विश्वविद्यालयां में शोधकार्य बहोत साधारण स्तर रो हुवण लागग्यो। घणकरा शोध-निर्देशक आप रै शोधछात्र नै पी. अेच. डी. री डिग्री दिराय'र ई आप रै शोध कार्य री इति श्री मान लेवै है। पण स्वामीजी रो दृष्टिकोण इण सूं जुदो हो। वै खाली शोधछात्र नै पी अेच. डी री उपाधि ई को दिरावणी चावता हा नी, सागै-सागै बै हिंदी जगत नै कीमती अर ऊंची कोटि रा ग्रंथ अर्पण करणा चावता हा।

आं ओळचां रो लेखक अेक विश्वविद्यालय रा नामी अध्यापक नै जाणै है जिकां 'विदेसां में भारतवासियां द्वारा अमरीका अर दूजा विदेसां में भारत री स्वतंत्रता सारू करचा गया संघर्षां अर आंदोलनां' माथै शोधकार्य करचो। उणां आप रै शोध ग्रंथ में मैडम कामा रै संबंध में लिख नाख्यो कै बै अेक फ्रैंच महिला ही जिकां भारत री स्वतंत्रता रै संघर्ष में सरावण जोग काम करचो। बां आ जाणण री कोसीस ई को करीनी कै वै बंबई री भारतीय पारसी ही अर उणां नै भारत सरकार री दमन नीति रै कारण भारत सूं भाग जावणो पड़चो। उण बगत री सरकार अेक खास कानून बणा'र उणां री लाखां रुपियां रै मूल्य री जायदाद जबत कर ली। ओ ही नइं कै शोधकर्ता अध्यापक इण विषय में छाण बीन को करी नी, उणां रा निर्देशक विद्वान अध्यापक उण शोध ग्रंथ नै पढचो तक कोनी, नइं तो इसी भूंडी भूल ग्रंथ में को रैवती नी, अर लागै है कै परीक्षकां उण ग्रंथ नै बांच्यो ई कोनी।

ओ उदाहरण खाली ओ बात बतावण सारू दियो है कै अजकालै शोध नाम रो काम कोरो पी. एच. डी उपाधि प्राप्त करण सारू ई करचो अर करायो जावै है क्यूं कै शिक्षा-जगत में उणरै बिना पदोन्नति कोनी हुय सकै। विषय रो गंभीर अध्ययन करण सारू शोध कार्य प्राय: को करीजै नी। इण रै विपरीत स्वामीजी विषय रै गहन अध्ययन अर प्रामाणिकता माथै विशेष जोर देवता। ओ ही कारण है कै उणां रै शोध-छात्रां नै जी-तोड़ मैनत करणी पड़ती ही।

कोई कारण वश उण वगत रा मुख्यमंत्री स्वर्गीय श्री मोहनलाल सुखाड़िया महाराणा भूपाळ कालेज रै हिंदी विभाग रा अध्यक्ष श्री मोहनवल्लभ पंत सूं उणां रै स्वभाव अर अदूरदर्शिता रै कारण रूठग्या। दूजो कोई मुख्यमंत्री हुवतो तो श्री मोहन बल्लभ पंत रै अदूरदर्शिता पूर्ण व्यवहार रै फळस्वरूप उणां नै कठोर दंड देवतो पण उदार हृदय सुखाड़ियाजी उण नै खाली ट्रांसफर ई करचो। जद मैं देख्यो कै पंतजी

री बदळी हुसी तो मैं श्री सुखाड़ियाजी सूं निवेदन कर्यो कै स्वामीजी को महाराणा भूपाळ कालेज दे दियो जावै अर पंतजी नै डूंगर कालेज बीकानेर भेज दियो जावै। इण सूं घणां लोगां रो स्थानांतरण कोनी करणो पड़ै अर महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर नै अेक ऊंचै दरजै रो विद्वान, प्रकांड पंठित तथा नामी प्रोफेसर रो लाभ ई मिलसी। श्री सुखाड़ियाजी री म्हारै पर कृपा ही। उणां म्हारो निवेदन स्वीकार कर लियो अर श्री नरोत्तमदासजी स्वामी उदयपुर आयग्या। स्वामीजी नै उदयपुर लावण रै लारै श्री सुखाड़ियाजी रो अेक प्रशासकीय दृष्टिकोण ई हो। जिका लोग श्री मोहनबल्लभ पंत नै जाणता हा उणां नै मालूम हो कै पंतजी विद्यार्थियां में आ भावना फैलावण री चेष्टा कर रैया हा कै उणां री बदळी में राजनीति रो प्रभाव है। पण साची बात आ को ही नी। स्वामीजी जिसा प्रकांड पंडित अर नामी विद्वान रै उदयपुर आवण सूं विद्यार्थी घणा खुस हा।

स्वामीजी रै उदयपुर आजावण सूं नै उणां साथै काम करणै सूं मनै उणां नै नजदीक सूं देखण रो मोको मिल्यो। जद मनै मालूम हुयो कै उणां रो व्यक्तित्व अेक समर्पित व्यक्तित्व है। उणां नै आयां नै घणा दिन को हुया हा नी कै महाराणा भूपाळ कॉलेज में सरकार वाइस प्रिंसिपल रो नूंवों पद दियो। स्वामीजी सगळां विभागाध्यक्षां में सीनियर हा। मैं स्वामीजी रै सामनै वाइस प्रिंसिपल रो पद स्वीकार करण रो प्रस्ताव राख्यो। उणां उण प्रस्ताव नै नामंजूर कर दियो। उणां गंभीर सुरां में मनै कैयो कै मनै पढण-पढावण अर शोध रै कामां में ई रुचि है। प्रशासन रै कामां में ना तो म्हारी रुचि है अर नां म्हारी उण कामां में कोई खास गति ई है। अर सगळां सूं बडी मुसकल री बात तो आ है कै वाइस प्रिंसिपल नै प्रिंसिपल रै सहायक रै रूप में केई तरै रा काम करणा पड़सी जिकां में म्हारो घणकरो बगत बीत जासी अर म्हारै अध्ययन अर शोध कामां में बगत री कमी हुय जासी। वाइस प्रिंसिपल रै आछै-खासै भत्तै री उणां जाबक ई परवा को करी नी, उणरो जरा ई लोभ को आयो नी अर उण पद नै ठुकरा दियो।

मैं उणां नै निवेदन करचो कै जे हूं आप नै लागण आळी मुसकलां नै आसान कर दूं तो, तो आप नै पद स्वीकार करण में आपत्ति को हुवै नी? बै बोल्या कै आ कियां हुय सकै? मैं जवाब दियो कै मैं आप नै बचन दूं हूं कै आप नै कोई भी प्रशासन संबंधी काम को सूंपूं नी। जिकै काम मैं आज करूं हूं वै उणीज तरै करतो रैसूं। आप तो खाली जद कालेज सूं आप रो पढावण रो काम पूरो कर'र बंगलै पाछा पधारो जद कैशियर री कैश बुक सूं खजानै री नगदी (राशि) रो मिलाण कर लिया करो अर हस्ताक्षर कर दिया करो। इत्तै काम में आप नै पनरैक मिनट लागसी। उणां इण शर्त माथै म्हारै आग्रह अर अनुरोध नै मान लियो। इण तरै उणां नै मना'र मैं म्हारी अेक प्रशासन सम्बन्धी समस्या नै सुळझा ली। बात आ ही कै स्वामीजी जे वाइस प्रिंसिपल रै पद नै मंजूर नईं करता तो मैं जिकै रै नांव

री सिफारिश करतो उण नै ई सरकार भत्तो दे देंवती पण स्वामीजी रै बाद जिका सगळां में सीनियर हा किणी राजनीतिक कारण सू उणां नै बो पद को दियो जा सकतो नी । उणां सूं जूनियर नै भत्तो दिरावणो प्रशासनिक दृष्टि सूं आछो को रैवतो नी अर अध्यापक-वर्ग में असंतोष पैदा हुय जावतो । जित्तै तक स्वामीजी उदयपुर रैया, मैं म्हारै बचन नै निभायो अर उणां माथै कोई दूजै काम रो भार को नाख्यो नी। बै म्हारै सूं खूब खुस हा । वाइस-प्रिंसिपल पद नै मंजूर नइं करण सूं उणां रै व्यक्तित्व रै अैक पक्ष री साफ-साफ झलक दीवै है कै उणां नै धन रो लोभ जाबक ई को हो नी जद कै दूजा प्रोफेसर इसा मौकां नै तरसता रैवै ।

श्री स्वामीजी विश्वविद्यालय री जुदी-जुदी संस्थावां रै चुनावां में ई कदेई खड़ा को हुवता नी । जे उणां नै सर्व-सम्मति सूं उणां रा सहयोगी चुण लेवता तो वै उण संस्था री सदस्यता स्वीकार कर लेवता । चुनाव रै दंगळ में बै को उतरता नी । अज काले विश्वविद्यालयां में अध्यापक लोग आप-आप रा समर्थकां रा गुट बणावै है अर विश्वविद्यालय माथै आप री हकूमत लगावण री कोसीसां करचा करै है । इण कोसीस रै लारै उणां री भावना आ ही रैवै कै वै दूजै विश्वविद्यालयां रा अध्यापकां नै आप रै अठै परीक्षक बणा'र उणां रै अठै बै आप परीक्षक बण सकै । विश्वविद्यालय रा अध्यापकां नै आप रै अठै परीक्षक बणा'र उणां रै अठै बै आप परीक्षक बण सकै । री राजनीति रा बै खिलाड़ी पचीसूं परीक्षावां रा परीक्षक बण'र साल में परीक्षा-फीस सूं आछी धन-राशि भेळी कर लेवै है । स्वामीजी इण भांत री राजनीति सूं दूर ई रैया क्यूं कै बै जाणता हा कै इण भांत री राजनीति में उतरचां पछै आप रै शोध कार्य अर दूजै लिखण-पढण रै काम नै तिलांजळि देवणी पड़सी । इणकारण वै कदेई विश्वविद्यालय री राजनीति में कोनी पड़्या ।

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी प्रचार अर प्रदर्शन सूं सदा ई अळगा रैया । आज साहित्य रै क्षेत्र में ई गुट-बंदी, प्रचार अर दळबंदी रो बोल बालो है । ओ ई कारण है कै उणां रो आप रो कोई दळ कोनी हो । उणां नै हिंदी और राजस्थानी भाषा रै क्षेत्र में जिकी कीं मान्यता मिळी, जिको ई पुरस्कार का सम्मान मिल्यो है बो उण री तुळना में कीं कोनी जिको कै उणां नै मिळणो चाहीजतो ।

राजस्थानी भाषा नै उण रो वाजब ओहदो दिरावण नै अर उण रै बधापै सारू उणां जिको काम करचो बो ठेट तांई याद रैसी । बै राजस्थानी भाषा रै आंदोलन रा प्रवर्तकां मांय सूं हा । आज राजस्थानी नै सरकार सूं जिको समर्थन अर संरक्षण मिल रैयो है उण में उणां रो बडो भारी योगदान है ।

दुर्भाग्य सूं स्वामीजी बहोत जळदी आपां रै बीच मांय सूं उठग्या । मैं तो कदेई आ कळपना ई को करी ही नी कै बै आपां सूं इत्ता बेगा बिछड़ जासी । बै राज री नौकरी सूं रिटायर हुय'र आपरो पूरो बगत हिंदी अर राजस्थानी भाषा

रै साहित्य री सेवा में लगासी पण ओ कोनी हु सक्यो। ग्रेक महान व्यक्तित्व रा धणी प्रकांड पंडित ग्रर ऊंचै दरजै रा विद्वान अचाणचक आपां रै बीच सूं उठग्या। उणां रै चल्या जावण सूं हिंदी ग्रर राजस्थानी नै जिकी हाण हुई है उण रो आज आपां ग्रंदाज ई को लगा सकां नी। इसा समर्पित विद्वान ग्रर शोधकर्ता विरला ई हुवै, है कारण कै जिका लोग इण मारग माथै चालै है उणां नै भौतिक संपन्नता, प्रसिद्धि ग्रर ग्रधिकारां सूं वंचित रैवणो पड़ै है, उणां नै आप रो सगळो जीवण ग्रध्ययन, लेखन ग्रर शोध सारू न्यौछावर करणो पड़ै है। साफ बात है, कै इण ग्रोखै मारग माथै चालण री हीमत घणा विद्वान कोनी कर सकै। श्री नरोत्तमदासजी उणीज कोटि रा समर्पित विद्वान हा। कित्तो ग्राछो हुवै जे राजस्थानी भाषा री ग्रकादमी रो नांव स्वामीजी रै नांव माथै राख्यो जावै जिको कै राजस्थानी भाषा रै विद्वानां नै प्रेरणा देवै।

△

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी वरसांलग चेतै करीजसी

सूर्य शंकर पारीक

श्री नरोत्तमदास जी स्वामी रो नांव राजस्थान रै सिरेनांथ विद्वानां में गिणीजै। भारत री पण घणी भूं में स्वामीजी रो नांव सहेज हीज ग्रोळखीजै। स्वामीजी विद्वान, संपादक, संशोधक नै ऊंची भणाई रा ग्रध्यापक हा। स्वामीजी धीर-गंभीर सुभाव ग्राळा सज्जन मिनख हा। कम बोलाळू पण ज्ञान रा घणा गोखू। थोथा ग्रर कूड़ा गड़ीछा मारणा तथा बेग्ररथू बडाई फोड़णी स्वामीजी जैड़ै ज्ञानी मनीषी नै कद दाय ग्रावै ? किणीं लोक कवि कैयो है:—

बडा बडाई ना करै, बडान बोलै बोल,
हीरा मुख सूं ना कहै, म्हारो लाख रुपैया मोल।

हीरै री पारखा तो जवरी हीज जाणै। स्वामीजी जैड़ा भला मिनख हा। वैड़ा ही वैं सुभाव रा निरमळ। स्वामीजी री फूठरी लिखावट उण रा मोतीसा सैंचूड़ ग्रांक, वांरी मांयली निरमळता री जाणकारी करावै। स्वामीजी रै ज्ञान री गैराई उणां रैं लगैं-बगै ग्रावणियां सूं छानी नीं।

स्वामीजी हमेश ही न्याय रो पक्ष लेवता ग्रर जिकै में जैड़ी ऊरमा-ग्रोकात हुवती उणरी पिछाण स्वामीजी बिना उंवार कियां कर लेवता। उणांरी गुण-पिछाण खिमता वांरै ग्रोळै-दोळै रैवणियां सूं जाबक ही छानी नीं। जिकी बात सूं वांरी सैंद मैंद नीं हुवती उण में वै ग्रापरी दखल रो दावो नीं करता। ग्राही मोटै ग्रादम्यां री पैचाण है।

स्वामीजी ग्रापरै जी जोग राखणियां साथ्यां श्री सूर्यकरणजी पारीक ग्रर ठाकुर श्री रामसिंहजी रै साथै उण जमानै में राजस्थानी साहित्य रै ग्रंथा रो संपादन शुरू कियो जिकै दिनां हिन्दी क्षेत्र रा विद्वान राजस्थानी साहित्य सूं साव ही ग्रपरिचित हा। वै ग्रैड़ो कीं नीं जाणता कै राजस्थानी साहित्य पण ग्रापरै सरूप में कितरो लूंठो नै सबळो है। जणा ग्रांतणां संपादित ग्रथ 'वेलि क्रिसण-रुकमणी री' 'ढोला मारू रा दूहा' राजस्थान

रा लोकगीत जिसा आलीजा ग्रंथ जद सांगोपांग अर पूठरै संपादन में लोगां रै सामै आया तो वांरी चरड़देसी आंख्यां खुलगी अर भरम री भींत नै धसमस हुंवता ताळ नी लागी।

स्वामीजी रै संपादन रो 'राजस्थान रा दूहा' नांव रो ग्रंथ जद लोगां रै सैमूंडै आयो तो लोग एकरका छकड़ीगम हुयर रैयग्या। सही मानै में हिन्दी विद्वानां नै जिकै दिन तोल पड़्यो कै राजस्थानी साहित्य में अंड़ी-अंड़ी अमोलख चीजां हैं जिका पाधरै पगां ही आपरी महता प्रगट करै। स्वामीजी रा बीजा सगळा ही ग्रंथ अंड़ै नेक तरीकां सूं संपादित हुयोड़ा है। अंड़ो तरीक बंद संपादन, बीजै विद्वानां नै संपादन करणै री प्रेरणा देवै। किणी नै ठावकै सूं संपादन करणों हुवैतो वो स्वामीजी रो अनुकरण करै।

चारणी शैली रै डिंगळ साहित्य अर लोक साहित्य में जिकी तलस्पर्शी पैठ स्वामीजी री ही वीसी कमहीज विद्वानां में लाधै। वांरी हथोटी रो स्वच्छ लेखण देखण आळै री आंख्यां नै घड़ी एक पक्को आराम पुगावै, इण में फरक नीं। वारां सोवणां आखर मोती री उपमानै ढीली पाड़ै।

स्वामीजी खरी बात रा हामी हा। एकर मैं स्वामीजी नै वांरै लेखण में कठै ही 'सिद्ध जसनाथजी' रै नाव रो उल्लेख नीं करणै री शिकायत करी जद वां पाछो उथळो करयो कै इयांतो घणा ही नाथ-स्वामी हुया है पण कीं महताऊ काम बिनां अंड़ां रो उल्लेख ओपैनीं पण जद वै जसनाथजी अर वांरै साहित्य सूं परिचित हुया तो वांनै वांरै उल्लेख नी करणै रो पिछतावो हुयो अर वळै जथास्थान उल्लेख करणै रो विचार कियो।

घणै वरसां पैली री बात है जद वै एकर रतनगढ़, किणी साहित्य सम्मेलन में पधारया जद मैं स्वामीजी सूं पं. श्री गजानन्दजी शास्त्री रै घरे मिल्यो अर म्हारो लोक साहित्य रो संग्रह दिखाळयो तो वै अणूता ही राजी हुया अर आपरै कनलो संग्रह मनै जी सोरै सूं देदियो अर बीकानेर सूं और संग्रह भेजण रो कैयो। जद मैं जसनाथी साहित्य री 'जीव समझोतरी' नांव री पोथी छपाई अर स्वामीजी नै वा पोथी खिनाई तो स्वामीजी म्हारै प्रति घणा कोडायता हुया अर कार्ड लिख'र भिजवायो जिणमें स्वामीजी म्हां जिसा नूंवा-नूंवां उठतै लोगां सूं आ आस बांधी कै म्हे इणी भांत साहित्यिक काम करता रै'सां। ता पछै तो स्वामीजी म्हारै सूं खासा नजीकी पणों राख्यो।

म्हारै बीकानेर आयां पछै तो स्वामीजी म्हां माथै घणां हेताळू रैया। एकर स्वामी नाहटाजी री लाइब्रेरी में मनै अर श्री मू. चं. प्राणेश नै कैयो कै "आजकाल राजस्थानी रा घणा नुवावदा लेखक राजस्थानी संस्कृति री अण जाणकारी में अर भासा ज्ञान रै अभाव में गळत-सळत प्रयोग कर रैया है सो आप लोगां नै वां माथै कीं लिखणों चाहिजै नातर गळत प्रयोगां रो चलाण बधतो जासी।" मैं स्वामीजी रो ओ आदेश

मान'र 'राजस्थानी रा अ्रे लेखक नै गळत शब्द प्रयोग' जिसै किणी शिर्षक में एक लेख लिख्यो अर राजस्थान रै प्रायः सगळा ही सतवाड़िया छापा में छपवायो। वां दिनां में सगळा ही छापा एक-दो पानो राजस्थानी खातर न्यारो ही राखता हा। लेख छप्यां पछै राजस्थानी रा कई नूंवा-बोदा लेखक म्हारै माथै चिड़ग्या अर स्वामीजी सामै म्हारै ढीठ पणै री शिकायत पण करी। पण स्वामीजी रो वांनै ओही कैवणो हो कै "गळती नै गळती मान लेवणी चाहिजै।" स्वामी जी म्हारी बात रो खुलो समर्थन करचो। शिकायत करण आळां रा कान खुस'र हाथ में आयग्या। स्वामीजी सदा ही साची बात रा भीरी रैया।

गोलोकवास हुवण सूं थोड़ा दिन पैली स्वामीजी एक दिन भा. वि. मं. शोध प्रतिष्ठान रै कार्यालय में किणी पोथी सारू पधार्या। जद उठै काई चर्चा चाली तो स्वामीजी उणायत भर्यै सुर में बोल्या कै, "जीवण री पोछड़ी रो नाका आयग्यो है पण कीं करण जोग काम नीं हुयो कै जिणनै उपलब्धि कैयी जाय सकै।"

इतरा मोटा ज्ञानी हुंवता थका भी स्वामीजी नै आपरै काम सूं संतोष नीं हो। इयां तो स्वामीजी रा सगळा ही काम सरावण जोग हैं पण स्वामीजी राजस्थानी साहित्य सारू कीं और घणों करणों चावता हा। स्वामीजी नै इण बात री शिकायत ही कै राजस्थानी लोक साहित्य माथै अजे अैड़ो कोई ग्रंथ नीं लिखीज्यो है जिकै नै सर्वांग पूर्ण कैयो जाय सकै अर न हीज अजूं तांई राजस्थानी साहित्य रो पूरमपूर इतिहास हीज लिखीज्यो है जद कै इण दिसा में न्यारा न्यारा कई काम हुया है।

और भी न जाणै कितरी ही बातां री वांरै मन में ही। स्वामी जी जिसा धीरजालु, दयालु अर मोट मुरजाद सूं कड़खै रैवणिया बो'त कम आदमी हुवै। वै राजस्थानी साहित्य भाषा अर व्याकरण री एक दरशनीक मूर्ति हा। स्वामी मोटै-मोटै पदां माथै रैचा, पुरस्कार पण पाया, वै नीरै ही चेलांरा गुरु हा। मानणजोग मिनख वांरो आदर करता पण तो ही स्वामीजी सदा सीधासरल हीज बण्या रैया।

बीकानेर साहित्य तीर्थरा स्वामीजी ऊजळा घाट हा उठै जिज्ञासु अर शोध करतां नै निरमळज्ञान-जळ मिलतो।

बीकानेर शहर जियां कई बातां में आपरो महताऊ अर्थ राखै उणमें नरोत्तम-दासजी स्वामी रो एक वाल्हो नांव हो।

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी नरां में उत्तम'हुयर भी भावना सूं सरल हुवणै रै कारण 'दास' हा पण ज्ञान गौरव में 'स्वामी' भी हा।

श्री स्वामीजी आपरै कृतित्व अर व्यक्तित्व रै पाण बरसां लग चेतै करीजैला।

- भा. वि. मं. शोध प्रतिष्ठान
रतन बिहारी पार्क
बीकानेर

राजस्थानी भाषा रा महान सेवक : स्वामी नरोत्तमदासजी

श्री भंवरलाल नाहटा

स्वामी नरोत्तमदासजी सूं म्हारो परिचय हुयां ग्राधो सईको बीतग्यो। बीकानेर रै साहित्यकारां में ठाकुर रामसिंहजी, पंडित सूर्यकरणजी पारीक ग्रर स्वामीजी री त्रिपुटी घणी नामूजदार ही। महाराज जगमालसिंहजी पिरथीराज री वेलि कृष्ण रुकमणी रो संस्करण त्यार करचो जिणरो सफळ संपादन करणै रै बाद उणां ढोला मारू रा दूहा रो पाठांतर, ग्रर्थ-विचारणा ग्रर कुशललाभ री चौपाई रै साथै संपादन करचो। ग्रोर ई घणी पोथ्यां रो काम पोळायो। पण मरुधर रा मोभी पारीकजी नै तो वेगो ई इंदर महाराज री सभा में साहित्य-गोष्ठी करण सारू तेड़ो ग्रायग्यो। वै खड़ै वारंट गया। ग्रठी नै जोड़ी खांडी हुयगी। छेकड़ ठाकुर रामसिंहजी रै सुरगां सिधारणै सूं स्वामीजी साव ग्रेकला रैयग्या। स्वामीजी दिन-रात घणी मैनत करी—साहित्य-सेवा करी, घणो ई लिख्यो ग्रर हिंदी नै राजस्थानी रो भंडार भरचो।

हिंदी साहित्य रै इतिहासां में हिंदी री सगळां सूं पुराणी गद्य-रचना बोल'र लिखीजणै सूं जटमल नाहर री गोरा बादळ री (पद्मनी) चौपाई री खोज हुयी। कवि नाहर वंश रो ग्रोसवाळ हुवणै रै कारण उण रो ग्रनुसंधान मांग्यो स्वर्गीय पूरणचन्द जी नाहर सूं। उणां रै संग्रह में ग्रेक प्रत ही। पण म्हांरै संग्रह में प्रेमविलास चौपाई, लाहौर गजल वगैरै दूजी कई ग्रोर रचनावां हुवणै सूं उणां बीकानेर में ई म्हारै सूं सम्पर्क करणै री भोळावण करी। जद जती बलदेवजी रै मारफत मनै रामसिंहजी बुलायो। हूं पैली परथम शिक्षा विभाग में, जिकै रा वै डायरेक्टर हा, मुलाकात करी। फेर तो घनिष्ठता इत्ती हुयगी कै उणां रै डेरै पांचै-सातै जाणो हुतो। स्वामीजी उणां रै ग्रठै सप्तरंजी माथै बैठा मौन साहित्य साधना में लाग्योड़ा लाधता। उणां रै डेरै सूं स्वामीजी रो घर घणो नेड़ो, बिजळी घर पार करचो'र राणीसर रै कूग्रै सामो। हूं बठै घणी बार जांवतो। कूग्रै रै सिलालेख री नकल पैली करी। स्वामीजी म्हारै घरै, बडै उपासरै रो ज्ञान भंडार देखण सारू पधारता। पछै म्हारो लाइब्रेरी, कला भवन रो न्यारो भवन त्यार हुणै रै बाद तो साहित्य गोष्ठ्यां रो ग्रायोजन कदेई

ग्रंथालय में, कदेई सज्जनालय में, कदेई नागरी भंडार वगैरै में हुणै सूं भेळा हुवता अर आप-आप री रचनावां जरूर सुणावता। राजस्थानी कहावतां, मुहावरा, दूहा वगैरै रो संग्रह करता जद भी म्हे स्वामीजी नै म्हांरी जाणकारी देता — जाणकारी रो लेण-देण हुंवतो। म्हारै संग्रह री पृथ्वीराज रासो री मध्यम संस्करण री सं० १७३५ री लिख्योड़ी पोथी लाहोर सूं बुलनर साहब देख'र खोज करणो चांवता। डा० बनारसीदासजी जैन ई उण नै देखण सारू बीकानेर आया। फेर उण पर स्वामीजी, डा० दशरथ शर्मा और काकाजी अगरचन्दजी न्यारी-न्यारी पड़तां खोज'र लेख लिख्या। इणां तीनां विद्वानां रा लेख राजस्थान रिसर्च सोयायटी री 'राजस्थानी' पत्रिका वगैरै पत्रां में छपता। रघुनाथ प्रसादजी सिंघाणिया इणां रा प्रूफ संशोधन वगैरै रो काम म्हारै कनै भेजता।

अेकर ठाकुर रामसिंहजी अर स्वामीजी कळकत्तै पधारया जद ११ आरमनी स्ट्रीट में चूरू रा कोठारी धनपतसिंहजी (हजारीमल सरदारमल) रै अठै उतरया जिकै म्हारै पाड़ोस में ई हा। हूं उणां सूं रोजीनै मिलतो, साहित्य-चर्चा चालती। मैं उणां नै श्री पूरणचन्दजी नाहर सूं मिलाया। केई बार उणां रो संग्रह-गुलाबकुमारी लाइब्रेरी-देख्यो। नाहरजी रायल एशियाटिक सोसायटी रा सदस्य (*M.R.A.S*) हा, उणां रै साथै सोसायटी री लाइब्रेरी में गोरा बादळ री बात देखण नै गया। पं० रामचन्द्र शुक्ल उण पद्य कृति माथै १९ वें सईकै रै विवेचन नै देख'र नाहर जटमल री रचना गद्य में हुणै रो उल्लेख करग्या। बा प्रति देखणी घणी जरूरी ही पण जागा-फेर हुणै सूं अबखाई हुयी। प्रति घणी दोरी सांपड़ी। अंग्रेज लाइब्रेरियन नै आप रै भारी-भरकम डील नै ले'र घणी खेचळ करणी पड़ी। छेकड़ प्रति मिली, साचली, बात सामनै आयी। स्वामीजी लेख लिख्या, पण नाहरजी तो सगळां सूं पैली घोड़ो कुदायग्या। उणां 'विशाल भारत' में 'कूंए भांग' शीर्षक सूं लेख प्रकाशित कर'र बिना खोज करयां अेक-दूजै री देखा-देखी करण आळा विद्वानां री पोल उघाड़ दी। उण दिनां मोहनसिंहजी सेंगर 'विशाल भारत' रा सम्पादक हा। स्वामीजी जटमल माथै लेख लिख्या। म्हे भी सगळी रचनावां संपादन कर'र 'हिन्दुस्तानी' में भेजी, पण लेख तो छपग्यो अर मूळ कृतियां अप्रकाशित ई रैयगी।

म्हांरै संग्रह में अेक महाराज पदमसिंहजी रो भालै सूं शेर री शिकार करता थकां रो प्राचीन बहुमूल्य चित्र हो जिण रो इकरंगो फोटू स्वामीजी आप री 'बीकनेर के वीर' नांव री पोथी में छाप्यो आज उण चित्र रो पतो कोनी क्यूं के राय बहादुर पं० गौरी शंकर हीराचन्द ओझा नै इतिहास-लेखन रै सिलसिलै में देखाणै वास्ते म्हांरी गैरहाजरी में पं० शंभूदयालजी सक्सेना रै हाथां ठाकुर रामसिंह जी री चिट्ठी सूं मंगायो, जिको महाराज मानधातासिंहजी दरबार साब गंगासिंहजी नै देखावण नै लेयग्या बो चित्र दरबार साहब घर लियो। पांछो को आयोनी। अबै कांई पतो कठै जाय

पूग्यो। पण गोएटस साब री अंग्रेजी पोथी, जिकी बीकानेर री कला सूं संबंधित है, में बो सुन्दर चित्र हूबहू छप्योड़ो है।

आगम पभाकर मुनि पुण्यविजयजी जद जेसळमेर ज्ञान-भण्डार रो उद्धार करणै खातर पधारचा जद काकाजी अगरचन्दजी रै साथै स्वामीजी वगैरै विद्वान साहित्यिक यात्रा में पधारचा। घणो ताड़पत्रीय साहित्य, पुरातत्त्व देख्यो सुण्यो। तेरवैं सईकै री 'बालावबोध प्रकरण' संज्ञक रचना अर 'अलंकार दप्पणम्' नांव री अेक मात्र अलंकार शास्त्र री प्राकृत रचना श्री जिन भद्र-सूरि ज्ञान भंडार में मिलणै सूं उण पोथ्यां री नकल स्वामीजी आप रै हाथ सूं कर'र लाया। इण दोनूं ग्रंथां रो हिन्दी में अनुवाद करणो जरूरी हो। काकाजी अगरचन्दजी अर स्वामीजी री प्रेरणा सूं इणां में पैली रचना रो हिन्दी अनुवाद अर बीजी रो संस्कृत छांया-समेत हिंदी अनुवाद करणै रो सौभाग्य मनैं मिल्यो।

सनू १९४८ में स्वामीजी अर पं० मुरलधरजी व्यास कळकत्तै पधारचा आ यात्रा अपां री मायड़ भाषा राजस्थानी रै उद्धार खातर ही। इण मौकै दोनूं विद्वान म्हांरी गादी (४, जगमोहन मल्लिक लेन) में घणा दिन विराज्या। कळकत्तै री घणी राजस्थानी हस्तियां सूं मिलणो-जुलणो हुयो। जागा-जागा भाषण हुय। राजस्थानी भाषा री उपयोगिता उजागर हुयी। रायबहादुर रामदेवजी चोखाणी, काळीप्रसादजी खेतान, ईश्वरदासजी जालान, अमृतलालजी माथुर, चौथमलजी सराफ, वेणीशंकरजी शर्मा, भूरामलजी अग्रवाळ, मोहनसिंहजी सेंगर, पुरुषोत्तमजी चलवासिया, विश्वनाथजी मोर, श्रीचन्दजी रामपुरिया, भंवरमलजी सिंहानिया, ताजमलजी बोथरा-वगैरै घणा लोकां सूं साहित्य-चर्चा, विचारां रो लेण-देण हुयो। राजस्थानी साहित्य परिषद री स्थापना हुयी। इण ओळचां रै लिखारै नै मंत्री बणायो। 'राजस्थानी कहावतां' रा दो भाग तथा 'राजस्थान-भारती' रा दो अंक म्हारी देख रेख में निकळ्या। चौथ-मलजी सराफ अर कुंदनमलजी सेठिया सूं सहयोग मिल्यो। इत्तो हुयो, पण कळकत्तै रै व्यस्त जीवन में श्री अक्षयचन्दजी शर्मा जिसा विद्वान री नियुक्ति करणै पर भी काम आगै नइं बध सक्यो। कोई संजोग री ई बात ही-सेठ रामदेवजी चोखाणी राजस्थान रिसर्च सोसायटी रो जित्तो भी राजस्थानी भाषा संबंधी साहित्य हो, सगळो सेठ सूरजमल जालान स्मृति मंदिर नै भेट कर दियो। असल में अनवरत इण काम में रच-पच जावणियै व्यक्ति रै अभाव में राजस्थानी भाषा रो महायज्ञ ठंडो पड़चो है।

म्हांरै 'अैतिहासिक जैन काव्य संग्रह' ग्रंथ रो कठिन शब्दां रो कोश आज सूं ४४ वर्ष पैली स्वामीजी बणा दियो हो। उणां रो म्हांरै साहित्यक कामां में पूरो सहयोग मिलतो। बो ग्रंथ सं० १९९४ में प्रकाशित हुयो हो। बीकानेर री साहित्यिक गोष्ठचां में सगळा आप-आप री रचनावां लावता। म्हारी 'लाभू बाबो' संस्मरणात्मक रचना स्वामीजी नै घणी दाय आयी। उणां 'राजस्थान भारती' में उण नै प्रकाशित करी।

स्वामीजी राजस्थानी भाषा रा जनक हा। उणां राजस्थानी व्याकरण लिख्यो, राजस्थान भाषा रो साहित्य देणॆ री घणी मैंनत करी। लोका आप री मातृ भाषा नै मा रै दूध नै छोड'र गाय रै दूध माथै निर्भर है। जे राजस्थानी लोगां रो पूरो सहयोग मिलतो तो आ समृद्ध भाषा आप री बहान गुजराती सूं किणी तरै उणी-पूणी नइं रैंवती। स्वामीजी रो राजस्थानी भाषा माथै घणो उपगार है। कळकत्तै री अेक सभा में, जठै तांई याद है, स्वामीजी नै किसी 'राजस्थानी रा पाणिनि' अर हेमचन्द्र रै नांव सूं विरदाया हा। जो कै स्वामीजी इण बात में असहमत हा, पण आज रै जुग में कोई दूजो आपां री मायड़ भाषा री इत्ती तकड़ी सेवा करणियो-नींव भरणियो, सींचणियो पैदा को हुयोनी। इण सूं घणी दुख री बात कांइ हुसी।

नाहटा ब्रदर्स
४ जगमोहन मलिकलैन
कलकत्ता

△

स्वामीजी—एक जुग निर्माता

श्रीलाल नथमलजी जोशी

आज सूं पचास बरस पैली रै राजस्थानी साहित्य रो जे लेखो-जोखो करचो जावै तो मालम पड़ै कै आज देखतां उण बगत रै नवै साहित्य में नईं रै बराबर सरजन हुयोड़ो हो। आज जिका नांव राजस्थानी साहित्य में चमकै है, उण बगत वां री कठै ई चरचा नईं ही। घणा साक तो इसा है जिकां रो पचास बरसां पैली जलम ई हुयो कोनी, अर जे केई जलम्योड़ा हा तो बै टाबरपणै में हा। केई जणा इसा भी है जिकां पचास बचास बरसां पैली लेखणी साम्भली, पण राजस्थानी में नईं। उण बगत राजस्थानी में लिखणो फायदै रो सौदो नईं, घाटै रो धन्धो गिणीजतो। जदपी बीकानेर, जोधपुर आद रियासतां मारवाड़ी में कामकाज करनै प्रोत्साहन जरूर देवती, पण आ बात किणी रै ध्यान में नईं आई कै आगै जायर सगळी प्रान्तीय भाषावां मानता पाय-पायनै बिगसाव अर मदद री दुधकारण्यां बणजासी अर राजस्थानी दीन-दुखियारी ज्यूं वांरै मूंडै सामै ताकती रैसी। इण कारण राजस्थानी लिखारां नै भी कोई प्रोत्साहन नईं मिलतो। जद पोथी छापण रो जुगाड़ लिखार कनै नईं हुवै, पोथी रा पढार भी त्यार नईं हुया हुवै, इण हालत में प्रतिभा अर साधनां सूं सम्पन्न लिखार ई, जिकां रै मन में मायड़ भासा खातर हिवड़ै रो हेत हुवै, राजस्थानी रै क्षेत्र में पग धरण री सोच सकै। तारीफ तो आ है कै उण बगत जिका लोग मिशनरी भावना सूं राजस्थानी री सेवा में लाग्या, लोगां वांनै माथो फिरचोड़ो समझ्या।

आधुनिक राजस्थानी रै प्रचार-प्रसार में शिवचन्द भरतिया, रामकरण आसोपा, रामसिंह तंवर, सूर्यकरण पारीक नरोत्तमदास स्वामी आद थोड़ा-साक इसा नांव है जिका आपरै उजळास पाण जगमगाट करै। राजस्थानी रै उद्‌भट विद्वान रै नातै जठै स्वामीजी अनेक ग्रन्थां रो सुयोग्य सम्पादन करचो, बठै उण सूं भी महत्त्वपूर्ण एक काम और करचो, अर बो हो राजस्थानी रै प्रचार रो। स्वामीजी आपरै घर में ई राजस्थानी साहित्य पीठ रै नांव सूं एक संस्था री थरपणा करी। आपरै हाथ सूं लिख-लिखर वै राजस्थानी रै हिमायत्यां अर सम्भावित प्रेम्यां अर लिखारां नै गोष्ठी री सूचना भेजता। ओ एक इसो दोरो काम है जिकै नै एक वेतनभोगी लिपिक भी

अरुचिपूर्ण समझै, पण स्वामीजी आपरै मोती जैड़ा आखरां में अै सूचनावां बरसां तईं लिखी।

आज मुरळीधरजी व्यास राजस्थानी रा भीष्मपितामह गिणीजै, पण राजस्थानी रै मन्त्र बांरै कान में फूंकण आळा गुरु स्वामीजी ई हा। अै गोष्ठ्यां स्वामीजी रै घरै, रामसिंहजी रै डेरै, गुण-प्रकाशक सज्जनालय अर अभय जैन ग्रन्थालय में मोकळा बरसां तईं हुई जिणां रो असर ओ हुयो कै बीकानेर में सगळां सूं पैली राजस्थानी री चेतना वापरी अर मुकुल, मुरळीधर जिसा अनेक लेखक त्यार हुया। बीकानेर सूं ई राजस्थानी रो आ लहर जोधपुर, जयपुर आद स्थानां में पूगी। इण तरै आधुनिक राजस्थानी रै उन्नायकां में स्वामीजी रो घणो ऊंचो स्थान है।

एक चेन स्मोकर सूं भले ई आप करणै ई मुलाकात करलो, सिगरेट तो हाथ में त्यार लाधसी, इणी तरै स्वामीजी रै निवास माथै जद भी जावता, तो वै एक ढीलै मांचें माथै पोथ्यां रै ढिगलां बिचाळै लुक्योड़ा अर बां में डूब्योड़ा लाधता, इसी ही स्वामीजी री साधना। ताव-तप रै कारण इण साधना में कोई फरक नईं पड़तो, साधना ही अटूट, अविरल।

लारलै पन्द्रै बरसां में सालोसाल राजस्थानी सम्मेलन बुलावण रो एक सिल-सिलो चालू हुयो। सरीरी अस्वस्थता रै बावजूद स्वामीजी आं सम्मेलनां में पूगता अर बराबर भाग लेवता। पण स्वामीजी में जमानै मुजब चतराई या छाकटाई रो अभाव हो। जद कोई बात उणां नै अनुचित लागती तो फेर चुपचाप बरदास करणो उणां रै बस री बात नईं ही। बै फौरन विरोध करता अर जरूरत पड़्यां बहिर्गमन भी। सन् १९६६ में आयोजित जयपुर रै एक सिम्पोजिया में इसो अवसर भी देखणनै मिल्यो हो।

पण विद्वान लोग उणां नै पूरो आदर देवता। इण सिम्पोजियम में राजस्थानी री एकरूपता माथै बिचार हुयो। जद 'रुपियै' माथै चरचा चाली तो बीकानेर नै छोड'र सगळा लोग इण रो रूप 'रिपियो' राखण रै पख में हा, अर करीब-करीब 'रिपियो' स्वीकार लियो। जद स्वामीजी कैयो कै संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, पंजाबी अर अठै तईं कै अंग्रेजी में भी 'रि' कोनी, 'रु' है, तो सगळा विद्वान् 'रुपियो' मानण खातर सैमत हुयग्या।

स्वामीजी आपरी बड़ाई सुणनी चावता कोनी। लारै-सीक बांरै सम्मान में एक आयोजन हुयो तो अन्त में स्वामीजी बोल्या—निश्चित रूप सूं आप लोगां म्हारी बडाई करी है, पण आपरी बडाई सुण्यां बडो पाप लागै। हूं आजकाल ऊंचो सुणूं, इण कारण ठीक ई हुयो कै आप लोगां रै कैयोड़ो एक लबज भी म्हारै पल्लै पड़्यो कोनी।

जदपी पं० विद्याधरजी शास्त्री अर स्वामीजी री ऊमर में घणो फर्क नई हो, पण तो भी चूंकि स्वामीजी शास्त्रीजी रा शिष्य रैयोड़ा हा इण कारण शास्त्रीजी

साखू उणां रै हिरदै में ऊण्डी भाव-भगती ही। इणी तरै अगरचन्दजी नाहटा री साधना सूं स्वामीजी घणा प्रभावित हा। डा० मनोहर शर्मा री सेवा नै तो वै राजस्थानी में अनुपम समझता।

साहित्य पीठ री एक गोष्ठी में जद म्हैं 'फर्रामल' रेखाचित्र सुणायो तो स्वामीजी उण रचना री प्रेस कापी म्हारै कनै सूं छपावण खातर मांगली, अर इण तरै स्वामीजी री आसीस सागै म्हैं राजस्थानी सर्जन में पग धरचो।

परम्परा मुजब सोक सभावां में प्रायः दिवंगत आत्मा री शान्ति साखू प्रार्थना करी जै। स्वामीजी खातर भी करीजी, पण मनै भरोसो है स्वामीजी री आत्मा चिर शान्ति नै प्राप्त हुयगी। सभावां में अनेक वार राजस्थानी भासा री मौजूदा हालत माथै बां घणो-घणो संतोस प्रगट कर्‌यो, कारण—जद स्वामीजी इण आन्दोलण नै सरू कर्‌यो उण बखत लोग राजस्थानी में लिखण आळां री मखोल उडावता अर स्वामीजी नै भी ओ भरोसो कदेई नईं हो कै राजस्थानी आज जिण ठौड़ पूग्योड़ी है, बठै पूग सकसी। राजस्थानी भासा स्वामीजी रो मिशन हो अर बांनै आपरै मिशन में आसा सूं पर बार सफळता मिलगी, इण कारण वांरी आत्मा नै तो पक्कायत शान्ति मिलगी।

राजस्थानी साहित्य अकादमी विशिष्ट साहित्यकार रै रूप में तो स्वामीजी रो सम्मान कर्‌यो, पण स्वामीजी सूं बडो किसो 'मनीषी' हुयो है. आ मनै ठा कोनी।

स्वामीजी रो पार्थिव सरीर आज आपांरै बिचाळै कोनी इण कारण एक लूंठो अर अपूरीजण जोग घाटो लखावै, पण जिण लगन सूं आपांरै सागै रैयर बां अखंड साधना अर राजस्थानी री सेवा करी बा कियां भूली जै। औस्था री निमळाई, नैणां में जोत री खीणता, सरकारी कामकाज अर घरेलू झमेलां नै स्वामीजी राजस्थानी सेवा माथै कदेई हावी हुवण दिया कोनी। स्वामीजी री मूरती घड़वायर उणरी पूजा सूं तो म्हारो मतळब कोनी, पण आ बात भी नेछै सूं कैयी जा सकै कै ज्यूं सनातन धरम रै उद्धार खातर आदि शंकराचार्य, हिन्दी भासा में खड़ी बोली लावण साखू भारतेन्दुजी आया, उणनै व्याकरण-सम्मत बणावण रो काम द्विवेदीजी कर्‌यो, इणी भांत राजस्थानी में नवी सर्जणा नै प्रेरणा देवण रो काम स्वामीजी कर्‌यो।

राजस्थानी री त्रयी—रामसिंह, सूर्यकरण, नरोत्तमदास स्वामीजी रै निधन सागै उठगी। विद्याधरजी शास्त्री हरेक काम में गोळी काढै अर गोळी में *Yes, No* रै आधार माथै उण काम नै करै अथवा टाळै। सम्भव है इण गोळी रै लारै भी कोई विग्यान हुवै। काईं ठा क्यूं, एक वार म्हारै मन में विचार आयो कै इण त्रयी रा तीनूं नांवधारी राजस्थान अर उण री भासा राजस्थानी सूं अटूट रूप में जुड़्योड़ा है, इण रो कोई खास कारण है काईं। वरणमाळा री कसोटी माथै म्हैं इण तथ्य नै परखणो चायो। जद म्हैं देख्यो कै रामसिंहजी रै नांव रो पैलो आखर 'रा' राजस्थान

रै सरू में विराजै, तो उणां रो लगाव म्हारी समझ में आयग्यो। रामसिंहजी आं तीनां में बडा हा अर इण नातै भी सगळां सूं पैली उणां रो नांव आवणो जरूरी हो। ज्यूं सरीर में रगत गे संचाळण हिरदो करै इणी तरै राजस्थानी आन्दोलण नै गति देवण रो काम पारीकजी करै हो। मन देखर इचरज हुयो कै 'राजस्थान' रै मध्य में पारीक जी रै नांव रो पैलो आखर विराजमान हैं। पण पारीकजी अळपायु में धाम पधारग्या, इण कारण 'स' भी पूरो नईं आधो है। अर जद म्हैं राजस्थान रै चरणां में निजर गेरी तो म्हारै हरख रो ठिकाणो नईं रैयो। दोनूं साथ्यां रै प्रति अगाध सरधा-भाव राखणआळा स्वामीजी 'राजस्थान' में 'न' रै रूप में चरणां में विराजमान है।

मार्च १९८१ में जद राजस्थानी कथाकार स्व० श्रीचन्दरायजी मास्टर री जयन्ती माथै स्वामीजी नै आमंत्रित करणनै गयो, तो अस्वस्थता रै बावजूद भी वां पधारण रो हुंकारो भर लियो, पण इण रै सागै आ भी कैयी कै सभा में हाजर हुवण रो अबै ओ आखरी मौको है। स्वामीजी सभा में पधार्‌या, आछी तरै आपरो भासण दियो। म्हे सोच भी सकता कोनी कै बा सभा स्वामीलजी री आखरी सभा ही, पण स्वामीजी री बात साच निकळी अर उण रै बाद वै किणी सभा में नईं गया।

'दीपै वांरा देस, ज्यांरा साहित जगमगै'—ऊजळजी एक सिमरथ कवि हा, गागर में सागर भरग्या। कविता म्हारै कनै कोनी। हूं तो आ ई कैऊं कै जिण समाज में लिखार आदरीजै बो ई समाज ऊंचो उठ सकै।

भाव–सुमन

डॉ० उदयवीर शर्मा

सुरसत सुत नर केहरी, ग्यान गुरू गुणवान ।
मनसा वाचा करमणा, इकरंगा विद्वान ।।
कण-कण में कीरत रमी, आखं राजस्थान ।
पण थे सांचा मिनख हा, कदै न करचो गुमान ।।
सुरसत रो सेवा रम्या, जीवण भर अणमाप ।
लिछमी नित साथै फिरी, बिन पूछचा खुद आप ।।
नर उत्तम थे पारखी, सांचा साहित सूर ।
दास सदा गुणवंत रा, स्वामी गुण भरपूर ।।
सैंचन्नण थांसूं हुयो, ज्यूं उगियो आदित्य ।
बणी धरोहड़ ओपती, थां रचियो साहित्य ।।
मित भासी मीठा घणा, बांट्यो सदा मिठास ।
इमरत भरिया कूप हा, खरा नरोत्तमदास ।।
मन फुलड़ा अरपण करां, आंसूड़ा ढळकाय ।
दिव्य दीठ दचो आपरो, स्वामी सो मो आय ।।

बिसाऊ (राजस्थान)

□

स्वामीजी : एक संस्मरण

सुबोध कुमारजी अग्रवाल

बाबुल थारी कोयलड़ी उडज्यासी
मायड़ थारी ओळ्यूं ड़ी पलपल आसी

मेरै ईं गीत की फुरणा की बख्त मनैं स्वामी नरोत्तमदासजी की याद आई। ईं गीत कै लिखतां बख्त साक्स्यात ओ चितरास मेरी आंख्यां आगै फिरर्यो'र आंख्यां आगै फिर रयो हो अर आख्यां सूं आंसू चालर्या हा।

घणै बरसां पहली स्वामीजी को एक लेख लोक गीतां ऊपर श्यात चांद में छपेड़ो हो जी में बेटी की बिदाई कै बख्त का दो राजस्थानी लोक गीत हा। मैं अर चि० गोविन्द म्हे दोनूं भाई म्हारै घर हाळी बैठक में बैठया, रात का दसेक बज्या होसी गोविन्द बैठक की कोटड़ी में आडो होयो पढै और मैं बारणै बैठ्यो, में बैठ्यो स्वामी जी हारो लेख बांचूं। बांचतां बांचतां बै गीत मेरै कंठां चढ़्या। 'राग, रसोई, पागड़ी कदे कदे बणज्या' मां भगवती जाणै 'क कीं सुरां में बा लोकधुन निकळी। आंसू चालता रया'र मैं गातो रयो। च्याण चुकै हीं मांय स्यूं सिस्कार्‌यां भरतो गोबिन्द इत्ती जोर स्यूं बोल्यो 'बस तहणद्यो' 'क मेरी हाल्लीनता टूटी। मैं सागै ही चिमक्यो। देखूं तो भाव विव्हळ गोबिन्द आंसुवां स्यूं भीज्यो पड्यो है। या कल्पना नहीं हकीकत है।

△

स्वामी नरोत्तमदासजी : थोड़ासा संस्मरण

भूरसिंह राठौड़ फेफाना

स्वामीजी री विद्वत्ता रै बारै में क्यूंई भी लिखणो नी है क्यूं के पठित जगत में बै घणा चावा हा ।

मैं पैलीपोत बियां रा दरसण सन् १६३२ में किया के जद मैं बीकानेर में पुलिस री नौकरी में हो अर बीकानेर रै नामी खड़यंत्र केस में हाई कोर्ट में पैरोकार हो । पण खास संपर्क बियां सूं सन् १६४२ में हुयो । बियै बखत मैं अजमेर में राजस्थान क्षत्रिय महासभा रो सहायक मन्त्री तथा 'क्षात्र धर्म' नामक मासिक पत्र रो सम्पादक हो । बीकानेर पुलिस री नौकरी सूं मैं सन् १६४० में निकाल दियो गयो हो क्यों कि मैं रास्ट्रीय विचारां रो हो, खादी सूं प्रेम राखतो हो, अखबार पढतो अर बिया में लिखतो भी हो ।

राजस्थान क्षत्रिय महासभा रो एक निश्चय हुयो के राजस्थान रै राजावां सूं डेपूटेशन रै रूप में मिल्यो जावे अर बियां सूं धन री सहायता लेयर अजमेर अर दूजा सहरां तथा विसेस स्थानां में छात्रावास खोल्या जावै । बियै डेपूटेशन में बीकानेर सूं दो प्रतिनिधि—एक ठा० रामसिंहजी तंवर अर दूजो मैं, नियुक्त हुया । म्हे अजमेर में भेळा हुया । बीकानेर सूं ठा. रामसिंहजी रै साथै स्वामीजी भी अजमेर पधार्‌या । बठै मेरो स्वामीजी सूं भिणाय राजा साहब री कोठी में दो तीन दिन खूब मिलणो हुयो । आ बात सन् १६४२ री है । स्वामीजी मेरो पत्र देख्यो अर बियै में राजस्थानी काव्य अर राजस्थान री संस्किरती सम्बन्धी सामग्री देख'र घणा राजी हुया । मेरो पत्र हिन्दी भासा में निकळतो हो अर सामाजिक हो पण बियै में घणकरी सी सामग्री साहित्य अर संस्किरती सू सम्बन्ध राखण वाळी हूती तथा राजस्थानी री रचनावां नै मैं खास जागा देवतो । स्वामीजी मनै प्रोत्साहित करता थका ओ निरदेस दियो के राजस्थानी नै और घणो स्थान दियो जाया करै ।

बीकानेर सू मेरै बीकानेर राज रै खिलाफ हूणै री लिखीज'र अजमेर पुलिस में गई तो मेरे पर निगरानी बैठगी ही । थोड़ा दिना में मेरो पत्र भी बन्द कर दियो । पण मैं दूजो पत्र जोधपर सूं जा निकाळयो । अगलै बरस जोधरर में भी हथियारां रो आंदोलन चाल्यो अर बां हथियारां रो वार म्हारलै पत्र पर हुयो । तीजो पत्र मैं जैपर

सूं निकाल्यो जद स्वामीजी रो समंचार मिल्यो के पत्र रा आज तांई रा सगळा अंक भेजो। मेरो बियां दिना ई बीकानेर जाणो हूग्यो अर मैं मेरै पत्रां रा सगळा अंक स्वामीजी रै भेंट करचा।

बियै बखत स्वामीजी मनै ओ आदेश दियो के जद कदे ई कोई पोथी लिखो तो राजस्थानी में लिखज्यो। सन् १९५२ में जद सरकार री तरफ सूं पंचायतां रो संगठन हुयो अर नूंवो कानून वण्यो तो मैं बियै कानून रो राजस्थानी भाषा में अनुवाद कर'र एक पोथी 'आपणो राज' नाम सूं राजस्थानी में लिखी पण बा छप नी सकी। बियै बखत मैं जैपर छोड'र अपणै गांव फेफाणै आ गयो हो। बीकानेर आणो जाणो बण्यो रयो अर पत्र नै साप्ताहिक कर दियो हो पण थोड़ै ही दिनां में आरथिक संकट सूं घिर'र पत्र नैं बंद कर देणो पड़चो। कई दिन गांव में अर गंगानगर में रह'र मनैं घरू काम करणा पड़चा। बियां दिनां स्वामीजी सूं मिलणो नीं हू सक्यो। पण साहित सेवा नै नी भूल सक्यो। बाहादर री रचनावां में एक प्रसंग में अमदाबाद रै बादस्या महमूद नाम रै आगै 'बेगड़ो' सबद देख'र मैं ससोपंज में पड़ग्यो। कई विद्वानां री राय मैं इयै सबद रै बारै में पढी ही, पण वियां सूं मनै सन्तोस नी हुयो। आखर मैं स्वामीजी नै कागज लिख्यो। स्वामीजी बियै पत्र रो उथळो तत्काल दियो। स्वामीजी बियै सबद नै सांड (गोधो) री संज्ञा दी पण आ भी मेरै गळै नी उतरी क्यूं के मैं इयै सबद रै विसै में और ही राय बणा राखी ही। मेरी मानता आ ही के राजस्थानी बोली व भासा में ओ एक रवैय्यो सो वण्योड़ो है के जकै आदमी, पसु या वस्तु ने हिकारत री निजर सूं देख्यो जावै बिये नै ओछै नांव सूं बतळायो जावै है। बीं ओछे नांव री घड़ंत ड़, त, व, य, प्रत्यय लगा'र की जावै है। जियां-रामू नै 'रामूड़ो', ऊंठ नै 'ऊंठडो', हळ नै 'हळियो', घोड़ै नै 'घोड़तो', गाय नै 'गावड़ती', दूध नै 'दूधड़ो', चमार नै 'चमारड़ो', रजपूत नै 'रजपूतड़ो' ब्राह्मण नै बाम्हणियो इत्यादि। इयां ही अहमदाबाद रै बादस्या महमूद बेग नै महमूद बेगड़ो कहचो है क्यूं के बो घणो करड़ो अर हिंदवां रै वास्तै दुखदाई सासक हा। बेग तुरकी में अमीर नै कवै है अर इयै बादस्या रो नांव महमूद बेग हो। स्वामीजी मेरी इयै बात नै नी मानी। आ ही स्वामीजी री अपणी माण्यता पर अडिगता ही। सन् १९६९ में मैं बीकानेर फेर आयो अर महाराजा साहब रै प्रेस नै देखणै रो काम कर्यो कई दिन बियां रै साप्ताहिक पत्र 'सत्य विचार'रो सम्पादन भी कर्यो। स्वामीजी सूं सम्पर्क वण्यो रयो। बियै बखत मैं बाहादर ढाढी री डिंगळ रचनावां रै तीन खण्ड काव्यां रो सम्पादन पूरो कर लियो हो।

सन् १९७० में मनै ठा० गोरधनसिंहजी राजस्थानी सबद कोस रै सम्पादन में श्री सीतारामजी लालस री सहायता करण नै जोधपर बुला लियो। ओ कोस चोपासनी सिक्स्या समिति री तरफ सूं निकळ रयो हो। सन् १९७५ ताईं मैं जोधपर रयो। बीच में जद भी मैं बीकानेर आवतो स्वामीजी सूं जरूर मिलतो। स्वामीजी इयै कोस सूं संतुस्ट नी हा क्यों कै बियै रै सम्पादन में वणी विसंगतियां निजर आ री ही।

स्वामीजी अर मेरी इयै विसै में बातां भी हूती पण सीतारामजी आपरी ही मनमानी चलावता रया। मैं तो कोस रो प्रूफ रीडर हो, सला देणै रै सिवाय बत्तो क्यूं ई नी कर सकै हो। श्री सीतारामजी रो द्रिष्टकोण इयै कोस नै व्यरथ रै सबदां री भरमार कर'र लाम्बो बधावणै रो हो क्यूं के इयै सूं बियां रो आरथिक स्वारथ बणतो हो। स्वामीजी सीतारामजी कनै आपरा विचार भी भेज्या हा पण सीतारामजी बियां सूं नाराज हुया। आखिर मैं सन् १९७५ में पूठो बीकानेर आग्यो।

बीकानेर आयर स्वामीजी री सला अर ठाकर नारायणसिंहजी घंटेल री सहायता सूं मै बाहादर ढाढी री रचनावां रै सम्पादन नैं छपार परकासित कर्‌यो। बियै बखत म्हे नागरी भंडार मैं स्वामीजी रै निरदेसण में भेळा हुता अर गोष्ठचां करता। ओ स्वामीजी रो ईजाद कर्‌योड़ो साहित्य री परगति रो घणो आछो तरीको हो। स्वामीजी चिर स्थापित विद्यापीठ री भी बैठक करी अर नूंवो चुनाव कियो।

इयै सूं पैलां जद सन् १९७२-७३ में मैं जोधपुर हो, बीकानेर में राजस्थान अकादमी री तरफ सूं आपरो राजस्थानी रो विभाग बीकानेर में खोल दियो जकै रा पहला सभापति स्वामीजी हा। इयै संस्था री तरफ सूं 'जागती जोत' नाम री एक राजस्थानी भाषा री पत्रिका भी निकळनी सरू हुई। बियै बखत बा तिमाही ही अर बियै रा सम्पादक स्वामीजी ही हा। अबार आ पत्रिका मासिक रूप में निकळ रई है। थोड़ा दिनां उपरायंत स्वामीजी इयै सूं पसवाड़ै हुग्या।

साहित्य सम्बंधी और चरचावां रै साथ साथ मैं 'राजस्थानी हिंदी विद्यार्थी कोस' री भी स्वामीजी सूं चरचा करी अर बता के मेरै खन्नै ३० हजार सबदां रो संग्रह है तो स्वामीजी घणा राजी हुया अर कह्यो के चाहे समै दो चार बरस और लाग जावै पण इयै काम नै जरूर करो। आ कह'र स्वामीजी आप कनै रा भेळा कर्‌योड़ा भोतसा सबद मनै दिया। पण बीं रै छपाणै रो सवाल ओजूं तांई हल नी हू सक्यो है। राजस्थानी भासा साहित्य संगम एक बर बियै कोस नै छपाणै री बाबत मेरै सूं लिखा'र लियो हो पण बियै नै भी खत्तै में गेर दियो। इयै रै बाद मैं एक राजस्थानी री गद्य रचना गांवां री संस्क्रिती पर 'गांवां रा साचा चित्राम' नाम सूं सबदां रा अरथां समेत लिख'र प्रकासण रै वासतै राजस्थानी भासा साहित्य संगम नै दी ही पण बियै अस्वीकार कर'र पूठी भेज दी। बा पोथी मैं स्वामीजी ने दिखाई तो बियां पढ'र कैयो के इयै मांयली भोत सी कहाणियां छपणी चाइजै अर इयां रै मांय राजस्थानी रा ठेठ सबद घणा है जका संग्रह जोग है पण बा पोथी धन रै अभाव रै कारण अणछपी ई रैय रई है।

स्वामीजी निरमळ सुभाव रा अर उदार हिरदै मानव हा ? कम बोलता, काम घणो करता। मैं जद जूनागढ में नोकरी करणी सरू करी तो वियै सूं समय कम मिलतो। ओ देखर एक दिन स्वामीजी कयो इयै नोकरी में तो आप रो सोसण हुवै है।

मैं पैलां ई इयै बात नै महसूस कर तो हो पण मेरी आरथिक स्थिति मनै खाली बैठण री इजाजत नीं दे रई ही । स्व. दीनानाथजी खत्री जद बीकानेर रो संखेप इतिहास लिख रया हा, स्वामीजी बियै में काफी मैणत करी । इयै में मैं भी क्यूई सहायता करी ही अर जद दीनानाथजी अस्वस्थ हूग्या तो आखरी अंस री पूरणता अर गलतियां री सूची मैं ही बणाई ही । स्वामीजी इयै रो उल्लेख करणो चावता हा पण मैं नी चावतो हो । आखरी काम राजियै रा सोरठां रै परकासण रो हुयो जिकै में आपूवाळे रै ठाकर स्व. चतुरसिंहजी रै संग्रह मांय सूं कई सोरठा मैं दिया अर बियां रै सबदां रै अरथ रो भी स्वामीजी रै आग्रह सूं मैं अवलोकन करयो ।

स्वामीजी चावता हा के मैं बियां रै साथै मिल'र राजस्थानी साहित्य रो क्यूं काम करूं पण मेरी स्थिति मनै इसो नीं करण दियो जकै रो मनै दुख है अर स्वामीजी भी इयै नै जाणग्या हा ।

स्वामीजी रै सुभाव रो अध्ययन करणै रै बाद मनै मेरै असूलां री याद ताजा होगी के कम बोलणो, घणो सोचणो अर सोचणै रै बाद बोलणै सूं भी कम लिखणो । ईश्वर अर इस्ट देव रो सम्बन्ध हिरदै तांई ही राखणो, पूजा पाठ में समै नी गमाणो । लोकाचार लोक में रैयर जरूरी है पण बियै में घणो नी उळझणो क्यूं के कम सूं कम साहित्य सेवी रै सामणै समै रो मोल लोकाचार सूं घणो बत्तो है । साहित्य साधना में संकोच नी करणो व न समै ताकणो । सुबै, स्याम अर रात नै नीद सूं जद भी आंख खुलै साहित्य साधना में लाग जावणो । स्वामीजी आं असूलां रा धणी हा ।

स्वामीजी री याद मैं पत्रिका मै परकासित आं आखरां सूं काम नी चालै । बियां रै अधूरै काम नै, बियां री तरै न सही, जिण तरै रो बण सकै, पूरो करणो । बियां री लिख्योड़ी पोथ्यां रो परकासण बियां रै नाम री ग्रन्थ माळा में करणो, बियां रै संग्रह री पुस्तकां रो बियां रै नाम रो एक पुस्तकालय स्थापित करणो, पुराणी गजनेर रोड़ सूं जेसलमेर रोड़ तांई रै मारग रो नांव 'नरोत्तमदास मारग' रखवाणो तथा इयै मारग पर ओपती जागा में बियां री प्रतिमा राखणी ।

इन्द्रानगर, बीकानेर

△

पुरस्कार

खेताराम खत्री 'कोविद'

मैंसिया माराज पाटे पर पसरियोड़ा दोरा दोरा सांस लैंवता हा। इत्तै में ही पाडियै माराज उवांनै हेलो पाड़ियो—मैंसिया माराज पगै लागणां। मैंसिया माराज पसवाड़ो फोर र बोलिया ग्राव पाडिया बगेची गयो हो क्या ? हों – कहयर पाडियो, माराज रै नैड़ो ढूकियो। भैंसिया माराज बोलिया, म्हांरै तो ग्राज बूंटी हीज कायनी वैठा उबासी लेवै हा, इत्तै में ही सामली हैली ग्रालै हाकड़ियै सेठ बोमणी साथै म्होने बूंटी भेजायदी। उवे ने कूण कैयो जिकै रो म्होने ठा हाल तांई पड़ियो कोयनी पण सेठ बूंटी क्या भैंजी साचे ही भोळो शंकर राजी हुवै जिसीज ही ही। बूंटी—चोखी तरै चुग चुगार घोचा फूस काढियोड़ी ही। उवै में सागीड़ा कागदी विदाम, पिस्ता, काळी मिरच ग्रौर लांग सैन चीज्यां घालियोड़ी ही। बोमणी म्हांरै ग्रागै बूंटी री गोंठड़ी लायर घरी तो पाडिया, हूं तो उवै गोंठड़ी नै उठायर पगोपग बगेची पूगियो। पिछै सिल्ला माथै उवै नै सागीड़ी घोटी। छिड़का देयर उवैनै भेळी करी, पछै घावड़दा भोंत छाणी। छाण छणार उवैनै पीवंता ही इसी डकार ग्राई, म्होरो जी सोरो होयग्यो। उठै सूं निमट निसटार हूं सेठां री हैली ग्रासीस देवण नै गयो हो तो सेठ बोलिया, भैंसिया माराज ग्राज तो इठे हीज जीमण री किरपा कराग्रो तो ठीक रहवै म्हांरै जलम रो दिन है इये सूं। थूं तो जाणे हीज है पाडिया, म्है तो मनवार रा घणा ही काचा वळां हां। सेठ रो क्या ले खादो है नूंतों कोई देयर देखलो ना करणो तो सीखयाईज कोयनी। सेठां रो मन तो राखणोईज पड़ियो। सेठ बोलिया ग्राग्रो माराज पग धोवायलो पग धोवावणाईज पड़िया। पछै सेठां पाटे पर थाळ पुरसियो, हूं सतरंजी माथै बैठियो। बैठतां ही ग्रापां तो सेठा नै कह दियो सेठां पुरसारी करण रो तो फोड़ो मतीज देखिया। सैन मिठायां रा धामा इठै म्हांरै खनै धरवायदो, हूं हाफेई लैयलीस ग्रौर पूड़ी साग चाईजसी तो हेलो पाड़ दीस। सेठ बोलिया न्याहाल करसो गरू ग्रा घणी ही चोखी बात है म्होंरी उठ बैठ टळसी म्हौंरा तो ग्रागै ही गौडा घणा ही दूखै है। रीस ना किया चौखी तरियां जीम लिया भलो ?

म्हांरै खनै धरियोड़ै धामां री मिठाई पाडिया, हूं तो जमायन्यो, साग पूड़ी रा फोड़ा क्यों घालतो थो ? धामा में जिको लारै बंचियो हो उवे ने हाथ लगावतो तो

आछी बात कायनी लागती, छोड़ दियो धापर दरड़ हुयां पिछै हाथ धोया। सेठां एक मीठो पोन म्होने खड़ार दस रो एक पतो हाथ में झलाय दियो। थोड़ीक ताळ उठै सेठां रै खनै बैठिया तो सेठां पूछियो, भैंसिया माराज नरोतमदासजी स्वामी ने पुरस्कार मिलण री बात थां ही सुणी है क्या ? थनै तो ठा हीज है पाडिया माराज तो आपोरै इठै ताही निसरै है, जिकै रै पाछै शहर री सैन खबरचां आपां रै खनै आंवती रहवै है। मैं सेठां नै कैयो थां सुणी जिकी साची है। थोनै बताऊं आ बात अक्टूबर, ७९ री हीज है। आपारै इठे स्वामी नरोतमदासजी केई भाषावां रा मानीजता विद्वान है। घणा-कराक परदेशां रा विद्वान तो स्वामीजी नै राजस्थानी भाषा रा जनकहीज मानै है क्यां'क स्वामीजी पूण सौ बरस आपांरी राजस्थानी भाषा री सेवा में हीज गाळ दिया निरा ही छापां रो सम्पादन कियो–छापा काढिया। राजस्थानी भाषा रो परचार करण नै कोई कसर नहीं राखी। पण भौळे-भाळै सन्त नै उवै रौ फळ इठै नी मिलियो। बीकानेर में तो आ रीत है सेठां, 'घर रा जोगी जोगना, पराया जोगी सिद्ध'। पण गीता में ओ लिखियौड़ो है'क कर्म रो तो फल हुवैईज है। लाडणू रै सेठ पूनमचंदजी भूतोड़िया आपरी बरसगांठ माथै दस हजारी पुरस्कार देवण नै राजस्थानी रो मानीजतो विदवान जोंवता हा। अक्षयचंद्रजी शर्मा जिका आपोंरै इठै विद्या मंदिर में पहली पढांवता हा आजकल सेठा रै खनै ही है उवां सेठां नै स्वामीजी री सैन बात्यां बिगतवार समझाई। सेठां रै कैवणै सूं हीज अक्षयचंद्रजी स्वामीजी नै लाडणू आवण रो लिखियो हो।

अक्टूबर, ७९ री १३ तारीख नै स्वामीजी इठै सूं मोटर सूं टुरिया हा। टेसीटोरी पुरस्कार वितरण रो कोई समारोह हुय रियो हो सो श्री सुबोध कुमार अग्रवाल जिका मंत्री लोक संस्कृति शोध संस्थान नगर श्री चूरू हा उवां रै कैवणै सूं एक दिन उठै हीज रुकणो पड़ियो। चवदै तारीख नै उठै ता बस सूं स्वामीजी लाडणू पूगिया हा।

ता० १९-१०-७९ नै लाडणू में भूतोड़िया सेठ री बरसगांठ रो उच्छव हो। एक नोहरै में स्टेज बणियो हो उवेरे माथै हीज सैन भासण नाच-गाणा हुवा। सेठां री बरसगांठ रो दस्तूर हुयो पिछै सिन्झ्यारा आठ बजी सीक उठै सेठां स्वामीजी नै दस हजार रो पुरष्कार एक तांबा पतर सागै भेंट कियो। उठै अक्षयचंदजी शर्मा सेठ पूनमचंद भूतोड़िया, स्वामी डा० लक्ष्मी शर्मा डा. सत्यनारायण स्वामी, कप्तान मोती-सिंह भाषण दिया। पिछै खेताराम खत्री आपरी एक रचना 'मौकै मौकै री बातां'' उठै सुणाई। स्वीमीजी रा छोटा भाई पुरसोतमदाजी उठै पाटै पर बैठ्या सैन सुणता। रात नै कवि सम्मेलन हो पण मोटा मोट पुरस्कार री बात तो आहीज हे।

दूजै दिन स्वामीजी उठै जैन विश्वभारती संस्था देखण गया। रात रा सेठ पूनमचंदजी आपरे बेटां अर लाडणू रे कैई भले भले मिनखां सागै स्वामीजी खनै

ग्रौर भेंटा सीखां रो नेगचार कियो। कलकत्तेरी री क्या बात हुई उवेरो ग्रबार तांई तो ठा पड़ियो कायनी।

इयां कहयर पाडिया, हूं तो उठर उठै सूं हैली सूं बारे निसरीयो। डटर जीमियो हो सो इये पाटे पर ग्रायर ग्राडो हुयग्यो। देख उठीनै, ग्रंधारो हुय रियो है थूं ग्रबै इठै ग्रड़वै दायी उभोहीज रहसी क्या? थारै घरे जा ग्रडीकता होसी। म्हांनै थोड़ी देर ग्रांख खारी करनै दै।

पाडियै ने उठै सूं टरकार भैंसिया माराज पाटै पर फेर पसरग्या। घरे कद गया, ठा नी?

५२२ चौतीना कुवा,
बीकानेर

△

राजस्थानी रा पितामह श्री नरोत्तमदासजी

श्री रतन शाह

"रतनजी, राजस्थानी का पितामह नहीं रहा।" अर मैं समझग्यो कै ओ स्वामीजी रै निधन रो समाचार है क्यूं कै स्वामीजी रो व्यक्तित्व ई इण विशेषण रो खरो हकदार हो। शरशय्या माथै सोयां पछै भी भीष्म रो व्यक्तित्व अेक धुरी हो, अै ही गुण स्वामीजी में हा, राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै सन्दर्भ में। दूजी भाषावां री तरै राजस्थानी में ई उण रा समर्थकां रा केई छोटा-मोटा खेमा है पण स्वामीजी बां सगळां सूं ऊंचा अर सगळां सारू श्रद्धेय हा। उणां री बात निर्णायक बात रै रूप में मानी जाती। उणां री मृत्यु सूं राजस्थानी री अेक बहोत बड़ी धरोहर गमगी है। दो-अेक बरसां पैली श्री मोतीलालजी मेनारिया आपां रै बिचाळै सूं उठग्या हा—राजस्थानी री गवाड़ रो अेक मोटो छायां-आलो दरखत टूटग्यो हो, अर अबै स्वामीजी रै जावणै सूं तो बड़ रो पेड ई को रैयो नी—गवाड़ अर चौपाल सै सूना हुयग्या।

स्वामीजी प्रेरणा-पुरुष हा। मान्यता नइं मिलण रै बावजूद ई बां राजस्थानी कानी सैकड़ां विद्वानां नै आकर्षित करचा। बां हस्तलिखित ग्रंथां मांये सूं बेजोड़ हीरा-जवाहरात खोज निकाळचा अर बांनै सजा-संवार' मां राजस्थान-भारती रै श्रीचरणां में समर्पित करचा। राजस्थानी तो राजस्थानी. इतर भाषा-भाषी लोग ई उण कृतियां री मार्मिकता अर स्वामीजी रै अद्भुत सम्पादन-कौशल सूं आश्चर्य चकित रैयग्या 'कृष्ण-रुक्मणी री वेलि' सूं लेय'र 'राजिया रा दुहा' तांई रो सम्पादन उणां री विद्वत्ता अर सादगी रो परचायक है। स्वतन्त्रता रै ३४ बरसां पछै ई राजस्थान री नूंई पीढी रा लोग राजस्थानी भाषा री संवैधानिक मान्यता सारू जिको सफळ आंदोलन चला रैया है उणा सारू वां ऊर्जा तो स्वामीजी जिसा मनीषी पुरुषां सूं ई पायी है। इण तरै सूं राजस्थानी रै हरेक काम में स्वामीजी रो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप सूं गहरो प्रभाव पड़चो है—आ बात साफ है। इण भांत रै व्यक्ति रै आपरणै बीच सूं उठचां इयां लागै जाणै साहित्य-क्षेत्र रो अेक बडो भारी नक्षत्र टूटग्यो हुवै। राजस्थानी आज निरावलम्बा हुयगी।

'मारवाड़ी सम्मेलन' सूं स्वामीजी दिनाजपुर अधिवेशन री वेळा जुड़चा हा। उणां नै हार्दिक श्रद्धांजलि।

'श्रद्धांजलि'

खेताराम खत्री, 'कवि कोविद'

समाचार यह मिला कि,
जगतीतल से उठ गये गुरुवर।
दुख हुवा उमड़े झट आंसू,
ढुलक पड़े टप टप वसुधा पर।।
सोचा पुन्य जन्म लेख स्वामीजी,
जन हित करने थे आये।
जन हितकारी दास नरोत्तम,
के हित जग क्यो ना अकुलाये।।
भारत माता के थे सपूत,
निज आत्मजगरण के परिपालक।
सत सेवक मानव समाज के,
ज्ञान प्रतिष्ठित थे संचालक।।
अविज्ञात नही है, तुम्हारी,
सेवा से कोई परिचित प्राणी।
सदा तुम्हारे गुण गायेगी,
हर राजस्थानी गुण गायेगी,
हर राजस्थानी की बाणी।।
शोक आह! छा गया जगत में,
कैसे उसको दूर हटा दूं।
'श्रद्धान्जलि' के समय शेष कर,
किसी मरण का दोष भला दूं।।

५२२, चौतीना कूवा
बीकानेर (राज०)

नरोत्तम दास स्वामी

सुशील कुमार व्यास

पतळा, ठीक-ठाक लम्बा, आंख्यां पर चश्मो लगायोड़ा, काळो कोट पेरियोड़ा स्वामीजी लोगां ने मिल जांवता। स्वामीजी रो जन्म निपुर निराळै घर में हुयो। बांरा बाप आपरी गाडी आटो मांग'र चलावतां पण स्वामीजी अर उणरा छोटोड़ा भाई भणनने लाग्या।

स्वामीजी ने सुरु सूं लिखण पढण रो शोख हो। अठे बीकानेर) री डूंगर कॉलेज में पढांवती टेम बां एक हाथां सूं लिखियोड़ी पत्रिका विद्याधरजी रे साथे निकाळने लाग्या। बी रे मांय राजस्थानी री रचनाओं ने चोखो स्थान मिलतो।

हिन्दी रा मास्टर हुवंते थके बों राजस्थानी भाषा रै विकास में घणों योग दियो। बीकानेर रे गुण प्रकाशक सज्जनालय री छत माथे बे गोष्ठीयों रो आयोजन करता। इण रै मांय आवण वाळै वास्ते आ जरूरी हुवती कि बो आपरी कोई नुवीं रचनाने सुणावें। ई गोष्ठीयों में राजस्थानी रा मोजिजता लेखक मुरलीधर व्यास, नाथुराम खडगावत अ'र श्यामजी एडवोकेट रे साथे दूजां लेखक आपरी रचना सुणावतां। ई गोष्ठीयों रो सिलसिलो कई वर्षों तक चालतो रेयो।

स्वीमीजी राजस्थानी भाषा रे विकास में घणों सहयोग दियो। बांरे सहयोग सूं मुरली धर जी व्यास राजस्थानी भाषा री कहावतां रो सम्पादन करियो।

स्वामीजी आपरे साथे वाळां श्री ठाकुर रामसिहजी, मुरलीधर जी व्यास, चेतन प्रकाश रंगा आदि रे सहयोग सूं अखिल भारतीय राजस्थानी सम्मेलन दीनाजपुर करवायों। स्वामीजी हिन्दी अर राजस्थानी रे अलावा संस्कृत अर पाली रा चोखा जाणकार हा।

स्वामीजी ई दुनियां रे माय कोयनी पण बारी याद हमेशा-हमेशा रे वास्ते राजस्थानी भाषा रे विकास साथे जुडियोड़ी रैयसी।

कीकाणी व्यासों रो चौक,
बीकानेर

वन्दे महापुरुष ! ते चरणारविन्दम्

रुद्रकुमार बी. ए. एल-एल. बी.

प्रात: स्मरणीय परम पूजनीय स्वामीजी अबै आपां रै बीच को रैयानी पण उणां रो सरल सभाव उणां री मुधरी मुसकान अर उणां रो नेह–भरचो सुन्दर व्यवहार भुलायां ई को भूल्यो जा सकैनी । अबै जद कदैई मैं उणां रै कमरै रै खनकर ई निकळू हूं तो उणां रो भाव भीनो चेहरो म्हारै सामनै आ आवै अर बां नै बठै न इं देख'र आंख्यां सूं माडाणी ई आंसू झरण लाग जावै । अेकर तो इयां लागै जाणै मामोसा अबार हेलो पाड़ण आळा है पण अबै उणां रो बो हेत भरचो बुलावो कठै सुणण नै पडचो है !

नींव री ईंट रो मुतलब म्हारी समझ में अबै आयो है । कित्तो बड़ो हाथ हुवै है नींव री ईंट रो अेक भवन नै ऊभो राखण में । सगळै भवन रो भार आप रै सीनै पर सम्भाळतां थकां ई बां चुसकारो तक को करैनी । कंगूरां री तरै आप रो प्रचार करण री बात तो दर किनार, बा तो उण कंगूरां नै पनशवण में ई आप रै त्याग अर बलिदान री सार्थकता समझै है । श्री स्वामीजी ई नींव री ईंट री तरै आप रै जीवण रो घणमोलो बगत राजस्थानी भाषा अर साहित्य री श्री बृद्धि करणै अर उण नै चमकावण में अर्पित करचो हो । कंगूरा बणण री बां कदै ई को सोची नी ।

मैं म्हारो बाळपणो मामोसा रै कनै ई बितायो अर बांसूं पिता रो-सो स्नेह प्राप्त करचो । जद हूं सात-आठ बरसां रो ई हो, बां मनै हिंदी में अनुवाद करचोड़ी बालमीकि रामायण, श्री मद्‌भागवत, प्रेम सागर, महाभारत बगैरै पोथ्यां पढण सारू दी । हूं खाली बगत में उणां रो पाठ करचा करतो । स्वामीजी री सदा ई आ चावना रैवती कै टाबर साचै जी सूं पढाई करै अर सदाचार नै अनुशासन में बध'र रै वै । टाबरां में बुरी आदतां अर उणां रा ऊधकबाड़ा देख'र उणां नै जरूर कदैई-कदैई गुस्सो आ जावतो, नई तो बां नै सदा ई टाबरां सूं प्रेम करता ई देख्यो जावतो । प्रेम अर भरपूर प्रेम ! घर में बड़ा लोगां री बात तो दूर, बै छोटा छोटा टाबरां नै ई जी कारै बिना को बतळावता नी । टाबरां खातर उणां रा दो संबोधन घणी बिरियां सुणण में आवता—भाईड़ा अर बावूली । उणां रो बो निश्छल अर प्यार भरचों व्यवहार म्हारै जीवन में बड़ो असरकारी नीवड्यो ।

गीता रै बारवैं अध्याय में लिख्यो है–

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केन चित् ।

श्री स्वामीजी इण श्लोकार्ध री प्रतिमूर्ति ई हा । निंदा अर स्तुति सूं बै सदा ई ऊपर रैया । उणां री निन्दा तो कदे ई सुणण में ई को आयी नी । जिको भी बां रै संपर्क में आवतो बां रो भक्त ई बण जातो फिर निंदा री बात ई कठै रैवतो । अेहड़ै महा पुरुष री स्मृति नै बारंबार नमस्कार ।

□

अणमोल स्मृतियां

आशाकुमारी शर्मा

काल री गति कुण सूं रुकी है। आ बात सगळा जाणै है कै जलम्यो जकै नै मरणो पकायत है। ईं दुनियां में मौत अर भगवान नै जिको हर बगत निजरां आगै राखै उण रो ई जीवण सार्थक है। आप सोच रैया हुसो कै मैं आ बहोत बड़ी बात कैय दी। पण सांची बात आ ही कै आदमी पळ पळ जीवै अर पळ-पळ ई मरै है। फेर भी वो मिनख जरूर अमर हु जावै है जिको दुनिया सारू अेक गहरी याद छोड़ जावै है। मौत जिन्दगी रो अेक खूबसूरत नांव है, अर जे हूं आ कैवूं कै जलम अर मृत्यु रै बीच रो शब्द जिदगी है, तो साव सोळै-आना साच है। जिंदगी सूं मिलणो इत्तो सुन्दर कोनी जित्तो कै उण सूं बिछड़णै रो अहसास। इत्ती सगळी बातां म्हारै मन रै सूनै आंगणै में हळचळ-सी मचा नाखी जद मैं सुण्यो कै म्हारा परम गुरूजी नरोत्तमदासजी इह लोक छोड'र परलोक सिधार ग्या। म्हारी आंख्यां आगै अेकरसी बांरो चेहरो घूमग्यो। बै म्हारै सूं घणो ई स्नेह राखता अर मनै प्यार में 'लाड कंवर बावळी' तक कैय दिया करता हा।

बात कठै सूं सरू करूं, म्हारी समझ में कोनी आवै। सगळी बातां आं गिणती-रा कागदां में आ भी को सकै नी फेर भी अन्तर रै उमाव नै थोड़ा-सा शब्दां में राखण रो लावो तो हूं भी लेवणो चावूं ला।

मैं वनस्थळी विद्यापीठ रै कालेज में बी. अे. री छात्रा ही जद म्हारी क्लासां कळा मंदिर रै आगै लाग्या करती ही। म्हांने कुण-ई कैयो कै थांनै हिन्दी साहित्यनूं वा गुरुजी पढासी। जद बचपन ई तो हो—पेड़ां रै नीचे टाट-पट्टियां माथै बैठ'र पढण रै साग-सागै उण माटी में गुरुवां री शकलां बणांवण मैं बड़ो आनन्द आवतो। हां तो म्हारा...... मैं कैय रैयी ही कै...... पैलो घन्टो लाग्यो। महांनै छोटेलालजी शर्मा रामचन्द्रिका पढावै हा, इत्ती चोखी कै और सूं पढण रो मन ई को करतो नी। जद सुणी कै स्वामीजी पढावैला तो बुरो घणो लाग्यो। अै व्याकरण कियां पढासी? स्वामीजी पधारया, म्हारै कनै। मैं अणमणी बैठी सोचै ही कै इसो मजो चखावूं कै दुबारा क्लास ई नइ लेवै। बोल्या—'कीं पूछणो है?'

मैं कैयो—'जी, आप ई पूछो।'

बै पूछण लाग्या—बतावो संधि कित्तो भांत री हुवै?

'जी, केई भांत री हुवै ?'

'जयां ?'

'जी, भारत–पाक संधि ।' स्वामीजी म्हारी चालाकी समझग्या पण बोल्या कोनी, हंसता रैया । फेर मनै समझा'र आगै पढावण लाग्या । मैं बो सब नइं लिख'र उणां री शकल बणावण लागी और लिख्यो--संधि विच्छेद—नरो + उत्तम = स्वामी; अर अेक चोटीधारी पंडित बणा दियो । स्वामीजी म्हारै कानी देख रैया हा पण मनै पतो कोनी हो । बै मनै पूछण लाग्या–'आशा, क्या कर रही हो ?' मैं—'जी, कैयो विच्छेद कर रही हूं ।' तो बोल्या—' बेटी, विच्छेद तो दुनिया ई करै है । तूं तो थारै नाम मुजब जोड़ करणो (अर्थात् संधि करणो) सीख अर सिखा ।' मैं नत हुयगी । गुरूजी रै आगै बा बात जद तो पल्लै कोनी पड़ी पण आज उण री गहराई समझ सकां हां । धिन है म्हारा बै दिन जिका मैं बनस्थळी में गुरुजी रै आगै बिताया ।

बातां घणी है । गुरुजी इत्ता सीधा अर सरळ हा जाणै गांधीजी री प्रतिमूर्ति हुवै । गांधी जयन्ती ही उण दिन । मोटा मोटा लोगां रा लांबा-चौड़ा भाषण हुय रैया हा । म्हारो नांव ई स्टेज माथै बोल्यो गयो । म्हारै नांव रो जद बोलणै (*oration*) रो सिक्को चालै हो । हरेक जगां अर हरेक विषय माथै बोलण रो उण वगत मनै सोख हो । सगळा जणा बोल्या–सत्य अर अहिंसा री साधना में ई गांधीजी आप रो जीवण सफळ बणायो हो । वक्तावां में उण बगत म्हांरा पूजनीय आपाजी (स्व० हीरालालजी शास्त्री) ई हा । पण मैं भी कम कोनी ही । नूंवो जोश हो । पूरै ठाठ सूं ऊभी हूय'र मैं म्हारी भावना सभा आगै दरसायी—'मानां हां कै सत्य सत्य ई हुवै पण उण रै स्वरूप में फैर-बदळ ई तो हुवतो रैयो है । गांधीजी री पूर्ण अहिंसा आपां नै कायर बणा देसी । अहिंसा री बात आपां शक्तिवान हुय'र ई कर सकां हां । अहिंसा रै कारण बिचारै अशोक नै मौर्य साम्राज्य रै पतन रो भागीदार बणणो पड़चो ।' आपाजी रो क्रोध रै मारचां बुरो हाल हु रैयो हो । पण उण बगत स्वामीजी बात नै संभाळी—आपाजी, गुस्सो कर'र अहिंसा री कीमत क्यूं घटावो हो । बाई रो जोश है । बात तो उण री भी सही है अर आप री भी सही है । सभा रै पछै मनै बुलाय'र स्वामीजी कैयो—आशा, तूं बोली तो घणी चोखी पण कीं लिखणो पढणो ई करचा कर । बस, पढ़ण रो नांव सुणतां तो हूं म्हारी बत्तीसी काढ'र फकदणी हंस'र भागगी ।

म्हारै सूं तीन-चार क्लास आगै हा लक्ष्मी शर्मा दीदी । बै उण बगत गुरुदेव स्वामीजी कनै ई पी-अेच. डी. कर रैया हा जद कै हूं तो पी-अेच. डी. रो मतळब ई को समझती ही नी । हूं बचपन सूं ई बनस्थळी में ए-बी-सी-डी. सूं पढी ही तो अपणै आप नै घणी सीनियर समझ्या करती । लक्ष्मी दीदी लेक्चरार बण'र म्हांनै पढावण लाग्या जद मैं देख्यो स्वामीजी कित्ती लगन अर नेह सूं बांनै ज्ञान-विज्ञान अर लोक-व्यवहार री बातां बताया करता हा । साचाणीज, गुरु अर शिष्य रो इत्तो सुखद अर प्रगाढ़ सम्बन्ध कठैई-कठैई ही देखण नै लाधै है ।

अबै म्हारै स्मृति-पटळ मांथै उतरै है सन् १९७६-७७ रो बगत। मैं अलीगढ़ विश्वविद्यालय सूं राजस्थान इतिहास रो विषय लें'र पी-ओच. डी. करण लागी ही। उण रै सिलसळै में मनै राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में सामग्री देखण सारू जावणो पड़्यो। शोध सारू अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रंथ दयालदास री ख्यात जद मनै बठै सुलभ को हुयी नी तो मैं स्वामीजी आगै म्हारी समस्या राखण नै गयी। मोकळा बरस बीतग्या हा। सोच्यो--स्वामीजी अबै सायद ई पैंचाणैला। पण बां नांव समेत मनै आछी तरियां पैंचाण ली अर फेर दयालदास री ख्यात रै अलावां और ई केई पुस्तकां राम जाणै कठै सूं मनै सुलभ करायी कै म्हारो ओकर रो अटक्योड़ो काम साव सोरो हुग्यो।

म्हारै सौभाग्य री कठै तांई सरावणा करूं। गुरुजी मनै लिख'र आप रो अमोघ आशीर्वाद प्रदान करचो हो–'कर्म सफलता का सबसे बड़ा मार्ग है।' साचाणीज, मिनख चल्या जावै है पण बांरी बातां याद आवती ई रैवै है। वनस्थळी विद्यापीठ री माटी नैं, जिण माथै हूं छोटी सू बड़ी हुयी, अर म्हारा पूज्य गुरुदेव स्वामीजी नै, जिकां म्हारै काची माटी रै व्यक्तित्व नै आप रै सुघड़ हाथां सूं ढाळचो, हूं कियां भूल सकूं हूं। स्वाभिमान, आत्मविश्वास अर सहनशीलता जिसा गुणां रो स्रोत मनै स्वामीजी रै विराट व्यक्तित्व सूं ई तो सुलभ हुयो है। मन गम्भीर हुवै है जद याद आवै है गुरुजी रो शांत, सौम्य स्वभाव ! जित्ता गहरा ज्ञानी हा बित्ता ई सादा अर सीधा हा स्वामीजी। ओकर उणां बतायो हो कै–'गुरु की पूर्णता शिष्य की सफलताओं में निहित होती है।'

ओक बार जाणै कांई बात माथै स्वामीजी ओम. ओ. री छात्रावां सूं नाराज हुयग्या। छेकड़ माफी मांग्यां वै राजो ई हुयग्या। धीमा–मुधरा मुळकता थका वै बोल्या हा–सच जाणो, गुरु आप री औलाद सूं ई ज्यादा आप रै शिष्यां नै चावै है। आ बात जद तो समझ में को आयी नी पण आज जद पढ़ावण रै काम में ई लागग्या तो वै सगळी बातां काच री तरै साफ-साफ निजर आवण लागगी।

मन रै कोरै कागद माथै आज गुरुजी री निरी ई बात्यां मंडी जा रैयी है कांई लिखूं अर कांई छोड़ूं ? पण कठै ई तो आदमी हारै ई है। ईश्वर री मरजी आगै किण रो जोर चालै। भगवान सूं आ प्रार्थना है कै जे वै गुरुजी रा ओक-दो गुण ई दे दै तो जीवण सार्थक हुय जावै। राजस्थान रै साहित्य अर जीवन री हर संम्भव सेवा में समर्पित हुय'र जीवन बितावणो ई गुरु देव री साची यादगार रैसी।

(१) C/o श्री गोपीलालजी शर्मा
बटक भैरव पाडा, बून्दी (राज.)
(२) अलीगढ़ विश्वविद्याय, अलीगढ़
(३) प्रवक्ता, इतिहास–विभाग
सरस्वती गर्ल्स कालेज
हनुमानगढ़ जंक्शन (राज.)

नरोत्तमदास जी स्वामी

डॉ० कल्याणसिंह शेखावत

राजस्थानी भासा रा मोबी सपूत, मानीता विद्वान अर सेवक नरोत्तमदासजी स्वामी अबै इण जगत में कोनी रिया ओ मानण में नीं आवै, पण आ हगीगत है। इण धरा रौ दस्तूर है'क जिकौ जलमसी उणनै मरणौ है। पण कई अैड़ा भी मानवी इण धराधाम माथै कदै-कदैई जलम लिया करै जिका मरयां पछै भी खुद रै सत्करमां सूं अजर-अमर रैवै। अैड़ा ही काळजयी मिनखां में नरोत्तमदासजी भी अेक हा। नरोत्तमदास जी स्वामी रामसिंघजी अर सूर्यकरणजी पारीक राजस्थानी भासा री जिकी सेवा करी है वा राजस्थानी साहित्य रा इतिहास में सोना रा आखरां लिखीजसी।

यूं तौ जद मैं कालेज में पढतौ जद सूं ही स्वामी जी रौ नांव सुण्यां करतौ, पण वारां सबसूं पैलां सन् १९६४ में दरसण हुया जद वे बनस्थली विद्यापीठ में हिन्दी रा विभागाध्यक्ष हा अर राजस्थान विश्वविद्यालय रा हिन्दी विभाग में 'पृथ्वीराज रासौ माथै भासण दैवण खातर पधारिया हा। मैं वां दिनां अेम. अे. में पढतौ हो अर हिन्दी साहित्य परिसद रौ मंत्री हो, जिण सूं स्वामीजी रै नैड़ो आवण रो म्हनै मोको मिल्यौ। स्वामी जी तीन दिन लगोलग अे भासण दिया। आं तीन दिनां में मैं स्वामीजी रै ग्यान सूं घणौ प्रभावित हुयो।

इणरै पछै १९७२ ताईं नरोत्तमदासजी सूं पाछौ मिलणौ नी हुयौ। पण १९७२ में २४. २५ अर २६ फरवरी नै राजस्थानी साहित्य सम्मेलन रौ जोधपुर में अधिवेसन हुयौ जद इण सम्मेलन रै संयोजक रै नातै बीकानेर गयौ अर सम्मेलन अधिवेसन री सारी रूपरेखा बाबत वांसूं सलाहसूत करी। स्वामीजी पूरी विगत सूणी, सुझाव दिया अर इण अधिवेसन नै सफळ बणावण में लूंठी भामका निभाई। बीकानेर राजस्थानी रौ गढ मानीजै है। सो स्वामी जी तौ सगळा साहित्यकारां नै साथै लै'र २४ फरवरी री सुबै चार बज्यां जोधपुर पधारग्या। ओ अधिवेसन इतिहासू सिद्ध हुयौ अर भोत ही जोरदार रियौ। इण अधिवेसन री अध्यक्षता नरोत्तमदासजी करी अर उद्घाटण हिंदी रा नांमी विद्वान श्री सचिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय करियौ अनै इण मोकै राजस्थान विश्वविद्यालय रा वां दिनां रा हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ सरनामसिंघ सरमा हा। इण अधिवेसन में स्वामीजी रौ भासण सुणण जोग हो। मातृ भासा प्रेम सूं

सराबोर अर राजस्थानी भासा रो उणरा ही धर में मान-सनमान नीं हूवण री पीड़ सूं दुखी सपूत री ओ भासण सुणणियां नै झकझोर दिया। वांरा अेक अेक बोल में मायड़ भासा सारू हैत, ममता अर गुमेज री भाव हो। म्हनै अजै वांरा बोल याद है। इण मोकै निकळी 'स्मारिका' खातर भेज्योड़ो वांरो कागद भी कम महताऊ कोनी। देखीजै —

"मातृ भाषा वा शक्ति है जकी जाति में जीवण भरै, जाति री उन्नति रा अेकमात्र आधार उण री भाषा और उणरो साहित्य है। जकी अभागी जाति आपरी मातृभाषा और आपरै साहित्य री उपेक्षा करै बा निष्प्राण और सत्वहीन हुज्यावै, उणरो उत्थान असंभव है। उणरो ऊपरलो पानो कदैई नहीं आवै। इण वासतै राजस्थानी भाषा और राजस्थानी साहित्य रै उद्धार और विकास रो प्रश्न आपां रै जीवण-मरण रो प्रश्न हूं।

जिण भाषा रै साहित्य माथै संसार रा बडा-बडा विद्वान मुग्ध है; महामना मालवीयजी और आशुतोष मुकर्जी जिसा महापुरुष जिणरी प्रशंसा करता नहीं धापिया, जकी भाषा कुण जाणै किता प्राणां में नव जीवण रो संचार कर चुकी है; जकी प्रताप, दुर्गादास और मीरां री मातृ भाषा रही है, उणनै उणीरा सपूत उपेक्षा री दृष्टि सूं देख रिया है और अेक गंवारू बोली मात्र बता रिया है इणसूं बेसी दुख' परिताप और लज्जा री बात और काईं हूसी!

मातृभाषा और उणारा साहित्य रै अभ्युत्थान रै वासतै इण महान यज्ञ री आयोजना करनै आप ओ घणों अभिनंदनीय काम करियो है। हूं आपरै प्रयास री पूर्ण सफळता री कामनां करूं हूं और आशा करूं हूं कै इणरै फळ-सरूप राजस्थानी भाई आपरै सरूप नै पिछाणन में समर्थ हूसी और राजस्थानी भाषा और साहित्य रै अभ्युत्थान री दिशा में ठोस, पक्को और पायैदार काम हूसी।"

राजस्थानी साहित्य सम्मेलन रौ जोधपुर अधिवेसन पूरौ हुयां पछै मैं अर सौभाग्यसिंघजी सेखावत, वां दिनां रा राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) रा अध्यक्ष पं. जनार्दन जी नागर सूं मिलण खातर उदैपुर गया। नागर जी जोधपुर अधिवेसन री सानदार सफळता सूं घणा राजी हुया अर जातां ही हिन्दी में कैवण लागा—आप बताइए अब मैं राजस्थानी भाषा के विकास के लिए क्या कर सकता हूं। आपके इस शानदार समारोह से मुझे विश्वास हो गया है कि आप लोग अपनी मातृभाषा के लिए बड़े से बड़ा काम कर सकते हैं।"

जद मैं नागर जी नै कैयो के आप चावो तौ राजस्थान साहित्य अकादमी रा बजट सूं पचास हजार रिपिया अलग राख'र राजस्थानी भासा री बढोतरी खातर ही खरच करण री व्यवस्था करावौ अर इण सारू कार्य समिति भी अलग बणै-जै फिल-हाल इत्तौ हू सको तौ काम आगै बढै। नागरजी इण सारू राजा व्हैगा अर दूजै ही दिन आज रा राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) री रूप रेखा, कार्य समिति

अर बारह व्योहार रा काण कायदा बण्या अर इण खातर राजस्थान सरकार री मंजूरी लैवण नै वां दिनां रा राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर रा निदेशक डॉ. देवीलालजी पालीवाल नै लै'र जैपर पूगा अर सरकार री मंजूरी ली !

इण मोकै नागरजी म्हनै कयौ कै राजस्थानी साहित्यकार मिल'र अेक मता सूं ओ तय करै कै इण राजस्थानी साहित्य संगम रौ दफतर कठै राख्यौ जावै अर पैलड़ा सभापति कुण है। आप दस दिनां में राजस्थानी साहित्य सम्मेलन कानी सूं औ दोनूं बातां लिख भेजौ तौ संगम रौ काम वेगो सरू व्है सकै। उण समै मैं नागरजी नै संगम दफ्तर खातर बीकानेर अर सभापति खातर नरोत्तमदास जी स्वामी रा नांव सुझाया। नागरजी स्वामीजी रै नांव खातर झट त्यार हूग्या अर संगम रा दफ्तर खातर सगळा राजस्थानी साहित्यकारां सूं सलाह कर'र लिखण री बात कई।

जोधपुर पूगतां ही मैं इण बाबत स्वामीजी अर बीजा मोजीज साहित्यकारां नै कागद दिया। स्वामीजी रो तुरंत पड़ूत्तर आयौ - बौ सुधी पाठकां सामी राखणी चावूं जिणसूं कै राजस्थानी भासा सारू वांरा हेत अपणास रै साथै साथै बीकानेर खातर हैत रो परतख दरसाव मिळै। मूळ कागद इण मुजब है —

बीकानेर

दि० ११. ३. ७२

श्री कल्याणसिंह जो साब,

आपरो ९-३-७२ रो कागद मिलियो। अकादमी रो म्हां बीकानेर वालां नै कोई लाभ नहीं है पण न्याय री बात तो आ हीज है कै अकादमी बीकानेर में हुवै। जोधपुर में प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान है, संगीत नाटक अकादमी है। पण बीकानेर नै हाल तांई कीं नहीं मिळियो है, दूजी बात राजस्थानी रो काम करणिया भी बीकानेर में ज्यादा है और अठै साहित्यकारां में प्रेम भाव है–किणी तरै रो विरोध नहीं है। उठै जोधपुर में तो लोग अेक बीजै नै सहन नहीं करै जिसा लाग्या। अठै तो सब लोगां री आ ही राय लागै है। आप अठै पधार सको तो घणी आनन्द री बात, आवण सूं पहली इणां लोगां नै सूचना करा दिरावसो–विद्याधरजी शास्त्री तथा मनोहरजी शर्मा, राजस्थान विश्वभारती, नागरी भण्डार, बीकानेर, मूळचन्दजी प्राणेश, भारतीय विद्या मंदिर, रतनबिहारोजी रो मिंदर बीकानेर, श्रीलाल नथमल जोशी, सोनगरी कूवो, बीकानेर, मुरलीधरजी व्यास, लालाणो व्यासां रो चौक, बीकानेर अगरचंदजी नाहटा, नाहटा रो चौक, बीकानेर।

राजस्थान रा साहित्यकारां री मनोवृति विचित्र है, ना काम करै, ना करण दे। अकादमी नै किसी सोरै सास चालण देसी। भगवान करै सो ठीक है। कर्मण्येवा विकारस्ते, अस्तु। विशेष आनन्द।

भवदीय

नरोत्तमदास-स्वामी

देवजोग सूं दोनूं बातां सांची हुई । राजस्थानी भाषा साहित्य संगम री थापना हुई, स्वामीजी री इंछा मुजब दफ्तर बीकानेर में ही राखीज्यौ अर संगम रा पैला सभापति भी स्वामीजी ही बण्यां । आप ही संगम री पत्रिका 'जागती जोत' रो नांव राख्यौ अर उणरा दो जोरदार अंक निकाळया जिका आज भी न्यारा दीसै ।

इणरै पछै भी नरोत्तमदासजी स्वामी सूं म्हारौ लगातार सम्बंध बण्यौ रियौ । वे भोत कम बोलता पण वांरी दीठ गैरी अर आगीबाण ही । करम सारू वांरी लगन अर निष्ठा—गीता रा निष्काम भाव सी लागती । वांरा मोती सा आखर, साफ सुथरी लेखन अर सम्पादन री कळा राजस्थानी भासा रा विकास में बड़ी मेहताऊ रैयी । मैं वांनै राजस्थानी भासा रा महवीर प्रसाद द्विवेदी मानूं जिका राजस्थानी भासा नै तरासी, सजाई संवारी अर भारत री ही नीं आखै जगत री भासावां री सन्मान सूं खड़ी हौवण जोग बणाई । स्वामी जी री बताई वरतनी अर व्याकरण सूं राजस्थानी रौ जिकौ माणकरूप बणै वो ही सैसूं आछौ है । स्वामीजी राजस्थानी भासा री जिकी सेवा करी है उण सारू आखौ राजस्थानी समाज वांरौ सदियां रिणी रैसी ।

आज तदकै स्वामी जी री सबसूं ज्यादा जरूरत ही वे आपणै बीच कोनी रिया—पण वांरौ नांव-वांरो काम हमेस रैसी । ईस सूं आ ही अरदास है कै बो स्वामी जी नै मां राजस्थानी री आधी-अधूरी सेवा पूरी करण खातर अेकर फैर इण संसार में भेजे । उण आदर जोग आत्मा नै नमन सेतौ ।

अध्यक्ष राजस्थानी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय जोधपुर ।

इतिहासवेता-स्वामीजी

डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा एम. ए., पी. एच. डी.

स्वामीजी नै साहित्यकार रै रूप में सगळा ही जाणै है। बां आपरो सगळो जीवन साहित्य-सेवा में ही गुजारियो हो। पण आ बात थोड़ा ही जाणै है कै स्वामी जी साहित्य रै साथै इतिहास अर पुरातत्व रै संग्राहन कर शोधक-रूप में भी काम करियो हो। राजस्थान री करीब करीब सगळी शोध संस्थावां अर बांरी शोध पत्रिकावां सूं स्वामीजी रो गहरो सम्बन्ध हो। बां आं शोध संस्थांवां, विशेष रूप सूं अनूप संस्कृत पुस्तकालय अर सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट रै माध्यम सूं राजस्थानी अर इतिहास सूं सम्बंधित घणी अज्ञात रचनांवा रो सम्पादन करियो। इण ग्रन्थां रो 'जागती जोत' रै इण अंक में दूजा लेखकां स्थान-स्थान माथै उल्लेख करियो है। दयालदास री ख्यात रै पैलै खण्ड रो सम्पादन तो बां हाथ में अबार तांई ले राख्यो हो। अै ग्रन्थ आज राजस्थान रै इतिहास नै जाणण सारू सन्दर्भ ग्रन्थ बणग्या है। बां हस्तलिखित ग्रंन्था नैं संजोय राखअर बांरी लेखा ठीकाअर सम्पादन करण रो घणो कोड हो। बांरै कनै राजिया रा दूहा, ढोला मारू रा दूहा, पृथ्वीराज रासो, रुकमणी मंगल, पंच तंत्र–बालाव बोध अर फूटकर दोहा अर सैकड़ा हस्तलिखित गुटका अर पोथियां रो मोटो संग्रह हो। जे आ बात कैयी जावै कै स्वामीजी जन्मजात ई प्राचीन जीर्ण शीर्ण अर अप्रकाशित ग्रन्थां रा उद्धारक हा तो गळत को हुसी नी। अठै आ बात बतावण जोग है कै जद स्व० दीनानाथ खत्री आपरी पुस्तक 'बीकानेर राज्य का इतिहास' लिखण लाग्या तो स्वामीजी बी में नूंवा नूंवा संशोधन अर राठोड़ां री उत्पत्ति रै सम्बन्ध में महत्वपूर्ण नई जाणकारी दीवी अर पुस्तक री भूमिका लिखी। स्वामीजी एक आछा पुरालेख शास्त्री भी हा बां आपरे घर में संग्रही हस्त-लिखित कागदां रो आधुनिक अभिलेखीय पद्धत्ति सूं परिरक्षण कर राख्यो हो। बांनै दीमक सूं बचावण सारू कीटनाशक दवायां छिड़क्या करता। घणकरा हस्तलिखित कागदां री तो बां माइक्रोफिल्म बाणार आपरै कनै राखली ही। स्वामीजी पुरा लेख शास्त्री रै साथै पुरातत्व वेता भी हा। घण करा लोग इण बात नै को जाणै नी कै स्वामीजी श्री अगरचन्द जी नाहटा रै साथै जैसलमेर क्षेत्र रै जैन अभिलेखां रै सर्वेक्षण में मोकळो हाथ बंटायो हो। स्वामीजी जद कदेई नूंई जग्या जाता तो वै मौको पड़तां ही बठै री देवलियां, शिलालेखां रो गौर सूं अध्ययन करता अर बांरी छापां उतार लेता

हा। उण शिलालेखां रो गौर सूं अध्ययन कर'र वांरो काळक्रम निर्धारित कर दिया करता हा। स्वामीजी रै खुद कनै हजारां री संख्या में छोटा मोटा संखिया अर चीकणा ठड्डा हा जिण रै आधार सूं बै बताया करता हा कै कदेई राजस्थान रै इण मरू स्थल में समंदर हिलोरा मारिया करतो हो। इण रै साथै ई वांरो अैतिहासिक चीजां रो संग्रह भी अपणै आप में निराळों हो।

स्वामीजी खुद नो डक्टरेट कोनी करी ही पण वांरै देख रेख में मोकळा विद्यार्थियां पी०एच० डी करी ही। साहित्य रै साथै साथै इतिहास रा शोधार्थी भी वासूं मार्गं दर्शन प्राप्त करिया करता हा। बीरो कारण ओ हो कै राजस्थान इतिहास री घणकरी सामग्री जूनी राजस्थानी में मिलै है। जिण री लिपि अर अर्थ समझावण में स्वामीजी एक मात्र अधिकारिक विद्वान मान्या जाता हा। राजस्थान में जद कदेई किणी शोधअध्येता रै सामनै लिपि सम्बन्धी कोई मुसकल आवती तो बो दौड़्यो दौड़्यो स्यामीजी री सेवा में हाजर होतो अर स्वामीजी उणरी शंकावां रो समाधान पूरै सन्तोष सूं कर दिया करता हा।

बीकानेर री अैतिहासिक परिचर्चावां में उणां रो विशेष योग रैया करतो हो। भारत प्रसिद्ध इतिहासकार स्व० डॉ० दशरथ शर्मा जिका स्वामीजी रा साथी भी हा, री स्मृति में जद हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर डॉ० रघुवीरसिंह सीतामऊ कनै "राजस्थान रा इतिहासकार" नाम सूं डाँ, दशरथ मेमोरियल लेक्चर दिरवायो तो बीं आयोजन री अध्यक्षता स्वामीजी ही करी। स्वामीजी रो अध्यक्षीय भाषण आज भी इतिहास रै विद्यार्थियां रे वास्तै चुनौती रूप में मनीजै है। अतं में मैं आ बात कैवणी चावूंला कै स्वामीजी री इतिहास नै जिकी देन है बींरो अबार तांई किण ही मूल्यांकन को करियो नी। जिण दिन उण रो मूल्यांकब हो जावैलो उण दिन राजस्थान रै सामाजिक नै घणी नूंई नूंई बातां रो बेरो पड़ैलो।

सहायक निदेशक, राज० रा० अभिलेखागार, बीकानेर

△

संस्मरण

श्री यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र'

किणी रै बारै में कीं भी लिखणो अर खरो-खरो लिखणो घणो दोरो ! फेर श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै बारै में लिखणो भोत-भोत दोरो ! स्वामीजी रो कद जित्तो छोटो हो, व्यक्तित्व उत्तो ही विराट। कणांई-कणांई लागै के स्वामीजी जित्ता धरती माथै हालता हा, बीं सूं तीन गुणां बै धरती रै मांय हा ! अेक रहस्य हो स्वामीजी रै विराट व्यक्तित्व रै चारूंमेर !

हूं उणां सूं कई दफै मिलियो, काम सूं अर-बिना काम सूं ! स्वामीजी गंभीर अर मित भाषी। लागै जिको मिनख इत्ती इत्ती पोथ्यां लिखै, गंभीर अर नीरस भासा साहित्य री समस्यावां सूं चौसठ घड़ी माथाफोड़ी करै, बो मिनख कमसूं कम दोलड़ो जीवण नीं जीवै। उणांरो सरजन पढ़णै सूं उणां रै उणियारै रो जिको चित्तराम बणै-बो उणां सूं मिलणै रै पछै सोलै आना सही उतरै।

सांचैली स्वामीजी इण जीवण रो कीं न कीं अदीठो संत्रास ढो रचा हा। बो संत्रास अजाणो हो। उण री अेक भीणी चादर उणां रै चारूंमेर टंगियोड़ी रैवती बा अदीठी अर दुखदाई चादर स्यात् उणां री महाजातरा ताईं नीं तूटी।

म्हैं अेक दिन उणां री लायब्रेरी रै मांय बैठचो हो। अणगिणत किताबां ! लागै स्वामीजी इण किताबां रै ही आस्तै जलम्या है उणांरै हाथां रै मांय राज-स्थानी री किताब ही।

मन्नै देखतै पाण बोल्या "कद पधारचा।"

"थोड़ी ताळ हुयगी।"

अठीनै-वठीनै अेक मून हो।——खुभणियो मून ! ऐड़ो मून जिकै रो अण-भव घणां लोगां नै नीं हुवै——अेक सिसिएआली कंवली-कंवली पीड़ नै लियोड़ो मून।

बै इत्तो बोल फेरूं चुप हुयग्या।

सोचण लाग्यो-बावनै अवतार री तरियां तपस्या में खोयोड़ा स्वामीजी फेर

असवाड़े-पसवाड़े री दुनिया सूं न्यारा होयनै किताब पढ़ण में लाग्या ! कुण आयो नै कुण गयो उणां नै कीं भी चिंता नीं ।

म्हैं ही मून तोड़ियो, "स्वामीजी म्हैं अेक नूंवों उपन्यास लिखचो उण रै बाबत आपसूं कीं बात करणी चावूं ।"

"उणां किताब नै बंध करदी अर एलर्ट होयनें म्हांरीं खानीं टीकीबम हो यनै जोवण लाग्या ।

'हूं गोरी किण पीवरी' सूं अेकदम न्यारै वेस रो अुपन्यास है—जोग-संजोग !

अर म्हैं उणां नैं मोटे-रूप में उण अुपन्यास रो कथानक बतायौ !

वै बिचारता रया । उणां रै उणियारै माथै भांत-भांत रै संघर्ष री लिकाड़ां बणीं अर मिटीं ! बोल्या," राजस्थानी रै अुपन्यासां नै हाल ताईं घणी जात्तरावां करणी पड़सी ... कथ्य, सिल्प, सैली अर भासा री दृष्टि सूं घणाई पड़ावां तै करणा बाकी पड़िया हैं । सगलां सूं वेसी चिंता तो अेक बात री लागै–भासा री अेकता री ...... हूं आ नीं कैणो चावूं के राजस्थानी री बोल्यां रै माथै अेक बोली नैं लाद दै पण सगळचां बोल्यां री विशेषतावां सूं अेक सांतरी सम्पूर्ण भासा तो बणणी चाहीजै ! इयै रै बिना आपां रै साहित्य नै घणासारा पाठक नीं मिलै भिणनै री भासा तो अेक होवणी ही चाहीजै ! इण रै आस्तै सगलां लेखकां नै आपरो हठ छोडपरा अेक निश्चित नियम अपणावणी पड़सी ।

हूं बिचाली बोल्यो, "स्वामीजी, अेक निश्चित जोड़नी जयपुर री अेक बैठक में बणाई पण किणी-लिखारे ईमानदारी सूं उण माथै अमल नीं करियो ।"

कंजूसी सूं बोलणिया स्वामीजी थोड़े तीखे सुर में बोल्या, "सैंग आप-आपरी डफली बजावै अर आपरी रागां गावै इणी वजै सूं तो राजस्थानी आपरो सही विकास नीं करै !

"आप इण आस्तै अेक रचनातमक आंदोलन क्यूं नी करौ ?"

स्वामीजी रै होठां माथै अेक मुळक दोसी अर बोल्या," सैंग मिनख सैंग तरियां रा काम नीं कर सकै ! फेर आप मोटचार हो आप ओ काम चोखी तरियां कर सकौ ।"

"सगलां राजस्थानी लिखारां में इणी पलायण री भावना री वजै सूं कोई ठोस काम नीं होय रयो है ।" हूं भी थोड़ो तीखो होयनै बोल्यो, "हूं सोचूं के इण रै पछै आपां री सुविधाभोगी प्रवृति काम करै । आपां सगलां राजस्थानी चायै बै किणी वरग रा हुवै बस पांडा ज्यूं पसर खावण में विस्बास राखां अर ऊपरछाळी बातां करां ।

होवणो ओ चाहीजै के भासा री समस्यां नै मरणै-जीणै री समस्या जेड़ो महत्व देवै । जणै ही राजस्थानी भासा आपरी असल गरिमा नै पावैला ।"

बै चुप हुयग्या ! लांबी चुप्पी धारण करली । मन्नै लागियो के आत्म केन्द्रित स्वामीजी बारली-बात्यां रै मांय अुलझणा चावै कोनी । आपरै काम सूं काम राखणियां स्वामीजी दिशा-निर्देश तो कर देवेला पण अेक जुझारू ज्यूं जुध में खड़ग लेयनै जूंझणो नीं चावै !

सेवट स्वामीजी अेक चिंतक हा अेक माळिये में बंद होयोड़ा बै खाली सृजन तो करलेवता पण किणी विचारधारा नै रचनात्मक रूप देवण री प्रक्रिया सूं बै घणा आगा रैवता !

कणैई-कणैई आ लागती के स्वामीजी थांरी-म्हांरी करणै सूं कोसां दूर रैवता रिंदरोई जेड़ो सरनाटो ही बियांनै चोखो लागतो इणगी-उणगी— असवाड़े-पसवाड़े अर लारै-अगाड़ी सगलां पासी उणांनै अेक सरनाटो चाहीजतो— एड़ो सरनाटो जिको उणां रै लिखाटै व पढ़ाटै नै ओर घणो उकसावतो इणी वजै सूं हूं आ कै सकूं के स्वामीजी खाली आपरै मांयलां घणासारा स्वामिजियां रै वास्तै ही जीवता ।

इण एकांत प्रेम रै पछै मन्नै अेक बात दूजी लागै के स्वामी जी भोत ही स्वाभिमानी हा·····किणी बड्डै-छोटै रै सामै रुळ···-रुळ करणो बां नै चोखो नीं लागतो !

स्वाभिमान री अेक घटना मन्नै रिटायर्ड पुलिस अफसर श्री ठाकुरदास जी बताई । आ घटना सुणन जोग है—

जद स्वामी जी डूंगर कॉलेज रै मांय भिणावता हा·····उण दिनां भी कालेज रो अेक छापो छपतो हो·····उणां में अेक लेख छपियो के "हक है"···हक···

किणी चुगलखोर नै जज एहसानउल हक (सुणनै में आवै के पाकिस्तान रै राष्ट्रपति रा अै बाप हा) रा कान भर न्हाखिया के ओ लेख थारै माथै है·····हक साब री गंगासिंह जी रै अगाड़ी खूब चलती हो··· बां गंगासिंह जी नै उलटी-सुलटी पाटी पढ़ा दी के अबै तो कालेज रै मांय हळगळ माचगी । स्वामीजी उण छापे रा सम्पादक हा सगळो दोस बियां माथै आ पड़ियो गंगासिंह जी ठैरिया कूट नीतिज्ञ, बस स्वामीजी नै बुलाय नै अंट संट कैय काढ़ियो । स्वामीजी पथ्थर रा देवला बणियोड़ा रैया स्वामीजी नै गंगासिंह जी देस निकाळो दे न्हाखियो !

स्वामीजी जावण लाग्या जद प्रेमसिंह जी अर सूरजमालसिंह जी राजा जी नै समझाया के जुबली रो मोकळो काम स्वामीजी नै भोळायोड़ो है जदि बै गया परा तो आपां नै घणो घाटो हुवैला —स्वामीजी आपरी धूड़ रा हीरा है राजनीति सूं बियां रो कोई भी लेणो देणो कोनी !

"फेर नरोत्तम नै कँयो के बो म्हांसू छमा मांगं।" गंगासिंह जी कँयो।

पण स्वामीजी इण खातर तैयार नी हुया। उणांगी सूर्यशंकर जी पारीक उणां नै पिलाणी आवण खातर कैयोड़ो हो। ठाकुरां घणोई ऊंचो-नीचो लियो, परदेसां री दोरप-सोरप समझाई ~~ फेर राजी किया के थै खाली हाथ जोड़ दिया।

स्वामीजी आज आपां रै बिचाळी कोनी। बियांरी काया माटी मिलगी पण कदैई-कदैई लागै स्वामीजी री आत्मा रा निराई टुकड़ां हुयग्या अर बा आपां सगळां रै मांय बड़नै—चिरला-चिरला नै कैवै के राजस्थानी में लिखो, भिणो अर बोलो।

साले की होळी
बीकानेर

श्रद्धांजलि रा दूहा

श्री सौभाग्यसिंह शेखावत

पिंडत आखर पारखी, विध विध कायब बोध।
स्वामी सुरग सिधारियो, जाणण रुयातां जोध।।
कुण स्वामी विवनो कहै, स्वामी साहित सूर।
आदित ज्यूं मर मर उगै, सूरि नरोत्तम सूर।।
मीठा वचन मऊख सा, अम्रत भरियो कूप।
अैड़ो नर किम बीसरां, स्वामी रतन अनूप।।

C

केई संस्मरण

मूल –डा० मोतीलाल गुप्त
अनुवाद–श्रीमती जयश्री शर्मा

बीकानेर आवतो जद आदरणीय नरोत्तमदासजी स्वामी सूं मिलण रो मौको प्राय: मिल्या करतो पण अबकलै जद हूं अठै म्हारै आयुष्मान पुत्र डा० लक्ष्मीनारायण रै निवास पर आयो तो अेक सज्जन बतायो कै स्वामीजी रो शरीर शांत हुग्यो। बहोत दुख हुयो, सागै ई निराशा भी क्यूं कै उणां रै साथै रैवण रा नै काम करण रा मनै घणा मौका मिल्या है।

जोधपुर विश्वविद्यालय रो जलम हुयो जद म्हारो तबादलो उदयपुर हुग्यो अर मनै रिटायर्ड स्वामीजी रै सागै रैवण रो मौको मिल्यो। मोकळा विषयां माथै चरचावां हुयी अर उणां रै गम्भीर पांडित्य, भाषा–सामर्थ्य नै साहित्यिक अनुभवां सूं मैं बोहळो प्रभावित हुयो। इण सूं पैलां मैं पृथ्वीराज रासो रै प्रसंग में उणां री लिख्योड़ी केई बात्यां पढ़ी ही अर राजस्थानी भाषा नै साहित्य संबंधी लिख्योड़ा बां रा केई लेख बांच्या हा। संस्कृत में उणां री अबाध गति अर दक्षता रो प्रमाण ई मनै मिल्यो जद मै मध्यप्रदेश में स्वीकृत उणां री अेक रचना री रायल्टी रो पांच अंकां में लिख्यो चैक देख्यो। जठै कठैई राजस्थानी रो प्रश्न आवतो तो स्वामीजी रा विचार बड़ी श्रद्धा अर आदर रै सागै मानीजता क्यूं कै राजस्थानी में जिको भी साहित्य लिखीज्यो है अर लिख्यो जा रैयो है उण रा वै सूक्ष्म द्रष्टा हा। भाषिकी ज्ञान में स्वामीजी री बराबरी कोई विरलो ई कर सकै हो अर मनै याद है कै कैई वेळा मैं म्हारी भाषा संबंधी शंकावां बांनै लिखी ही अर बांरा घणा ही उचित अर संतोषजनक उत्तार मनै टैमसर मिल्या हा। स्वामीजी री विशेषता ही कै विरामचिह्न, शिरोरेखा, कारक और क्रियापद रा प्रयोग वै बड़ी सावधानी सूं करता और हूं तो अठै तांई मानण लागग्यो हो कै बांरै हाथ रो लिख्योड़ो अेक मामूली पोस्ट कार्ड ई भाषा अर व्याकरण रै विद्यार्थी सारू घणमोली सामग्री जुटा सकै है। इत्तो सजग अर सागै ई सरळ, भाषिकी विद्वान केई दशकां तांई आप री प्रतिभा सूं राजस्थान री भासा अर साहित्य रो संवर्धन करतो रैयो अर म्हारो विश्वास है कै उणां रो बणायोड़ो मारग साहित्य, समीक्षा अर भाषा रै क्षेत्र में मोकळा बरसां तांई काम आसी।

दो-तीन बातां याद ग्रावै है परम पूज्य स्वामीजी रै प्रसंग में जिक्यां सूं उणां री उदारता, सरळ जीवण, चिंतन ग्रर ग्रातमीयता रो बेरो पड़ै है। जोधपुर विश्वविद्यालय में जद हूं हिन्दी विभाग रो ग्रध्यक्ष हो, जद स्वामीजी रो म्हारै घरै स्वागत करण रो मनै केई बिरियां मौको मिल्यो। सगळां सूं पैली स्वामीजी रो ग्रो ही ध्येय रैवतो कै पैलां काम री बात री विस्तार सूं चरचा करणी। जठै तांई उणां रै भोजन वगैरै निजी जरूरतां रो सवाल हो, बै कदैई किणी नै ई कोई खास तक-लीफ को देवता नी। उणां रै घर में रैवण सूं इयां लागतो जाणै परिवार रो कोई बुजुर्ग परिवार रै टाबरां रो ध्यान राख रैयो हुवै। म्हारी पत्नी ई जद पूज्य स्वामीजी रै निधन रा समाचार सुण्या तो मोकळी ई स्मृतियां ग्रर सुखद ग्रनुभव जाग उठ्या ग्रर म्हां दोनां नै इयां लाग्यो जाणै म्हारै परिवार रो ई कोई निकटतम बुजुर्ग म्हांनै छोड़ गयो हुवै।

मनै याद है, केई शोधार्थियां री मौखिक परीक्षा सारू स्वामीजी रो ग्रावणो हुयो ग्रर जिकी ग्रात्मीयता ग्रर सहज स्नेह सूं स्वामीजी शोधार्थी रो जी जमावता बा ग्रद्‌भुत हुवती। सबसूं पैलो बां रो वाक्य उत्साह बधावणग्राळो हुवतो। बै प्राय: ग्रा ही कैवता—बे बड़ी निष्ठा रै साथै बहोत ग्राछो काम करचो है, म्हारी बधाई मानो। इण सागै ई शोध प्रबंध नै ग्रौर ग्राछो ग्रर उपयोगी बणावण सारू बै जिका सुझाव देवता बै बडा कीमती हुवता। मौखिक परीक्षा रै सिलसिलै में मनै ई बां केई बिरियां याद करचो ग्रर उणां रै विद्वत्तापूर्ण निर्देशन, कार्यक्षमता, कर्त्तव्यनिष्ठा, बगत री पाबंदी नै शोधार्थी रै ज्ञान सूं मैं सदा ई प्रभावित हुयो हूं। उणां रा दो प्रिय शिष्य डा० सत्यनारायण स्वामी ग्रर डा० लक्ष्मी शर्मा 'कमल' सूं शोध रै सिलसिलै में इत्तो गहरो संबंध हुयग्यो कै बो ग्राज ग्रौर गहरो हुवतो जा रैयो है।

ग्रेकर राजस्थान बोर्ड म्हां दोनां नै हाई स्कूल सारू ग्रेक किताब लिखण रो कैयो। स्वामीजी पद्‌यभाग लियो ग्रर म्हारी रुचि गद्‌य में देख'र बां मनै गद्‌य-भाग दियो। पद्‌य रो काम तो बां पूरी कुशळता सूं करचो ई, गद्‌य रो ई ग्रेक विशाल संकलन त्यार करनै म्हारै कनै भेज दियो कै मैं म्हारी रुचि ग्रर सुविधा रै मुजब संकलन रो काम कर लूं ग्रर स्वामीजी नै दिखा दूं। बडै ग्रानंद सूं बो काम पूरो हुयो - ग्रर ग्रेक-दो बार ग्रापस में ग्रावणो-जावणो ई हुयो, बा ही सुजनता, बा ही ग्रात्मीयता, ग्रर सहृदयता नै बो ही पांडित्यपूर्ण वातावरण।

म्हारो तो सोचणो है कै स्वामीजी रै निधन सूं हिंदी ग्रर राजस्थानी भाषा ग्रर साहित्य री जकी हाण हुयी है उण री पूर्ति तो कदई संभव कोनी क्यूं कै स्वामीजी में जठै पुराणै जमानै रै पंडितां रा गुण मौजूद हा उण रै सागै ई उणां री ग्राधुनिकता ग्राज रै नूंवां विद्वानां सारू ग्रनुकरण करणजोग है।

पाठालोचन रै विषय नै ई स्वामीजी आछी तरियां प्रतिपादित कर्‌यो हो अर उणां री जिकी ई रचना मैं देखी है बा इण क्षेत्र री अेक बडी उपलब्धि मानी जा सकै है । भाषा अर साहित्य री भांत-भांत री विधावां रा इसा मर्मज्ञ विद्वान जोयां ई को लाधैनी । सागै ई स्वामीजी आपरी विद्वत्ता रै प्रदर्शन सूं कोसां दूर रैया । जे बां री प्रशंसा बां रै सामनै कोई कर ई देवतो तो बा बांरै शुद्ध अर सात्विक हृदय में उतरती ई कोनी । स्वल्प भाषण, मृदु उक्तियां, कोमळ कळपनावां; सागै ई कृतित्व री स्पष्टता, भाषिकी सिद्धि, और व्यक्तिगत अनुभव सूं उणां री महानता मंजिल तक जा पूगी है । इसा अनूठा विद्वान, महान मानव श्री स्वामीजी नै म्हारी शतशः श्रद्धांजळियां सर्मपित है ।

पुस्तकालय-विभाग
राजस्थान राज्य अभिलेखागार
बीकानेर (राज०)

ओळ्यूं री अळुझाळ में श्री स्वामीजी रो सरूप

श्री दीनदयाल ओझा

आदमियां रो मिलण आदमियां सूं हुवै, पण कैई आदमी इसा हुवै जिका आपरै जीवण री छाप मिलण वाळै रै मन ऊपर सदा-सदा सारूं छोडै। इसे अणमोल गुणी आदमियां मांय सूं हा स्व० श्री स्वामीजी जिका न आपरी साहित साधना रै सबळै सायरै पण आपरै लाखीणै व्यक्तित्व सूं भी म्हनै घणो प्रभावित कियो। श्री स्वामीजी राजस्थानी साहित री उण त्रयी (स्व० श्री ठाकुर रामसिंह, स्व० श्री सूर्य करण पारीक स्व० श्री नरोत्तमदास स्वामी) रा इसा आदर जोग साधक हा जिकां कम सूं कम बोल, घणै सूं घणो काम कर, करनी रै सबळै सायरै आदर पायो, पूजीज्या, पुरुस्कृत हुया, पण कदै ई आपरी बड़ाई, चतराई, विद्वता री आपरै मूंडै न धाक जमाई, न प्रचार प्रसार कियो। सदा चुपचाप रय राजस्थानी री विविध विधाओं में सरावण जोग सेवा करी।

श्री स्वामीजी सूं म्हारो पैली पोत मिलण श्री अगरचन्दजी नाहटा रै अभय जैन ग्रंथालय में हुयो। म्है सा० रा० रि० इन्स्टीट्यूट, बीकानेर री साहित परिषद रो सदस्य हो। श्री नाहटाजी रै ग्रंथालय में साहित सिरजण ने बढ़ावो देवण सारूं गोस्ठियां हुया करती। स्वामीजी इण गोष्ठियों में नित नूंवी भांत भांत री रचनाओं ले पधारता। म्है भी जैसलमेर रै लोक गीतां माथै लेख लिख लेजावतो पढतो। श्री स्वामीजो री सुसंपादित करियोड़ी पोथियां री भूमिका, छंदां रा अरथ, आद-आद जद स्वामीजी पढ़ता, उण वेळा म्हनै इसो लागतो के इण दुबळै पतळै मांणस मैं किती ग्यांन री गैहराई है, किण भांत अेक-अेक सबद, अेक-अेक ओळ, अेक-अेक छंद री किती सरस सरावण जोग सटीक व्याख्या जिकैरी भूमिका में इण गुणी विद्वान री किती गैहराई मालम पडै। म्है मन ई मन वां रै श्री चरणां में नमन कर कंई सीखण समझण र ग्यांन बढावण री चेस्टा करतो। म्हारा लेख जिका घणा सीक लोक साहित'र संत साहित माथै हुवता, श्री स्वामीजी सुण घणा राजी हुवता। जैसलमेर रै इतिहास पुरातत्व चित्रकला साहित संस्कृति, लोक साहित, संत साहित आद-आद विसयों माथै लिखण री प्रेरणा देवता। सांच तो ओ है के वांरी पावन पुनीत प्रेरणा रो सुफळ है के म्है चार ओळचां लिखण लागो।

हवळै-हवळै ओ मिलण आगे बधतो रयो। केई सम्मेलनां में पण श्री स्वामीजी रै सागै आवण--जावण रो अवसर मिळचो। स्वामीजी कम जरूर बोलता पण टूके में बात कैवता, उत्तर में सगळी बात सामळै री समझता। जद-जद सम्मेलना में श्री स्वामीजी सूं मिलण रो अवसर आयो-वो राजस्थानी री उन्नति उणरी नींव नै सुदृढ करण सारूं सबद कोस, व्याकरण आर्ष ग्रंथों रो सम्पादन र प्रकासन माथै घणों बळ देवतां। नूवी सिरजणा नै गुजराती, बंगला मराठी,अंग्रेजी साहित री तरै बधावण री प्रेरणा दी। भासा री अेक रूपता सारूं जयपुर सम्मेलन में कयोड़ी आपरी बातां अजूं म्हनै आछी तरै याद है। इण सम्मेलन में जद म्है जैसलमेरी बोली माथै पत्र वाचन कियो तो म्हारी मुळक र सरावणा करी। वां री मीठी मुळक आज भी म्हनै जद भी सरावण जोग काम करूं तो याद आयां बिना नीं रेवै।

साख-सोभा, प्रचार-प्रसार, नाम-इनाम री दुनियां सूं घणा न्यारा रंवण वाळा श्री स्वामीजी घणकरो काम 'स्वान्त सुखाय' र भासा साहित री नींव नै सुदृढ़ करण सारूं घणै ध्यांन लगन र निस्ठा सूं करता। जद तांई वांनै खुद नै किणी सबद रो अरथ संतोस देवण-वाळो नहीं लागतो तद तांई उण काम नै अधूरो मानता। काम रै ताण इण लगन निष्ठा, तपस्या र सूझ बूझ रै कारण राजस्थानी रा सगळै संसार में जाणीता माणीता विद्वान समझा जाता'र केन्द्रीय अकादमी ई नहीं, देसी विदेसी सगळा विद्वान आप सूं प्रेरणा लेवता मार्ग दरसन लैवता। म्हैतो खुद नै घणों भाग साली मानतो कै म्है जैसलमेर सूं आय आपरै श्री चरणों में बैठ कई ग्यांन सीख रयो हूं। जद कदै म्हनै श्री स्वामीजी रै घरै जावण रो मोको मिळचो, वानै सदा किताबां रै बिचाळी देख्या। का तो पढ़ता-का लिखतां, का किणी नै समझावता, का कोई कागद लिखता। राजस्थानी संत साहित'र राजस्थानी कवयित्रियां माथै काम करण रै दिनां में आप सूं म्हनै घणी सरावण जोग मदद मिळी। उणी मदद'र मारग दरसन रो फळ है के राजस्थानी कवयित्रियां रो विशेषांक प्रेरणा सूं प्रकासित हुयो'र मूमळ प्रकासन जैसलमेर जन पदीय संत और उनकी वाणी ग्रंथ छाप्यो। इग ग्रंथ री भूमिका में श्री परशराम जी चतुर्वेदी घणी सरावणा करी। इण सगळी सरावणा रै लारै मूळ प्रेरणा ही श्री स्वामीजी री। वां री सरावणा रै सबळै सायरै ही ज ऊपर लिख्या ग्रंथ लिखिजचा।

राजस्थानी भासा साहित संगम री नूंवी नूंवी थरपणा हुई ही। सुरू री थरपणा रै दिनां श्री स्वामीजी बणाया गया सभापति र म्हनै सचीव बणायो। श्री स्वामीजी रै आदेसां रै उणियारै सगळो ओफिस आछी तरै सजायो। मोकळी बातां स्वामीजी साहित संबंधी र कार्यालय संबंधी बताई। उण सगळी बातां में साफ-साफ मालम पड़तो कै स्वामीजी रो मन कितो उदार दीठ किती दूरवाळी र ग्यांन कितो गंभीर हो। पूरा बीस दिन काम कियो, उण रै बाद अेक पत्र आयो जिण में सचीव रै पद माथै श्री श्रीलाल नथमल जोशी रो नाम मनोनीत कियो गयो। स्वामीजी म्हारो काम देख्यो हो'र म्हनै सचीव राखणो चावता। जद बात अटपटी देखी तो श्री

स्वामीजी सभापति पद सूं तार सूं आपरो अस्तीफो भेज्यो। इसा निरभीक, र पद सूं न्यारा रैवण वाळा हा श्री स्वामीजी। उण बैळा री मोकळी बातां आज भी साहित सिरजणा री सांतरी प्रेरणा देवै, पद र प्रतीष्ठा माथै रैवण री या नाम धारी बणण री नहीं।

श्री स्वामीजी बीकानेर छोड़ र यात्रा सारूं बारै घणा सीक नहीं पधारता। लारलै दिनां जद जैसलमेर में राजस्थानी भाषा साहित सम्मेलन समायोजित हुयो तो म्हनै बुलायो। आप कयो के–म्हानै जैसलमेर ले जावो, सगळी म्हारी व्यवस्था री हां भरो तो म्हारै जीवण री आ आखरी साध राजस्थानी रै विद्वानां रा जैसलमेर में दरसण करण री पूरी हुय सकै। म्है दूजां माथै भरोसो नहीं करूं। बियां तो दूजा सगळां सागै चालण रो कैय रैया है। म्है मन ई मन सोच्यो के जिण विद्वान रा दरसण करण सारूं लोग दूर-दूर सूं बीकानेर आवै, वो गुणी विद्वान आज म्हारी जलम भोम चालण सारूं, म्हारै घरै मेहमान बण रैवण सारूं कैय रयो है–इण सूं बधर म्हारा मोटा भाग कंई हुय सकै। म्हे इण अवसर रो लाभ लियो'र बीकानेर सूं जैसलमेर तांई श्री स्वामीजी री सेवा में तत्पर रयो। इण रेल यात्रा में पोकरन तांई तो स्वामीजी ठीक हालत में रया पण पोकरण र लाठी बिचाळी स्वामीजी री तबियत खराब हुय गई। आप घबराय गया। डा. सत्यनारायण स्वामी, श्री श्री लाल नथमल जोशी'र म्है घणो धीरज बधायो, दवा फ्रूट सिकन्जी आद आद पाया जद जावतां थावस आयो। जैसलमेर पूगतां ई आपरी ठैरावण री व्यवस्था डाक बंगले में राखीजी, क्यूं के स्कूल में जठै सम्मेलन रो कार्यक्रम हो, नजीक पड़तो। घर म्हारो थोड़ो दूर हो, पण श्री स्वामीजी खिचड़ी, कढ़ी, दाळ फुलको पत्ती रो साग सगळो म्है घर सूं बणवाय टिफन में लावतो। श्री स्वामीजी घणी रुचि सूं उणनै आरोगता। भोजन करती बेळा कदै ई आ बात कैवण में नहीं चूकता के ओझाजी म्है आपने कितो कस्ट दे रयो हूं। गुणी विद्वानां री अै बातां वांरै हिवड़ै री जठै उदारता प्रगट करै वठै आत्मीय भावना भी। म्हारा पिताजी भी आपरा दरसन कर घणा राजी हुया। आज न तो जीमणवाळा स्वामीजी रया न जीमावण वाळा पूज्य पिताजी। पण दोयां री दोय घड़ी री बातां अजूं भी म्है भूल्यो नहीं।

साहित साधकां री जीवण लीला न्यारी रेवै। श्री स्वामीजी री इसी मोकळी बातां है जिकांनै याद कर कर पन्ना रा पांना भर्‌या जाय सकै। पण म्हनै सगळां सूं वैसी प्रेरणा देवण वाळां वां रो अबोलो-प्रचार प्रसार सूं दूर रैय स्वान्तसुखाय भाव सूं साहित सेवा करणवाळो जीवण लागै-जिणरी लीक माथै माणस आज भी आपरो जीवण सरस, सुन्दर'र सरावण जोग बणाय सकै, आपरी मातृ-भासा नै ऊंची सूं ऊंची उठाय ठावो ठौड़ दिलाय सकै।

म्हनै भरोसो है स्व० स्वामीजी री अमर आत्मा राजस्थानी रै सगळै साहित साधकां नै प्रेरणा देवती रैयसी।

बिन्नाणियां रो चौक बीकानेर (राजस्थान)

खुल्लो खलकावरिणया : स्वामी जी

श्री माणक तिवारी 'बन्धु'

सन् १९६३ में भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर री नौकरी करचां पछै श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै बाबत जाणकारी हुई। च्यार-पांच बरस ताईं स्वामीजी सूं सम्पर्क रो काम को पड़चो नीं। स्वामीजी विद्या मन्दिर री कार्यकारिणी रा बरसां लग अध्यक्ष रैया अर नाथूरामजी खड़गावत रै साथै विद्या मन्दिर री शोध शाखा नै दिन दूणी अर रात चोगणी सेई। आपरै मार्गदर्शन में विद्या मन्दिर री सगळी प्रवृत्तियां घणी सुचारू रैयी अर उणा में लगोलग बधेपो ही हुयो।

सन् १९६६-६७ री बात हुवैला। मैं स्वामीजी कनै एक दिन दिनूगै री वेळा गयो। स्वामीजी आपरै कमरै में किताबां रै बिचाळै दरी पर ही तकियै रो सहारो लियां पढता हा। म्हारो नांव-धाम पूछ्यो। अर ता पछै काम पूछ्यो मैं अरज करी कै साहित्य-महोपाध्याय उपाधि खातर मैं राजस्थानी लोकगीतां माथै शोध रो काम करणो चावूं सो उण खातर आपरो मार्ग दर्शन साव जरूरी है।

स्वामीजी म्हारै सामैं देख्यो। फेर पूछ्यो कै विद्या मन्दिर में मैं किण पद पर हूं। मैं बतायो कै लिपिक हूं तद बै फरमायो कै 'एक पारीक हो अर योग्य हुवतां थकां भी प्रतिष्ठान में शोध सहायक को बण सक्या नीं ?"

मैं उथळो दियो कै "आप तो कार्यकारिणी रा अध्यक्ष हो। एक चिट पर सिफारिश लिख दिरावो तो पछै हूं आगै री कारवाई आपै ही संभाळ लेवूंला। बाकी हाल ताईं प्रतिष्ठान में म्हारो नंबर शोध सहायकां में आवणो बिना आपरी सिफारिस रै साव मुसकल है।" ता पछै स्वामीजी कीं को बोल्या नीं। लोकगीतां बाबत बातचीत हुई अर वै आप कानी सूं पूरै सहयोग रो भरोसो दिरायो।

× × ×

सन् १९७२ में राजस्थान साहित्य अकादमी कानी सूं एक दो दिन रो राजस्थानी उपनिषद् भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान में हुयो। इण उपनिषद् रो सगळो काम-काज म्हारै गळै में आयग्यो। आयोजन री अध्यक्षता सारू स्वामीजी सूं अरज करी। पण स्वामीजी अध्यक्षता सारू दियोड़ै कागद माथै ही "मैं नहीं आ सकता" लिख'र हाथो हाथ पाछो भिजवा दियो। उण बखत तो स्वामीजी रो ओ व्यवहार मनै इत्तो खारो लाग्यो कै सामान्य शिष्टाचार रै नातै स्वामीजी न्यारै कागद

पर ग्रा बात लिख'र दूजै ढंग सूं भिजवा सकता हा। पण जद पछै विचार कर्यो तो स्वामीजी री इण ग्रादत रो ठा पड़चो कै वै कोई बात में लल्लो-चप्पो को करै नीं। सीधी ग्रर खुल्ली खळकावै। ता पछै डा. देवीलालजी पालीवाल (उण वखत रा ग्रकादमी रा निदेशक) स्वामीजी नै ग्रायोजन में बुलाय'र लाया भी ग्रर स्वामी जी ग्राया।

× × ×

स्वामीजी राजस्थानी भाषा साहित्य संगम, बीकानेर रा सभापति हा ग्रर डा. मनोहरजी मानद मंत्री। डा. मनोहरजी त्याग पत्र दे दियो। तद स्वामीजी दीनदयाल जी ग्रोझा नै मानद मंत्री बणावण रो ग्रादेश कर दियो। ग्रकादमी सूं इण नियुक्ति री मंजूरी को ग्राई नीं ग्रर बठै सूं एक टेलीग्राम ग्रायो जकै में श्रीलालजी जोशी नै मानद मंत्री बणावण रो ग्रादेश हो। स्वामीजी उणी वखत टेलीग्राम सूं ही ग्रापरो इस्तीफो भिजवाय दियो। साफ है कै वां रै स्वाभिमान नै ग्रा बात बरदास्त को हुई नीं। वां रो मानणो हो कै संगम में सभापति नै मानद मंत्री री नियुक्ति रो ग्रधिकार हुवणो चाहीजै ग्रर जे ग्रो ही नहीं हुवै तो सभापति किण बात रो? खाली सभापति री जागां नांव मंडायां तो कोई काम पार पड़ै कोनी। स्वामीजी खातर सभापति रो ग्रो पद कोई घणी लूंठी बात को ही नीं जद कै इण पद खातर स्वामीजी री नांव बड़ी बात जरूर ही।

× × ×

हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर में एक साप्ताहिक साहित्य गोष्ठी १६७४-७५ रै ग्रड़ै-गड़ै सरू करीजी। इण गोष्ठी में राजस्थानी रचना पाठ रो कार्यक्रम रैवतो। स्वामीजी, विद्याधरजी शास्त्री, ग्रगरचंदजी नाहटा, श्री लालजी जोशी, मूलचन्दजी प्राणेश, सूर्यशंकरजी पारीक, रामनिवासजी शर्मा, सत्यनारायणजी स्वामी ग्राद घणकरा क रचनाकार नेम सूं ग्रठै ग्रावता ग्रर ग्राप-ग्रापरी रचनावां सुणावता। स्वामीजी हर हफ्तै एक रचना सुणाया करता। एकर री बात कै मैं स्वामीजी रै कनै ही बैठो हो ग्रर स्वामीजी रचना पढ रिया हा। वां रै हाथ ग्राळै कागदां पर म्हारी निजर गई। रचना हिन्दी में लिख्योड़ी ही रचना पूरी पढ्यां पछै मैं स्वामीजी नै पूछ्यो कै ग्रापरी रचना तो हिन्दी में लिख्योड़ी है ग्रर ग्राप इणनै पढती बेळा राजस्थानी में बोल दी, ग्रा बात थोड़ी ग्रखरै। स्वामीजी सहज भाव सूं कैयो–राजस्थानी लिखणै बोलणै से म्हारो ग्रभ्यास कीं कमती है इण खातर प्रकाशनार्थ भेजती बेळा ही राजस्थानी में लिखूं। मनै ग्रचंभो हुयो कै जको ग्रादमी राजस्थानी रो व्याकरण लिख्यो ग्रर जकै सूं बेसी राजस्थानी रो जाणकार ग्राज प्रदेश में कोनी बो ग्रा बात कैवै। स्वामीजी हाथो हाथ म्हारो ग्रचंभो मिटाय दियो कै म्हे तो राजस्थानी खातर सरू सूं ही हिन्दी में हीं लिखता रैया हां। दूजी बात कै ऊमर भर हिन्दी प्रोफेसर रैया इण खातर हिन्दी रो

अभ्यास तो रग-रग में भरीज्योड़ो है जद कै राजस्थानी बोलण रो काम घणो थोड़ो रैवै। बात ठीक ही। म्हारै हियै ढूकगी।

× × ×

कनाड़ा रै एडमंटन विश्वविद्यालय में गणित विभाग रा अध्यक्ष स्वामीजी रा एक शिष्य है डा० अम्बिकेश्वर शर्मा। डा० शर्मा जोबनेर (राजस्थान) रा निवासी है अर पिलाणी में स्वामीजी री छत्रछाया में रैया। डा० शर्मा एकर बीकानेर पधार्‌या तो वै स्वामीजी सूं मिलण री मनस्या प्रकासी। मैं उणानै लेयर स्वामीजी रै अठै गयो। जावतै ही डा. शर्मा स्वामीजी रै पगै लाग्या अर पूछ्‌यो कै मनै ओळख्यो कै नीं? स्वामीजी बिना लाग-लपेट साफ नटग्या। वै उणानै पिलाणी में पढणै री बात बताई तो ही पण स्वामीजी बां नै को ओळख्या नीं। पछै वै दो च्यार निजू बातां बताई तद स्वामीजी नै याद आयो तो वै झट देणी पिछाणग्या।

× × ×

जचै जकी बात हुवो स्वामीजी लल्लो-चप्पो न तो बरदास्त करता अर न खुद ही करी। वै तो हुवती जिसी सीधी ही ठरकावता। ऊपर बतायै प्रसंगां में स्वामीजी री जागां जे कोई दूसरो हुवतो तो वो कदै ही वै बातां को कैवतो नीं जकी स्वामीजी कैई अर सहज भाव सूं कैई। दूजो तो बात नै घुमा-फिरार आपरी व्यवहा'र-कुशलता दरसायां बिना रैवतो ही को नी। पण स्वामी जी री व्यवहार-कुशलता सपाट-बयानी री ही अर वै इणनै सदा निभाई।

स्वामीजी मितभाषी हा। कोई बात रो उथळो जे च्यार सबदां सूं दिरीज सकै तो पांचवों वै कदै ही को बोलता नीं। स्वामीजी सदा गम्भीर रैवता। मैं तो वां नै कदै ही हंसता को देख्या नीं अर वां रै नेड़ै रैवणिया भी इण बात नै मानै कै वै कदै ही हंसता तो कोनी ही। हां, कोई खास बात हुयां थोड़ा मुळक अर आपरी भावना प्रकट कर देवता। सार-रूप में खुल्ली खळकावणियै मिनख में हुवण आळी खासियतां स्वामीजी रै जीवन में पग-पग मिलै। राजस्थानी री उद्धारक त्रयी रा वै आधार हा। सूर्यकरणजी अर रामसिंहजी रै साथै कर्‌योड़ै कामां नै अंतिम रूप सू त्यार करणै री जिम्मेवारी सदा स्वामीजी पर ही रैवती अर वै ही ओ काम करता। स्वामीजी रै निधन सूं राजस्थानी री नीं पूरीजण आळी क्षति हुई है। भगवान वां री आतमा नै चिर शांति देवै।

× × ×

पाबूबारी, बीकानेर

△

नरश्रेष्ठ स्वामी नरोत्तमदासजी

डॉ० आलमशाह खान

बण्या-ठण्या प्रोफेसर मोहनवल्लभजी पंत री जाग्यां आया हा सीधा-सादा प्रोफेसर नरोत्तमदासजी स्वामी । म्है बीं ए. हिंदी रा विद्यार्थी स्टाफ-रूम झांक-झूंक आया हा पण कोई मूरती निजर को आयीनी जिकी प्रोफेसर पंत री ठौड़ थापीजण आळी हुवै सिवाय इण रै कै बन्द गळै रै कोट अर पुराणी फैसन री पैंट में आप री मुट्ठी-भर काया नै भेळी करयां ग्रेक पांच-फुटो आदमी आप री छोटी छोटी आंख्यां माथै चसमो चढायां स्टाफ रा थोड़ा साक सीनियर लोगां सूं घिरीज्योड़ो ऊभो हो । सुर तो कणीई-कणीई सैक नीसरता । वातावरण ग्रेकदम शांत हो । कफ-बटण री चट-कारो ई सुणीज जावतो । फेर जद लारलै फाटक सूं प्रिंसिपल शंकरसहायजी सक्सेना आया ग्रर अगवानी रै सुर में बोल्या-'ग्राइये, ग्राइये स्वामीजी ! हम तो सोच रहे थे, ग्राप बीकानेर नहीं छोड़ेंगे ।' जद मालूम हुयो कै ग्रै है प्रोफेसर नरोत्तमदासजी स्वामी जिकै कणीई-कणीई आप रा कफ-बटण खोलता-बंद करै हा । बोलै इत्ता ई जित्तै बिना काम नई चालै ।

श्री शंकरसहाय सक्सेना प्रिंसिपल अर प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी वाइस प्रिंसिपल । ग्रेक अर्थ शास्त्री तो दूजा सहित्य शास्त्री । इयां तो ग्रापस में घणो ई ग्रादर-भाव, पण सुभाव तो ३-६ री सूरत में । छात्रां री प्रिंसिपल रै कमरै में ग्रावाजावा लागी है तो समझ लो कै सक्सेना साब छुट्टी माथै है, ग्रर प्रोफेसर स्वामी उणां री टेबल रै कनै लाग्योड़ी खुरसी माथै बैठा उणां रो काम देख रैया है—कैवूं, ग्रेक ई काम कर रैया है—इण-उण ग्रनियमितता रै कारण हुयोड़ा जुरमानां री माफी सारू अरज्यां माथै *exempted* लिख रैया है । इण सारू छात्र उडीकै है कै कद सक्सेना साब सिरकै ग्रर कद स्वामीजी सूं ग्रापणो जुरमानो माफ करवावां ।

पैली बिरियां क्लास में ग्राया चुप-चाप; कफ रो बटण ठीक करता हुया टेबल रै सामनै ऊभग्या । छात्र ई खड़ा हुयग्या । हौळै सीक ग्रांख्यां री पळकयां झुका'र उणां ईसारो करयो — 'बैठिये, रस-ग्रलंकार-छंद पढ़ाने हैं ।" उणां रै कद-काठी सूं कीं ऊंचो उणां रो स्वर उभरयो अर बिना कोई परिचय भूमिका रै छोटा ग्रर सपाट वाक्यां में रस-ग्रलंकार री परिभाषावां क्लास में तिरण लागी । ग्रावतां ई उणां नै इयां

बैटरी री तरै चार्ज हुवतां देख'र म्हारो जाण्यो-पैचाण्यो अजड़पणो सामनै आयग्यो। पूछ बैठ्यो-'सर, आपका परिचय ?' तो लारै सूं किण-ई सायरो लगायो—'अलंकार परिचय'। आगै और कीं हुवै उण सूं पैली ई स्वामीजी रो उथळो हाजर हो—'वही'। क्लास में हंसी रो पार ई को रैयो नी। 'अलंकार परिचय' स्वामीजी री बहोत छात्र-प्रिय पोथी रो नाव हो उणी नै 'वही' कह'र वां माहौल में तरोताजगी ला दी। सगळां नै हंसा दिया पण आप को हंस्या नी। दस बरसां रै बांरै स्नेह अर सान्निध्य में मैं उणां नै कदैई खिल-खिला'र हंसता को देख्या नी। कदैई-कदैई कोई काठी-माड़ी मुळ-काट उणां रै होठां माथै जरूर दीखती जिकी नै का तो बांनै जाणणियो ही लखतो अर का वै आप ई जाणता। आप री इण कमबोलू आदत अर गम्भीरता रै कारण वै 'बोर प्रोफेसर' ई बज्या। खाली पास हुवण री इछ्याआळा विद्यार्थी तो हाजरी पूरी करण सारू ई उणां री क्लास आंवता। पण चित्तमन सूं पढणिया विद्यार्थी उणां री क्लास चूकणै नै आपरो बड़ो भारी नुकसाण मानता।

आलम शाह खान नांव रै म्हारै जिसै अेक मात्र विद्यार्थी नै हिंदी री क्लास में देख'र उणां म्हारै प्रति इसो मूक स्नेह दरसायो कै अेक दिन हूं उणां रै बंगलै रै हातै में जा पूग्यो। म्हारै सागै अेक दूजो विद्यार्थी ई हो। म्हे होळै-होळै पग राख'र बरामदो तो पार करग्या फेर बन्द दरवाजै नै खुलवावण सारू दरवाजै माथै घंटी ई कोनी ही - म्हे अेक दूजै नै देखां। छेकड़ डरतां-डरतां अेक आंगळी सूं हळकी सीक 'खट' री अवाज दरवाजै माथै करी अर चिटकणी नीचै सिरकावण रै सागै ई किंवाड़ खुल्या अर सादै बनियान रै नीचै गूगळीसी धोळी धोती पैरयां स्वामीजी सामनै खड़ा हा। प्रणाम रै उत्तर में नस नै थोड़ीक हलाई अर आप रै खाट माथै बिखरयोड़ा कागदां नै भेळा करता बोल्या—'बैठिये!' म्हे जिझकता हुया कनै पड़ी खुरस्यां माथै बैठग्या जणै आप उठ'र कमरै रै बारै चल्या गया। म्हे दोनूं अेक-दूजै री आंख्यां रा डोरा नै समझण में लाग्या ई हा कै वै आया अर अेक प्लेट में बीकानेरी भुजिया म्हांरै आगै राख'र बिना की कैयां ई पाछा भीतर चल्या गया। म्हे अेक दूजै रो मूंडो ताकता सामनै पड़्या भुजिया नै देखै हा, जकै उण बगत उदयपुर में बहोत कम देखण नै मिलता हा। कोई दस-पनरै मिनटां पछै हाथ में अेक किताब लियां आया अर देख्यो कै भुजिया तो बियां रा बियां ई पड़्या है जद बोल्या-'खाइये'। और फेर पाछा मांयनै गया परा। वापिस बित्तो ई ताळ सूं आया जित्तै में कै म्हे भुजिया खा सकां। फेर वां आप री सम्पादित 'वेलि' री प्रति मनै दी। म्हे प्रणाम कर'र ऊभा हुआ तो वैई उठ्या अर म्हांरै कमरै रै बारै निकळतां ई पाछी चिटकणी लगा ली।

म्हे जद ई कदै ई उणां रै अठै गया वां रै कमरै री चिटकणी मांय सूं लाग्योड़ी ई देखी। आ ई मालूम हुयी कै खाणो लावण नै अर का बरतन पाछा ले जावण जिसा कामां सारू ई उणां रो कमरो खुलतो। कदैई-कदैई उदयपुर आवणिया उणां रा लड़का ई कणीई-कणीई बारै कनै हुवता—पूरी टैम में तो नै हा अर बारै सामने

खुली–मुंदी पोथ्यां अर का खिडया-बिखरया हाथ रा लिख्या कागद अर बस। पढ़णो अर लिखणो—रात-दिन ओक ई चरखो! खाली है तो ई पढणो अर थाक्योड़ा है तो ई पढणो। धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान जिसी पत्रिकावां वै थकान मिटावण सारू ई पढ़ता। बाकी बगत तो बो ई मगज-मार सम्पादन, शोषित-शोषक व्याकरण–विचार अर का फेर शोध-संपादन। इण रो परिणाम! डेढ सौ नेड़ा पेजां में पूरी ड्योढी 'पृथ्वीराज रासो' पुस्तक, बीस-बाईस बरसां री कठोर साधना रो फळ–मान्य अर अधिकृत रचना; राजस्थानी व्याकरण, छोटी-सीक रचना पण बेजोड़! 'राजस्थानी गीतां री सारिणी' निबंध बरसां रै अध्ययन रो सार–थोड़ासाक पेजां में ई जिण रो विस्तार है। सुण्यो हो स्वामीजी पइसो बड़ी सावधानी सूं खरच करता पण उण सूं भी बेसी सावधानी वै शब्दां रै खरच में बरतता। 'राजस्थानी साहित्य : ओक परिचय' शीर्षक पैंफलेट रै आकार री रचना इण रो उदाहरण है। सागर नै गागर में मवावण री अटकळ कोई उणा सूं सीखै!

म्हारै शोध विषय 'महाकवि सूर्य मल्ल मिश्रण कृत वंश भास्कर: ओक अध्ययन' रै जंजाल में उळझ'र मैं केई पेजां में म्हारी समस्यावां लिख'र बांनै भेजी है–बनस्थळी। उत्तर बां म्हारै लिख्या पानां रै हासियां माथै ई लिख'र भेज दियो–समाधान रो संकेत देय'र ओकर तो मनै म्हारा ई कागद पाछा म्हारै सामनै देख'र जूंझळ आवै है पण जद गम्भीरता सूं उणां नै वांचूं हूं जणै लागै है कै समस्यांवां रो घणाकरा-क समाधान तो हु चूक्यो।

विचारां में ऊंडा उतरता जद स्वामीजी मांय रा मांय कीं गुणगुणावण लाग जावता। ओम. ओ. सारू उणां मनै राजस्थानी वचनिकांवां माथै प्रबंध लिखण आदेश दियो। घणीई तड़फातोड़ी अर म्हारा कृपाळु अध्यापक डा० कृष्ण [illegible] श्रोत्रिय रै सहयोग सूं आछो-सो आलेख मैं त्यार कर्यो है अर स्वामीजी उण परख रैया है, सुधार रैया है। ईनै-बीनै कळम चलायी है–कीं काट–छांट करी है अर आप री तरफ सूं जोड़्यो ई है। फेर कैय दियो है—काल सगळो फेयर कर'र मनै दिखा दिया। मैं भळै उणां रै सामनै हूं। फेयर आलेख नै वै ओरूं पढ़ रैया है। उणां जिण धारणा-वाक्य नै काट्यो है बो उणां रो ई लिख्योड़ो है। काल बां ई बडै मनोयोग सूं उण नै जोड़्यो हो। हूं कैवूं हूं—'सर, ओ तो काल आप ई लिख्यो हो। चश्मै रै कांच नेड़ी आंख्यां ला'र वै बोलै है—'इण बात नै काल तांई मैं ठीक समझतो हो' खुद नै बराबर सुधारतो–निखारतो जावण री आ बात बांरा म्हारै जिसा शोध–छात्रां नै पूरो तसियो करा नाखती।

वनस्थली सूं उणां री चिट्ठी आयी है। लिख्यो है—'वंश भास्कर माथै अब ताणी जित्तो-कुछ लिख्यो है, सगळो आज ई भेज दो। यू. जी. सी. नै रिपोर्ट भेजणी है।'

रात-दिन अेक कर नै च्यार अध्याय जियां-तियां पूरा करचा अर वनस्थली, डाक सूं रवाना कर दिया। सागै ओ ई लिख दियो कै केई और बातां सारू ई विचार-विमर्श करणो है, जद आप नै बखत अर सुविधा हुवै तो लिख दिया, मैं बनस्थळी आ जासूं उत्तर में उणां रै लिख्यै पोस्ट कार्ड री हू-ब-हू नकल पेश है –

प्रिय आलमशाह,

आ जाओ।

न० दा० स्वा०

हूं उदयपुर सूं वनस्थळी पूंच्यो हूं, हाल-डोल म्हारै हाथा में है। उणां रै दरवाजै आगै ऊभो हूं अर वै पूछ रैया है—'कैसे आ गये?' अेक धक्को-सोक लागै है। अणाचार्य ई बोलीजग्यो—'ढाई बजी-वाळी बस सू जासू परो।' वै संभळग्या। बोल्या-'नंई, नंई, काल तांई तो ठैरो, मैं हाल थारा लिख्या चैप्टर देख्या कोनी। थांरै सागै बैठ'र ई देख सूं।' हूं अतिथि-शाळा सूं उणां रै कनै आयो। बै चित-मन सूं म्हारो लिख्योड़ो बांच रैया हा। उण में कठैई-कठैई फेर जोड़-तोड़ करचो हैं। फेर 'वंश-भास्कर रै भाषा-विश्लेषण-आळै अध्याय नै हाथ में ले'र तो बै बोला-बोला बैठग्या। कणैई-कणैई म्हारै लिख्या पानां माथै हाथ फेरण लागै है। थोड़ी ताळ पछै बोल्या—इण नै अठै ई छोड जावो। हूं देखसूं जद ई पार पड़सी। काम निमटा'र हूं जावण सारू सीख मांगूं हूं जणै बोलै है—-

'जयपुर हुय'र ई जावोला नी?'

'जी, म्हारो तो रस्तो ई है।'

'तो ओ पत्र चौड़ा रास्ता माथै·····मेडिकल स्टोर–आळां नै दे दिया। दवायां मंगावणी है इणां सारू? कैय'र उणां भीतर री तरफ निजर करी।

माताजी रै कांई हुग्यो, सर?' शिष्टतावश मैं पूछ्यो तो बोल्या—हुयो तो कीं कोनी, बस इत्तो ई है कै बैठ जावै तो ऊभो को हुयीजै नी, अर खड़ा हु जावै तो बैठीजै कोनी' इत्तो कैय'र हळका–साक मुसकराया। मैं तो उणां रै चेहरै माथै साफ–साफ मुळकाट जद ई पैली बार देखी ही।

दीयाळी रै दूजै दिन रामा-सामा करण नै उणां रै अठै पूग्यो हूं। भूंज्योड़ा काजू अर बीकानेरी भुजिया म्हारै सामनै राख्या है। इत्तै में ई उणां रा हम उम्र प्रोफेसर उमरावसिंहजी भटनागर आ जावै है। दोनां में राम-रमी हुयी है। हूं दोनां बुजुर्गां रै बिचाळै बैठ्यो मन-मन में ई संकै हो। बोल्यो–

'मैं चालूं सर!'

'नां तो मैं जावण रो कैवूं हूं अर नां कैवूं हूं कै बैठो।' उणां रो तो गोळी–सोक छोडणो हुयो, म्हारै–स तन-मन में झाळ लागगी। मूं मचकोड़'र हूं टुर वयीर हुयो।

फेर केई दिनां तांई बांरै अठै को गयो नी तो अेक दिन भाई ब्रजमोहन जावळिया आया अर बोल्या—'स्वामीजी याद कर्‌या है। लागै है, उण दिन नाराज हुय'र आयग्या हा।' मैं फेरूं स्वामीजी रै सामनै हूं। बै सहज भाव में है अर म्हारै अध्ययन नै सुगम बणावण सारू हाजर। उणां रै सहज स्नेह सूं म्हारो मन ई निर्विकार हुयग्यो।

'भीली बोली' माथै काम करणिया, मध्य प्रदेश रा एक शोधार्थी मंदसौर सूं म्हारै सागै हुयग्या। बातचीत में उणां जाण्यो कै मैं प्रोफेसर नरोत्तमदासजी रो शोध-छात्र हूं तो तुरंत उणां सूं मिलण नै अर आपरै विषय नै उणां सूं समझण सारू बै म्हारै सागै हुयग्या। मैं उणां नै लेय'र स्वामीजी रै बंगलै पूग्यो हूं। परिचय करवायो है।

"मैंने भीली बोली पर इतना लिखा है, इतना पढ़ा है, इसकी उत्पत्ति, विकास-विस्तार के विषय में मेरा यह मत है।' — इसी-सीक बातां करता हुया साथी शोधार्थी स्वामीजी रै सामनै है।

'मैं आपके लिये क्या कर सकता हूं?' उणां रो साव लूखो सवाल हो।

'आप कृपया इन मुद्दों पर मेरी मदद कर दीजियेगा।' कैय'र शोधार्थी भाई अेक लिखित प्रश्नावळी उणां रै सामनै फैला दी।

'और बातें तो ठीक है। दो-अेक मैं अपनी ओर से कह सकता हूं।' उणां प्रश्नावली माथै निजर नाख'र कैयो अर संक्षेप में आप री वात शोधार्थी रै आगै राख दी।

"मैं समझता हूं--यह यों न होकर यों है। इसके बोली गत स्वरूप को देखकर व्याकरण के अमुक-अमुक रूप बनते हैं।" शोधार्थी कैय रैया हा—"इस विषय में आप क्या कहेंगे?"

"जो मैं जानता हूं, आपको बता दिया। बहस मैं नहीं करता।' इत्तो कैय'र बै तो मौन हुग्या। म्हारै शोधार्थी भाई केई हवाला देय'र उणां नै बोलावण री कोसीस करी पण बै तो को बोल्या नी सो तो कोय ई बोल्या नी।

बाहर निकळ'र शोधार्थी भाई म्हारो मूं ताकण लागग्या।

काया कंपावण आळी सीयाळै री रात। नव—साढी नव री वेळा। उणां री पोथ्यां पाछी करण नै गयो हूं। बांनै आज ई उण पोथ्यां री सरकार ही। पोथी माथै रैपर चढायोड़ो है। उण रो अेक खूणो म्हारै हाथ सूं मोसीजग्यो। बै उण खूणैं नै सीधो करता थका मनै ताकै हा। हूं भूल समझ चुक्यो हो, सिर निंवा दियो।

'सुणो, स्टेशन जाओ और उन्हें यहां लिवा लाओ। वह पहली बार उदयपुर आ रही हैं। पता-ठिकाना ठीक-से नहीं जानतीं। बच्चे भी साथ हैं।'

ठीक है, सर!' कैय'र हूं ऊभो हुयो तो बोल्या —

'पर तुम ने तो उन्हें कभी देखा ही नहीं है । मैं बोनो-त्रोनो सुणै हो-'देखो, मारवाड़ की इस गाड़ी में कम ही पैसेंजर रात को उतरते हैं । जो भारी डील की महिला १०-१२ साल के दो लड़कों के साथ हो, पूछ कर लिवा लाना ।' होठां रै सागै-सागै ई उणां री आंख्या ई मुळकती लागै ही । मैं रवाना हुवण लाग्यो तो बोल्या—'ठहरो' । अर खूंटी सूं लटकतै कोट री जेब मांय सूं दस नूंवा पइसां रो अेक सिक्को काढ'र मनै देंवता कैयो 'प्लेट फार्म टिकट ले लेना ।' बां दिनां प्लेट फार्म रै टिकट रा इत्ता पइसा ई लागता हा ।

'इण री कांई जरूरत हीं ? म्हारै कनै है पइसा ।' मनै जाबक ई अटपटो लाग्यो ।

नहीं, नहीं, रखो इसे ।' बां सिक्को मनै झला दियो । फेर बोल्या—'यदि वे लोग नहीं आये हों तो वापिस मत आना'' उनका आना शायद ही ही आज ।' इत्तो कैय'र बै मुड़चा अर भीतर सूं आडो जड़ दियो ।

ठेसण पूग्यो । पूरी ट्रेन छाण ली । ईनै-बीनै देखा भाळी ई करी पण सर रै बतायै मुजब व्यक्तित्व री धिराणी कोई महिला अथवा दो टाबर म्हारी निजर को आया नी । पाछो आयो कीं सोच'र हैंडल कालेज रोड़ कानी घुमायो अर अहातै में साइकल ठैरा'र बंद फाटक नै खड़खड़ायो किंवाड़ खुल्या, 'सर' सामनै हा । सवालिया मुद्रा में ।

'सर, सगळा डब्बा संभाळ लिया, कोई को मिल्यो नी ।'

'मैं ने कहा था न, वे लोग शायद ही आयें । वापस आने की आवश्यकता नहीं थी । रात गयी, सर्दी बहुत है ।'

'बा तो ठीक है सर !—पण ओ लेवो ।' मैं झिझकतां-झिझकतां बो सिक्को बां रै सामनै राख दियो ।

बै देखता ई रैयग्या । सिटपिटायीज-सा गिया । सिक्को ले'र खाथा-खाथा पाछा जाय'र दरवाजो भड़ दणीसीक जड़ दियो ।

उणां रै स्वभाव रै इण विरोधा भासा नै समझण-वाळा ई समझता हा । कणैई-कणैई प्रतीत हुवण आळी बां री आ अव्यावहारिकता हुय सकै है वां में, उणां रै लोगां सूं दूर-दूर रैवण सूं आयगी ही । बरसां तांई उदयपुर रैय'र ई जिको कालेज रोड़ का सूरज पोळ सूं आगै कदेई नई गयो हुवै इसै पंडित-आचार्य नै रूखो-सूखो कैवणो उण रै साथै ज्यादती करणी है । नंई जणै दूजां माथै इत्तो भरोसो करणिया शायद ई कोई जिम्मेदार, आदमी हुसी जिको आप रै आगै आयोड़ै हरेक कागद माथै आंख मीच'र दसकत कर देवै । आप रै रिटायरमेंट माथै, बीकानेर रवाना हुवती बगत केई खाली कागदां माथै दसकत कर नै कालेज रै जमादार नै देयग्या हा कै जे कदेई कोई खाणा

पूरती करणी हुवै तो बाबूजी सूं बां माथै टाइप करा'र आगै भेज देवै । यू जी सी री छात्रवृत्ति माथै में उणां रै अधीन शोध-काम करै हो । छोटी-मोटी कारवाई सारू उणां सूं सर्टिफिकेट लेवणा पड़ता हा । उणां म्हारी उण अड़चण नै समझ'र पांच-छव कोरा कागदां माथै दसकत कर नै म्हारै कनै भिजवा दिया हा कै भई, मैं म्हारै काम रो मैटर उणां माथै टाइप करवा'र म्हारो काम निकाळ लूं अर छात्रवृत्ति री रकम वसूल हुवण में जेज नंई लागै ।

पी-अेच. डी. री मौखिक परीक्षा रो मौको । जयपुर में बै भाई भागावतजी रै अठै ठैरचां है । मनै सागै ले'र बै युनिवर्सिटी गेस्ट हाउस पूग्या है, बारला परीक्षक नै लावण सारू । दोनूं ई अेक-दूजै नै सकल सूं को जाणै नी, शोधलेखन ई दोनां रै बिचाळै परिचय है । खादी पैर्‌योड़ा अेक-भला सा आदमी पेड़्यां उतरै हा । म्हां पंले पगोथियै पग राख्यो'र का वै आगै ई आयग्या ।

'आप प्रोफेसर स्वामी हैं ?' बां पूछ्यो ।

'और आप ?' सर बोल्या, अर आया जका साब उणां नै शीश निंवायो ।

'आप रै अधीन कर्‌योड़ै शोध कार्य रै शोधार्थी रो कांई 'वायवा' लेवणो ? हूं आपरा दरसणां सारू आयो हूं, भलो !' मैं सुणै हो; बस, आणै आप नै डाक्टर मान लियो ।

मौखिक परीक्षा तो हुवणी ई ही । बारला परीक्षक तो ऊपर-सापर री वातां पूछ र बोला हुयग्या पण 'सर' तो सवालां री झड़ी लगा दी । म्हारै चुणचुणिया लागण लागग्या । परीक्षा रै पछै अेकांत में बोल्या--'तुम्हें बुरा लग रहा होगा कि मैं ने अैसे टेढ़े प्रश्न क्यों किये, पर मैं नहीं चाहता कि मेरे छात्र को कोई दान में डिग्री दे दी जाये ।' मैं सुण्यो अर आभार-सरूप सिर झुका लियो । फेर सुण्यो, 'सर' कैय रैया हा--'तुम्हारे दूसरे परीक्षक डा० धीरेंद्र वर्मा थे । अरे छोटे-मोटे के हाथों क्या डिग्री लेना !' उणां री आंख्यां में चमक ही ।

याद आयो, अेक दिन कांई ठा कांई जची, बां नै सहज अर प्रेमपूरित भावां में भरचा देख'र पूछ बैठ्यो 'सर, आप पी-अेच. डी. कोनी करी ?'

'मनै कुण-पी. एच. डी. करवा सकै हो ?' बांरो चेहरो तेज सूं डगडगा उठ्यो ।

किणी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर री जग्यां खाली हुयी ही । मैं पूछ लियो--'सर ! आप इंटरव्यू में कोनी गया ?' फेर उणीज तरज रो उत्तर-- मेरा इंटरव्यू कौन ले सकता था ?' म्हे सगळा जाणता हा कै 'सर' रै इण उत्तर में दंम जाबक ई को होनी आत्मविश्वास हो जिको कै ऊमर-भर मां राजस्थान भारती री सेवा करण रै प्रसाद

स्वरूप उणां रै स्वभाव में उतरग्यो हो। नंई जणै बिसां विनीत, शालीन, सौम्य अर संवेदनशीळ संत पुरुष कठै पड़्या है ? वां री कदेई-कदेई झलकण आळी चुहल-चहल में ई घणी गंभीरता रैंवती। परीक्षा री कापी में किणी रै 'शूर्पणा खां' लिख्यै शब्द रै नीचै लेण फेर'र अंग्रेजी में वां रिमार्क लिख्यो हो--*She was not a Pathan*--

डा० नरेंद्र कोई गोष्ठी में पधार्‌या है। आप रै पसवाड़ै विराजमान 'सर' नै आदर भाव सूं देख'र कैव रैया है–'हमारा सौभाग्य है कि 'नरोत्तम' हमारे मध्य हैं।" 'सर' आ बात सुणी। उठ'र उणां नै बरजता थका बोल्या–"हौं नर उत्तम हौं नहीं, हौं नर उत्तम दास।"

हिंदी विभाग,
उदयपुर विश्वविद्यालय,
उदयपुर

□

भाषा शास्त्री पं. नरोत्तमदास स्वामी : म्हारा पाड़ोसी

श्री मुनीशकुमार पांडेय 'मुनिवर'

१९६३ रो साल बनस्थळी विद्यापीठ सारू घणो महत्त्व रो मान्यो जा सकै है क्यूं कै उण साल केई खास विभूतियां बनस्थळी में ग्रायी ही। बनस्थळी विद्यापीठ रा संस्थापक स्वर्गीय हीरालाल शास्त्री रै धुन सवार ही कै उणां री इण संस्था में नाम-धारी' ग्रर 'कामधारी' लोगां नै भेळा कर्‌या जावै जिण सूं संस्था रो नांव ऊंचो हुवै, काम में निखार ग्रावै। म्हारै सामनै इसा वयोवृद्ध शिक्षकां में बरेली कालेज रा सेवा निवृत प्रिंसिपल सुधांशुभूषण बनर्जी, श्री कुंभारे, देवधरजी, वाई० के शुक्ल, देवेंद्र शंकर जी वगैरै घणा ई लोग हा जिणां रै कारण हरेक विभाग ग्रपणै ग्राप नै धन-धन मानै हो। हिंदी विभाग में ग्राया नरोत्तमदासजी स्वामी ई इणां मांय सूं ग्रेक हा।

म्हारो दुर्भाग्य कै राजस्थान रै बारै सूं ग्रावण रै कारण हूं स्वामीजी सूं परिचित को हो नी। मैं जद ई उणां नै देखतो, उण रो नांव सुणतो'र का मनै नरोत्तमदास रो 'सुदामा चरित' याद ग्रा जावतो—सांवळा, दूबळा-पतळा, पाकी उमर, रा, पण सुदामा री तरै ग्रकिंचन नंई संकचन! विधना रो लेख इसो हो कै स्वामीजी रै कंचन रो ल भ घणकरोक तो उणां रा निकट रा संबंधी, शिष्य ग्रर सहायक लोग ई उठावता हा। उणां रै काम में तो बां रो बो विशाळ पुस्तकालय ई ग्रावतो हो जिणमें हजारूं पोथ्यां ही। पण उणां रो निजी पुस्तकालय तो बीकानेर में हो ग्रर बै रैवण नै ग्राया हा बन स्थळी। बठै ई बां री पोथ्यां रो संग्रह बराबर वधतो रैयो।

पढणो ग्रर लिखणो—स्वामीजी रा ग्रै दो ई बिसन हा। म्हारा पड़ोसी हा। मकान रै खनकर निकळतो जद प्राय: हूं बांनै राजस्थानी ग्रर ग्रपभ्रंश रा छंद बांचता—गुणगुणांवतां सुणतो। स्वामीजी कित्ती पाठ्य पुस्तकां लिखी, लेख लिख्या, कांई-कुछ लिख्यो-पढ्यो—ग्रो इत्तो विशाळ है कै कोई शोध विद्यार्थी सारू शोध रो विषय हुय सकै है। बै उण जमानै रा स्नातक हा जद राजस्थान रा छात्र ग्रागरा विश्वविद्यालय री परीक्षा में बैठ्या करता हा; सरकार री तरफ सूं जिणां नै इण सारू छात्रवृत्ति मिली ही, स्वामीजी उणां मांय ग्रेक हा। जद कांई माहौल हो, राजस्थान में शिक्षा री कांई हालत ही-ग्रा लांबी कथा केई मौकां माथै स्वामीजी मनै सुणायी ही।

भलो हुवै उरा सुयोग रो कै जिरा रै काररा स्वामीजी नै वन-स्थळी में रैवण सारू जको क्वार्टर मिल्यो बो म्हारै कनलै क्वार्टर १८ अरविंद निवास सूं अगलो हो। बांद में आछै परिचय रै काररा बै क्वार्टर बदळ'र म्हारै कनलै १६ नं० में आयग्या जिणमें छोटा-मोटा पांच कमरा हा। इत्तै बडै घर में अेकला स्वामीजी। उणां रो परिवार बीकानेर सूं कदेई-कदेई आवतो। परिवार नंई हुवतो जद, बाद में, अो क्रम बणग्यो हो कै स्वामीजी म्हारै अठै ई भोजन करचा करता। जद म्हारो परिवा'र नंई हुवतो जरां म्हारै भोजन री व्यवस्था स्वामीजी रै परिवार में रैवती, अर जद दोनां रा परिवार ई नंई रैवता जरां हूं म्हारै अर स्वामीजी सारू मेहमान-घर सूं-भोजन ले आवतो।

खावरा-पीवण रै मामलै में स्वामीजी स्वास्थ्य रा नेम पालरा में पक्का हा। म्हारी पत्नी सूं कैंवता-'आप आलू छीलती क्यों हैं? अैसा करने से छिलकें में रहने वाला पौष्टिक तत्त्व समाप्त हो जाता है।' इसी तरै बै आटो छाणण रै खिलाफ हा—'आटा छानकर, छांछ को बीनने के बाद फिर आटे में मिला देना चाहिये, फिर उसकी रोटी बननी चाहिये।' म्हे लोग ठैरचा उत्तर प्रदेश सूं आयोड़ा, रोजीनै सिंझ्या री वेळा परांवठा खावरा आळा। स्वामीजी रै विचारां मुजब तळघोड़ी चीजां नंई खावरणी चाहीजै। म्हे दलील देंवता 'परांवठा नंई, तळघोड़ी तो पूड़ी हुवै।' तो स्वामीजी रो तरक हुंवतो—'पूड़ी में घी कढाई में जलता है, परांवठे में तवे पर। बात अेक ही है।'

स्वामीजी मितव्ययी हा, अर हा सफाई-पसंद। घर में थोडाई कपड़ा पैरता। गरम्यां में तहमद-बनियान पैरचां स्वाध्याय में लाग्या रैवता। रहण-सहण साव सादो। कोई टीप न कोई टाप। कठैई जावता तो धोती 'कुड़तो, बन्द-गळै रो कोट पैरचो, पट्टा बायोड़ा, आंख्यां माथै चसमो, होठां माथै हळकी-सी मुसकान जिसी लागती उणां री खराकती बोली, हंसी अर तेज चाल। अल्प भाषी हा बै। उणां रै इण गुण सारू अेक प्रसंग री याद आवै है। उणां सूं मिलणो हुवतो जद घणकरोक मनै ई बोलणो पड़तो। अेक दिन घर सूं ई सागै-सागै टुरती वेळा मैं निश्चय करचो कै म्हारी तरफ सूं आज कोई बात को चलाऊंनी। परिणाम ओ हुयो कै म्हे दोनूं कालेज रै करीबन अेक किलोमीटर तांई उपाळा गया अर अेक शब्द ई को बोल्या नी।

स्वामीजी शांत स्वभाव रा हा; प्रायकर गम्भीर रैवता अर का फेर बात करता तो हंस'र। उणां में उग्रता ई ही, तपस्वियां जिसी। क्रोध आयां अेकदम चिल्ला उठता, डांट देंवता जिण कारण टाबर तो टाबर बडा-बडा लोगां नै ई उणां रो संको रैवतो। घर में आपरै टाबरां सागै बै कम ई बात करता। टाबर ई 'दाता' सूं डरचा करता, इत्ता कै जित्तो नइं डरणो चाहीजै। इण री अेक रोचक घटना म्हारी पत्नी सुणाया करै है। स्वामीजी रै घर रा सगळा जणा घर सूं बारै गयोड़ा हा अर वै खुद हा घर रै भीतर। उणां रै लड़कै स्वामीजी नै हेलो मार'र फाटक खुलावण री बनिस-

पत घर रै पिछवाड़ै री भींत कूद'र घर में बड़णो उचित समझ्यो। स्वामीजी नै कदेई कोई खास बात कैंवणी हुती तो उणां रै परिवार रा सदस्य म्हारी पत्नी अथवा म्हारै कनै आवता। म्हां दोनां नै स्वामीजी सागै बात करण में इसो कोई संकोच को रैंवतो नी।

श्री स्वामीजी री टिप्पणी वड़ी खरी हुया करती ही। अेकर जद म्हे दोनूं वनस्थळी में जद-कदेई हुवण आळी सभावां मांय सूं अेकै-सागैई पाछा आ रैया हा। इण सभावां में बैठ'र बनस्थली री प्रजा प्राय: स्वयंभू शासकांरी बात्यां सुण्या करती, लोग कैंवता कीं कोनी हा। म्हे केई लोग, रुकटा रा सदस्य, गळत बातां रो शालीनता सूं विरोध-प्रतिरोध करचा करता। उण दिन आ ई हुई। मैं कोई बात फोर'र कैय दी ही जिण माथै संगी-साथी टिप्पणियां करै हा किण ई कैयो-'पांडेजी जिकी बात कैयी है उण सूं इणां रो वेतन कट सकै है' (इसो अेक शिक्षक सागै हो चुक्यो हो) किणी अतिशयोक्ति में कैयो-'फेर तो गळो कट जासी' जणै स्वामीजी कैयो --'नहीं, पत्ता कटेगा।' उणां नै कांई मालूम हो कै अेक दिन इसो ई हुसी—हस्ती के लिये अेक दिन है फना, आना तेरा दलील जानें की है।" पत्तो तो म्हां दोनां रो ई कट्यो पण प्यारै-न्यारै ढंग सूं।

म्हारै माथै स्वामीजी री विशेष कृपा रैयी। हूं उणां रा छोटा-मोटा काम सहज भाव सूं ई कर दिया करतो हो क्यूं कै वै पाड़ोसी हा, वयोवृद्ध हा अर हा म्हारी दृष्टि में ब्राह्मण। उणां रै अठै कोई मेहमान आवतो तो बै उण नै म्हारै सूं मिलावण नै ले आवता। बै म्हांनै टोकता—"आप जब भी कोई आता है, कुछ न कुछ खाने-पीने की चीजें ले आते हैं। खाने या जलपान के समय कोई आये तब बात दूसरी है। इस समय अैसा करना ठीक नहीं। आ बां री मानता ही।

इणी तरै स्वामीजी नै म्हारो शतरंज खेलणो दाय को आवतो नी। जद ई कदेई कोई बूढो का जवान खेलार आवतो (अेक सहकर्मी रा बुजुर्ग पिता श्री बिहारी-लालजी 'बेकस' प्राय: आ जावता, उणां कनै मोकळो खाली बगत रैंवतो) तो हूं दो घण्टा अथवा तीन बाज्यां रै नेम सूं आगत रै नै म्हारै आप रै मनोरंजन सारू खेलण लाग जावतो, नां को कग्तो नी। इण कारण स्वामीजी कैंवता-'पांडेजी, आप ई युधिष्ठिर री तरै हो, जिको इयां तो जूवो को खेलो नी पण कोई बुला लेवै तो जरूर खेलो हो।' शतरंज रो खेल स्वामीजी री निजरां में जूवो हो, बखत री फिजूलखर्ची। मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना !

कई री मदद करण री स्वामीजी री अेक न्यारी ई रीत ही। म्हारो मकान बणै हो। काम अटकग्यो तो उणां मनै पांच सौ रुपिया उधार दिया जिका मैं केई किश्तां में उतार दिया। अेकर उणां मनै अेक पोथी दी--गदय-तरंगिणी (गदय संग्रह री पाठ्य-पुस्तक ही), आ कैय'र--आ आप री पोथी है। मैं देख्यो-उण संग्रह-पुस्तक

माथै महारो नांव छप्यो हो । स्वामीजी री इण भांत री अहैतुकी कृपा सूं उणां रा घणा ई शिष्यां लाभ उठायो हो । इण तरै री पुस्तकां अर लेखां रै प्रकासण सूं यश ई मिळै है अर धन ई । बुरो हुवै म्हारी सिद्धांतवादिता रो जिको मैं उण पोथी नै ग्रहण करण में भेळो-भेळो हुयो, आनाकानी करी अर फेर बा बात बठै री बठै ई रैयगी । नमूनै री किताब म्हारी पुस्तकां रै संग्रह में आज ई मौजूद है ।

प्रकाशकां सारू स्वामीजी जिसा लेखक कामधेनु रैया है । आगरै रा श्रीराम मेहरा स्वामीजी री घणी ई पोथ्यां छापी । आमदानी इत्तो कै उण रो इन्कम टैक्स ई बड़ी भारी रकम बण जावै । स्वामीजी रुपियां-पइसां रै मामलै में नां तो घणा व्यावहारिक हा अर ना फालतू खरच करणिया । उणां री जरूरतां सीमित ही । बीकानेर में उणां खासी-सारी जमीन खरीद'र आपरै बेटां-दामादां रै सारू रैवण रो अेक आछो साधन बणा दियो हो । उणां रो धन कित्तो बांरै आपरै कनै हो अर कित्तो प्रकाशकां कनै रैयो इण रो लेखो-जोखो पूरो तो उणां रै कनै ई को रैयो हुवैला नी ।

आप री शिष्या लक्ष्मी माथै स्वामीजी री बडी कृपा ही । उण बगत लक्ष्मी शर्मा नां तो श्रीकृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय, सीकर री प्रिंसिपल ही अर नां डाक्टर । 'व्रत-कथा' माथै उण रो शोध-कार्य चालै हो । पिताजी रै स्वर्गवास हुयां पछै लक्ष्मी वनस्थली विद्यापीठ में शोध छात्रा रै रूप में नांव लिखायो हो । बोहळै संकटां मांयकर निकळी ही । रूप अर गुणां सूं संपन्न हुवण रै सागै सागै लक्ष्मी री काव्य अर संगीत में ई आछी रुचि अर पैठ ही । स्वामीजी ई म्हांरो परिचय करवायो अर हर तरै री मदद करण रो कैयो । मैं स्वामीजी री आज्ञा मान'र हर संभव कोसिस सूं लक्ष्मी नै सहयोग दियो । पछै डा० लक्ष्मी शर्मा वनस्थळी विद्यापीठ में लेक्चरार हुयगी । लक्ष्मी म्हारै कनै जर्मन भाषा ई पढी अर डिप्लोमा पास कर नै जर्मन बोलणै में प्रवीण हुयगी ही । स्वामीजी लक्ष्मी नै अर मनै केई दिनां अेकै सागै अपभ्रंश री अेक पोथी पढायी ही । वै मगन हुय'र गांवता-गुणगुणावता पोथी रा छंद पढ्या करता 'हिअइ खुड़क्कइ गोरड़ी गयणि धुड़क्कइ मेहु ।'

स्वामीजी रो बाहरी व्यक्तित्व भलांई ई नीरस लागो, पण वै साहित्य रस रा मर्मज्ञ हा । बां अेलेक्जेंडर ड्यूमा री पूरी उपन्यास ग्रंथमाळा पढ राखी ही अर कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी री 'पृथ्वी वल्लभ' सूं ले'र 'पाटन का प्रभुत्व' तांई सगळी रचनावां वांच ली ही । मीनलदेवी रो व्यक्तित्व उणां रै मन में घर करग्यो हो ।

स्वामीजी केई भाषावां रा जाणकार हा । उणां री भेंट कर्योड़ी फ्रैंच री पोथी म्हारै कनै आज ई बां री निसाणी रै रूप में मौजूद है । वै राजस्थानी रा हिमायती हा, हिंदी विरोध री सीमा तांई । इण बात री मनै जाणकारी कोनी ही । इण रो पतो चाल्यो अेक निराळै ढंग सूं । म्हारा मित्र डा० पुष्करदत्त शर्मा वनस्थळी आयोड़ा हा । स्वामीजी सागै म्हे दोनूं जणा अेक दिन बनस्थळी री अेक मात्र सड़क माथै

टैलै हा । भाषा री बात चाली । अणजाणै में मैं स्वामीजी नै ई पूछ्यो—'कांई आप उचित समझो हो, अर कांई ओ संभव है कै राजस्थान में हिंदी हट जावै अर उण री जाग्यां राजस्थानी जिण रो स्वरूप हालतांई निश्चित कोनी, आ जावै !' स्वामीजी मौन रैया । बीच में ई पुष्करदत्तजी हंस'र बोल्या—'स्वामीजी तो राजस्थानी रा प्रबळ समर्थकां में है ।' भाषा री इण बात नै ले'र स्वामीजी सूं कदेई बहस हुयी हुवै, याद कोनी । मनै राजस्थानियां सूं आ ई शिकायत रैयी कै हूं राजस्थानी सीखणी चावूं हूं पण राजस्थानी लोग म्हारै सूं राजस्थानी में बोलै ई कोनी ।

स्वामीजी बहोत सहनशील हा। अधिकारी अर अधीन रूप में ई वांनै किणी सूं अटकणो-अटकावणो आछो को लागतो नी 'भूपाळ नोबल्स कॉलेज' में वै वाइस प्रिंसिपल ई रैया हा अर 'वनस्थळी विद्यापीठ' में हिंदी विभाग रा अध्यक्ष । निजी शिक्षण-संस्थावां रो ताणो-बाणो सरकारी संस्थावां सूं खासो न्यारो हुवै है । उण में ई वनस्थली री संस्था रो तो कैवणो ई कांई –तीन लोक सूं मथरा न्यारी । बठै रो ढांचो सामंती हो । खुद शास्त्रीजी वनस्थळी-जगत रा 'आपाजी' हा तो उणां री धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी शास्त्री 'भाऊजी' । शास्त्रीजी रा भाई रामेश्वर शर्मा 'काकाजी' बाजता, तो इसा ई अेक हा 'फूफाजी' । उणां रै सुपर्द हो जद वनस्थली रो निर्माण विभाग ।

जिका क्वार्टरां में म्हे रैवता हा उणां रा आंगण कच्चा हा । लारला क्वार्टरां री लैण जद कोनी बणी ही । ईंटां, पत्थर अर माटी रा ढिग लाग्योड़ा हा । कर्मठ स्वामीजी रै धुन सवार हुयी । उणां थोड़ी-थोड़ी कर'र खासी माटी आंगण में भेळी कर ली । माटी नै थाप-थाप'र उणां आंगण नै पक्कै जिसो बणा लियो, उण में भाठा ई जड़ दिया । ओ काम उणां हफ्तै-डेढ हफ्तै में थोड़ो-थोड़ो कर'र पूरो कर्‌यो हुवैला । अध्ययन अर लेखन रै बीच में खाली वगत में वै इण तरै रै कामां में लाग्या रैवता–ओ उणां रो 'पास-टाइम' हो । अेक दिन हूं कांई देखूं हूं ? उणां रै आंगण में अेक मजूर माटी पावड़ो लियां उणां री जमायोड़ी माटी खोदै हो, लगायोडा भाठा ई उखाड़ लिया हा । स्वामीजी आप री छत माथै टैलै हा । स्वामीजी विरोध में कीं को बोल्या नी । स्वामीजी री मैनत नै इण भांत अकारथ जावतां देख'र मनै बहोत बुरो लाग्यो –म्हांरी माटी नै इण तरै कियां उठा सकै है ? कांई ईंट-पत्थर रा ई पइसा हुवै है ? मैं ई घर में माटी नाख'र आंगण ठीक कर्‌यो हो । मैं पत्नी नै कैयो –'म्हारी गैर हाजरी में किणी नै घर में नां घुसण देयी । सामनै हूं आपै ई सळट लेसूं ।' बाद में अेक दिन जद हिंदुस्तानीजी लारलो दरवाजो खुलो देख'र घर में झांक्या अर घर में माटी नाखण सारू मनाही करी तो मैं साफ-साफ कैय दियो—ओ घर रो आंगण थांनै पैली ई ठीक करावणो चाहीजतो हो । जे थोड़ी माटी नाख'र इण नै म्हे खुद ई ठीक कर दियो तो किसो गुनो कर दियो । अै ईंट–पत्थर संस्था रा क्वार्टरां में ई लगायीज्या है । म्हे जासां जद आं नै सागै थोड़ा ई ले जासां ।' बो ई हुयो । फूफाजी उर्फ हिन्दुस्तानीजी मनै आप रा अधिकारी काकाजी कनै ले जावणो चावता हा, पण मैं को गयो नी ।

बात ही जठै रैंयगी । स्वामीजी रो आंगण तो खोदीज ई गियो । वन स्थळी रा स्वयंभू शासक आप सारू तो सगळी भांत री सुविधावां जोड़ लेवता हा, पण कोई विद्वान नै बुला'र उणरो अपमान करण रो कांई फळ हुवै, ओ पाठ उणां नै सीखणो हो ।

स्वामीजी रै बनस्थळी सू जावण रो अेक कहाणी है । वै रिटायर हुयां पछै अठै हिन्दी विभाग रा अध्यक्ष हुय'र आया हा । उणां रै हेठै काम करणिया बनस्थळी रा दो पुराणा अध्यापकां में कुत्तो-मिन्नी रो बैर हो । वै दोनूं अर उणां रा पीठ थापणिया, जिका दो धड़ां में बंट्योड़ा हा, ई आ चावता हा कै स्वामीजी चल्या जावै तो वै आप री गोटी विभागाध्यक्ष रै पद माथै बैठावै । मौकै री तलाश ही, कैय सकां हां, मौको त्यार करचो गयो । अेक दिन वनस्थळी रा शिक्षाध्यक्ष प्रो० प्रेमनारायण माथुर स्वामीजी नै बुला'र कीं कैयो । जरूर ई बा बात अनुचित अर खारो रैयी हुवैला । स्वामीजी दुखी हुयग्या । घरै आय'र उणां इस्तीफो लिख्यो अर आ कैंवता थकां मनै दियो-पांडेजी, आप इण नै जित्तै तक चावो आपरै कनै राखो अर पछै प्रिंसिपल नै दे दि ा । प्रिंसिपल बां दिनां श्री प्रवीणचन्द्रजी जैन हा । मैं इस्तीफो म्हारै कनै नंई राख'र उणां नै दे दियो । उणां सज्जनता सू अेकर उण नै पाछो ई कर दियो । चाल बिगड़ती देख'र अधिकारियां टोक्यो—'ओ कांई करचो ?' सो, इस्तीफो स्वामीजी सू पाछो लेय'र स्वीकार करीज्यो अर इण तरै स्वामीजी नै वनस्थळी सूं हटावण रो अधिकारियां रो फिटोफिट जचायोड़ो षड़यंत्र सफळ हुयो । बाद में पतो चाल्यो कै किणी छात्र नै बेसी नंबर देवण री बात बणायी गयी हो । स्वामीजी नै आप रै ऊपर इण भांत रो आरोप खोटो लाग्यो । उणां वनस्थळो सूं चल्यो जावणो ई ठीक समझ्यो । 'सतां म्लाने माने मरण दूरसरणम्'-सज्जन लोगां रो मान म्लान हुवै जणै वै का तो मरणो पसंद करै अर का दूर चल्यो जावणो । इण आत्म बळिदान करण री भावना री जाग्यां जे बदळो लेवण री भावना जाग जावै तो आ दुनिया इसा छळ-फरेब अर मक्कारी सूं भरचा बेईमानां रै पंजै सूं जरूर उबर जा । सज्जनतंत्र ई आ जावै ! अठै अेक बात और बता दूं, स्वामीजी नै इण तरै बनस्थळी सूं अचाण चक चल्या जावण रो पछतावो ई रैयो । उणां रो कैंवणो हो—थोड़ाक दिन और रैवतो तो फलाणै आदमी री थोड़ी और आर्थिक मदद कर सकतो ।' उणां री विदाई री वेळा लक्ष्मी शर्मा रो गायोड़ो ओ भजन, जित्ताई लोग उण दिन विदाई रै समारोह में हाजर हा, उणां सगळां रै कानां में आज ई गूंजतो हुवैळा—

'व्रज के विरही लोग बिचारे ।
बिनु घनश्याम ठगे-से ठाड़े, अति दुर्बल तन हारे !

बा ई स्थिति स्वामीजी रै सगळा आत्मीयां री स्वामीजी रै दिवंगत हुवण सूं आज ई है !

—प्राध्यापक जर्मन-फ्रैंच
सुबोध कालेज, जयपुर'

'थूं रीझ्यो अरथांण'

डॉ० नारायणसिंह भाटी

पूंगल हंदी पदमणी
मरवण मुधरौ नांम
दूहां में दाखल हुतौ
अरथायौ उनमांन ।

डिंगल में डोहोजियौ
मुरधरियौ मंरांण
आखर रतनां आब रौ
प्रगटचौ थें परमांण ।

वेळ केळ पिरथू करी
धर धोरां रै मांझ
कानौ रुकमण रीझियौ
थूं रीझ्यौ अरथांण ।

स्वामी रामौ सूरजौ
सुध री खोली खांण
त्रीविध सगतो सबद री
सुरसत रै कमठांण !

डाइरेक्टर, राजस्थानी शोध संस्थान
चौपासनी, जोधपुर

△

स्वामीजी !

श्रीयुत रावत सारस्वत

मठो अेक हाड हा
दे दिया दधीचो ज्यूं
होतो कोई इंद्र तो
वज्र कर बापरतो,
करतो विधूंस वंस
भासा रै बैरियां रो ।

नान्हो सी काया ही
बणगी पण बामन सी,
नाप लिया तीन डग
साहित रा लोक सब ।

भास्य रो 'सायण' हो
'पिंगळ' हो छंद रो
संकळनां 'वेद व्यास'
'गणेस' लिपिचंद रो ।

ब्याकरणां 'पाणिनि' हो
सबद हेमचंद' हो तो
षट्भासा 'सूरजमल'
सुरसत रो नंद हो ।

रासां रो 'वरदाई' हो तो
'नैणसी' हो ख्यातां रो
गीतां रो 'मेघाणो' हो वो
'बांकीदास' बातां रो ।

विद्या रो हो दानी घणो
अगवो सभावां रो,
सिस्यां रो भगत हो अर
सिव हो खमावां रो।

'ढोलं अर मारू री
वात' अब कुण करसी,
कूण करसी
'रुकमणी री वेलि' री याद अब ?

भासा री भोळावण
कुण नै अब कुण देवै,
कठै करां
दरद री दाद-फरियाद अब ?

—डी. २८२, मीरां मार्ग
बनी पार्क, जयपुर

साहित पुंज–स्वामीजी

श्रीकृष्णशंकर पारीक

"तेजस्विन : सुखभसूनपि सन्त्य जन्ति
सत्य-व्रत–व्यसनिनो, न पुन : प्रतिज्ञाम् ।।"

"सच्चाई रै व्रत ने जिणा आपरो व्यसन बणायो, इसा तेजस्वो (स्वामीजी महाराज) आपरै प्राणां नै सुख सूं छोड़ सकै, पण आपरै झाल्योड़े नेम नै कदैई नी छोडै ।"

इण नीति कथन रो प्रयोग स्व० ठा० रामसिंह जी अर स्व० पं० सूर्यकरणजी पारीक बडै चाव सूं आपरै साहित्य सहकर्मी पं० नरोत्तमदासजी स्वामी खातर करचा करता हा'

राजस्थानी त्रयी "ठाकुर–पारीक अर स्वामी" विश्व साहित इतिहास में अनूठो स्थान राखै है। बिचली कड़ी पारीक रै साथै स्वामीजी बनारस १९२२ सूं लेयर उणारै मृत्यु परंत फरवरी १९३९ तांई रह्या, ढोला मारू, लोक गीत सरसा ग्रंथां रो सम्पादन हुयो। ठाकुर साहब १९७४ तांई प्रीत निभाई। आपरी 'राम रामायण' मैं ठाकुर साब आप खातर यूं लिख ग्या है :—

"काळ चिड़ी गावण लगी, लागी करण किलोळ,
जावण सूं पहली भळै, सुण लो मीठा बोल,
लोक गीत में प्रीत है रैयी लोक री रीत,
पण गावै जद नीत व्है, मिल जावै जद मीत,
काळ चिड़्यां भळ बोलसी, गासी मीठा गीत,
जावण वाळो जावसी, सुणसी कूण स प्रीत,
जग सूं जातां रामसिंह, कथन इसा कहियाह,
म्हे तो जावां मौज में, राजी थे रहियाह,

ठाकुर साब री मुजब "स्वामीजी अडिग अर अदम्य उत्साही पण शीतल वाणी हा, तो अन्तर मुखी स्वभाव कारण दृढ अर हठीला साहित सेवी हा। उणां एक जिद्ध झाल ली क लोग चावै जिता ही क्यूं न हंसै राजस्थान खातर लिखणो तो

राजस्थानी में ही उणां रै अध्यवसाय रो ही फळ है क राजस्थान रो ओ पोधो विशाल रूप धारण कर रयो है। १९२२ में बनारस, हिन्दुविश्वविद्यालय सूं जद एक हस्त लिखित मासिक पत्रिका "प्रेमाश्रम" निकालणी चावी तद स्वामीजी १७ वरस रा हा, बस जिद्द झाल बैठ्या—अंग्रेजी हिन्दी मराठी अर संस्कृत प्रकोष्ठ राख्योड़ा है तो राजस्थानी भी राखणी पड़सी। स्वामीजी ही राजस्थानी सम्पादन रो शुभ श्री गणेश कर्यो है। वै राजस्थानी रा द्रोणाचार्य हा।

१९३४ में स्व० पारीकजी, "पीलाणी राजस्थानी ग्रंथ माळा" खातर स्वामीजी ने बिड़ला कालेज पिलाणी बुलाय लिया हा। तद से स्वामीजी रो राजस्थानी में ठाकुर रामसिंहजी नै लिख्योड़ो एक पत्र जको 'श्री सूर्यकरण पारीक पुस्तकागार' में है, स्वामीजी नै श्रद्धा सुमन वारित करतो थको नीचे देवूं हूं, जिण सूं आपा रै हियै में साची श्रद्धा इण साहित महारथी सारू चिरस्थायी रैय सकै।

शान्ति आश्रम
बीकानेर

प्रिय ठाकुर साहब

आपरो कागद आयो। लेख रै साथै आपरो नांव बिना डेजिगनेशन रै दियो है। जुगलसिंहजी प्रिंसिपल हुग्या बतावै है। आखर छापै री खबर सही निकळी। विचारा अग्रवाळजी नै धक्को है। जुगलसिंहजी फिलासफी पढासी जद अग्रवाळजी तो प्रोफेसर किया होसी।

पांडेजी छुट्टी पर होणै सूं पारीकजी रो आवणो तो हुवै नहीं। म्हारै आवण में कोई कठिनाई तो इसी नहीं पण शरदी रै मौसम में आवण जावण रो झगड़ो ही है। लारी मिलणी मुसकल, मिलै तो किरायो बहोत ज्यादा, फेर रात-विरात दो तीन जाग्यां गाडी वदळनी। इये वास्ते इच्छा होणे पर भी आवण रो विचार छोड दियो। श्री ओझाजी तथा महेशजी सूं मिलण रो मोको तो चोखो हो पण अब फेर देखीजसी। ओझाजी ने प्रश्न माळा भेज ही दी है आप और बातचीत कर लिया। अेक और बात-म्हाराळो दूहा संग्रह अब करीब-करींब सगळो छपग्यो है खाली टिप्पणी, भूमिका, प्रस्तावना वगैरा बाकी है। ओझाजी बीकानेर हा जद 'प्रवचन' लिख देवण रो कह्यो हो। ओझाजी नै इये विषय रो पत्र मैं लिख्यो है आप फेर याद दिरा दीजो और हुवै तो वेगो सो भिजा दीजो। बहोत जल्दी है।

गीतां री अेक वड़ी विषय सूची म्हां त्यार करी है। वैरी एक कापी आप कनै भेजूं हूं। इये मांय सुधारा वधारा कर'र मनै पाछी भेज दीजो। पछै हूं हिंदी में टाइप कर लेसूं और रॉटेरी मशीन सूं १००/१२५ कापी निकाळ लेसूं। फेर इष्टमित्रां कनै अेक-अेक कापी भेज देसां और वै लोग भी और बातां जोड़नी हूसी जकी जोड़ देसी तथा फेर इये सूची रै माफक गीतां रो संग्रह करण री प्रार्थना करसां।

राजस्थानी वातां रै विषय में कई बातां रा नांव नीचै लिख'र भेजूं हूं –

(१) सिध पुरसां री बातां—१. पाबूजी २. राम देवजी ३. गोगोजी ४. तेजोजी
५. जांभोजी ६. हड़बूजी ७. भभूतो सिध ८. मालोजी
(मल्लीनाथजी)

(२) राज संस्थापकांरी वातां—१. जोधोजी २. बीकोजी ३. वापारावळ ४. —

(३) वीरां री बातां— (१) चूंडोजी (मेवाड़) (२) बीदोजी (बीकानेर)
(३) शेखोजी (४) अमरसिंह राठौड़ (५) दुर्गादास
(६) जयमल (७) पदमसिंह (बीकानेर)

(४) राजावां री वातां— १. सांगो २ प्रताप ३ राव चूंडो ४ जसवंतसिंह
५. रामसिंह ६. करणसिंह ७. मानसिंह ८. जयसिंह
९. सादूळसिंह (खेतड़ी)

(५) राजवंशां री वातां— १. कछवावां री वात २. खीच्यां री वात ३. हाडां
री वात ४ मोयलां री वात ५. दहियां री
६. चन्द्रावतां री।

(६) नीति री वातां— १ सूरां अर सतवादियां री वात २ पंचाख्यान (पंच तंत्र)
३ बीरवल री वात ४ —

(७) १ दिनमान रै फळ री वात २ पलक दरियाव ३ — -

(८) वीरता री वातां—१ वहलिमां री वात (रायब सायब) २ - —

(९) लड़ायां री वातां—१ हल्दी घाटी री लड़ाई २

(१०) राजस्थान रा धाड़ैत—१ डूंगजी जवार जी (२) भूरजी बलजी (३) ..

ग्रंथ माळा री आगै री स्कीम—

(१) राजस्थानी वातां (सम्पादक ठा. रा. सि.)

(२) राजस्थान रा अैतिहासिक दूहा (")

(३) राजस्थान रा दूहा भाग २ (सं. न. दा. स्वामी, चं सिंह)

(४) राजस्थान रा गीत (सं रा. सिं, सू. क पा., न. दा. स्वा.)

(५) राजस्थान रा अैतिहासिक गीत
(स. रा. सि., सू. क. पा., न. दा. स्वा.)

(६) राजस्थानी सुभाषित भांडागार (सं. न. दा. स्वा.)

(७) जगदेव पंवार-नाटक (ले. सू. क. पा.)

(८) राजस्थानी वातां भाग ३ (सं न. दा. स्वा.)

'पत्र में लिखी हुई मेरी और स्वामीजी की सम्मिलित राय है। यहां पर सब कुशल है आप प्रसन्नता पूर्वक होंगे। श्री ओझाजी से हम लोगों का सादर वन्दे कहें। जैतसी की प्रश्न माला को यथा शीघ्र हल करवाने के लिए श्री ओझाजी को कहें। आपको जितना समय मिले उतना आप भी हल करें।

आपका सस्नेह
सूर्यकरण पारीक

संदेश

ठा० प्रेमसिंहजी

घणौ हरख री बात है कै आज राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), आपणौ बीकानेर रा भारत-विख्यात विद्वान और राजस्थानी भाषा और साहित्य रा समर्थ मूक साधक स्व० प्रोफेसर नरोत्तमदासजी स्वामी री स्मृति रूप ओ आयोजन करचो है। आप लोगां नै याद ई हुसी कै स्वामीजी नैं उणां री राजस्थानी सेवावां सारू इण विशेषांक रै थोड़ा दिनां पैली लाडनू में प्रथम 'पूनमचंद भूतोड़िया पुरस्कार' सूं सम्मानित कियो गयो हो। आ आपां लोगां वासतै, और मैं तो आ भी कैं'सूं कै पुरस्कार देवण वाळी संस्था सारू भी, घणौ गौरवै री बात है।

स्वामीजी रो अर म्हारो स्नेह-संबंध घणो जूनो हो, नइं-नइं करतां पचास साल जूनो। उणां दिनां म्हे लोग काशी रै हिंदू विश्वविद्यालय में पढचा करता हा। स्वामी जी री सहज शालीनता, अद्भुत विद्याभ्यास, नियमित साहित्य-निर्माण, और आप रो सगळो काम खुद आप रै ही हाथां सूं करण री उणां री अनूठी प्रवृत्ति रै कारण उणां रै छात्र-जीवन रा संगी-साथी तो सदा ही उणां सूं प्रभावित रैया ही, मैं देखतो आयो हूं, बाद में भी जिका-जिका लोग उणां री प्रेरणा सूं साहित्य री सेवा वासतै अथवा उणां रै निजू जीवन रै और-और पार्श्वां रै संपर्क में आया बै सदा-सदा सारू उणां रा ही हुयग्या।

रांकावत समाज रै रतन श्रद्धेय स्वामीजी रै समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व रो लेखो-जोखो करणो घणो दुष्कर कार्य है, पण उणां रै जगमगातै जीवन रो जे आपां लोग राज पकड़णो चावां तो बो गीता रै इण श्लोकार्थ में पा सकां हां—अभ्यासेन तु कौंतेय वैराग्येण च गृह्यते (कोई भी काम जे निरंतर अभ्यास और वैराग्य अर्थात् कर्म-फळ री विना कोई भांत री अपेक्षा राख्यां कर्‌यो जावै तो उण में सफळता जरूर मिलै है)। स्वामीजी हरेक काम इणीज नीयत सूं करचा करता हा। 'जगत सोवै अर फक्कड़ पोवै' कहावत इण भांत रा साधकां नै देख'र ई सरू हुयी हुसी। काम रै लारै भूत-सा लाग्योड़ा स्वामीजी ना कदेई रात देखी ना कोई दिन, ना कदेई भूख री परवा करी ना तिस री, नींद तकातक री कई वरियां उणां नै त्याग करणो पड़चो। राजस्थानी रै पुनरुद्धार रो काम स्वामीजी जिकी निष्ठा, धीरज, अर अखूट श्रम रै सागै सरू कर्‌यो

उण रा मीठा फळ आज आपां लोगां रै सामनै है। कांई अनुवाद रो काम, कांई लोक-साहित्य रै संग्रह रो काम, कांई साहित्य-संपादन रो काम, अर कांई मौलिक साहित्य री सर्जना रो काम — जिको भी काम उणां हाथ में लियो बो उणांरी प्रखर बुद्धि, उत्कृष्ट विश्लेषण शैली, विविध भाषा-ज्ञान, और मौलिक चिंतन रै प्रकाश में कंचन वणग्यो। स्वामीजी री हस्तलिपि देखो, आखर जाणै मोतियां सूं होड लगायां बैठा है।

मां राजस्थान-भारती री उपासना में रात-दिन अेक करणिया म्हारा आदर जोग नै अभिन्न साथी स्वामीजी पुरस्कार और सम्मानां सूं घणा ऊंचा हा, फेर भी साची बात तो आ ही है कै उणांनै कोई भी मिस याद करचो जावै बित्तोई थोड़ो है और इण सूं भी बेसी साची बात आ है कै उणां रै त्यार कर्योड़ै अप्रकाशित साहित्य रो जे वेगै-सूं-वेगो प्रकाशन हुय ज्यावै अथवा उणारी प्रकाशन व्यवस्था सांगोपांग रूप सूं हुय जावै तो मैं समझूं हूं कै उणां री श्रद्धांजळि रो ओ रूप सबसूं सुंदर हुसी। मैं इण अवसर माथै म्हारै अंतर री सगळी श्रद्धा और प्रेम सूं आप लोगां रै साथै स्वामीजी नै श्रद्धांजळि अर्पण करतो थको अपणै आप नै धन्य मानूं हूं और ईश्वर सूं उणां री आत्मा नै चिर शांति मिलण री प्रार्थना करूं हूं।

तैणदेसर हाउस
बीकानेर

☐

राजस्थानी-प्रेमियां रो मनभावती मासिकी

जागती जोत

आकार : १६ × २५ से. मी.

शुल्क : वार्षिक रु० १२०० : एक प्रति—रु० १.२५

विज्ञापन-दर—

आवरण : अन्तिम पृष्ठ : रु० २५०/–, दूसरा-तीसरा पृष्ठ रु० २००/–

सामान्य पृष्ठ : पूरा : रु० १००/–

प्रकाशन-विक्रय पर देय कमीशन (ग्राहकीय)

२०० रुपये तक के आदेश पर	२०%
५०० रुपये तक के आदेश पर	२५%
५०० रुपये से अधिक के आदेश पर	३०% व फ्री डिलीवरी

राजस्थानी रा थरणामोला प्रकासरा

नांव पोथी/विधा/लेखक/संपादक	मोल
प्रेतात्म रा ग्रेत/कहाणी/जामोदर प्रसाद शर्मा	[illegible]
रोहिड़े रा फूल/व्यंग निबंध/डा. मनोहर शर्मा	५.७५
हांस्यां,हरि मिळे /हास्य/नृसिंह राजपुरोहित	७.५०
जोग संजोग/उपन्यास/यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	७.२५
मटारवां/रेखा चित्र/डा. ब्रजनारायण पुरोहित	५.७५
आदमी रो सींग/कहाणी/करणीदान बारहठ	६.००
एक बीनणी दो बीन/उपन्यास/श्रीलाल नथमल जोशी	८.३०
राजस्थानी साहित्यकार परिचय कोस/रावत सारस्वत	७.७५
सोनल भींग/लघु कथा/डा. मनोहर शर्मा	७.००
काळ भैरवी/उपन्यास/रामनिवास शर्मा	७.४०
हंस करै निगराणी/काव्य/सत्येन जोशी	७.४०
राजस्थानी साहित्य री समीक्षा/जागती जोत/डा. मनोहर शर्मा	८.००
राजस्थानी कहाणी संग्रह/जागती जोत/रामेश्वरदयाल श्रीमाली	८.५०
राजस्थानी निबन्ध-माळा/जागती जोत/डा. मनोहर शर्मा	८.००
राजस्थानी के कवि-भाग २/रावत सारस्वत	१५.००
राजस्थानी साहित्य संपदा/सौभाग्यसिंह शेखावत	१८.००
सरवर, सूरज अर सिञ्झ्या/प्रेमजी 'प्रेम'	७.५०
राजस्थानी कवितावां री अंग्रेजी मांय अनुवाद/आई.के. शर्मा	३५.००
चश्मदीठ गवाह/कहानी/श्री मूलचन्द प्राणेश	१५.५०
धरती कद तांई घूमैली/कहानी/सांवर दईया	१५.५०
स[illegible]टी/कहानी/रामेश्वरदयाल श्रीमाली	१६.५५

मिलण री ठौड़

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

[illegible]व राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी) बीकानेर, प्रकाशित करी अर
माहेश्वरी प्रिन्टिंग प्रेस, बीकानेर में छप्यो ।